श्री हंसराज बच्छराज नाहटा
सरदारशहर निवासी
द्वारा
जैन विश्व भारती, लाडनूं
को सप्रेम भेंट –

* ॐ *

॥ भूमिका ॥

आप सज्जन जानते हैं कि इतिहास से सामान्य पुरुषो को मुहब्बत नहीं होती। जिनके पुरुखाओं ने कभी कोई आदर्श उपस्थित नहीं किए, वे कभी अपने पुरुखाओं को याद नहीं करते कितनेक लोग इतिहास से घृणा भी करते हैं। पर आश्चर्य तो यह है कि जिनके पुरुखाओं (बापदादों) ने अनेक लोकोत्तर कार्य्य किए, वे भी आज इस ओर से उदासीन हैं। कितने ही लोग कहते हैं, "भूत कालीन बातों (गढ़े मुर्दों को उखाड़ने) में क्या लाभ है"। "भूत को छोड़कर वर्तमान की सुध लेना चाहिये"। पर मेरा पूर्ण विश्वास है कि हर एक कौम और देश का वर्तमान और भविष्य भूत पर ही निर्भर है। जिसका भूत अन्धकार में है उसका वर्तमान और भविष्य कभी उज्वल हो ही नहीं सकता। जिस मकान की नींव दृढ़ नहीं होती वह बहुत दिनों तक गगन चुम्बी नहीं रह सकता। इसलिए भूत कालीन बातें सभी सुनना चाहते हैं। बालक, बालिकाएँ, युवा, युवतियां, वृद्ध और वृद्धाएँ सभी फुरसत के वक्त कहानी कहते हैं और सुनते हैं। इसलिए संसार की प्रत्येक जाति अपने भूतकालीन इतिहास निर्माण करती है ताकि उसके पुत्रों को दूसरो का मुँह देखना न पड़े महात्मा गांधी भी भूतकालीन

हरिश्चन्द्र जैसी कहानियों से ही प्रभावित होकर मिस्टर से महात्मा हुए हैं। "किस्सये अजमते माजि को न मुँह मिल समझो। कौमें जाग उठती हैं अक्सर इन्हीं अफसानों से" स्त्री'।

मुझे पूर्ण आशा है आप सर्व महाशय मेरे इस सिद्धान्त से सहमत होंगे कि इतिहासके बिना कोई जाति समाज या राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता यदि किसी सभ्य जाति या देश की उन्नति, अवनति का कारण मालुम करना हो तो बिना उसके इतिहास के देखे कोइ नहीं जान सकता। जिस जाति का इतिहास लुप्त होगा वह जाति अधिक काल तक संसार में नहीं टिक सकती अतएव इतिहास का होना नितान्त आवश्यक है।

इतिहासों के अध्ययन ही से हम लोग जाति, समाज और राष्ट्र के उत्थान और पतन के कारणों को जानकर उसकी रक्षा में तत्पर रह सकते हैं।

इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि साहित्य मे इतिहास का स्थान बहुत उच्च है। और यही साहित्य का मुख्य अङ्ग है। इसके बिना साहित्य अधूरा है। बिना इतिहास के हम कदापि नहीं जान सकते कि किन किन कारणो से जाति एव देशों का अभ्युदय व अधःपतन होता है।

इतिहास एक सच्चा उपदेशक है जो उचित रास्ता संसार को दिखाने का स्तुत्य एव प्रशंसनीय कार्य्य करता है, अन्यथा भविष्य पथ में ऐसी ऐसी संकटावस्था उपस्थित होती है जिन से पार होना दुष्कर हो जाता है। हम लोग इतिहास द्वारा ही गत स्थितियों को देख कर वर्तमान समय में ही भविष्य पर

प्रकाशोत्पत्ति का प्रादुर्भाव कर सकते हैं कि आगे को यह परिणाम होगा विशेष विचार द्वारा भविष्य को बड़े उज्वल रूप बना सकते हैं। जैसा कि हिन्दू मुस्लिम, मरहठे आदि जाति के शासन कालके इतिहासो से अङ्गरेजों ने ज्ञान प्राप्त किया है।

इतिहास द्वाराही हमको ज्ञान प्राप्त होसकता है कि हमारी जाति का निर्माण किस तरह हुआ है और हमारे पूर्व पुरुखाओं, पूर्व ऋषि मुनियों व वीर पुरुषों ने किस किस वीरता के साथ देश समाज व धर्म के लिये कैसा सर्वस्व बलिदान कर के गौरव बढ़ाया और इसी कारण आज लौं उनकी कीर्ति संसार भर में प्रसिद्ध है, इसके सिवाय प्राचीन समय का आचार, विचार, भक्ष, भोज, कला कौशल, व्यापार, राजनीति, विद्वत्ता, धर्म परायणता आदि बातों का ज्ञान प्राप्त होता है। यह कहावत सत्य प्रतीत होती है कि यदि किसी देश जाति या राष्ट्र को नष्ट करना होतो उसके इतिहास पहले नष्ट कर देना ही पूर्ण पर्याप्त है। इन हृदयभेदी शब्दों ने मेरे हृदय को एक दम विचलित कर दिया कि, क्या कारण है कि हमारी जाति जैन ब्राह्मण जो सनातन से मान्यवर व तीर्थंकरों के पूज्य भाव मानी हुई की आज यह शोचनीय दशा होगई कि इस जाति से समग्र लोग अपरिचित होकर इसकी उत्पत्ति के विषय में नाना प्रकार की कपोल कल्पित शंकाएँ करते हैं। सच बात तो यह है कि इस जाति की वृद्धावस्था आगई है इसका मुख्य कारण यही नजर में आया कि इस जाति का इतिहास सरल भाषा में नहीं है। हालां कि इस जाति के महत्व का पूर्ण रूप से इतिहास सूत्र सिद्धान्तों में संस्कृत व मागधी भाषा में भरा पड़ा है। लेकिन

लोग इन भाषाओं के ग्रन्थों से अनभिज्ञ होगये हैं। और जैन निग्रन्थ साधु लोग भी इस इतिहास का व्याख्यान देने में उपेक्षा करते हैं, या यों कहने में भी दोष नहीं कि वे जानते हुए भी इस वयोवृद्ध जाति के इतिहास को अपने व्याख्यान में स्थान नहीं देते। और दूसरा खास कारण यह भी है कि इस जाति में विद्या के इने गिने गृहस्थ गुरु विद्वान रह गये हैं। सज्जनो! एक दिन वह था कि हमारे आचार्यों की हुंकार से दशों दिशाएँ गूंज उठती थी। काल चक्र की गति अपूर्व है। उसने जैन के महत्व को जैसे ढाँक दिया है वैसे ही उसके महत्व के जानने वाले लोग भी नहीं रहे हैं। यह विचार कर एक पूर्ण वृत्तान्त का सप्रमाण 'महात्मा महत्व प्रबोध चन्द्रिका, नामक ग्रन्थ रचा गया लेकिन वह वृहत्काय होजाने से फिर विचार हुआ कि इतनी बड़ी पुस्तक का पठन करने का श्रम कौन स्वीकार करेगा। इसलिये यह एक सन्क्षिप्त इतिहास सप्रमाण बनाकर आप महानुभावों के कर कमलों में अर्पण कर नम्र भाव से निवेदन करता हूँ कि जरा इस व्यक्ति पर कृपा कर इसको आद्योपान्त अवलोकन करने का परिश्रम स्वीकार करने की अवश्य कृपा करेंगे तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

प्रस्तावना

जाति शिक्षा

यह सब उस परब्रह्म परमात्मा की कृपा का फल है। इनकी इच्छा है कि हमारी जाति का उत्थान हो, और यह अवश्य होगा। देर केवल हमारी ओर से हो रही है। जितनी शिघ्रता से हम जातीय शिक्षा का प्रचार करेंगे उतनी ही जल्दी इस जाति के सन्तानों का दुःख दूर होगा। जाति के हर प्रान्त में शिक्षा का प्रचार होना चाहिए। ए मेरे भाइयो ! पुण्य कार्य्य में भाग लीजिये। पीछे मत रहिये। हमारे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कीजिये। प्यारे भाइयो आओ इस पुण्य क्षेत्र में कुछ धर्म सञ्चय करलो। जब सब मिलकर अपनी शक्ति के अनुसार जोर लगाये तो क्या जातिरूपी गाडी का पहिया अविद्यारूपी कीच में फँसा ही रहेगा। कदापि नहीं। उठो, सब मिलकर जोर लगाओ देर मत करो। काम पर डट जाओ। काम ही जीवन है। इसीसे सच्चा सुख मिलता है। यह मोक्ष का साधन है। जिन्होंने काम से जी चुराया है वे कभी भी सुखी नहीं हो सकते। उनका जीवन एक बोझा है। वे जाति व समाज के शत्रु हैं। ऐसा अवसर फिर कब होगा। परमात्मा हमारे साथ है। जाति हितैषी व बन्धुओ ! जाति शिक्षा प्रचार पर कमर कस लो। इससे बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

॥ लेखक परिचय ॥

यह व्यक्ति काश्यप गोत्रिय जैन ब्राह्मण है। अर्वाचीन अवटङ्क, कोरंटावाल नाम से सम्बोधन करते है, उसका यह कारण है कि विरात् संवत् ७० के लगभग आचार्य रत्न प्रभव सूरि के उपदेशित गौतम गौत्रिय जैन ब्राह्मण जिनका आधुनिक समय मे ओसवाल अवटङ्क से पुकारते हैं। (कम्बला विरुद्ध) दर असल रत्नाकर गच्छ से सम्बन्ध है। इसी तरह हमारे पूर्वजो को श्रीमद् आचार्य्य कनक प्रभव सूरिजी ने (कोला पट्टन) जिसको आज कोरट नगर या कोरटा कहते हैं जो ओरनपुर के समीप मारवाड़ राज्य में मौजूद है, वहाँ के निवासी काश्यप गौत्रीय ब्राह्मणो को उपदेशित कर उनका कोरंटा वाल गच्छ स्थापित किया. उस समय से लेकर सिलसिलेवार पुश्तनामें का पता न चला लेकिन सोध का सिलसिला जारी है, कोला पट्टन से निकल कर उक्त पण्डितो ने जिस कद्र ग्रामों में निवास किया, इनके पुत्र सेखरजी पु० शिवसिजी पु० वेणीदासजी, वेणीदासजी के तीन पुत्र हुए शोभाचन्दजी, दलीचन्दजी गुलाबचन्दजी. शोभाचन्दजी की स्त्री चाँदबाई तप्पा गोत्री ग्राम मेड़ता में वि० सं० १३३४ मे सन्दी हुए। पण्डित रामलालजी पहले राजगढ़ मे फिर जालोर में, वहाँ से मेरत्ता ग्राम में निवास करने लगे। जब महाराणाजी श्रीमद् उदयसिंहजी साहिब ने चित्तौड़गढ़ से आकर उदयपुर नगर वि० सं० १६१६ में आबाद करना शुरु किया, उसका संक्षेप वृत्तान्त, चित्तौड़गढ़ पर यवनों का आक्रमण रात दिन जारी

रहने मे प्रजा को निर्विघ्न स्थान मे सुरक्षित रखने का विचार था, एकबार महाराज कुमार श्री प्रतापसिंहजी के कँवर श्रीअमर-सिंहजी की मन्नत उतारने को श्री कैलाशपुरी में श्री एकलिङ्गजी महाराज आये वहाँ देवारी भीतर उन्होंने अपने विचार माफिक सुरक्षित स्थान समझा क्योंकि यहाँ चारो तरफ पर्वतमाला होने से प्राकृतिक सुदृढ़ कोट और भूमि भी उर्वरा, अच्छा जलवायु का होना निश्चय कर नगर वसाना आरम्भ किया था। वि० सं० १६८२ मे हमारे पूर्वज रूपचन्दजी ने मेरता से यहाँ आकर पोसाल बाँधी जहाँ पर पोसाल नियत की उस मोहल्ले का नाम मोतीचोहट्टा के नाम से प्रसिद्ध है, इसके प्रमाण मे एक प्राचीन सन्द का हवाला देता हूँ। 'रूपचन्दजी के चतुर्थ पुत्र लाजी नाम के थे। वे व्यकरण पाठी थे। उनके हस्त लिखित एक शिला लेख वि० सं० १७०८ का वैशाख सुद ७ गुरुवार का कैलाशपुरी मे एकलिङ्गजी के मन्दिर में दक्षिण द्वार श्री कालिका माताजी के मन्दिर के पीछे श्री गोस्वामीजी महाराज बड़े रामानन्दजी महाराज के समाधि स्थान पर आज लौ प्रशस्ति रूप में विद्यमान है, इनके सिवाय और भी राज की सन्दो से यहाँ पर रहना सिद्ध होता है, रूचपन्दजी से लेकर बसन्तिलाल, गनपतलाल का सजरा नीचे दर्ज है।

रूपचन्दजी

रामचन्दजी	अमरचन्दजी	शुभकर्णजी	वेलाजी	गोपालालजी
।	राजनगर	करेड़ा	गोविन्दगढ़	०
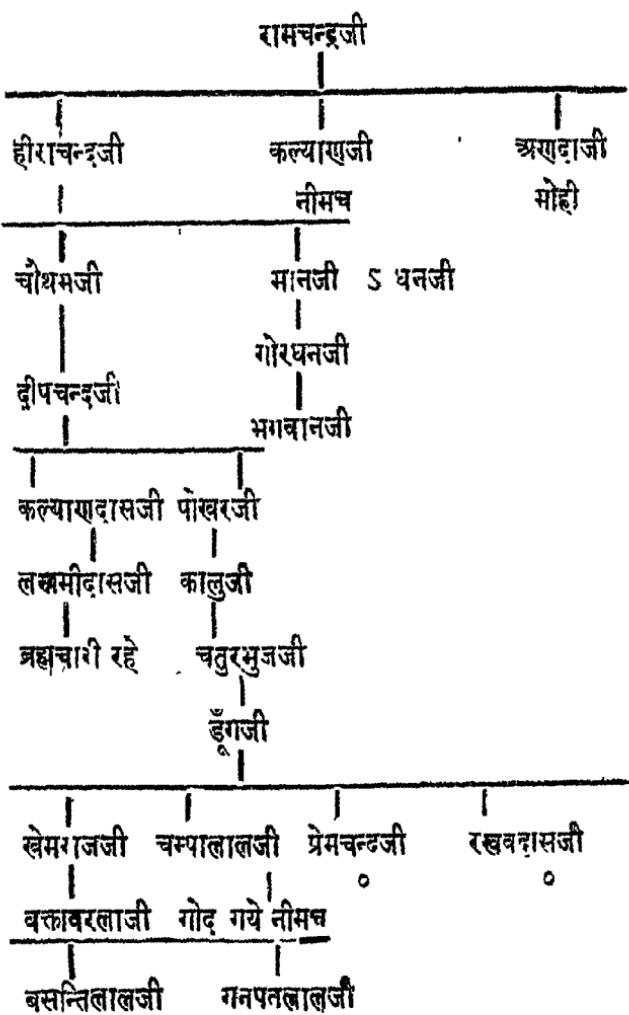
इस व्यक्ति के पिताजी का नाम खेमराजजी था। इनका जन्म समय संवत् १८६४ है। यह महाशय ज्योतिष, गणित, भूगोल, खगोल आदि शिक्षा में पूर्ण थे। इनकी तसदीक

चाहो तो महताजी राय पन्नालालजी की हवेली पर उनके कँवर फतहलालजी ने पुस्तकालय कायम किया है, उसमें उस समय के प्रसिद्ध पुरुषों के चरित्र समेत संक्षेप इतिहास के मौजूद हैं। उक्त पण्डितजी ने दो विवाह किये थे। पहला तो देलवाड़ा (मेवाड़) मे नाणावाल गच्छि भारद्वाज गोत्रीय पण्डित रतनजी के पुत्र भय्याचन्दजी की पुत्री वृद्धिवाई के साथ दूसरा विवाह नकुमई ग्वालियर साँडेर गच्छ वसिष्ठ गोत्री खुमाणजी की कन्या गेंदवाई के साथ किया। इनकी ज्योतिष विद्या की प्रखरता के विषय में मैं सिर्फ एक ही उदाहरण देता हूँ। सं० १६१४, ईस्वी सन् १८५७ मे जो हिन्दुस्तानियो के व अंग्रेजो के युद्ध हुआ जिसको गदर के नाम से प्रसिद्ध किया जाता है, इस समय राजकीय ज्योतिष पण्डितो ने भीषण रूप से युद्ध होने की घोषणा की थी लेकिन इन महाशय ने एक भविष्य वाणी लिख मारफत मोड़जी गोटा वाला के श्री जी मे नजर कराई। उक्त वाणी मे यह मजमून था "मेवाड़ में बदले लोगों की सेना आवेगा लेकिन उदयपुर से १२ कोस के अन्तर पर युद्ध होगा, और वे लोग परास्त होकर भागेंगे। व उनके घोड़े शस्त्र वगैरह सामान श्री जी मे नजर होगा। मेवाड़ को हानि न पहुँचेगा और अंग्रेजो की हुकूमत कायम रहेगा। चुनाचे यह युद्ध रूकम गढ़ के छापर में हुआ और वे लोग परास्त होकर भाग गये। सामान यहाँ नजर हुआ, वाद अमन होने के सवे भविष्य वाणीयें नजर हुई उनमें यह ठीक मिली जिस पर महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी साहब ने प्रसन्न होकर राज्य सन्मान से सन्मानित किए, याने स्वर्ण के कड़े सिरोपाव

अमरमाही पगड़ी बाँधने व डंको की पछेवड़ी बाँधने डांड़ी पहर कर रोजाना दर्बार मे आशीर्वाद देने के लिये आन का व राज मे पण्डित ज्योतिपियो में भरती करने आदि इज्जत बक्षी। इसका वृत्तान्त वि० सं० १६१४ पौष शुक्ला १२ की मिती में राजकीय कपड़ा का भण्डार व पाण्डेजी की ओवरी मे दर्ज है। बाद मे महाराणाजी श्री शम्भूसिहजी के राज समय मे राजकीय पाठशाला पण्डित रत्नेश्वरजी के निवेदन पर कायम हुई। उसका नाम 'शम्भूरत्न पाठशाला' रक्खा गया। वहाँ पर शहर के छात्र हमारे पोसाल पर पढ़ते थे उनको लेजा कर वहाँ स्थापित किए और उक्त पण्डितजी को प्रधान अध्यापक (हेडमास्टर) नियत किये। और मिस्टर इंगल साहब को सुपरिण्टेण्डेण्ट कायम किया। हमारे पोसाल पर शहर के छात्र, दिवाणादिको के पुत्र व सर्व जाति के लड़के पढते थे। वि० सं० १६२८ में इनको ग्राम का दान देना निश्चय हुआ। लेकिन यह आध्यात्मिक बल के थे तो निवेदन कराया के मै पृथ्वी का दान लेना नहीं चाहता उस पर मासिक २०) रुपये कर बक्षे और ताम्बापत्र कर बक्षा "उपर श्रीरामजी वगैरह दस्तूर माफिक सहो व भाला फिर महाराजधिराज महाराणा जी श्री शम्भूसिहजी आदेशात् माहात्मा खेमराज डूंगरसिंह का कस्य थने रुपया २०) अखरे बीस महावारी दाण का धर्मादा मे श्रीरामार्पण कर बख्स्या है सो हमेशा मिला जायगा। यो पुण्य श्री जी को है आगे मामूली श्लोक, इन महाशयो के नाम शिष्य धर्मपालन करने वालो के पात्रो का अलकाब भी वास्ते मुलाहजे के संक्षेप रूप में दर्ज करता हूँ। महता अगर चन्दजी के वंशज महता देवी चन्दजी

रुघनाथदासजी का पत्र जहाजपुर से वि० सं० १६२२ वै० सुद ७ "सिद्ध श्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा विराजमान लायक बावजी श्री खेमराजजी पेमराजजी जोग जहाजपुर से देवचन्द रुघनाथदास की वन्दना बॉचसो अठाका समाचार भला छे आपका सदा भला चाहिजे तो म्हाने परम सुख होवे आप मोटा छो पतनीक छो सदीव सूं कृपा महरवानी राखो छो ज्यूँ ही रखावसी नीका रहे सो डीला को जस राज सो हाथॉ पर आपकी माजी ने पावाँ धोग कीजो। महताजी मुरली धरजी को पत्र सं० १६२५ फागण विद ८ "सिद्ध श्री उदयपुर शुभ सुथाने सरव ओपमा लायक गुरु महाराज श्रीखेमराजजी एतान जहाजपुर थी महता मुरली धर लिखता दण्डवत वञ्चावसी अप्रञ्च॥ महता अजीतसिंहजी को पत्र बावजी श्री ५ श्री खेतराजजी सूं वन्दना वञ्चावसी आछा रेसी कृपा महरबानगी हे ज्यूँ ही रेवे अपरञ्च। महताजी पन्नालालजी सी. आई ई. "सिद्ध श्री गुरु महाराज श्री ५ श्री खेमराजजी हजूर पन्नालाल की दण्डवत मालूम होव महरबानी है ज्यूँ ही रहे। वि० सं० १६२२ का चेत बद २ इनको सं० १८८७ का पोष विद ५ सी. आई. ई. का खिताब तमगा गवर्नमेण्ट सरकार आलीये हिन्द से अता हुआ। इनके लघु भ्राता लक्ष्मीलालजी का पत्र कनेरे ग्राम से। 'सिद्ध श्री उदयपुर शुभ सुथाने सरव ओपमा सदा बिराजमान अनेक ओपमा लायक पुज्य बावजी साहब श्री १०८ श्री खेमराजजी एतान श्रीकणेरा थी सदा सेवक लछमीलाल महता लि० दण्डोत पावाँ धोग मालूम होवे अठारा समाचार श्री आपकी कृपा सुनजर कर भला है आपरा सदा भला चावे तो सेवक ने परम आनन्द होवे सदा सेवक पर सुनजर गुरु पणो है जी सूँ

ज्यादा रखावेगा। वि० सं० १६२० प्र० सावण विद ६ कटारिया महताजी बख्तावर सिंहजी वि० सं० १६२० वै० बिद ४ पत्र "सिद्ध श्री गुरु महाराज श्रीखेमराजजी सूँ महता बख्तावरसिंह जी अरज मालूम होवे। महताजी रुघनाथसिंहजी रो पत्र वि० सं० १६२६ पोष सुदी १३। 'सिद्ध श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री बावजी साहेब श्री खेमराजजी हजूर में कमतरीन रुघनाथसिंह की दण्डवत मालूम होवे। उमरावा में देलवाड़ेराज राणा फतह-सिंहजी को रुको—गुरुजी खीमराजजी सुराणा फतहसिंह को पावाँ लागणो बाँचजो। इन पण्डितजी का परलोकवास वि० सं० १६३० का श्रावण शुक्ला १ को ३६ की आयुष्य मे हुआ इन महाशयो ने अपने अन्तकाल की तिथि से एक वर्ष पूर्व एक टीप लिखी कि वि० सं० १६३० का श्रावण शुक्ला १ क दिन मेरा शरीर छूट जावेगा और दूसरी टीप मे यह दर्ज किया कि बि० सं० १६३१ का आश्विन कृष्णा १३ के दिन श्री जी भी स्वर्गवास पधार जावेगा। चुनाचे श्रावण सुद १ के दिन का शरीर छूट गया। यह हाल श्री रावजी रावबहादुर बख्तसिंहजी बेदला ने श्री जी से अरज किया उस पर कलमदान में से टीपे निकाल मुलाहजे फरमाई गई और फरमाया कि आज खेमराज जैसा ज्योतिषी मेवाड़ मे से उठ गया श्रीएकलिंगजी की मरजी है-महाराणाजी श्री जी शम्भू सिंहजी जी. सी. एस. आई का जन्म वि० सं० १६०४ पौष कृष्णा १, राज्याभिषेक वि० सं० १६१८ का सुद १५ स्वर्गवास सं० १६३१ का आश्विन कृष्णा १३ हुआ।

(बख्तावरलाल का जीवन चरित्र)

इस व्यक्ति का जन्म विक्रम संवत् १६२३ का आषाढ़ कृष्णा १२ सोमवार को हुआ दो वर्ष के बाद मातेश्वरी का परलोक वास होगया, और सात वर्ष की आयु में पिता भी परलोक वास कर गये। इस संकटमय अवस्था का समय श्रीमान राय पन्नालालजी सी. आई. ई. प्रधान रियासत मेवाड़ व इनके भ्रातागणों व श्रीमान महताजी बख्तावरसिंहजी व उनके सुपुत्र कँवर गोविन्दसिंहजी की सहायता से व्यतीत हुआ। इस बाल्यावस्था में उस जमाने मुआफिक सामान्य पढ़ाई की गई। वि० सं० १६३६ का आसाढ़ मास में राज श्रीमहक्मे खास में बजुमरे अहलकारों में मुलाजिम हुआ। वि० सं० १६-४२ का मृगशीर्ष मे पहला विवाह कांकरोली मे ओसवाला अवटंकी गौत्तम गौत्री नाथूलालजी की कन्या से हुआ। इनसे बसन्तीलाल का जन्म वि० सं० १६४६ में हुआ। इनका अन्तकाल वि० सं० १६५७ में होगया। फिर दूसरा विवाह ग्राम करेड़ा राजाजी का में गौतम गौत्री ओसवाल अवटंके रामचन्द्रजी की कन्या से हुआ। इनसे एक बाई हुई और वि० सं० ६८ में इनका इन्तकाल होगया। तब फिर तीसरी शादी चाणसमा ई. बड़ोदा गुजरात में पुनम्या अवटंक के मढर गौत्र में पं० ताराचन्दजी की कन्या से हुई। इनसे गनपतलाल का जन्म वि० सं० १६७० का मृगशीर्ष शुक्ला ६ बुधवार के दिन हुआ पिताजी का परलोक वास वि० सं० १६३० में हुआ था। उस अरसे में ब्यो २०) मासिक ताम्र पत्र के मिलते थे

वह दाणां दारोगा ने देना बन्द कर दिया उस पर यह तनख्वाह पीछी मेरे नाम पर साबित कराने का हुक्म होने के लिये राज श्रीमहक्मे खास में दरख्वास्त दी। उस पर महेक्में मौसूफ से असल महक्में माल में भेजी जावे के बदस्तूर सायल ने देवाबता रहे, मसरखा भाद्रपद शुक्ला ४ वि० सं० १९२० हु. नं. ३१३ हुआ और महक्में माल स हु० नं० ११३ भा० सु० ८ सं० १९३०, नकल वास्त तामील हुक्म महकमे खास के दा-रोगा दाणा पास भेजी जावे। इस पर तनख्वाह पीछी मिलनी शुरू होगई। पिताजी के इन्तकाल के १२ दिन बाद कपड़ा के भण्डार से सफेद पाग आई वह बाँधकर श्रीजी में आशीर्वाद देने गया तो नजर करने बाद महताजी पन्नालालजी ने अर्ज किया के "यो क्षेमराज को बेटो है अरहका आपको श्रीजी इज्जत बख्शी वी माफक उत्तर कार्य्य करनो भी जरूरी है और इं के सिवाय इं के पिता के सरकारी दुकान का करजा ५००) व्याजु है। यो जो बालक है। वी पर श्रीमहाराणाजी श्रीशम्भू-सिंहजी ने आज्ञा बख्शी के उत्तर कार्य्य के लिये तो ५०१) नकद और करजा छूट किया जावे। उसकी तामील होकर ५०१) नकद मिले। जिसे ब निगरानी महता बखतावरसिंहजी उत्तर क्रिया में द्वादशा किया जाकर जाति में १) एक कल्दार रुपे की दक्षिणा दी गई। फिर महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज्य समय मे रियासत का बजट बान्धा गया। उसमें यह तनख्वाह धर्म सभा कायम कर कुल धर्म खाता उसके तालुक किया गया। उस समय २०) के बजाय १०) माहवार कर दिया गया। उस का हाल व पंडित ज्योतिषियों में नाम दरज होने का हाल साबित

का वहीड़ा जो राजश्री महक्में खास में खास श्रीजी हजूर के दस्तखतो का है उसमें दर्ज है। वि०सं० १६४५में करनल सी. के. एम. वाल्टर साहब बहादुर एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना मु० आबू ने एक सभा वास्ते कायदा राजपूत सरदारों के राजपूताना में अपने नाम से कायम की । चुनाचे उसकी शाखा उदयपुर में भी कायम हुई वि. सं० १६४६ उसमें मेम्बर सर्दार इस मुआफिक मुकरिर हुए। बेदले राव बहादुर रावजी तख्तसिंहजी व रावतजी जोधासिंहजी सलूम्बर, देलवाड़े राज राणा फतहसिंहजी राय बहादुर, व महताजी राय पन्नालालजी सी. आई. ई. मेम्बर व सेक्रेटरी व महामहोपाध्याय कविराज शामलदासजी, व सही वाला अर्जुनसिंहजी, व पुरोहित पद्मनाथजी, व राव वख्तावरजी, यह आठ मेम्बर मुकर्रि हुए । इस सभा में तरक्की देकर महताजी मौसूफ ने इस व्यक्ति को महक्मे खास से यहाँ बदली करदी । फिर वि० सं० १६४७ में झालावाड़ में झाड़ोल व ठीकाने मादड़ी के दरमीयान मौजे अदकालिया के वराड़ का तनाजा था, उसकी तहकीकात पर भेजा गया। साथ में सवार, पहरा, ऊंट, चपरासी हरकारा घोडा था। वहां तहकीकात करता था उस समय राजश्री महक्में खास से रु० नं० ११७३ मवरखा चेत सुद १४ वि० सं० १६४७ 'सिद्धश्री श्री वख्तावरलालजी महात्मा जोग राज श्री महकमे खास लि. अप्रंच' सादिर हुआ, और भी राज के महक्में जात व अदालतों की तहरीरें इस माफिक जारी हैं। अदालत सदर दिवानी, मुन्सफी व पुलिस वगेरा से "सिद्धश्री महातमाजी श्रीवख्तावरलालजी योग्य । वि० सं. १६५८ में वास्ते फैमाइस

कानून सभा तमाम इलाके मेवाड़ में दौरा किया। साथ में सवार पहरा, ऊँट, घोड़ा, सांढ़िया, चपरासी वगैरा थे। उस समय में ठिकाने उमरावान में से फोजदार कामदारी की तहरीरात इस माफिक हुई मसलन बेगम "सिद्धश्री मुकाम बेगम सुभसुथाने सर्व ओपमा बावजी श्री वख्तावरलालजी अन्डर सेक्रेटरी वाल्टर कृत राज पुत्र हित कारिनी सभा बेगू से रावतजी श्री सवाई मेघासिहजी का फौजदारां कामदारां लिखता जुहार वांचसी। अठाका समाचार श्रीजी की कृपाकर भला है। राज का सदा भला चाहिजे राज म्हारे घणी बात है। सदा हेत इकलास है ज्यूं ही रखावसी अप्रंच"। ठिकाने हमीरगढ़ "सिद्धश्री महात्मा-जी श्री वख्तावरलालजी जोग हमीरगढ़ थी रावत श्रीमदनसिंहजी लिखता जैश्रीएकलिंगजी की वांचसी। अठाका समाचार श्री-जी की सुनजर कर भला है। राजका सदा भला चाहिजे। अप्रंच"। ठिकाना बोहड़ा से "सिद्धश्री मुकाम दौरा सुभसु-थाने सरव ओपमा जोग बावजी श्री वख्तावरलालजी जोग बोहड़ा थी रावतजी श्री नाहरसिंहजी लि० जुहार वांचसी। अठाका समाचार श्रीजी की सुनजर कर भला है राज का सदा भला चाहिजे अप्रंच। ठिकाने लूणदा "सिद्धश्री मुकाम लूणदा सुभसुथानेक सरव ओपमा जोग बावजी श्रीवख्तावरलालजी जोग लूणदा थी रावतजी श्री जवानसिहजी लिखता जुहार वांचसी अठाका समाचार श्रीजी की सुनजर कर भला है। राजका सदा भला चाहिजे। अप्रंच। रूपाहेली वड़ी "सिद्धश्री श्रीराजश्री वाल्टर कृत राज पुत्र 'हितकार नी सभा का अन्डर सेक्रेटरी श्री यख्तावर लालजी महात्मा जोग रूपाहेली कला से राजश्री

चन्द्रसिंहजी लि० जुहार बंचावसी अठाका समाचार भला है राज का सदा भला च.वे।

ठिकाणा सगरामगढ़। सिद्ध श्री भाई जी श्री बखतावर लालजी जोग सगरामगढ़ से रावतजी श्री सुजाण सिंहजी लि० जै श्री चतुर्भुजज री वंचावसी अपरञ्च। ठि० तलोली। सिध श्री मुकाम तलोली शुभस्थाने सर्व ओपमा भाई जी श्री वखतावर लालजी महात्मा जोग तलोली थी राज श्री वेरीसालजी लि० जुहार वंचावसी अठाका समाचार श्रीजी की सुनजर कर भला है राज का सदा भला चाहिजे। अपरञ्च

ठि० भिण्डर पर मुन्सरमात थी वहाँ से सिध श्री वावजी श्री बखतावर लाल जी जोग सरीस्ते मुन्सरमात ठिकाने भिण्डर मे अक्षयसिंहजी अपरञ्च। अदालत जिला गिरवा से सिध श्री बावजी वखतावरलाल जी महात्मा जोग लि० महता तख्तसिंहजी अपरञ्च। इसी मुवाफिक अदालत कपासन से महता जी उदयलाल जी की। श्रीमान् महता जी श्र राय पन्नालालजी सी. आई. इ. वावजी श्री वखतावर लाल जी, वनेड़ा राजकुंवरअक्षयसिंहजी (महात्मा वावजी) अ मेर सभा का जलसा मे उदयपुर की तरफ से मेम्बर उमरावो मे पधार मसलन बेदला, देलवाड़ा, कानोड़, वैसे ही वि० सं० १६४८ में सर्दारगढ़ ठाकुर मनोहर सिंहजी पधारया लारा अह-लकार यह व्यक्ति भेजा गया सो वहाँ से उक्त ठाकुर साहब ने महताजी श्री राय पन्नालालजी सी. आई ई. योग्य। अब के साल अजमेर वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा का जलसा

मे न्हारो जावो हुयो और।साथ में राज वखतावरलालजी ने भेज्या सो आछा होशियार अहलकार है इन्होने कहे मुजब अच्छी तरह सूँ काम दीदो जी सूँ राजी रहें। वि० सं० १९४७ में कविराज शामलदास जी की बाई की शादी जोधपुर कविराजा मुरारदानजी के कँवर गणेशदानजी के साथ वि० सं० १९४७ में मौजा ढोकल्या ग्राम में हुई जी मोका पर वास्ते इन्तजाम सभा की तरफ से इस व्यक्ति को भेजा सो खुशनुदि की चिट्ठी। सिध श्री राय जा महता जी श्री पन्नालालजी योग्य लि० कविराज शामलदास अपरञ्च वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा उदयपुर की तरफ से वखतावर लालजी ने म्हारी बाई का विवाह में त्याग वगैरह प्रबन्ध सारु भेज्या सो यहाँ सब प्रबन्ध बहुत आछो राख्यो और कायदा मुताबिक करवाई करवा मे अव्वल दर्जा का होशियार अहलकार है। सभा में मेरी तरफ को शुकरियो अदा करा देवें।

सरदारगढ़ ठाकुर साहब मनोहर सिंहजी रुक्को बच्यो—सिध श्री गुराजी वखतावर लालजी। अपरञ्च इसी तरह दूसरा ठाकुर साहब श्री सोहनसिहजी। बाबजी श्री बखतावर लालजी। बनेड़े छोटा कँवरजी रामसिहजी (जनाबन) कानोड़ से कुंकुपत्री। सिध श्री उदयपुर शुभस्थाने महात्मा श्री वखतावरलालजी जोग कानोड़ थी रावतजी श्री केशरीसिंहजी लि० जे श्रीलक्ष्मीनारायण जी की बाँच जो अठाका समाचार श्री लक्ष्मीनारायण जी की कृपा सु भला है थांरा भला चावे। अपरञ्च। इसी तरह ठिकाणा देलवाड़ा सु कुंकु पत्री। सिध श्री उदयपुर शुभस्थाने सर्व ओपमा महात्मा श्री वखतावरलाल जी जोग देलवाड़ा से

राज राणा श्री खुमाणसिंहजी लि०

वंचावसी अठाका समाचार श्री रणछोड़ रायजी की कृपा कर भला है आपका सदा भला चावे तो म्हारे घणी बात है आप सिवाय दूजी बात नहीं। अपरञ्च वि० सं० १६६६ पोप काँकरोली थी स्वस्तिश्रीमद्गोस्वामीनि श्रीमौन्दर्य्यवती भाभीजी महाराज ना स्वकीयेपु हरिगुरु सेवा परायणान्तः करणेपु परम वैष्णवेपु श्री २ व वजी श्री वखतावर लालजी महात्मा सपरिवारेपु शुभाशीशाँराशयः शुभ इत्र सन्तु शमिह तत्रस्तु श्रीश कृपया। सर्वदा श्री .... सेव्यः ममर्त्तव्यश्च वि० सं० १६६४ कार्तिक कृष्ण ५ रविवारे। श्रीमान् महताजी फतहलालजी साहब का रुक्का आदि ओल—बाबजी साहब श्री वखतावर लालजी वि० सं० १६६७ आसोज सुद १३। आबू से जनरल सक्रेटेरी सभा का बाबू गोविन्द प्रसाद कौशिक का पत्र। मुकर्रमव मं अजस बन्दा शरीफ जनाब बाबु वखतावरलाल जी साहब जाद इनायत हूँ बाद तसलीम आँके,वेदला राव वहादुर रावजी श्रीकरणसिंहजी का आदि ओल का-(श्री वखतावरलालजी महात्मा योग्य वि०सं० १६५४ आय) सभा का जलसा में सर्व राजपूताना की रियासतो से बड़े २ सरदार मेम्बर पधारते हैं। सन् १६०२ मे ठिकाणे शाहपुरे से भी मेम्बर बड़े साहब बुलाये गये इस जलसे मे कानोड़ रावत नाहरसिंहजी व यह व्यक्ति गये वक्त जलसे इस बात का एतराज किया गया के यह मेम्बर शरीफ जलसे नहीं हो सकते वगैरह २ फिर दूसरे वर्ष भी मेम्बर बुलाये गये तो रावतजी साहब कानोड़ ने रिपोर्ट पर दस्तखत न किये और मेम्बरान शाहपुरा भी शरीक न किये गये उस पर साहब

एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल आबु ने एतराज फरमाया कि "यह कारवाई मोतमिदान रियासत ने अपने मन मकशूद की है या रियासतो के हुकूम से जबाव लिखे। चुनाचे इस व्यक्ति को हुकूम बख्शा गया के जैपुर, जोधपुर, कोटा वगैरह रियासतों में जाकर एक सम्मति का जबाव लिखनेकी कारवाई करे सो हुक्म मुवाफिक कोटे महारावजी साहब श्री उम्मेदसिहजी की हुजूर में मारफत कनाड़ी राज साहिब विजयसिंहजी के हाजिर हुआ।

इसी तरह जयपुर श्रीमद् महाराजाधीराज श्रीसवाई माधौसिहजी साहब की हुजूर में प्रोहित विजेलालजी की मारफत बाबूजी कान्ती चन्द्रजी से सब सरोगुस्ताअर्जे कराई। वहाँ से अलवर विजवाड़ ठाकुर माधौसिंहजी की मारफत श्रीमान् अल-वराधीश की हुजूर मे व बाद में जोधपुर व हमराह कविराजा मुरारीदानजी पण्डित सर सुखदेव प्रसादजी से मिलकर सर्व सम्मति से जबाव लिखाये गये आखीर कार बड़े साहब ने कुल रियासतो के जबाबात मुलाहजा फरमाकर यह तजबीज फरमाई के 'चूँके साहब ममदुह का मकसद इस बड़ी उलफती इनलाह राजपूताना में बिला मजाहमत तरक्की होती रहने का जादेतर दिल नशीन है के जिसका जरिया वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणि सभा में और जो सिर्फ एक मिल्ली कारवाई जुमले मुतलकीन से हासिल हो सकती है, साहब ममदुह दस्तु साबीका मे सन् १६०३ के पहले अमल था एतराज करना नहीं चाहते इसके लिए इसी इन्तजाम पर अमल दरामद रहेगा' इतला इसकी साहब रेजिडेण्ट बहादुर मेवाड़ ने जरिये खत मवरखा

३ सितम्बर सन् १९०४ इस्वी राज श्री महक्मा खास मे दी। राजश्री महद्रु बनेड़ा ने अपने ठिकाने के कुल कार्य्य पर व मसाहरे १००) महावार पर वि० सं० १९६१ में रक्खा। राजा साहब अक्षयसिंहजी के इन्तकाल होने पर कैद खालसा पर महता जसवन्तसिहजी व यह व्यक्ति भजा गया–तलवार वन्दी का रुक्का हस्ब दस्तूर लिखवा कर नजर कराया गया। ऐसी वैसी तुच्छ सेवा पर श्रीमान् श्रीमहाराजाधिराज महाराणाजी श्री सर फतहसिंहजी साहब बहादुर के चरणारविन्दो से प्रसन्नता होकर १०००) रु० खास खजाने से वि० सं० १९६६ का सावण सुद ४ को पारितोषक बक्षा गया। वि० सं० १९६७ में ठिकाणे देलवाड़ की मुन्सरमात पर भेजा गया वि० सं० १९७६ में जाति के छात्रों का बोर्डिंग अपने मकान पर खोला विद्याध्ययन के लिये। उक्त विद्यार्थियों द्वारा जैन संस्कार विधि से विवाह सेठ रोशनलालजी की बाई का नागोर लोढो के यहां स० १९७६ में हुआ व इसी तरह इसी संवत में मगसीर सुद १५ मदनसिंहजी खाब्या बी. ए. इन्सपेक्टर स्कूल की बाई का विवाह प्यारचन्दजी वरड़िया के साथ हुआ वगैरह २ व सिंघपुरा ग्राम में मन्दिर का ध्वजा दण्ड व प्रतिष्ठा भी यतिवर्य अनोपचन्दजी का अध्यक्षता में इन छात्रों से जैन विधि से कराई वि सं. १९९२ में पहला व दूसरा सम्मेलन १९९३ में जाति एकता के लिये अपने मकान पर उदयपुर में किया गया। फिर वि. सं. १९९४ में तीसरा सम्मेलन मीना इलाके अजमेर में आचार्य जी महाराज श्रीविजयचन्द्रजी की अध्यक्षता में व मुकाम भणाय हुवा उसमें मेवाड़, मारवाड़, मालवा, अजमेरा के दर्शनीय महात्मा व श्रीमान् भट्टारक जी महाराज प्रताप राजेन्द्र सूरि जी मयलवाजमा

के पधारे ,वहां पर इस व्यक्ति को इतिहास जाति का बनाने के एवज यह अभिनन्दन पत्र दिया (मानपत्र) अखिल भारत वर्षीय तृतीय महात्मा सम्मेलन भणाय की तरफ से 'श्रीमान् जाति भूषण पण्डित प्रवर विद्या वारिधि वखतावरलाल जी सा० महात्मा उदयपुर की सेवा में । महा भाग ! आप वयो वृद्ध हमारी जाति की सच्ची सेवा करने वाले हैं । आपने अपने जीवन में महात्मा जाति की नाना अनुपम सेवाएँ की । गिरती हुई जाति का उत्थान किया जाति का अन्धकार हटा कर उसे प्रकाश प्रदान किया ।

आप बड़ विद्वान, अनुभवी, योग्य और सर्वोपरिमान्य है । इतना ही नही किन्तु घोर परिश्रम कर इतिहास निर्माण कर जाति की गौरवता को प्रकाशित कर विश्व में प्रकाश फैलाया है । इन उपरोक्त कार्य से महात्मा जाति को हार्दिक हर्ष है । यह जाति आपके इस उपकार की पूर्ण आभारी है और आपके इन महान कार्यों को हृदय में स्थान दे आपकी आजीवन ऋणी रहेगी । ईश्वर आपको चिरायु बनावे जिससे जाति का गौरव दिन प्रति दिन आपके द्वारा द्वितिया के चन्द्रवत् वृद्धि करता रहे । हस्ताक्षर महाराज प्रताप राजेन्द्र सूरिजी व आचार्य विजय चन्द्र सूरिजी व सर्व सज्जन महात्मा ।

इस व्यक्ति को वि. सं. १९९९ में पेन्शन मिल गई । यह व्यक्ति अपने जीवन में निम्न लिखे राजा महाराजाओं की सेवा में उपस्थित हुआ । श्रीमद् महाराणाजी शम्भूसिंहजी साहब व महाराणाजी सज्जनसिंहजी साहब व महाराणाजी व श्री सर फतह-सिंहजी साहब व हाल श्रीजी हुजूर भोपालसिंहजी साहब बहादुर मेदपाटेश्वर के चरणों में व इलाके गैर के रईस श्रीमद् महारजा

साहिब जयपुर माधौसिहजी साहब कोटे महारावजी साहब श्रीउम्मेद सिहजी सा. व रावलजी श्रीउदयसिंहजी साहब डूँगरपुर.काठियावाड़, सौराष्ट्र देश के नृपति, पोरबन्दर राणाजी श्रीमद् नटवर सिंहजी व जामनगर व राज कोट राव लाखाजी व निम्बडी, वढवाण, भाव-नगर, गोडल, व छोटा उदयपुर, बारीया, मालवा, देश के राजा सितामहु व सेलाणा आदि।

—:लेखक के जेष्ठ पुत्र वसन्तीलाल का जीवन चरित्र:—
इस व्यक्ति का जन्म वि. सं, १९५९ का फाल्गुन कृष्णा ५ को हुआ। इसका प्रथम विवाह भीलवाडे मे अग्नि वैश्यायन गोत्रिय कन्दरमा अवटक के पं० पन्नालालजी की भतीजी से हुआ। दूसरा विवाह पण्डित मूलचन्दजी कन्दरसा भीवलाडा की कन्या के साथ हुआ।

विद्या का हाल

पहले महाराणा हाईस्कूल उदयपुर मे भरती हुआ वहाँ पर मेट्रिक पास होकर सन् १९१५ इस्वी मे इन्दौर किंग एड-वर्ड स्कूल में डाक्टरी पढ़ने के लिये भरती कराया गया वहाँ सन् १९१९ में पढ़ाई खतम कर कॉलेज ऑफ फीजीशियन एण्ड सर्जन मे परीक्षा देकर एल, सी, पी, एण्ड एस की पदवी प्राप्त की। पढ़ाई के समय में मऊकी छावणी मे इन्फ्लून्जा की बिमारी जोरो पर चली उसको मिटाने के हेतु इनको इन्दौर स्कूल से मऊ की छावनी डाक्टर मुकरर करके भेजा गया। वहाँ की कार्रवाई पर खुश होकर वहाँ के आफिसरो ने निम्न लिखित

खुश-तुदि के पत्र दिये- सार्टिफिकेट केपटिन पोवेल रोयल आरमी मेडिकलकोर— मेडिकल आफिसर केन्टोमेन्ट अस्पताल छावनी मउ वाके ता० ६-११ सन् १६१८ ई. " मिस्टर बसन्तीलाल ने इन्फ्लून्जा की बीमारी में मउकी छावनी में महनत व इमानदारी के साथ मेरे इतमीनान के मुवाफिक काम किया" दूसरा सर्टिफिकेट लेफटिनेन्ट कर्नल बर्न मेजीस्ट्रेट केन्टुमेन्ट छावनी मउ ता. ६-११ सन् १६१८ ई."मिस्टर बसन्तीलाल राज महोल्ला वगैरा छावनी मउ के बीमारों की दवाईयाँ दी उसने कदर करने काबिल काम किया और अब मउकी छावणीमें जो बिमारी इन्फ्लून्जा बहुत कम होगई है वो मिस्टर बसन्तीलाल व उनके साथियो का नतीजा है। बाद पास होने के बड़ौदे हौसपिटल में मुकरर हुआ। वहाँ की आब हवा मुवाफिक न होने से बागली स्टेट ग्वालियर में मेडीकल अफसर मुकरर हुआ वहाँ से नौकरी छोड़ उदयपुर में अपनी पोशाल पर 'महावीर मेडिको सरजिकल हॉल' नामी हास्पिटल खोला वहाँ की कार गुजारि के दो एक सर्टिफिकेट की नकल ले देता हूँ। जैसाकि:—

सर्टिफिकट अज तरफ महता फतहलालजी सुपुत्र महताजा राय पन्नालालजी सी. आई, ई दीवान रियासत "मैं महावीर मेडिकल सरजीकल हाल" को देखने गया जो डाक्टर बसन्तीलालजी महात्मा एल, सी, पी एण्ड एस के हस्तगत बहुत अच्छा काम होरहा है। और जिनकी सहानुभूति और चिकित्सा के बारे में मैं बहुत सुन चुका हूँ मुझे भी इनकी मदद की जरुरत पड़ी थी और यह लिखते हुये मुझे बड़ी प्रसन्नता होती

है कि जो कुछ भी मैंने सुना था वो बिलकुल सत्य निकला। सिर्फ शहर में ही इलाज नहीं करते, गावों में भी जाते है। मुझे इस बात को जानकर बड़ा आनन्द हुआ कि यह अपनी चिकित्सा मे आयुर्वेदीय औषधिया भी काम में लेते हैं और स्वयं बनाने का कष्ट उठाते है। मैं इनकी हर बात मे सफलता चाहता हूँ।

इनसे मेरा सम्बन्ध थोड़े ही दिनों का नही है लेकिन कई पुश्तो से चला आरहा है। मैं ५०) रु० गरीबो को दवा मुफत बाटने के लिये भेट करता हूँ। तारीख १५-८-१९२६ ई.

द. महता फतहलाल

सर्टिफिकेट डाक्टर एस. एच पण्डित डी. ओ. एम. एस इङ्गलेण्ड एम. एस, बोम्बे ता० २६—११—२६ ई. 'ये महाशय महाराणा साहिब श्रीयुत् फतहसिंह जी के नेत्रों का इलाज करने आये तब स्वयं अस्पताल मे आकर निरीक्षण करके दिया':—

'डाक्टर बसन्तीलाल से उदयपुर मे फिर से मिलने से बहुत खुशी हुई जिनको मैं बहुत बरसो से विद्यार्थी व डाक्टरी की हालतों में बखुली जानता हूँ, हिन्दुस्तानी व अंग्रेजी दोनो तरह की चिकित्सा को ठीक तरह से जानते है इनको आयुर्वेदिक पद्धति के अनुसार इलाज करने का बहोत शोक है और यहाँ की जनता की जरुरीयात को पूरी करने के लिये ये पूरी २ कोशिश करते है, यह हर एक विषय मे अच्छा शोक रखते है और मुझे पूरी उम्मेद है कि यह अपनी महिनत व दील-चस्पी के कारण एक अच्छे चिकित्सक की शोहरत हासिल करलेगे अब

भी थोड़े समय में ही अच्छी ख्याति प्राप्त करली है। मैं अपने तेहदिल से इनकी तरक्की चाहता हूँ और मुश्किल से मुश्किल बिमारियों में इनका इलाज करने के बारे में खातरीके साथ सिफारिस करता हूँ और रोगी इनके जेर इलाज में सही सलामत रहेगा। फक्त्—

सर्टिफिकेट चीफ मेडिकल आफिसर मिस्टर छगननाथजी साहिब ता० २४ ओकटोम्बर सन् १९२७ ई. 'मेडिकल हाल जो कि डाक्टर साहब बसन्तीलालजी महात्मा उदयपुर वाले चला रहे है उसका निरीक्षण करने में मुझे बड़ी खुशी हुई। यह उदयपुर की जनता के विश्वसनीय हो गये है। और खासकर आयुर्वेदीय और पाश्चात् मेडिकल साइन्स को काम में लाते है। मैंने कई ऐसे कठिन रोगियों के बारे मे सुना है जिनको इन्होने सफलता से आराम किया। यह प्रसिद्ध है, और शान्ति और मुस्तेदी से काम करने वाले है। और गरीब और अमीर का एक तरह से इलाज करते है। मैं इनकी हर एक कार्य में सफलता चाहता हूँ"

डाक्टरी के इलाज के बारे में श्रीमान् सेठ रोशनलालजी चतुर उदयपुर में नामी ग्रामी सेठ है उन्होंने सर्टिफिकेट दिया।

(पार्श्व जिन प्रणम्य ता.६—१२—२७ ई.)

जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय में महात्मा लोग कुल गुरु के नाम से मशहूर है कदीम जमाने से जैन श्वेताम्बर समाज में सौलह संस्कार कराते है उनमें वृतारोप संस्कार तो त्यागी

बैरागी कंचन कामीनी के त्यागी महा पुरुष कराते है, इनके वंश में महाराज वख्तावरलालजी का वश बहोत उत्तम है। कुल परम्परा की विद्या याने वैदिक ज्योतिष वगैरा परम्परा से चले आते है। महाराज वख्तावरलालजी महाउग्र हुवे है उन्होंने आधुनिक जमाने मुआफिक अपने पुत्र रत्न वसन्तीलालजी सा. के उंचे दर्जे की डाक्टरी परीक्षा पास कराई आप हाल में शहर उदयपुर में अपनी प्रेक्टिस खूब जोर शोर से उत्तमता के साथ कर रहे है शहर के लोगो को आपके उपर पूरा भरोसा है आप के हाथ में वस्फ भी एसा ही है कि जिस किसी का इलाज करते है उसमें आपको यश ही मिलता है। वल में हमारे एक स्वधर्मी बन्धु लालचन्दजी वल्द मूलचन्दजी राठोड ओसवाल बडे साजन मुकाम आना जिला वानेपाव (मारवाड़) के रहने वाले के पैर में चोट लगने से तकलीफ ने ऐसा भयंकर रुप धारण किया कि अर्सा ३। सवातीन वर्ष का होगया सैकडो इलाज मारवाड व खास उदयपुर के अस्पताल व दूसरे वैद्य डाक्टर हकीमों के कराये लेकिन कुछ फायदा न हुआ अर्सा सात महीने से डाक्टर साहिब का इलाज रहा उनके फर्माने माफिक एहतियात रक्खा गया डाक्टर साहिब की मेहरबानी से व शाशन देव की कृपा से लालचन्द के बिलकुल आराम है। लालचन्द डाक्टर साहिब को बहोत तारीफ करते है मैं डाक्टर साहब को बहुत २ धन्यवाद देते हुए शासन देव से प्रार्थना करता हूँ के डाक्टर साहब को ऐसे २ जटिल केसो को तैयार करने की सामर्थ्य देवे और डाक्टर साहब की दिन दुनी रात चोगुनी आर्थिक व शारिरिक व कोटम्बिक उन्नति देवे और

अपने स्वधर्मी बन्धु जैन श्वेताम्बर समाज को कभी नहीं बिसारे और जगत पिता भगवान् श्री १००८ श्री महावीर स्वामी जी के वचनों पर अटल श्रद्धा रक्खे ज्यादा क्या लिखू बस डाक्टर साहब को दीर्घायु करें।

रोशनलाल चतुर वाइस प्रेसीडेन्ट वा आनरेरी मजिस्ट्रेट म्युनिसिपल बोर्ड उदयपुर

ओं अर्हम्

अभिनन्दन-पत्र

श्रीमान डाक्टर साहब बसन्तीलालजी महात्मा (एल. सी. पी.एण्ड एस) अधिष्ठाता महावीर मेडिकल सरजीकल हाल उदयपुर मेवाड़ महाशय ! आपने आपकी सज्जनता सहृदयता और साधु भक्ति का जो परिचय इस वर्ष में हमें दिया है इसके लिये यह अभिनन्दन-पत्र देते हुए हमें अति हर्ष होता है। महोदय हमारे सद्भाग्य से इस चतुर मास में विराजमान जगत्-प्रसिद्ध स्व. शास्त्र विशारद, जैनाचार्य्य श्री विजय धर्म सूरिजी महाराज के विद्वान व प्रसिद्ध शिष्य मुनिराज श्री विद्या विजयजी शान्ति मूर्ति मुनिराज जयतविजयजी आदि मुनिराजों के स्वास्थ्य-सम्पत्ति को संभाल रखने के लिये केवल गुरु भक्ति से जो परिश्रम आपने उठाया है इसके लिये हम आपको धन्यवाद देते हैं।

दुःख की बात है कि पुज्यपाद शांत मूर्ति मुनिराज श्री-जयन्तविजयजी की तबीयत अच्छी नहीं रही बल्कि सख्त बिमारी का कष्ट महीनों तक उठाना पड़ा। परन्तु अपने उनकी बिमारी में समय २ पर औषधि प्रदान करके एव परामर्श देकर के गुरु भक्ति का जो लाभ उठाया है इसके लिये हम विशेष रुप से आपको धन्यवाद देते हैं।

महात्मन् !

हमें इस बात का अति हर्ष है कि आप उस जाति मे उत्पन्न होने वाले महानुभाव है जो कि हमारे कुल गुरु के नाम से प्रसिद्ध है। आपने इस जाति मे न उत्पन्न होकर पवित्र जैन धर्म पर पूर्ण श्रद्धा रखते हुए डाक्टरी एवं आयुर्वेदिक की विद्या में कुशलता प्राप्त करके महात्मा जाति का गौरव बढ़ाया है इससे हमे और हर्ष होता है।

हम अंतःकरण से श्रीशाशन देव से प्रार्थना करते है कि आपके द्वारा आपकी जाति से खूब विद्या का प्रचार हो और आपकी जाति पुनः विद्या सम्पन्न होकर आपके मुवाफिक देव गुरु धर्म की सेवा करने के लिये सामर्थ्य प्राप्त करे।

उदयपुर मेवाड़ वीर संमत २४६२
वि. सं. १९९२ ता० ३०-११-३५
पोष सुदि ४ सोमि.

श्रीजैन श्वेताम्बर
महासभा

यह अभिनन्दन पत्र, उक्त मुनिराज की उपस्थिति मे जैन श्वेताम्बर सराय मे २००० जन समुदाय की सभा में श्रीमन्त

पण्डित प्यारेकिशनजी साहब कौंसल मेम्बर राज श्री महद्राज सभा के हस्ते से पुष्पहार पहनाकर, चांदि के चौकट में जड़ा हुआ दिया।

मेवाड़ प्रथम श्रेणि के सुभट श्रीमान् रावतजी साहब श्री विजयसिंह जी देवगढ़ (देव दुर्ग) मेवाड़ का सर्टिफिकेट:—

डाक्टर बसन्तीलालजी उदयपुर वाले और उनके कुटुम्ब से मेरी गत कई वर्षों से अच्छी जानकारी है और यह डाक्टरी की हैसियत से इनकी बड़े २ आदमी और सरदार बड़ी प्रसंशा करते है। मेरी पुत्री के विवाह के अवसर पर इन्होंको विवाह के महमानों का और बरात को सम्भालने के लिये बुलाया था और इनके बर्ताव और इलाज से सन्तोष होने से मैंने इनको बार बार मेरे दामाद रावत सर रावतजी साहब और कुटुम्ब के मनुष्यो के इलाज के लिये बुलाये इन्होंने हरेक मामले में पूरा सन्तोष दिया, यह शान्त और इच्छुक कार्य करने वाले है और इनको अपने पेशे में पूरी जानकारी है। मैं इनकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ और दूसरे जागीरदार साहबान से सिफारस करता हूँ कि जरुरत पड़ने पर इनको बुलावे। फक्त् ता. २८—८—१९३४ ई.

लेखक का कनिष्ट पुत्र गनपतलाल की

जीवनी

गनपतलाल का जन्म वि. सं. १९७० का मार्गशीर्ष शुक्ला ६ बुधवारे ऽत्रेष्ट ५४। ३२ हुआ।

शिक्षा का हालः—

पहले ब्रान्च कुशल पौल में विद्याध्ययन शुरु कराया, फिर ख्वानगी मास्टर रख कर भी पढ़ाई कराई। बादमे महाराना हाईस्कूल में भरती कराया। वहाँ पर पढ़ाई करते समय सन् १६२६ ई. के जोलाई मास मे अजमेर कोविद परीक्षा मे 'सेकिंड डिविजन' में पास होकर कोविद पद प्राप्त किया उसकी सनद दस्तखती' वाचस्पति एम. एम. भव शास्त्री प्रोफेसर गवर्नमेंट कॉलेज व साहित्याचार्य्य डा. धरणीधर शास्त्री व कवितीर्थ कवि भूषण विद्या सागर का प्राप्त किया। फिर मिडल पास कर बादमें मेट्रिक पास कर अजमेर गवर्नमेन्ट कॉलिज में एफ. ए. पास हुआ। वहाँ से बनारस युनीवरसीटी कॉलेल में बी. ए. सी. में भरतो हुआ, विद्याध्यन करते समय में अताला पढ़ाई के यु. टी. सी. में फौजी शिक्षा भी पाता रहा, व फोटोग्राफी वगैरा दस्तकारी भी सीखा, खर्चे की ज्यादती के सबब घर पर बुला लिया, और असिसटेन्ट सर्जन का पास करने वास्ते दो वर्ष पर्यन्त बोम्बे कॉलिज से लीखा पढ़ी करता रहा लेकिन वेकेन्सी न होने से मंजूरी नही मिली आखीर मजबूरन इन्दौर किंग एडवर्ड स्कूल में भरती कराया वहाँ पर डाकटरी पढ़कर १६३८ इस्वी मे बोम्बे इम्तिहान देने गया सो माह जून में पास होकर एल. सी. पी. एण्ड. एस. की डिग्री हासिल कर उदयपुर आया और आते ही मिस्टर हॉग चीफ मेडिकल आफिसर लेन्सडाउन हास्पिटल से मिला उन्होंने उसी तारीख व मशाहरे ८०) रुपया महावार डाकटरो में भरती कर लिया। थोड़े अर्से बाद सरकारी तौर से लेबोरट्री का काम सीखने के लिये

कलकत्ते छः माह के वास्ते भेजा गया वहाँ पर पाँच महीने मे पास होकर वापिस आगया और लेबोरेट्री इनचार्ज आफिसर तइनात हुआ। वहाँ काम करता रहा हाल में जो विश्वव्यापी युद्ध होरहा है उसमे फौज के सिपाहियों के इलाज करने वास्ते गवर्नमेन्ट सर्विस में ब ओहोदे लेफ्टिनेन्ट व मशाहरे ५००) रु माहवार पर मुकर्र होकर कोइटा की छावणी भेजा गया वहाँ ता० १४ अकटुम्बर सन् १९४३ ई. वि. सं. २००० मुताबिक आसोज सुद १ गुरुवार पहोंच सर्विस का चार्ज लिया वहाँ १५ दिन काम कर ता० ६ नौवम्बर पूना छावणी में भेजा गया।

लेन्सडाउन हास्पीटल में काम करते समय उदयपुर में जो कल्ब मिटिंग मुकर्रर है उसमें श्रीमान् महाराज कँवर साहब बहादुर व रेजिडेण्ट साहब बहादुर मेवाड़ व ऊँचे दर्जेके सरदार व कर्मचारी लोग मेम्बर है उस कलब में शरीक हुआ और वहाँ पर अच्छे खेल तमाशों में जैसे क्रीकेट वगैरह में अच्छे नम्बर पाने पर दो मरतबा श्रीमान् महामान्यवर हिन्दूवा सूर्य मेदपाटेश्वर श्रीयुत महा- राणा भोपालसिंहजी साहब बहादुर जी. सी. एस. आई. के कर कमलों से पारितोषक पाया एक मरतबा तो चांदी का कप सुवर्ण का पालिश किया हुआ व दूसरी दफा बढ़िया ताश।

इसके सिवाय नौकरी की हालत में विद्याभवन व भुपाल नोबस स्कूल के विद्यार्थियों के स्वास्थ सभाल भी इसके जिम्मे थी, इसके दो विवाह हुए प्रथम तो नाथद्वारा में वशिष्ट गोत्रिय साँडेरा अवटंक पण्डित हीरालालजी की कन्या से फिर उसके अन्तकाल होने पर दूसरा विवाहपुर नामी ग्राम जो भीलवाड़ा

प्रान्त में है वहां अग्नि वैशायपल गौत्रीय कनरसा अवटंकीय पण्डित रतनलालजी की कन्या से वि० सं० १९९२ में हुआ-हमारे घर में शादी वगैरह मौके पर जो राजकीय लवाजमा हाथी विरादड़ा नक्कारखाना वगैरह आते है वो इस समय तक आते रहे।

जैन-धर्म की प्राचीनता

जैन धर्म बहुत प्राचीन है, इसके प्रमाण जैन-धर्म ग्रन्थों में सविस्तार मौजूद है लेकिन लोगों को शायद यह शंका पैदा हो कि जैन-धर्म ग्रन्थो में इसका महत्व होना तो कोई बड़ी बात नहीं है, इसलिये इसकी प्राचीनता सिद्ध करने के हेतु कुछ संक्षिप्त प्रमाण वेदादि ग्रन्थों से उधृत करता हूँ।

(१) ऋग्वेद से—ॐ पवित्र नग्न मुर्पवि (द) प्रसामहे येषां नग्ना जतिर्येषा वीरं पुरुष मर्हतमादित्य वर्णतमसः पुरस्तात स्वाहाः। पुनः ॐ नग्नसुधीरं दिगवासमसं ब्रह्मगर्भसनातनम् उपैसिवीरं पुरुष मर्हंत मादित्यवर्णो तमसः पुरस्तात स्वाहाः।

यजुर्वेद का मन्त्र—ॐ नमोऽर्हतो ऋषभो। पुनः ॐ ऋषभम् पवित्रं पुरहतमध्वर यज्ञेपु नग्न परमाहंमस्तुवारं शत्रुजयन्त। पशु चिद्र माहुरिति स्वाहाः। उत्रातारमिंद्रं ऋषभम् वन्दति अमृता मिन्द्र हवे सुगतम् पार्श्व मिंद्रं महुरिति स्वाहाः।

यहाँ तक कि आज लो हमारे भ्रातागण वैदिक मतावलम्बि ब्राह्मण स्वस्तिवाचन करते हैं वो खास यजुर्वेद के अध्याय २५ मन्त्र १९ वां है—

ॐ स्वस्तिन:इन्द्रोवृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति-नस्तारक्षोअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु । दीर्घायुस्त्वाय बलायुर्वाशुभंजातायु ॐ रक्ष२ अरिष्टनेमि स्वाहाः ॥ यहां जरा गौर कीजिये कि अरिष्टनेमि जैन में २२ वां तीर्थंकर है इसलिये यह मन्त्र जैनियों का होना साबित है।

फिर यजुर्वेद मन्त्र—ॐ त्रैलोक्ये प्रतिष्ठाना चतुर्विंशति तीर्थंकराणां ऋषभादि वर्द्धमानान्तानं सिद्धानां शरणं प्रपद्ये।

अब पौराणों के प्रमाण

श्रीमद्भागवत के ५ स्कन्द में श्रीऋषभदेव को साक्षात् परमेश्वर का अवतार मानकर इतिहास दिया और आखीर में नमस्कार किया।

"नित्यानुभूत निजलाभनिवृत तृष्णाः । श्रेयस्य तद्रचनया चिरसुप्तबुद्धेः । लोकस्पयोकरुणयो भयमात्म लोकमाख्या नमोभगवते ऋषभायतस्मै ।

ब्रह्माण्डपुराण में—"नाभिस्तु जनयेत्पुत्रं मरुदेव्या मनोहरम् । ऋषभं क्षत्रिय श्रेष्ठ सर्व क्षत्रस्य पूर्वकम् ॥ "ऋषभाद्भारतो जज्ञेवीर पूत्रं शताग्रजः । राज्यभिषिच भरतं महाप्राव्रज्यमाश्रितः ॥

शिवपुराण में—शिवोवाचः "अष्टषष्टीषु तीर्थेषु यात्रायां यत् फलं भवेत् । आदिनाथस्य स्मरणेनापितद्भवेत् ॥

योग वसिष्ट रामायण—वैराग्य प्रकरण में स्वयं श्रीरामचन्द्र आज्ञा फर्माते हैं—

"नाहम रामो नमेवाञ्छामावेषु च तमे मनः। शान्तिमा स्थातुमिच्छामिचात्मनेवजिनो यथा ।।"

नगरपुराण के भवावतार रहस्य में—"अकारादि हकारान्त मुर्द्धा धोरेफ संयुते नाद बिन्दु कलाकान्त चन्द्र मण्डल सन्निभं। एतद्देविपरंतत्वयो विजानातितत्तवः संसार बन्धनं छित्वासगच्छेत् परमगतिम ॥

प्रभास पुराण में—"भवस्य पश्चिमे भागे वामने न तपः कृतम् तेनैव तपसा कृष्टः शिवः प्रत्यक्षतांगतः ॥ पद्मासन समासीनः श्याम मुर्तिर्दिगम्बरः। नेमनाथ शिवोथेवं नाम चक्रेऽस्य वामनः ॥

कलिकाले महाघोरे सर्व पाप प्रणाशनम्।
दर्शनात् स्पर्शनादेव कोटि यज्ञ फल प्रदम।'

देखो जैन तीर्थंकरों में नेमनाथ २२ वां तीर्थकर है और इनका श्याम वर्ण होना ग्रन्थों में लिखा हैं।

नागपुराण—दर्शयन् वर्त्म वीराणां सुरा सुर नमस्कृतः।
नीतित्रयस्य कर्तायो युगादौ प्रथमोजिनः ॥
सर्वज्ञ सर्वदर्शी च सर्व देव नमस्कृतः।
छत्रत्रयी भिरापुज्यो मुक्तिमार्गं सौवन्दंन ॥
आदित्य प्रमुखा सर्वे बद्धां जलिभिरीशितुः।
ध्यायन्ति भावतो नित्यं दध्रियुग निरंजम् ॥

कैलाश विमले रम्ये ऋषभोयं जिनेश्वर ।
चकार स्वावतारं यो सर्वः सर्व गतः शिवः ॥

भवानी सहस्र नाम से-"कुण्डासना जगद्धात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी ।
जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हँस वाहिनी ॥

मनुस्मृति में कुलकरों के नाम दिये जिनको मनु कहते हैं—

कुलाविजं सर्वेषां–प्रथमो विमल वाहनः ।
चत्तुष्माश्च यशस्वी वामिचन्दोथव प्रसेनजित् ॥
मरुदेवी च नाभि श्च भरते कुल सत्तमः ।
अष्टमो मरुदेव्यां नाभेर्जा उरुक्रमः ॥
दर्शयन वर्त्म वीराणां सुग सुर नमस्कृतः ।
नीतित्रय कर्तायो युगादौ प्रथमो जिनः ॥

भर्तृहरिशतक वैराग्य पुराण—

एको रागीषु राजते प्रियतमा देहर्द्धि धोरिहरो ।
नीरागेषु जिनो विमुक्त ललना संगो नयस्मात्परः ॥
दुर्वार स्मरबाण पन्नग विष व्यासक्त मुग्धोजन ।
शेषकाम विडंबितोहि विषयान्भोक्तु नमोक्तुत्तम ॥

दक्षिणा मूर्ति महस्र नाम से—

शिवोवाचः—जैन मार्ग रतोजैनो, जितःक्रोध जितामतयः ॥

वैशम्पायन सहस्र नाम—

कालनेमि निहावीरः शूरः शौरि जिनेश्वरः ।

दुर्वासा ऋषि कृत महिम्न स्तोत्र—

तत्र दर्शने मुख्य शक्तिरिति चत्वं ब्रह्म कर्मेश्वरी ।
कर्ताऽर्हन पुरुषो हरिश्च सविता बुद्धः शिवस्त्वं गुरु ॥

श्री हनुमान नाटक—

यशैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो ।
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेवी नैयायका ॥
अर्हन्नित्यथ जैन शासन रताः कर्मेति मीमाँसकाः ।
सोयं वो विद्धातुवांछित फलं त्रैलोक्यनाथ प्रभु ॥

इन धर्म ग्रन्थों के सिवा व्याकरण से भी प्राचीनता सिद्ध होती है ।

शाकटायनाचार्य ने स्तुति की है—

नमः श्रीवर्द्धमानाय (महावीर) प्रबुद्धा शेषवस्तवे ।
येन शब्दार्थ सम्बन्धा सावर्ण सुनिरुपिताः ॥

आगे देखिये यही शाकटायनाचार्य्य अपने व्याकरण के प्रत्येक पदान्त में "महा श्रमण संघाधिपतेः श्रुत केवलि देशी चार्य्यस्य शाकटायनस्य" यह शाकटायन आचार्य्य परम जैनी थे जैसा कि टीक कार यत्न वर्मन कहते हैं "स्वस्ति श्री सकल ज्ञान साम्राज्य पदमासवान् महाश्रमण संघाधिपतिर्यशाकटायन ।" शाकटायन के उणादि सुत्र में "जिन" शब्द व्यवहारित हुआ है ।

इण जस जिनिङुप्य विभ्योनक सुत्र २५६ पाद ३ सिद्धान्त-कौमुदी कर्ता ने इस सुत्र की व्याख्या में 'जिनोऽर्हन कहा है।

मेदनी कोष मे भी "जिन" शब्द का अर्थ "अर्हंत" जैन धर्म के आदि प्रचारक हैं।

वृत्तिकारगण भी "जिन" के अर्थ में 'अर्हन्' कहते हैं। यथा उणादि सुत्र सिद्धान्त कौमुदी।

आधुनिक काल के योरोपियन भी जैन धर्म की प्राचीनता समर्थन करते हैं। जैसा कि जर्मन, के डा. जेकोबी ४० वर्ष से जैन साहित्य का अभ्यास कर रहे हैं और कितने ही जैन स्कॉलर तैयार किये हैं। बल्कि सन् १९१५ई० मुताबिक़ वीर संवत् २४४२ में जैन साहित्य सम्मेलन जोधपुर में लम्बा भाषण दिया था।

इसी तरह बंगवासी एम. एम. डाकृर शतोशचन्द्र विद्याभूषण एम. ए. पी. एच. डी. प्रेसिडेण्ट जैन लिटरेरी कानफ्रेन्स जोधपुर में अपनी वक्तृतादि जिसमे जैन धर्म के महत्व का वर्णन किया—

इसके सिवाय सन् १९०४ ई० मे बड़ोदा नगर में कान्फ्रेन्स के मौके पर श्रीमान् बड़ौदा नरेश ने जैन धर्म की प्राचीनता व प्रसंशा का व्याख्यान दिया—

फिर इसी सन् की ता० ३० नवम्बर के दिन भारत गौरव के तिलक पुरुष शिरोमणि इतिहासज्ञ माननीय पण्डित बाल

गंगाधर तिलक सम्पादक केशरी ने अपने व्याख्यान मे कहा कि "जैन-धर्म अनादि है।

यह विषय निर्विवाद है और जैन धर्म ब्राह्मण धर्म के साथ निकट सम्बन्ध रखता है, शक चलाने की प्रथा (कल्पना) जैन भाइयो ने ही उठाई। गौतम बुद्ध महावीर का शिष्य था, बौद्ध धर्म के पहले जैन धर्म का प्रकाश था। जैन धर्म के ही "अहिंसा परमो धर्म" इस उदार सिद्धान्त ने ब्राह्मण धर्म पर चिरस्मरणीय छाप मारी है।

हिंसक यज्ञ छुडाये। जिन यज्ञो मे हजारो पशुओ की हिसा होती थी इसके प्रमाण मेघदूत आदि काव्यों मे मिलते हैं। यह श्रेय जैन धर्म के ही हिस्से मे है। ब्राह्मण और हिन्दुओ में माँस भक्षण और मदिरा पान बन्द हो गया यह भी जैन-धर्म का ही प्रताप है-पूर्वकाल मे जैनधर्म के कई धर्म-धुरन्धर पण्डित हो गये हैं।" इसके सिवाय ज्योतिष शास्त्री भास्कराचार्य्य के ग्रन्थो से भी इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

और देखिये सु-प्रसिद्ध श्रीयुत महात्मा शिवव्रत लालजी वर्मन एम. ए. सम्पादक 'साधु' 'सरस्वती-भण्डार', तत्वदर्शी' 'मार्तण्ड' लक्ष्मी भण्डार' सन्त-सन्देश' ने साधु नामक उर्दू मासिक पत्र जनवरी सन् १९११ ई० के अंक में प्रकाशित किया है। उसके कुछ वाक्य यहाँ उद्धृत करता हूँ—

(१) 'गये दोनो जहाँ नजर से गुजर, तेरे हुस्न का कोई बशर न मिला'

(२) यह जैन आचार्यों के गुरु पाक दिल, पाक खयाल मुजस्सम पाकी व पाकी जगी थे। हम इनके नाम पर और इनके बे नजीर नफ्सकुशी व रिआजत की मिसाल पर जिस क़दर नाज़ (अभिमान) करे बजा है।

हिन्दुओ! अपने इन बुजुर्गों की इज्जत करना सीखो...... तुम इनके गुणों को देखो, उनकी पवित्र सूरतो का दर्शन करो— उनके भावो को प्यार की निगाह से देखो 'यह धर्म की कर्म की चमकती, दमकती, झलकती हुई मूर्ति है...........................
उनका दिल विशाल था व एक बे पाँया कनार समन्दर था। इन्होंने मनुष्य क्या सर्व प्राणियो की भलाई के लिए सबका त्याग किया और अपनी जिन्दगी का खून कर दिया। यह अहिंसा की परम ज्योति वाली मूर्तियाँ है। यह दुनियाँ के जबर्दस्त रिफार्मर है। यह ऊँचे दर्जे के उपदेशक हैं। यह हमारी कौमी तवारिख के कीमती बहुमूल्य रत्न हैं। पार्श्व यह ऐतिहासिक पुरुष हता ते बात तो बधीरीते संभवित लागे छे, केशि स्वामि के जे महावीर स्वामि ना समय माँ पार्श्व ना सम्प्रदाय नो एक नेता होय तेम देखाय छो। जरमन जेकोनी "सब से पहिले इस भारत वर्ष में ऋषभदेव नाम के महर्षि उत्पन्न हुए" वे दयावान भद्र परिणानी पहले तीर्थंकर हुए।

जिन्होंने मिथ्यत्व अवस्था को देख कर, सम्यग्-दर्शन, सम्यग्-ज्ञान और सम्यग्-चरित्र रूपी मोक्ष शास्त्र का उपदेश किया। इसके पश्चात अजीत नाथ से लेकर महावीर तक तेइस तीर्थंकर अपने २ समय में अज्ञानी जीवों का मोह अन्धकार

नाश करते रहे। श्रीतुकाराम शर्मा लट्ट, बी. ए. पी. एच. डी. एम. आर. ए. एस. एम. ए. एम. बी एम. जी. ओ. एस. प्रोफेसर क्वीन्स कालेज बनारस, जैसे उन्हे आदि काल में खाने, पीने, न्याय, नीति, कानून का ज्ञान मिला वैसे ही अध्यात्म शास्त्र का ज्ञान भी जीवों ने पाया। और वे अध्यात्म शास्त्र में सब है। जैसे 'साँख्य योगादि 'दर्शन और जैनादि दर्शन' तब तो सज्जनों आप अब अवश्य जान गये होगे कि जैन मत तब से प्रचलित हुआ, जब से संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ-(सर्वतंत्र, स्वतन्त्र सत्पम्प्रदाय स्वामि राम मिश्र शास्त्री)

वेदों मे सन्यास का नाम निशान भी नहीं है, उस वक्त में संसार छोड़ कर वन मे जाकर तपस्या करने की रिती वैदिक ऋषि नही जानते थे। वैदिक धर्म सन्यास-आश्रम की प्रवृत्ति ब्राह्मण काल मे हुई है। जिसका समय करीब ३००० वर्ष जितना पुराणा है। यही राय श्रीयुत रमेशचन्द्र दत्त अपने 'भारत वर्ष' की प्राचीन सभ्यता का इतिहास नामक पुस्तक में लिखते हैं। तब तक के दूसरे ग्रन्थों की रचना हुई जो 'ब्राह्मण' नाम से पुकारे जाते हैं। इन ग्रन्थो में यज्ञो की विधि लिखी है। यह निस्सार और विस्तिर्ण रचना सर्व साधारण के क्षीण शक्ति होने और ब्राह्मणों के स्वमताभिमान का परिचत देती है। संसार छोड़ कर वन में जाने की प्रथा जो पहिले नाम मात्र को भी नहीं थी, चल पडी और 'ब्राह्मणो' के अन्तिम भाग अर्थात् आरण्य मे वन की विधि क्रियाओं का वर्णन है।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने इतिहास-समुच्चयान्तर्गत काश्मीर की राजवंशावली में लिखा है। कि "काश्मीर के राज-वंश में ४७ वाँ अशोक राजा हुआ, इसने ६२ वर्ष राज्य किया। श्रीनगर बसाया और जैन मत का प्रचार किया। यह राजा शचीनर का भतीजा था। मुसलमानों ने इसको शुकराज व शकुनी का बेटा लिखा है। इसके समय मे श्रीनगर में ६ लाख मनुष्य थे। इसकी सत्ता समय सन् १२६४ इस्वी पूर्व कहा है। (देखो इतिहास समुच्चय पृष्ठ १८)" और भी इतिहास समुच्चय में रामायण का समय वर्णन करते समय पृष्ठ ६ पर अयोध्या-काण्ड मे हरिश्चन्द्र जी लिखते हैं। "अयोध्या की गलियो मे जैन फ़कीर फिरा करते थे" (बाबू हरिश्चन्द्र अग्रवाल खास वैष्णव सम्प्रदाय के थे।)

फिर डाक्टर फुहररने "एपिग्राफी औफ इण्डिया" के वाल्यूम २ पृष्ठ १०६-२०७ पर लिखा है। "जैनियों के बाइसवे तीर्थंकर नेमीनाथ एक एतिहासिक पुरुष हैं।"

भगवद्गीता के परिशिष्ट मे श्रीयुत 'बखे' स्वीकार करते हैं कि नेमनाथ श्रीकृष्ण के भाई थे। जब कि २२ वें तीर्थंकर श्रीकृष्ण के समकालीन थे तो शेष २१ तीर्थंकर श्रीकृष्ण से कितने पहले होने चाहियें।

मि. आर जे० एडवार्ड मिशनरी, ———निसन्देह जैन धर्म ही पृथ्वी पर एक सच्चा धर्म है। और यही मनुष्य का

आदि धर्म है और जैनियों में आदिश्वर को बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध पुरुष जैनियों के २४ तीर्थंकरो मे सबसे पहले हुए हैं। ऐसा कहा है।

भारत मे पहले ४0000000 जैनी थे। उस मत में से निकल कर बहुत लोग दूसरे धर्मों मे चले गये जिससे संख्या कम हो गई।

बाबू कृष्ण नाथ बनर्जी "जैनी ज्म" मे लिखते हैं। भगवान महावीर के पश्चात विक्रम १३ वीं शताब्दियों तक जैनधर्म अच्छी उन्नति पर था। मौर्यवंश, कुल चुरिवंश, अध्रमी वंश, कदम्ब वश, राष्ट्रकूट वंश, परमार वंश, चौल्पूक्य वंश के राजाओं ने धर्म की बहुत उन्नति की जिसके शिला लेख और ताम्र पत्र आज इतिहास मे उच्च स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

श्रीयुत महामहोपाध्याय सत्य सम्प्रदाचार्य सर्वान्तर पं० स्वामी राम मिश्र शास्त्री भूत प्रोफेसर संस्कृत कॉलेज बनारस अपने व्याख्यान मे, जो पौष शुक्ला १ विक्रम संवत् १९६१ मे काशी मे हुआ कहते हैं—

(१) वैदिक मत और जैन मत सृष्टि के प्रारम्भ से बराबर अविछिन्न चले आये हैं। और इन दोनो मतों के सिद्धान्त विशेष सम्बन्ध रखते हैं। जैसा कि पहले कह चुका हूँ। अर्थात् सत्यकार्य्य वाद, सत कारण वाद, परलोकास्तित्व, आत्मा का निरविकारत्व, मोक्ष का होना और उसका नित्यत्व, जन्मान्तर के पुण्य पाप से जन्मान्तर में फल

भोग, व्रतोवासादि व्यवस्था, प्रायश्चित्त व्यवस्था, महाजन पूजन, शब्द प्रमाण्य इत्यादि समान है।

(२) जिन जैनो ने सब कुछ माना है उनसे घृणा करने वाले कुछ जानते ही नहीं और मिथ्या द्वेष मात्र करते हैं।

(३) जैन और बोद्ध में जमीन आसमान का अन्तर है दोनों को एक जानकर उससे द्वेष करना अज्ञानियों का कार्य्य है।

(४) सबसे अधिक अज्ञानी वे हैं जो जैन सम्प्रदाय के सिद्ध लोगों में विघ्न डालकर पाप के भागी होते हैं।

(५) सज्जनों ! ज्ञान, वैराग्य, शान्ति, क्षांति, अदम्भ, अनिर्ष्या, अक्रोध, अमात्सर्य, अलोलुपता, शम, दम, अहिंसा, समदृष्टिता इत्यादि गुणों में से प्रत्येक गुण ऐसा है कि जिस में वह पाया जावे उसकी बुद्धिमान लोग पूजा करने लगते हैं तब तो जहाँ ये (जैनो में) पूर्वोक्त सब गुण निरतिशय सीम होकर बिराजमान है उनकी पूजा न करना क्या इन्सानियत का कार्य्य है।

(६) पूरा विश्वास है कि अब आप जान गये होंगे कि वैदिक सिद्धान्तियों के साथ जैनों का विरोध का मूल केवल अज्ञो की अज्ञानता है।

(६) मैं आपसे कहाँ तक कहूँ बड़े २ नामी आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में जो जैन मत खण्डन किया है जिसे सुन देख कर हँसी आती है।

(८) मैं आपके सन्मुख आगे चलकर स्यादवाद का रहस्य कहूँगा तब आप अवश्य जान जायेंगे कि वह अभेद किला है, उसके अन्दर वादि, प्रतिवादियों के माया मय गोले प्रवेश नहीं कर सकते परन्तु साथ ही खेद के साथ कहना पड़ता है कि अब जैन मत का बुढ़ापा आगया है अब उसमें इने-गिने ग्रहस्थ विद्वान रह गये हैं।

(९) सज्जनों ! एक दिन वह था कि जैन सम्प्रदाय के आचार्यों की हुँकार से दसों दिशाएँ गूञ्ज उठती थी।

(१०) सज्जनों ! जैसे काल चक्र ने जैन मत के महत्व को ढाँक दिया है वैसे ही उसके महत्व को जानने वाले लोग भी अब नहीं है।

(११) रज्जबसा चेसूर की वैरी के बखानः— यह किसी भाषा कवि ने कहा है। सज्जनो ! आप जानते हैं कि मैं उस वैष्णव सम्प्रदाय का आचार्य हूँ। और साथ ही उसकी तरफ कड़ी नजर से देखने वालों का दीक्षक भी हूँ। तो भी भरी मजलिस में मुझे यह कहना सत्य के कारण आवश्यक हुआ है कि जैनों का ग्रन्थ समु-दाय सारस्वत महा सागर है उसकी ग्रन्थ संख्या इतनी अधिक है कि उनका सूची-पत्र भी एक निवन्ध हो जा-यगा। उस पुस्तक समुदाय का लेख और लेख्य कैसा गम्भीर है, युक्ति पूर्ण, भावपूर्ण, विषद और अगाध है इसके विषय में इतना ही कह देना उचित है कि जिन्होंने

इस सारस्वत समुद्र में अपने मतिमन्थान को डाल कर चिर आन्दोलन किया है वे ही जानते हैं।

(१२) तब तो सज्जनों ! आप अवश्य जान गये होंगे कि जैन मत तब स प्रचलित हुआ जब से संसार सृष्टि का आरम्भ हुआ।

(१३) मुझे तो इसमे किसी प्रकार का भी उज्र नहीं है कि जैन दर्शन, वैदान्तादि दशर्नों से पूर्व का है आदि।

इत्यादि २ ऐसे बहुत से प्रमाण हैं परन्तु ग्रन्थ विस्तार भय से अधिक न लिख मै अपनी लेखनी को विश्राम देता हूँ।

इन प्रमाणों से आप महानुभावों को जैन धर्म के महत्व तथा प्राचीनता का बोध होगया होगा अब आगे के लिये इस विश्वोपकारी, विशाल, कल्याणकारी धर्म के पवित्र कुलाकार प्रवृत्ति मार्ग के चलाने वाले ग्रहस्थ गुरु और कल्याणकारी मोक्ष मार्ग के गाइड धर्म गुरु निग्रन्थों को उत्पत्ति का इतिहास सुनाना अत्यावश्यक समझ वर्णन करता हूँ।

दूसरा अध्याय

[जिसमें हर दो गुरुओं की उत्पत्ति का वर्णन- कथानुयोग से]

आप महाशय जानते हैं कि जैन ग्रन्थों में ज्ञान का अक्षय भण्डार है। उसके ४ भाग किये गये हैं। (१) द्रव्यानुयोग (२) कथानुयोग (३) गणितानुयोग (४) चरणकरणानुयोग।

१. द्रव्यानुयोग उसे कहते हैं जिसको अन्य भाषा में फिलास फी या दर्शन शास्त्र कहते हैं।
२. कथानुयोगः—इसमें महा पुरुषों के जीवन चरित्र हैं।
३. गणितानुयोगः—इसमें गणित ज्योतिष का विषय है।
४. चरणकरणानुयोगः—इसमें चरण सत्तरी व करण सत्तरी का वर्णन है।

इन चारों पर बहुत से सूत्रों व ग्रन्थों की रचना हुई है, उनमें से बहुत तो नष्ट होगए और बहुत से मौजूद हैं। संसार परिवर्तन शील है। सदा काल एकसा नहीं रहता। पहले संसार भोग भूमिका क्रीड़ा क्षेत्र बना हुआ था। विश्व को, अनुपम शान्ति उस काल में अनुभव हो रही थी, याने न तो क्रिया फाण्ड थे, न लेन देन का व्यापार ही था। पाप पुण्य भी नहीं समझते थे। सिर्फ दस जाति के कल्प वृक्ष मनोवांछित फलों का दान देते थे। उससे उनका निर्वाह होता था। वे वृक्षों के नीचे ही निवास करते थे। यह समय युगलकों का था। उसकी सूक्ष्म झांकि कराता हूँ।

इस जगत को जैनी द्रव्यार्थिक नय के मतानुसार शाश्वत अर्थात् हमेशा प्रवाह में ऐसा मानते हैं। और दो प्रकार के कालों में समय का भाग करके छ आरो के नाम से विभक्त किया। उपर कहे हुए दो कालों को इस नाम से पुकारते थे। अव सर्पिणी काल, और दूसरे को उत्सर्पिणी काल। इन कालों का मान दस कोटा कोटि सागरो पम का शास्त्रकारो ने माना है। यहां अवसर्पिणी काल के आरो का नाम लिखता हूँ

पहला आरा जिसको सुखमासुखम नाम से पुकारते थे। इसमे मनुष्य भद्रक, सरल स्वभावी, अल्परागी और सुन्दर स्वरूप वाले, निरोग्य शरीर वाले और अपना खाना पानादि सर्व कार्य दस जाति के कल्प वृक्षों से करते थे। उनके सन्तति का यह हाल था कि एक लड़का और लड़की युगलक् रूप में जन्म लेते थे और वह युवावस्था प्राप्त होने, पर गृहस्थ धर्म कर लेते थे। इसी तरह दूसरा आरा जिसको सुखमा-दुःखम के नाम से संबोधन करते थे। तीसरे आरे के अन्तमें एक युगलिया वंश में ७ कुलकर उत्पन्न हुए (अन्य मताव लम्बी इसको मनु के नाम से पुकारते हैं) कुल करों का यह काम होता था कि वह स्‌[illegible]चित मर्यादा बांधे, और लौकिक व्यवहार मे मनुष्यो को चलाते याने (समय के राजा) इसी तरह दूसरे युगलक वंश मे भी ७ कुलकर हुए। सर्व मिला कर १४ कुलकर हुए। १५ वां कुलकर श्री ऋषभदेव माना है। इन पिछले ७ कुलकरो के यह नाम थे।

(१) विमलवाहन (२) चक्षुमान (३) यशस्वान (४) अभिचन्द्र (५) प्रश्रेणी (६) मरुदेव और (७) नाभिराय। इनकी यह महीपियो के यह नाम है (१) चन्द्रयशा (२) चन्द्रकान्ता (३) सुरुपा (४) प्रतिरुपा (५) चक्षुकान्ता (६) श्रीकान्ता (७) मरु-देवी इनका उत्पति स्थान गङ्गा व सिन्ध के मध्य खण्ड में माना गया है। अब तीसरा आरा व्यतीत होने आया, इस जम्बु द्वीपके भरत खण्ड में नाभिराय कुलकर के पट्ट महिषि माता मेरुदेवी के गर्भ में "बारहवे भव मे जो [वज्रनाभ] नामा चक्रवर्ति का जीव था. वह आषाढ़ कृष्णा ४ के दिन सर्वार्थ

सिद्धि विमान से चव्य होकर स्थिति हुआ। और चैत्र कृष्णा ८ के दिवस उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मे श्री आदि नाथ भगवान का प्रादुर्भाव इस जगत में हुआ, जो श्री ऋषभदेव के नाम से सम्बोधन होते हैं। यहाँ में युगलकों की कथा का समर्थन अन्य मतों से भी करता है जैसाकि अहल इस्लाम के धर्म ग्रन्थो में भी दरज है कि सबसे पहले इस जगत में आदम नामी मनुष्य और हव्वा नामक स्त्री पैदा हुए थे। उनके दिन प्रति एक जोड़ा, लड़का व लड़की पैदा होता था। और वो ही स्त्री पुरुष नाता कर लेते थे। आदम और हव्वा का होना इसाई धमावलम्बी भी मानते हैं"।

श्रीऋषभदेव का जन्मोत्सव करने को धर्म देव लोक से इन्द्र समेत ६४ इन्द्र व ५६ दिग कुमारियां मेरु पर्वत पर आए। 'इनमें रत्न प्रभा पृथ्वी की मोटी तह में निवास करने वाले चमर चन्चा नामा नगरी का चमरेन्द्र और बाली चन्चा नाम नगरी का इन्द्र वलि भी समेत त्रेयस्त्रिशंक (कर्म काण्डि) देवताओं के आए और जन्मोत्सव मनाया। तदनन्तर इन्द्रादि देवता तो अपने २ स्थान पर चले गए और कुछ त्रेयस्त्रिशंक देवताओं को वनिता नामक नगरी में ही रख गए। इसका यह कारण था कि भगवान का विवाह व राज्याभिषेकादि कृत्य कराने थे व जगत में यह संस्कारादि चलाने थे। उन देवताओं की सन्तति से इस जाति की उत्पति है। उस समय से इस जाति के गुरु सन्तानीया नाम से सम्बोधन करने लगे। इस इतिहास को पढ़ने से आधुनिक नवाशिक्षित पाश्चात्य विद्या

के पाठितों को यह आश्चर्य युक्त बात मालुम होकर शंका पैदा करेंगे कि देवताओं का पृथ्वी पर आना व उनसे मनुज सन्तति होना असम्भव हैं क्योंकि देवता निर्वीर्य होते हैं। इस शंका के निवारणार्थ जैन मत के शास्त्रों का प्रमाण देता हूँ। कथानुयोग के आधार पर कलि काल सर्वज्ञ श्री मद् हेमचन्द्राचार्य जी महाराज ने वि. सं. ११२० मे त्रिष्टी शिला का पुरुष-चरित्र रचा। उसके तृतीय सर्ग का दूसरा वर्ष जहाँ उर्ध्व-लोक का वर्णन है, 'भुवनपति, व्यन्तर ज्योतिषी और ईशान-देव लोक सुधि के देवता अपने भुवन में रहे वा वलि देवियों के साथ विषय सम्बन्धी अङ्ग से वाहे, वे संकलिष्ट कर्म वाला और तीव्र अनुराग वाला होने से मनुष्यों की तरह काम भोग मे लीन होवे है, और देवांगना के सर्व अङ्ग सम्बन्धी प्रीति को मेलवे है, इसके बाद दो देवलोक के देवता स्पर्श मात्र से, दो देवलोक के देवतारूप देखने मे और दो देवलोक के देवता शब्द श्रवणथी और अनन्त विगेरे चार देवं लोक के देवता मात्र बड़े चिन्तववा से विषय ने सेवन करे। इस प्रकार विषय रस में प्रविचार वाला देवताओं से अनन्त सुख वाला देवता ग्रवे-वकादिक मे है जो विषय सम्बन्धी प्रविचार रहित है" मैंने भी अपनी जाति उत्पत्ति उन्हीं त्रायस्त्रिशंक देवता जो भुवनपति, व्यन्तरादि भुवन में निवास करने वालो से ही होना लिखा है, फिर इसमे शका जैसी कौनसी बात है। इसके सिवाय बाइस समुदाय के पुज्य जवाहिरलालजी ने व्याख्यान दिया, उसका सार लेकर साहित्य प्रेस, अजमेर मे मुद्रित हुआ (व्याख्यान-

सार संग्रह पुस्तकमाला) में सत्य मूर्त्ति श्री हरिश्चन्द्र-तारा के चरित्र मे हरिश्चन्द्र को सूर्य्यवशीय माना है। सूर्य्य देवता होना विश्व विदित है। उनका जो वंश चला तो देवताओ के सन्तान होना भी मानना पड़ेगा।

फिर लिखा है कि देवताओ के स्त्रीये अप्सराएँ होती हैं। इसके सिवाय आप महाशयो को पूर्ण प्रकार से विदित है कि चोबीस ही तीथकरो का जीव देव-लोक से चव्य होकर मनुज सन्तति मे जन्म लिया है और यहाँ पर उनसे सन्तति होना सर्वोपरि मान्य है।

फिर देखियेगा कि रत्न-चूड़, विद्याधरो का राजा, विद्याधर वशी देवता थे। उनके माता पिता और पुत्र कनक-चूड होने का शास्त्रो में वर्णन है। विद्याधर वंश को देवयोनी मे होने का प्रमाण मे अमर-कोप के पहले काण्ड का ११ वाँ श्लोक देता हूँ।

विद्याधराप्सरो यक्ष रक्षो गन्धर्व किन्नराः।
पिशाचो गुह्य को सिद्धो भूतोमिदेवयोनयः॥

इसके सिवाय देवता वैक्रेय रूप भी धारण करते हैं, जैसा कि इन्द्र ने भगवान के जन्म स्नात्र के समय पर ५ रूप धारण किये व इन रत्न प्रभव-सूरिजी ने भी औश्या व कोरट नगर के मन्दिर में प्रतिष्ठा समय दो रूप धारण किए देखो औश्या चरित्र व जन्म कल्याण। दूसरा वैदिक मतानुसार प्रमाण, रामायण मे, मनुराजा और शतरूपा रानी ने तप किया उससे प्रसन्न होकर साक्षात् परब्रह्म परमात्मा अपने स्वरूप का

बरदान दिया वैसे ही राजा दशरथ को वरदान दिया उससे श्री रामचन्द्र का अवतार हुआ। इसी तरह श्री मद्भागवत के दशवें स्कन्ध में श्रीऋषभ देवजी की जन्म कथा में वर्णन किया है कि राजा नाभिराय ने पुत्रार्थ कामना से यज्ञ कराया उससे प्रसन्न होकर साक्षात परब्रह्म अपने समान पुत्र होने का बरदान दिया और ऋषभावतार हुआ। जिनसे भरतादि सौ पुत्रों की उत्पत्ति हुई। फिर देखिये रामयण मे किस्किन्धा-काण्ड मे ब्रह्मा से रच्छ राज नामा वानर का होना व सूर्य्यके वीर्यमे सुग्रीव व इन्द्र के वीर्य्य से बाली की उत्पत्ति मानी है। और हनूमानजी को वायु पुत्र माना है। इसके उपरान्त वाल्मिकी कृत रामायण मे बालकाण्ड सर्ग १७ वाँ श्लोक ६ वाँ "ऋषश्च-महात्मन-सिद्ध-विद्याधरो रगा" इनका वानर योनी में जन्म लेना लिखा है। इसके उपरान्त शिव विष्णु के वीच जनकपुर मे धनुष भङ्ग के समय युद्ध हुआ। उसके लिये "हुँकारेण महास्तम्भिस्तोय त्रिलोचन" फिर भी इतिहासो से यह प्रमाणित होता है कि देवता कइ एक राजाओं की सहायता करने को व इसी तरह इन्द्रादिको की सहायता करने के लिए यहाँ के राजाओं का जाना माना है। उसका एक उदाहरण वाल्मीकि रामायण का देता हूँ।

"रावण वरदान से मानी होकर चन्द्रलोक को विजय करने गया" व दशरथ का इन्द्र की मदद के लिए जाना भी लिखा है। गीता के चौथे व दशवें अध्याय मे श्रीकृष्ण भगवान् ने अर्जुन के प्रति आज्ञा फरमाई—

इमम् विवस्वते योगं प्रोक्तवाऽनहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनु रिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥१॥

चतुर्थ अध्याय, इसी तरह दसवें अध्याय का छठा श्लोक

महर्षय सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मान सा जाता येषाम् लोक इमः प्रजा. ॥

आगे देखिये महाभारत मे कर्ण की उत्पत्ति कुन्ती के गर्भ मे सूर्य्य से और युधिष्ठिर की उत्पत्ति धर्मराज से और भीम की वायु देव से और अर्जुन की इन्द्र से मानी है । आगे और देखिये—

हमारे महर्षि दयानन्द सरस्वतीने भी ईश्वर को साकार होना सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि ईश्वरके १०० नामो मे 'मङ्गल' भी ईश्वर का नाम माना और 'मगि' गतौ धातु मे अलुच प्रत्यय होने से मंगमि, मगयति च मंगल अर्थात् जो चलता है या चलाता है । इससे परमेश्वर का नाम 'मगल' है (२, तमीसां जगन मन्त्र के अर्थ में स्वामीजी लिखते है कि पूपा सब से पोषक हो उन आपका "न" अब से अपनी रक्षा के लिये हम आव्हाहन करते हैं । आर्याभ्यित में म त्र १० वॉ पूर्वार्ध देखिये । इससे भी परमेश्वर का साकार होना सिद्ध होता है । अब ईसाई ग्रन्थ के बाइबल से 'परमेश्वर पृथ्वी पर बारि मे सॉझ के समय फिरता था । जब आदम ने सुना तो आदम व उसकी स्त्री हव्वा का वृक्षो के बीच में छिप जाना । फिर हव्वा ने आदम को पुकार कर पूछा कहाँ है ? तो उसने कहा 'तेरा शब्द सुनकर डर गया हूँ ।' देखो बाईबल उ० अ० ३ आयत ८-९-१० । इसी ग्रन्थ से दूसरा प्रमाण—

जब परमेश्वर ने नूह को कहा अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज से निकाल आ'। बाईबल उ० अ० आयत १५-१६) तीसरा प्रमाण और देखिये—ईश्वर अखाड़े में आकर रातभर याकुब से कुश्ती लड़ता रहा और प्रातःकाल याकुब का नाम इसराइल रख चला गया। बाईबल अ० उ० ३२ आयत २४ से २६ तक।

अब देखिये कुरानशरीफ "वही है जिसने बनाया तुम्हारे वास्ते जो कुछ जमीन पर है सब फिर चढ़ गया आसमान को—ठीक किया है उनको सात आसमान—और हर चीजों से वाकिफ है" पारा सूरे बकर आयता। २ दूसरा प्रमाण—'जिस दिन खोली जायगी पिन्डली और बुलाये जावेंगे सिजदे को फिर न कर सकेंगे' पारा सूरे कलम आयत। ४२ इस आयत के सीर में रहा बली उल्ला यों कहते हैं कि शरे के दिन मुसलमानों के पास खुदा आवेगा जिस सूरत मे नहीं पहचान सकेंगे और खुदा कहेगा मैं तुम्हारा रब्बू हूं। मेरे साथ आओ। लोग कहेंगे कि जब हमारा खुदा आवेगा हम जान जावेंगे। तब कहेगा कि तुम्हारे खुदा की क्या पहचान है ?

यह कहने बाद अपनी पिन्डली खो लेगा। तब सब लोग सिजदा करेंगे। जो सची नीयत से सिजदा नहीं करेगा। वह उल्टा गिरेगा"। इन प्रमाणों से आपकी शंका निवारण हो जावेगी। और त्रयस्त्रिशंक देवताओं का पृथ्वी की मोटी तह से से आना व उनसे मनुज सृष्टि का होना प्रमाणित ठहरेगा" त्रिसृष्टि शिला का से जब श्री भगवान् पाणिगृहण योग्य हुए तो इन्द्र ने निवेदन किया कि त्रैलोक्य सुन्दरी 'सुनन्दा' व

सुमंगला' को वरने योग्य आप हैं, तो भगवान ने स्वीकार किया जब इन्द्र ने अप्सराओं द्वारा सर्व प्रकार विवाहोत्सव की तैय्यारिये करवाई और त्रैयस्त्रिशंक देवताओ ने वेदी मे अग्नि प्रकट करी और उसमे समीध डाली। और विवाहोत्सव कराया विवाह होने के पश्चात वह १० लाख पूर्वतक भोग विलास किया उस समय बाहु और पीठ के जीव सर्वार्थ सिद्ध विमान से च्युत होकर सुमंगला के भरतराज कँवर व ब्राह्मी नामक कन्या ने जन्म लिया युगलकरूव मे। और सुन्वंदा की कौख से बाहुबली व सुन्दरी ने जन्म लिया। इस प्रकार से संस्कार कराने से त्रैय स्त्रिशक देवताओं की संतानो का नाम गुरु संतानिया या कुल गुरु रक्खा गया। जैसा कि शब्द रत्न महोदधि महान शब्द कोस भाग पहला संग्राहक पन्यासजो श्रीमुक्ति विजयजी ने कुलाचार्य शब्द का अर्थ पृष्ठ ५५२ मे (कुल कर्मागतः आचार्य) कुल गुरु वंश परम्परा थी चाल तो आवे लो गोर। पुरोहित।" पृष्ट ५५२ में कुल 'विप्र' वंश परम्तरा थी आवे लो पुरोहित, गौर।—जब भगवान जन्म से बीस लाख पूर्व व्यतीत हुऐ तब राज्या सन गृहण किया (राज्य प्रबन्ध) के लिये मंत्री और आरक्षक राज हस्ती, घोड़े आदि मंगवाये (शिल्पोत्पति) भगवान हाथी के कुम्भस्थल पर शीली मिट्टी से पात्र बनाया याने सबसे पहले कुम्हार की शिल्पकला प्रकट की। फिर सुनार व बढ़ई, चित्रकार, कपड़ा बुनने को जुलाहा बनाई बनाए। और इनकी जीविका के लिये घास लकड़ी काटना, खेती, व्यापार करना सिखाया। जगत की व्यवस्था रूपी नगरी के मानो चतुस्पथ राहें हो इस तरह शाम, दाम, डंड, भेद कायम किये और बड़े पुत्र भरत को ७२ कला सिखवाई।—और बाहु

बली को हाथी, घोडा, और स्त्री पुरुषों के अनेक भेद बतारा। ब्राह्मी को दाहिने हाथ से १८ लिपिए सिखाई। सुन्दरी को बायें हाथ से गणित, न वस्तुओं का मान, उन्मान अवमान, प्रतिमान रत्न प्रभृति पिरोने की कला बताई। वादी प्रतिवादी का व्यवहार करने को न्यायालय बनाए। उसमें राजा अध्यक्ष और कुल गुरु की साक्षी (सम्मति) से चलने लगे। और जो अ रक्षक थे उनका उग्र कुल और त्रे यस्त्रिश यांने गुरुओं का भोग कुल इनका ताजा प्रणाम देखना हो तो कल्प सूत्र की टीका बाल बोध नामी में देखा और अपने समान वयस्क वालों का राजन्य कुल व बाकी प्रजा का क्षत्रिय कुल करार दिया। ऐसे अनेक कार्य्य करने के ६३००००० पूर्व व्यतीत होने पर इन्द्र की निवेदन से दिक्षा लेने की तैयारीयाँ हुई। प्रभु ने वार्षिक दान देना शुरु किया। आखिर पालकी मे सवार होकर सर्वार्थ सिद्धनामी बाग में पधारे। वहाँ पालकी व रत्नाभूषण त्याग किए। तब इन्द्र ने देव दुष्य वस्त्र प्रभु के कन्धे पर डाला, चैत्र कृष्णा ८ के दिन चन्द्रमा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में आया उस दिन पिछले पहर में प्रभु ने अपने हाथ से चार मुष्ठी केश लोच कर ५ वीं मुष्ठी और चाही परन्तु इन्द्र के निषेध करने को अङ्गीकार करके केश रक्खे। उसके पश्चात् देव, असुर, मनुश्यो के सामने सिद्ध को नमस्कार करके समस्त सावद्य योग का प्रत्याख्यान करता हूँ यह कहकर चारित्र गृहण किया। उनके साथ ४ हज़ार मनुष्यों ने भी दीक्षा ली। यहाँ पर सोचने का मुकाम है कि सर्व मिलाकर ६३ लाख पूर्व पश्चात निर्ग्रन्थ होने की रीति प्रचार हुई। उसके पहले तो गृहस्थ गुरुओं का होना

व सर्व जगत व्यवहारिक कार्य कराना साबित है। भगवान ने ७२ कला वह ६४ कला, चार वेद (संस्कार दर्शन, संस्थापना परामर्शन, तत्वावबोध, विद्या प्रबोध व सोलह संस्कार जन्म से मरण पर्यन्त व ज्योतिष, वैदिक, कुमारो को पढ़ाना वगैरा कार्यों पर हक गृहस्थ गुरुओं का रक्खा। इन १६ संस्कारो में सिर्फ एक सस्कार दिक्षा के ऊपर निग्रन्थों का हक रखा। इसके साथ में मैं यहां वेदमन्त्र दरज करता हूँ, 'सिरि भरः चक्रवही, आयरिय वेयाणाम चिस्सु उप्पत्ति। माहण पढ्ण, छमिय कहियम सुड्धाणं व्यवहारम'। (१) जिण त्तिच्छे वुच्छिग्गे, मिछतेमहाणेहि व्यानठवेया अस जपाणं प्युश्रा, अचाणं काहिया तोई ॥ २।
यहां कोई महाशय यह शंका करें कि इन मन्त्रों से गृहस्थ गुरुओं का अधिकार होना पाया नहीं जाता।

यहां कोइ कहदे कि यह शंका साफ न हुई कि गुरुओं को अधिकार दिये पर वे ग्रहस्थ थे या निग्रन्थ तोइसकि पुष्टि के लिये फिर प्रमाण देखिये उससे यह शंका पूर्ण तोर से मिट जायगी। "विधयं जाई स, चेव, कम्मसं सारिअम्तहा। विधामन्त कुणं तोयं साहुतोहि विराअहो" टिका वेदिक, ज्योतिष, संस्कार कर्म विद्या पढ़ाना; व मन्त्रशास्त्रादि सर्व कृत्य साधु गृहस्थ को करे तो वो साधु जिनाज्ञा का विरोधि हो फिर दूसरा प्रमाण "वृत्तारोपवरितव्य संस्कारा दस पंचच" गृहिणा नैवकर्तव्या यतिभिः कर्म वर्जयेत ॥ इन १६ संस्कारों में वृत्तारोपयाने दिक्षा संस्कार निग्रन्थ करावे बाकी १५ संस्कार गृहस्थ गुरु करावे। यहां पर कोई यह भी कह सकता है कि ऊपर के वैदिक मन्त्र शास्त्र आधुनिक काल में लोकोपचार में नहीं देखे शायद हो, तो

लीजिये उत्तराध्यनजी सुत्र लोकिक प्रचार में अच्छी तरह सर्व की जाण में है उसके पृष्ट ३३७ में लिखा है "जेल कखणंसुवि-णपउंजमाणों । निमितं वो अहल सयं गठे ॥ कुहेड विज्जसव्व-दारजी, विगच्छ इसुरणं तम्मिकाले, टिका-जो साधु चक्रादि-लक्षण, सामुद्रिक शास्त्र, स्वप्न विचार, निमित्त विद्या मन्त्र यन्त्र, आदि विद्या आश्चर्य, कौतुक उत्पन्न करने वाली जोतिष वैदिक आदि निग्रन्थों को नहीं करानी चाहिये सोचिये यह कृत्य निग्र न्थोका कराना निषेध है तो गृहस्थ गुरुओं को ही करना स्वतः सिद्ध है । इस जाति को वृद्ध श्रावक का पद भी भगवान ने दिया है वृद्ध श्रावक याने सब गुणालंकृत इसका प्रमाण देखना हो तो अनुयोग द्वार सुत्र से देखें "वृद्ध श्रावय" एसा पाठ है। भगवान ने अपने सर्व पुत्रों को राज्य अलग २ देकर दिक्षा लेकर पधार गये तो भरत चक्र वर्ति हुआ उनके आयुद्धशाला में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ इससे भरत महाराज चक्रवर्तिक हलाये, भरत महाराज ने छह खण्डो को साधकर वनितानगरि में राज-धानी रखी और अपने लघु भ्राताओ को आज्ञा मनाने के लिये दूत द्वारा आज्ञा भेजी उस पर ९८ भाइयों ने तो विचार किया के राज तो अपने पिता भगवान देकर पधारे है फिर हमको भर-ताज्ञा मानने की क्यार आवश्यकता है तो हम चलो श्री भगवानसे निवेदन करे और वे जो आज्ञा करेंगे वो स्वीकार करेंगे यह ठान कर वे सर्व कैलाश (अष्टपद) पर गये, भगवान ने यह वृतान्त अपने तपो बल से पहले ही जान लिया पुत्रों के वहाँ पहोचते ही आज्ञा दी कि इस नाशवान राज को आशा छोड़ो मैं तुम्हे अक्षय राज्य स्वर्ग का देता हूँ यह उपदेश होने से उन

६८ भाइयों ने दीक्षा लेकर भगवान के परिषद् में विराजमान हो गये। भरत ने ऐसी ही आज्ञा बाहूबली के पास भेजी तो उन्होंने युद्ध करना ठान लिया। आखिर कार युद्ध शुरु हुआ तब इन्द्र महाराज के समझाने पर दोनों भाइयों में ही परस्पर युद्ध शुरु हुआ अन्तिम मुष्टि युद्ध में बाहूबली ने भरत महाराज पर मुष्टि प्रहार करने का हाथ उठाया लेकिन विचार हुआ कि अहो संसार असार है एक राज्य के लिये मैंने वृद्ध भ्राता को मारने के लिये हाथ उठाया धिक्कार है ऐसे राज को लेकिन वीर पुरुषो का हाथ, उठा हुआ बगैर किसी कार्य करने के पिछान बैठ सकता इसलिये जो ऊँचा हाथ से अपने सिर को बाल लोच कर चले, वे भगवान की परिषद् में तो न गये क्योंकि उनको यह अभिमान हुआ कि मैं वहाँ जाऊँगा तो मेरे ६८ छोटे भाइ वहाँ दीक्षित हुए, बैठे हैं उनको बन्दना करना मुझको होगा सो मैं उन छोटों को बन्दना कैसे करूँगा यह बिचार ठानकर वे बनमें बास्ते तप के पधार गये वहाँ जाकर ध्यानावस्थित होकर खड़े हो गये उसको एक वर्ष व्यतीत होगया शरीर पर वेलडिये व बास छागया और पक्षी घोसले बनाकर रहने लग गये जब यह वृतान्त श्रीभगवान को अवधी ज्ञान द्वारा विदित हुआ तो उनको समझाने के लिये भगवान ने ब्राह्मी और सुन्दरी दोनो बहिनो जो साध्वियाँ हो गयी थी बाहुबली के पास भेजी उन्होंने उनके समीप जाकर सम्बोधन करके कहा—
"बीराम्हारा गजथकि उतरो गज चढ़ियाँ केवल न होसी रे" यह शब्द सुन कर बाहुबलीजी ने सोचा कि क्या साध्वीये भी असत्य उच्चारण करती है फिर ज्ञान दृष्टि से विचारा तो मा-

लुम हुआ कि अहो यह साध्वीयो ने कहा वो सत्य है मैं जरुर अभिमानरूपी गज पर चढ़ा हुआ हूँ । ऐसा विचार भगवान की परिषद में आकर अपने भाइयों को वन्दना करना ठीक है 'जब से यह प्रथा चली कि पहले जिनकी दिक्षा हो वो हांला के उमर में कम हो और पिछे दिक्षा लेने वाला उमर मे ज्यादा हो बोभी उन कम उमरवालों को वन्दना करे" ऐसा उज्वल भाव से कदम उठा कि उसी समय उनको केवल ज्ञान प्राप्त हो गया वहाँ से विदा होकर भगवान के पास पहोंच तीन प्रदक्षिणा कर केवली परिषद में विराज गये। भरत ने अपने ९९ ही भाइयों का दिक्षित होकर भगवान के समीप सम्वसरण में बैठे थे वहां जाकर भरत ने उन भाइयों को दिक्षित देखकर दुखित होकर विचार करने लगा अहा ! अग्नि की तरह सदा असन्तुष्ठ रहते हुए मैंने अपने भाइयों का राज लेकर क्या किया ? अब इस भोग फल वाली लक्ष्मी को दूसरे को देना तो राखमें घी छोड़ने के बराबर है और मेरे लिये निष्फल है । कौए भी दूसरे कौओं को खिलाकर अन्नादि भक्षण करते है । पर मैं तो अपने इन भाइयों को हटाकर भोग भोग रहा हूँ इसलिये कौओं से भी गया बिता हूँ । मास क्षपणक जिस प्रकार किसी दिन भिक्षा ग्रहण करते है वैसे ही यदि मैं फिर उनकी भोगी हुई सम्पति वापिस कर दू तो मेरा बड़ा ही पुन्योदय होगा, यदि वे उसे ग्रहण कर ले, भगवान से अर्ज की भगवान ने आज्ञा फरमाई के यह तुम्हारे भाई बड़े सतोगुणी है इन्होंने महाव्रत का पालन करने की प्रतीज्ञा की है सो यह लोग व मनकी ये हुए अन्न की तरह त्यागा हुआ फिर

ग्रहण नहीं कर सकते। तो भरत ने विचार किया कि राजभोग नहीं करते है तथापि प्राण के धारण के लिये अहार तो करेंगे ? ऐसा विचार कर ५०० गाडी भरवा कर अहार मँगवाया तो उसके लिये भी भगवान ने निषेध किया कि मुनियों के लिये आधा कर्मी अहार काम का नहीं तब भरत दुःखी हुआ और इन्द्र से पूछा कि अब मे अहार की क्या व्यवस्था कर इन्द्र ने कहा "यह सब अहार सब गुणों में बढ़ चढ़े हुए पुरुषों को दे डालो भरत ने विचार किया कि साधुओं के सिवाय विशेष गुण वाले पुरुष और कौन होगा ? अच्छा अब मुझे मालुम हुआ। देश विरति के समान श्रावक विशेषगुणान्तर हैं इसलिये सब उनके अर्पण कर देना चाहिये। भरत राजधानी में आकर सर्व श्रावकों को बुलाकर कहा आप लोग सब सदा भोजन के लिये मेरे घर आया करो और कृषि आदि कार्य में न लगकर स्वाध्याय में निरत रहते हुए निरन्तर अपूर्व ज्ञान को ग्रहण करने में तत्पर रहो। भोजन करने के बाद मेरे पास आकर प्रतिदिन यह कहाँ करो 'जितो भगवान वर्द्धते भी रव-समान माहन माहन' अर्थात् तुम जीत गये हो भय वृद्धि को प्राप्त होता है इसलिये आत्मागुण को न मारो न मारो' जब भोजन करने वालों की जीयादा वृद्धि हुई होती देख पाकशाला के अध्यक्ष ने निवेदन किया कि इतने भोजन करने वाले आते है कि समझ में नहीं आता कि वे श्रावक ही है या नहीं उसपर भरत ने आज्ञादि कि तुम भी तो श्रावक ही हो इसलिये परिक्षा कर भोजन दिया करो तब से भोजन करने वालो से पुछता कि तुम कौन हो वे कहते कि श्रावक, तो पुछता कि श्रावकों के

कितने व्रत है तो वे कहते के १२ व्रत, पांच अणुव्रत और ७ शिक्षाव्रत, तब वह सन्तुष्ट होता और बाद परीक्षा श्रावकों को भरतराज को दिखलाता तब भरत उनकी शुद्धि के लिये उन में कांकणी रत्न से उतरा संग की भाँति तीन रेखायें, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, के चीन्ह स्वरूप करने लगे यहाँ से जीनों पवित की उत्पति हुई और छठे महीने नये २ श्रावकों की परीक्षा की जाकर चीन्हा किये जाते । मन्त्र के पाठ के अन्तमें महा नशक है उसके उच्चारण वार २ करने से संसार में महाना नाम से प्रसिद्ध हो गये वे अपने बालकों को साधुओं के देने लगे । उनमे से कि तनहिस्वेच्छा पूर्वक विरक्त होकर व्रत ग्रहण करने लगे और कितने ही परिषह सहन करने में असमर्थ होकर श्रावक रह गये । कांकणिरत्न से अंकित होने के कारण उन को भोजन मिलने लगा । राजा इस प्रकार भोजन देते थे तो लोग भी जीमाने लगे उनके स्वाध्याय के लिये चक्रवर्ति ने अर्हतो की स्तुति और मुनियों तथा श्रावकों की समाचारी से पवित्र ४ वेद रचे वो पढ़ने लगे वे महाना ब्राह्मण कह लाने लगे कांकणि रत्ना की रेखा के बदले जिनोपवित धारण करने लगे भरत राजा के पश्चात सूर्यवशा गद्दी बैठा उसने सुवर्ण मई जिनो पवित की चाल चलाई और महायशा आदि राजा के समय चांदी की जिनोपवित बादमें सुत्रकी जिनोपवित धारण करने लगे । "सुर्ययशा के बाद महायशा इसके बाद अतिबल व बलभद्र बाद बलवीर्य उसके बाद कीर्ति वीर्य बाद जल वीर्य और उसके बाद दण्डवीर्य ऐसे ८ पुरुषों तक ऐसा ही आचार जारी रहा इन्होंने भी इस भरतार्द्ध राज्य भोगा और इन्द्र के

रचे मुकुट धारण किया । इस इतिहास के पढ़ने पर कितनेक यह शंका करेंगे कि हा वेशक महात्मो (गृहस्थ गुरुओं) की उत्पत्ति शास्त्रो से पाई जाती है लेकिन भगवान सुविधिनाथक चन्द्र प्रभु के कितनेक काल पश्चात् जैन धर्म के चातुर्संङ्घ का विच्छेद होगया था तो वे गृहस्थ गुरु भी बिच्छेद चले गये फिर उत्पति कब से और क्यो हुई " लेकिन यह शंका निर्मूल है क्या माने कि अव्वल तो उस समय चातुसंग का बिच्छेद जाना पाया नहीं जाता हाँ अलबते अकाल से साधुसाध्वीयों का बिच्छेद जाना अवश्य वर्णन है यह वाक्य तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे पुरुष रामजी के इतिहास में प्रसिद्ध है कि इन्होंने २१ वार पृथ्वी को नीक्षत्री कर दी थी यह एक तरह का पण्डितों का गूढ रहस्य है इसके प्रमाण में यह ही काफि होगा कि रामायन में धनुष्य यज्ञमें धनुष उठा ने के लिये दश हजार राजाओं का एक ही वार बल करने के बारे में चौपाई दरज है "भूप सहस दस एक ही वारा, लगे उठावन टरे न टारा " इसके साथ ही श्रीरामचन्द्र से संवाद होकर पुरुष राम जी पराजय होकर आशीर्वाद देकर वनमें सिधारे तो फिर पृथ्वी निक्षत्री होती तो यह राजा व रामचन्द्र कौन थे । ऐसा ही इस भयंकर समय में साधु साध्वीयों का विच्छेद हूँ वा उस समय में धर्म की रक्षा इन ही गृहस्थ गुरुओं ने की इसका प्र-माण और न देकर सिर्फ कल्पसुत्र में असंजतीयों की पूजा का पाठ देखो उससे साफ प्रमाणित होगा । असंजतीयों ने (असंजमी जीन्होंने संजम नही लिया) उन गृहस्थ गुरुओं ने रक्षा की इसके सिवाय दूसरा प्रमाण गृहस्थ गुरु पूजनीय

होने की साक्षी में कल्प सूत्र साफ साफ साक्षी देता है कि भग-वान महावीर माता त्रीषला देवी के गर्भ में आये और माता को स्वप्न हुए उन स्वप्नों को सुनकर राजा सिद्धार्थ ने उन स्वप्नों के फल पूछने के लिये पण्डितो को बुलवाने की आज्ञा दी तो प्रचारक गण क्षत्री कुण्ड के मध्य भाग में होकर जहाँ स्वप्न पाठक जोतिषियों के घर थे वहाँ गये वहाँ से जोतिषी लोग आए तो राजा ने नमस्कार सतकार सन्मान पूजन कर यथोचित आसन पर बैठाये याने पूर्व में भद्रासन लगे थे उन पर बैठाये यहाँ यह शंका कोई करे कि वे जोतिषि अन्य मताव लम्बि होगे तो इसके प्रमाण में यह दलिल काफ़ी होगा के उन जोतिषियों ने राजा को आशीर्वाद श्री पार्श्वनाथ की स्तुति पढ कर दिया फिर राजा के प्रश्न के उत्तर में जोतिषियों ने स्वप्न फल कहा । अब फिर दूसरा प्रमाण इसी कल्प सुत्र के पांचवें व्याख्यान में दरज है वो देता हूँ जो श्रीभगवान महावीर के जन्म के तीसरे दिवस सूर्यचन्द्र दर्शन कराने की विधि होती है " गृहस्थ गुरु (संस्कार कराने वाला विद्वान गृहस्था गुरु जैन ब्राह्मण अर्हन देव की प्रतिमा के सामने स्फटिकर-त्नवाचां-दी की चन्द्रमा की मूर्ति स्थापन कराके प्रतीष्ठा पूजन करके माता और बालक को स्नान कराके अच्छे वस्त्र पहिराकर चन्द्रोदय के समय रात्रि में चन्द्र सन्मुख माता पुत्र को बैठा कर ऐसा मन्त्र पढ़े " ॐचन्द्रोसि, निशाकरो, । नक्षत्र पति रसि, औषधि गर्भोसि अस्य कुलस्य ऋधि वृद्धि कुरु २ ऐसा बोलकर गृहस्थ गुरु माता व पुत्र को चन्द्र के दर्शन करावे और नम-स्कार करावे फिर माता उस बालक को गुरु के पगों लगावे

पीछे गुरु आशीर्वाद देवे । सर्वौषधि मित्र मरि चिराजि: सर्वा- पदासंहरणे प्रवीण: । करोति वृद्धिं सकलेपिवंशे युष्माकमिदुं: सतं प्रसन्न: ॥१॥ चन्द्र दर्शन के बाद सूर्य दर्शन कराते है उसकी विधि । दूसरे दिन प्रभात में सूर्योदय के समय सुवर्ण या तांबे की सूर्य मूर्ति बनवाकर पूर्व की तरह स्थापन कर ग्रहस्थ गुरु इस तरह मन्त्र पढ़े । ॐ अर्हं सूर्योसि, दिन करोसि, त मो पहरो- सि, सहस्रकिरणोसि, जगच्च क्षुरसि, प्रसिद्ध अस्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टि प्रमोद कुरु २ एसा मन्त्र उच्चारण कर माता व पुत्र को सूर्य दर्शन करावे और माता बालक को गुरु के पगाँ लगावे गुरु आशीर्वाद दे 'सर्व सुरा सुर वंद्य: कारयिता सर्व कार्याणाम् भूयास्त्रि जगच्च क्षुमंगलदस्ते सपुत्राय ॥१॥ इस इतिहास से आप की गृहस्थ गुरुओं का पूजनीय पद व उस समय में गृहस्थ गुरु- ओं का होना प्रमाणित होगा । इसके सिवाय कल्प सूत्र टिका बाल व बोध नामी राजेन्द्र सूरिकृत के पेज २०० में इस जाति की उत्पत्ति का समर्थन इस प्रकार किया है । हवे एक दिवसे भगवान अष्टापद पर्वत उपर समोसरा तेवारे भरत महाराजा ये विचार स्यु २ जे विजुं तो म्हारा थी कांइ थतोन 'थो पण आसर्वे साधुओं ने "९९ भाइयो ने दीक्षा ली वे) अहार बो- हरा उतो लाभ पामुतेवारे एवो जाणी ५०० गाडा सुखडी नाभरी लाव्यो अने भगवान ने कइ चाला गोस्वामीजी आज ना दवसे आसर्वे साधुउने अहार करावबानु हुकम म्हारे घेर थइ जाय तो गणो जरुढो थाये तेवारे भगवान ने कहों आधा कर्मिक राज्य पिड साधुओंने लेवु कल्पे नहीं वलि सन्मुख अहार लइ आव्युते माठे साधुओं लीधो नहीं एवु जोइ भरत राजा

ए जाणो जेहुँ तो सर्व प्रकारे भक्ति रहित थयोए वो सोचकर वातास्योते जोड इन्द्र महाराज ने भरत को कहा कि तुम्हारे से अधिक गुणवाले होय तेने यह अहार जमाडो पछी भरतेपण ते अहार, श्रावको ने जमाड्यो इटाथी ब्रह्म भोजन चालु थयो। हवे भरत राजा सदा सर्वदा श्रावको ने जमाडे छेकेटलाकका लपछी जेवारे घणा जमनास्थयाते वारे परीक्षा करीने सर्व ने सेलाणीना कांगणी रत्न नीज नोइ अपीत था देवगुरु अने धर्म रूपी त्रण तत्व सम्बन्धी त्रण रेखा प्रत्येक श्रावक ने करी ती हाथी जनोइ आपवानी चाल पड़ी इहा ऋषभदेव की स्तुति का ४ वेद थया भरत के पाटे आदित्ययशा ने सोने की जनऊ करी ने एमज जमाडो एमज आठ पाट लगे श्रावक जमाडा इस इतिहाससे भी पूर्व लिखा इतिहास का समर्थन होता है। आगे १६ सस्कारों के कराने बाबत आपको मालूम होगा कि सस्कार कराना कितना जरूरी है जिसको तीर्थ करोतक को धारण करना पड़ा जैसा कि समस्थ परम थे के जानकार श्रीभगवान अर्हतमी गर्भ से लेकर राज्यभिषेकादि परयन्त संस्कारों को अपने देहमे धारण करते हुए तथा देश विरति रूप गृहस्थ धर्म में प्रतिभाव वह सम्यकत्वारोपण रूप आचार आचर्ण करते हुए तथा निमेश मात्र शुल्क ध्यान करके प्राप्य केवल ज्ञान के वास्ते दीर्घ काल तक यति मुद्रातपः चरणादि धारण करते हुए तथा केवल ज्ञान होने बाद पर की उपेक्षा करके रहित चिदानन्द रूप भगवान समव सरण में विराजकर धर्म देशना, गणधर स्थापना और संसयछ्य व च्छेद तथा देवादिकों के किये हुए छत्र चाम रादि अति शययुक्त सिंहासन पर विराज कर सर्व को आचार में

चलने का उपदेश दिया भगवान के निर्वाण बाद इन्द्रादि देवता ओं ने अन्तेष्टिक्रिया की वगैरा अर्हन के मत में लोकोत्तर पुरुषों को आचार ही मुख्य प्रमाण है यहां तक क रामायण मे देखिये दशरथ रामचन्द्रादिको ने अपने कुलगुरु वशिष्ट इस्लाम धर्म में भी निकाह. खतनादि सस्कार अपने गुरुओं से ही काकै सा सन्मान किया कराना होता है ऐसे ही अग्रज भी शादि आदि संस्कार अपने गुरुओ से कराते है पर बड़े पश्चाताप का मुकाम है कि हमारे जैन भाई आधुनी ममय मे देवगुरु आज्ञा उल्लंघन कर अपने यहाँ सस्कार कर्म अन्यमतावलम्बियों के हाथ से कराना सिद्ध किया है उसका कुफल उठाते हुए भी सचेतन होते यह कहाँ तक शोभनीय है लेकिन यह गृहस्थ गुरुओ को भूल जाने का कारण है । इसमें कोई महाशय यह भी शंका पैदा करेगा कि भगवान आदि नाथ ने सर्व हक्क महाणों को ही सोंप दिया तो निग्रन्थ साधुओ को मान्यता का तो कोई हक ही नहीं रहा, नहीं नहीं ऐसा न समझिये आप जरा सोचे कि संसार मे दो तरह के धर्म प्रवर्तमान है उसमें पहले भगवान ने प्रवर्ति मार्ग कायमकर उसके यावत कार्य्ये है उन पर इस जाति का हक कायमा किया और जब भगवान ने कल्पानकारी दिक्षा धारण कर मोक्ष मार्ग का रास्ता बताया उस पर उपदेशक साधु मुनि निग्रन्थों का हक कायम किया याने इन दोनों मार्गों को चलाने का उपदेशक गृहस्थ गुरु व निग्रन्थ गुरुओं को कायम किये यहा आप सोचो कि संसारी कार्यो से कहीं ऊँचा मोक्ष मार्ग निवृत्ति मार्ग है इसलिये निवृति मार्ग दर्शक निग्रन्थ गुरुजीयादा सन्मान योग्य माने

गये वरना दोनों प्रकार के गुरु आदि नाथ के समय से चले आते है और अपने २ मार्ग में पुज्य है। इस इतिहास को त्रिष्टीशला का पुरुष चरित्र नामी ग्रन्थ जो कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यजी महाराज ने विक्रम सं. १२२० में राजा कुमॉर पाल के अनुरोध से रचा है उसको देखिये उसमें इसी माफिक उत्पति इस जाति की होना व पुज्यता व महत्वता का वर्णन मिलेगा इसके सिवाय श्री मद वर्द्धमान सूरि कृत आचार दिन कर निग्रन्थ के २४ स्तम्भ उपनयन संस्कार विधि को देखिये उसमें भी जैन ब्राह्मण माहण की उत्पत्ति का प्रकाशन पड़ेगा भारद्वाज गौत्रिय, चन्द्रगच्छ नेणवाल अवटंकिय, महात्मा महा शय अपने आचार्य धनेश्वर सूरिजी महाराज जो गुप्त संवत ४७४ में वहत्रभीपुर के महाराज धिराज श्री शिलादीत्य जिनका नाम हाल की फहरिस्त में इतिहास वेता ध्रुव भट से सम्बोधन करते है उनके गुरुपद पर आरूढ़ होनेका इतिहास इस तरह देते है। और इनका इस संवत में विद्यमान होने के प्रमाण में एक दोहा भी प्रसिद्ध है। "संवत चार चीमोत्तरे हुआ धनेश्वर सूर। शत्रु जयमहातमरचा शिला दित्य हजुर॥" इनका इस संचयत में होने के विषय मे महामहोपाध्याय राय बहादुर पंडित गौरीशंकरजी ओझा अपने रचीत इतिहास मे इस तरह शंका करते है। "धनेश्वर सूरि ने शत्रुंजयमहातम बनाया था जिसमें वह अपने को वह त्रभीक राजा शिला दित्यका गुरु बतलाता है शिला दित्य४७७ होना मानता है,परन्तु वास्तवमें यह पुस्तक विक्रम संवत की तेहरवी शताब्दी या उसके पीछे को बनी होना चाहिये क्योंकि उसमें राजा कुमारपाल का जीकर है।

जो विक्रम सम्वत ११६६ से १२३० तक राज्य किया था । इस-लिये धनेश्वर सूरि का कथन विश्वास योग्य नहीं" सो यह विचार उक्त पण्डितजी का भ्रम सूचक है क्योंकि शत्रुंजय महात्म्य में साफ वर्णन है कि श्रीभगवान महावीर इन्द्र प्रती भविष्य वाणी फरमाइ के " विक्रमा दीत्य पीछे ४७७ वर्षे धर्म की वृद्धि करने वाला शिला दीत्य राजा थशेत्यार केडे आ जैन शाशन की अन्दर (पाटणनी गादी) कुमारपाल, वाहड, वस्तु-पाल अने शमरा शाह वगेरह प्रभाविक पुरुष थशे" इसी भविष्य वाणी का इस ग्रन्थ में उक्त भटारक ने वर्णन दर्ज किया है न के कुमारपाल के राज समय में बनाया देखो शत्रुंजय महातम पेज ११३ पार्श्वनाथ चरित्र । इस वाणी को जैन समाज कदा-पि मिथ्यान मान सकेगा आज भी भविष्य वाणी जोतषियों पर जनता विश्वास करती है फिर भगवान के कल्पज्ञानी की वाणि कैसे मिथ्या हो सके । पण्डितजी महाराज आपने जो राजस्थान इतिहास बड़े परिश्रम व सोध, खोज, के साथ बनाया इसके लिए हम आपको अनेक धन्यवाद देते है । लेकिन फिर भी संसार में सर्व प्रकार के लोग बसते है उन सबों की मति समान नही होती जैसे कि विश्वेश्वर नाथजी रेहु ने तुलसी सम्वत ३०९ वेसाख मास की माधुरी में आप पर आक्षेप की या वो दरज है उससे तो श्रीमान परिचित होवे हीं गे । आगे मैं छठे शिला दीत्य का संवत ४७४ में होने के प्रमाण आधुनिक इतिहासों से होता है वो देता हू । यह सं. ४७४ वलभी सं० जो विक्रम सम्वत ७१८ में होने का अनुमान होता है । क्यों कि आखरी शिला दीत्य राजा का दान पत्र सबसे पिछले ४६६

का लिखा हुआ पाया है और विक्रम सम्वत से २४१ वर्ष बाद बल्लभी सम्वत का चलना इतिहास वेताओं ने माना है। डाक्टर जी बुलर ने एक और नये पत्र से मालुम किया कि छठे शिला दीत्य जो हाल की फहरिस्त में ध्रुव भट के नाम से कहलाया जाता है। इसी तरह एम. यू. जैनी जेकट ने सन १६३६ इस्वी विक्रम सम्वत १८६३ में यह बयान किया है कि चीनी यात्रि हुएन्तसग भी इस राजा को इसी नाम से जाना ताथा जज की उसने ६३६ इ० वि० सं० ६६६ हिज्री १८ के थोडे समय पीछे उक्त राजा से मुलाकात की थी, देखो वीर विनोद नामी बृहत इतिहास मेवाड़ आगे मै शत्रुञ्जय महातम का संक्षेप वर्णन करता हूं इस ग्रन्थ को पहले श्री युगादि भगवान की आज्ञा से पुण्डरिक नामा गणधर ने जगत कल्याणार्थ देवताओं से सत्कार पाया हुआ सवालक्ष श्लोक में रचा उसके पश्चात श्री महावीर स्वामि के पन्चम गणधर सुधर्मी स्वामि जो आधुनिक निग्रन्थ सम्प्रदाय के अधीनायक थे। उन्होंने संक्षिप्त रूपसे चोइस हजार श्लोक का बनाया इसके पीछे १८ राजाओं का अधिनायक सोराष्ट्र देशके महाराजा ने शत्रुञ्जय का उद्धार किया वो शिला दीत्य छठे के आग्रह से (सर्व अंगो सहित योग मार्ग को सम्पूर्ण जानने वाले स्याद वादमें बडे २ बौधो का मद उताने वाले बिशाल भोग छता उसकी इच्छा का तदन त्याग करने वाले शुद्ध चारित्र से निर्मल अङ्गवाला अनेक प्रकार की लब्धियों से युक्त वैराग्य के समुद्र, सर्व विद्याओं में निपूर्ण और राज गच्छ के धारण करने वाले महात्मा श्रीधनेश्वर सूरि, ने प्राचीन ग्रन्थों में से सार भूत लेकर शत्रुञ्जय महात्म

वल्लभी पुर में रचा। इसके १४ सर्ग में श्री पार्श्वनाथ चरित्र में भगवान महावीर की भविष्य वाणि इन्द्रप्रति इस प्रकार दर्ज है। (प्रभु वाच) इन्द्र म्हारे आगे मोक्ष गया मुनि व तीर्थ करने वाले संगवी अवसर्पिणी काल में जो होगये जिनमें मुख्य २ का तो वर्णन तुमको सुना दिया लेकिन जो मेरे मोक्ष बाद प्राणियों को दुःख होने का है, जिसका वर्णन करता हूँ, यो तुम भाव सहित श्रवण करो, एक वक्त वे भार गिरी पर मेरे वान्दने के लिये श्रेणिक राजा आवेगा और हमारी आज्ञानुसार बड़े शत्रु जय गिरी की यात्रा करके सिद्धाचल में और राजगृहि जिन मन्दिर बनावेगा और मेरा निर्वाण के बाद ३ वर्ष ८॥ माह वित्या केड़े धर्मनोनाश करवा वालो पांचमो आरो बेसशे तेप छी चारसो साठ वर्ष अने पिस्तालीस दिवस केड़े विक्रम राजा आपृथ्वी ऊपर चकवं राज्य करनाररथशे वगेरा २ देखो शत्रुजय महात्म पेज ७६६ इन मुनिश्वरों के पश्चात् पाठ धरों की नामावली याने पट्टावलि ठिकाणा में दरज है लेकिन मैंने विस्तारमय से यह सोचा कि कुल पट्टावली के नामों से चन्द भट्टरकों के नाम समेत संवतो के वशिला लेखों प्रतिष्टा कराइवो और ताम्बर पत्रादि सन दो में जिनके नाम दर्ज है व जिन्होंने प्रसिद्ध कार्प मसलन मन्दिरा दि बनवाए उनही के नामो का वर्णन करूँ। जैसे वि० सं० १११८ में श्रीफलोदि पार्श्वनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा श्रीमान भट्टारक मानदेव सूरीजी कराल देखो गच्छ मत प्रबन्ध पेज २८ तथा ग्राम रो हिड़ाइ० सिरोही में धातु की प्रतिमा पर वि० सं० १३४१ का लेख जिसमें नाणकीय भट्टारक महेन्द्र सूरिजी का प्रतिष्टा कराना साबित होता है। पुनः वि० सं० १९६३ वर्षे माघ सुद १३

उपकेशज्ञाति मे मांडण भार्या सिरिया देवी पुत्र काजा के नेमनाथ बिंब कारितं प्र० भट्टारक धन सरि यह मन्दिर ग्राम खरडा मारवाड़ में है। पुनः एक लेख वि० सं० १५२७ का वर्षे वेसाख सुद ३ ओसवाल ज्ञाति सहा हेमागु ऊधरण वेला मानसनु मादरे चागोत्रे सहा लघु भ्रा० नाम लदे पुत्रिका वानु आत्म पुण्यार्थे श्री चन्द्रप्रभु बिम्ब कारितं प्र० भट्टारक नाणा किय गच्छ धनेश्वर सूरि फिर देखिये खास नग्र उदयपुर मेवाड़ राज सान श्री सीतल-नाथजी महाराज का मन्दिर जो मेघराजजी महता डोडीवालों का बनवाया हुआ है उसमें प्रतिमा पर लेख वि० सं० १५५७ वर्षे मार्ग सुदि ६ शुक्रे नाणावाल गच्छीय उ० काक गोत्रे तेजा० मा० मंगलदेपु धना के नभा० पुत्री महितेन पुर्वजपुन्यारथ श्री शीतल-नाथ बिम्ब का० प्र० श्री महेन्द्रसूरीजी (द्वीतीय) यह बिम्ब उक्त मन्दिर में स्थापित हैं। यह भट्टारक पहले वड़ वल्लभी में हुए थे फिर वहाँ से चित्तौड़गढ़ राज्य स्थापित हुआ वहां आप वहाँ से उदयपुर आ बाद हुआ जब वि० सं० १६६४ में उदयपुर में आकर पोसाल महामणीचोहटा में स्थापित कि जो आज लोगुमज व कंगुरो ढोलकादि चिन्हराज सम्मानित रूप में विद्यमान है। वि० सं० १७४६ में भट्टारक वेणसूरिजी के दो ग्राम महाराणाजी श्रीजय-सिंहजी ने भेट किये इनने बाद पर भट्टारक भावेश्वरसूरिजी महान् प्रतापिक हुए एक समय वह अपने ईष्ट स्मर्ण में तल्ल लीन थे और यवन सेना ने पोशाल लुटने की नीयत से घेरा डाला इन्होंने सोचा कि यवनों के हाथ से मारे जाने से आत्म हत्या करना उत्तम होगा। एसा विचार अपने हाथ से खड्ग से आत्म हत्या करली—इनका बनाया हुआ शैव मन्दिर इनकी पोशाल से

दक्षिण दिशा में आज विद्यमान है यह मन्दिर वि. सं० १८०७ वेसाख सुद ३ का प्रतिष्ठा कराया मौजुद है । यहा यह शंका कोई करेगा के जेनाचार्य्य होकर शिव मन्दिर क्यो बनाया तो इसका यह कारण है कि यह राज्य गुरु पदाधिकारी थे जब मदुदय पुराधीश वशै मताव लम्बी हुए तो निकट सम्बन्ध प्रकट करने हेतु बनाया। गुरु होने के प्रमाणों में आज लोइन के चमर, चादी की छड़ी व गोटा, छत्री (मेगाडम्बर) पालकी आदि राज संनमाति तलवाजमा मौजूद है । कितनेक महाशय एसी शंका करते है कि भटारक पद की मुलोत्पत्ति कैसे हुइ, इसलिए थोड़ा सा इतिहास देता हूँ । यह पद राज राजेन्द्र राजाओ का अलकृत है, जैसा कि अमर कोप में "राजा भट्टार को देव" पाठ है, इसके सिवाय ओर दखिये डा० सर ओरे लस्टाइन को वि. सं० १९५८ मे चीन तुर्किस्थान में प्राचीन शोध के काम में रेती के नीचे वहुत से लेख मीले उन लेखों की लीपी लोकिक (तुर्की मिश्रित भारतीय प्राकृत है) "महनु अव मह्र पलहती" (महानुभाव महाराज लिखते है) कह पत्रों मे महाराज के अतिरिक्त भट्टारक, प्रिय दशन (प्रिय दर्शि) देव पुत्र और राजाओं के खिताब लिखे है, भट्टारक परम भट्टारक, राजाओं का सामान्य खिताब प्रिय दर्शन, आगे चित्तौड़गढ़ पर वि० सं० १३१७ माघ सुदी ४ का लेख रावल तेजसिंह का है उस में उनकी उपाधी, महाराज धिराज परम, परमेश्वर, परम भट्टारक लिखा है, और इन महाराजधिराज का जैन धर्म मानने का यह प्रमाण है कि इनकी राणि— 'जयतला देवी' ने चित्तौड़गढ़ में श्याम पार्श्वनाथ का मन्दिर बनवाया, आगे इस पद के वारे में प्राचीन संस्कृत पुस्तकों से

मिस्टर पिटर्शन की रिपोर्ट के पृष्ठ २३ में 'विजयसिंहाचार्य्य के श्रावक प्रति क्रमण सूत्र चूर्णिका के अन्त में लिखा है—

संवत १३१७ वर्षे माह सुदि ४ आदित्य दिने श्री मदाघाट दुर्गे, महाराजाधिराज परम परमेश्वर परम भट्टारक, उमापति वर लब्ध प्रौढ़ प्रताप समलंकृत श्रीतेजसिंह देव कल्याण विजय राज्ये, तत्पाद पद्मोप जीविनि महामात्य श्री समुद्रे मुद्रा व्यापा-रान परिपन्थ यति श्री मदाघाट वास्तव्य पं० रामचन्द्र शिष्येता कमल चन्द्रोण पुस्तिका व्यालेखि। भावार्थ सं० १३१७ में यह पुस्तक आघाटपुर (आहड) में लिखा गया जब कि यहाँ पर महाराज धिराज तेजसिंह राज करते थे । देखो प्रथीराज चरित्र पेज ५६ इसी तरह उक्त पुस्तक के पेज ६० में आबुपुर ओरिया ग्राम में कनखलेश्वर के मन्दिर में धारा वर्ष का वि. सं० १२६५ का लेख है वि. सं. १२६५ वर्षे वेसाख सुद १५ भौमे चौलुक्य वंशोद्धरण परम भटारक महाराज धिराज श्रीमद्भीमदेव। इन इतिहासों से आपको विदित होगा कि यह पद राजाओं का है। लेकिन महाराजाओं ने जैनाचार्य्य को गुरु मान कर उन्हें इस पद से याने सिरफ 'भट्टारक' पद से भुषित किया हो । इसका यह भी प्रमाण होता है कि उन महाराजाओं ने दान पत्रादि को में इस पद से उनको सम्बोधित किया है। बाकी कितने ही लोग अर्वाचीन काल में मन कल्पित आपके नाम पर भटारक शब्द को लगाते हैं यह उनका विचार ठीक नहीं मालुम होता और न शोभा देता है। नये इस पद पर पहोच सकते हैं।

(ग्राम व गादि नशिनी की सनदे)

(नकल तामपत्र)

सरे मामुली अलकाब महाराज धीराज महाराणा श्री भीम-सिंहजी आदे सात भटारक उदयचन्द मोडा कस्य ग्राम सेमल पुरो परगणे चीत्र कोट रे तीमा हे धरति हलवाती न पीवल रा खण्ड सुद्धी तथा ग्राम भटारो नामण्यो परगने कपामन रेती माहे धरती पाँति ४ थाहे उदक आघाट श्रीरामापंशा कर दीधी लागत विलागत दण्ड बगाउ खड लाखन रूख बरख व कुहा निवाण सरब सुदि पुन्य करे दीधी सो खाया पाया जाजो कणी बातरी चोलण वेगा नहीं आगे ताम्बापत्र महाराणा श्री जयसिंहजी री मही रो संवत १४४६ रा चेत सुद ६ बुधेरा दसवासरे थो सो पोशाल लुटाणी खयारा दंगा माहे सो सुरेक बज देख उणी रे बदले यो कर देवाणो श्लाक स्वदत्तं परदत्तं वाजे हरन्ती वसु-न्धरा षष्टी वर्षे महस्राणी विष्टायां जायते क्रमी प्रतदवे पन्चोली कीसननाथ लिखता पन्चोली सु रतसीग नाथु रामोत सं. १८७७ रा काति विद ८ खेड आगे याजाभगा भटारक वेगा हे पुन्य अर्थ मया हुई सो थासु उत्वर चई होगा नहीं।

(दूसरा ताम्रपत्र)

श्री गणेशप्रसादात् श्री रामोजयति श्री एकलिंगप्रशादात्

सही भाला

महाराजाधिराज महाराणाजी श्री जवानसिंहजी आदेशात् भट्टारक वर्धमान चेला बदयचन्द कस्य भट्टारख उदयचन्द में

कसुर पड़ि ने परा गया ने पाछा थी कतराक दना सुदी पो साल री आजीविका माथमे लालोवना वाम ते खाया गयो अबार बड़ा पोसाल भटारख री गादीअने पछेवड़ी ओड़ाय ने बैठाये ने पोसाल री लारे जमी जयगारी संदक बजालाल तीरे ही सो थाने देवाई सो कतरीक ते लाले दीदी ने कतरक जाता रही कहने दीदी नहीं जीरे बदले श्री हजूर सु पोसाल रे ठेठ सु जमीजायगा खावण पावण लागतराह मरजाद सारीथी हेसाब न कर यों तांबा पत्र कर देवाणो है सो खाया पाया जा जो थांसु कोई बात री ने लग वेगा नहीं लाला रा नाम री कोइ संद कवज नीकलेगा सो रद है कुसी थू रीजो ये पुन्य श्री जी रो है—

विगत धरती विघा ३ तीन ग्राम आयड़में पीवल वरत्यारी वाड़ी री ६ धरती बीघा ६ छे पीवल तथा रांख डगामडआक म्हे दाणी चोत्रे धमं खाता म्हे सुमास १ प्रत रुपा ३) तीन कोठार सु पेटो १ दिन प्रत, परवाने १ महारणा बड़ा जगतसिहजी री सही रो सम्वत १६८५ गा वरस रो जेठ सुद १५ रो समरथ म्हाजन, सोनी, कसारा, जात तीन रो चोरी १ प्रत रु १) एक श्री उदयपुर म्हे करे दीधो सो सावत रहेगा और ही पेशाल लारे जमीजायगा हाल चलु सो थारे सावत रहेगा इमें कसर पड़ेगा नहीं, स्वदत्त परदत्तवाजे हरन्ती वसुन्धरा बष्ठीवस सहस्त्राणी वीस्टायां जायते क्रमी पत दुवे महता सेरसींग लिखता पंचोली सुरतसीग माथू रामोत संवत १८६५ वर्षे वेसाख वीद १ भोमे—

(नकल परवाना)

॥ श्रो रामो जयति ।

॥ श्री गणेशप्रशादात्   ॥ श्रीएकलिंगप्रशादात्

सही भालों

स्वस्ति श्री उदयपर सुथा ने महाराजधिराज महाराणा श्री जवानसिंघजी आदेशात् भट्टारक वर्धमान कस्यर अप्रंच थाहे पछेवडी ओढ़ाय ने बड़ी पोसाल मेल्या है सो कुसी थी रीजो ओर सदीप सु अणी पोसाल रा भटारक रो कारण मेरे मरजाद रेती आवे जुहीर हेगा और अणी पोसाल री लारे जमी जायगा खावणपावण तथा सहेर में लागत सहीनरी हाल चलु है ज्या खाया पाया जाजो अणी वो साल री लारे संदक वजहीजी सारी थाहे देवाय साबत राखी है सो पल्या जावेगा प्रवानगी महेता मोखो सं० १८६४ वर्षे काती सूद ५ सक्के

नकल ताम्बापत्र

सरे अलकाव श्रीरामजी नगेग सरीस्ता मुजब महाराजधि-राज महाराणाजी श्रीभीमसिंहजी आदे सातु भटारक उदेचन्द मोहीराम रामचन्दरा चेला कस्य गाम मलोदो परगणों कमणोर में है धरती वीगा १५) पनरे तीमहे धरती वीगा ६ वो पीवल रेट पडियाला मे हे धरती वीगा ८) आठ रेट पितलाई में धरती वीगो १ एक पोमावत भोपारी गाम रे वारीयाका गुढा म्हे धरती

बीगा ६) जी मे से बीगा ३ तीन तो पीवल जाल कुडारे गले बीगा ३) तीन रांखड; गाटी रे मुंडे वाडो भील हरख्या रो बीगो १।। डोड अणी रे मेरे वाड में गाम राठोडा रा गुडा में धरती बीगा ३।। साडा तीन पीवल रेठ करोग में दीदी जमे धरती बीगा २४।। साडा चोइस आगे थाहे बगसी ही तीरो ताम्बापत्र करके उदक आघाट श्रीराम अर्पण करे लागत बीलगत डंड बगाड कोर मेर तथा खड लाखड सुरी करे बगसी हे मो खाग पाया जाजो थांसु या जायग, उतरेगा नहीं यो पुन श्री जी रो सवदत्ता प्रदत्ता वाजे हरंती व सुधराव षष्टीवर्ष सहस्त्राणि विंटायांजायतेकमी प्रत दवे पचोली की सननाथ लिखता पचोली सुरतसीग नाथुराम रा सं. १८७५ वर्षे सावण सुदी १५

—नकल—

स्वस्ति श्री श्रीहजूर रो हूकम म्हेता सीताराम हे अप्रंच। चीत्र कोटरी तलेठी में भटारक उदेचन्दजी हे चोरी रो १) महाजन में कराय दीज्यो ने ।।) कसबा में सु चोरी रो चोरी ल्लु दिया जावे अणी में कसर पाडो मती सं. १८७५ वर्षे आसोज वीद ६ हास्ता पर तलेटी में सुखुण चीकराय दीज्यो सोदो व कंवरणी में सु—

(नकल यादद्दास्त भटारका रे चेलो राखवारी)

कायम भटारकजी चेलो मुंडे जीरी बीगत अवल भटरकजी मुनासीव जाणे जठासु आपरा गच्छरो वापर गच्छरो लड़को तलास कर लडकारे वारी खुद भटारकजी का दस्तावेज करदे के

यो थारो लड़को मारे चेलो ठीकाणा का हकदार वास्ते लीदो मो मारा ठीकाणा रो मालक यो लड़को है, मै मारी राजी खुशी से रखा, इवावत माहे कोई भाइ गारस्यो दखल करवा पावे नही, इसमज मुतका दस्तावेज तो लड़का का वारीस को करदे, और मुनासिव से नालेर वांटे और वीनको रखना जाहिर करदे यो लड़को भटारकजी रे चेलो वे चुके जिस दिन जात वीरदरी का कोई भटारक जी के नाम कागज लीखे जिसमें वीन लड़के को शिष्य करके नाम देवे चेलो राख्या वाद मुनासीव जाण दीक्षा का मुमहोरत विचार के गनपति स्थापन करे, जीतना विवाह का सामान होवे जीतना करे तव दीक्षा का मुमहोरत का दिन आवे जिस दिन वीन का पाग अगर चक होवे सो उतार लेवे पीछे उनको गुरु होवे सो गुरु मन्त्र सुणावे जीदन श्री'''जीमाहे सुदु सालो आवे सो ओढावे जोदन सु पछेवडी धारणा करे और जीस रोज से श्री'''जी में आशीर्वाद दे, वानकी वैठक पर सावीत होजावे, इतनी वीधान करा पेली श्री'''जी में आशीर्वाद देणो गेर मुनासीव है और जीदन दीक्षा मिल जावे जीदिन सुखीखा-वट माहे आचार्यज जी करके नाम लिख्यो जावे जब वो चेलो भटारकजी गेर हाजर हुवा ठिकाणा रो हकदार होवे कदाचत भटारकजी गेर हाजर हुवा बाद चेला को गादी वैठावे जीरी विगत—

अवल तो मेवाड मालवो आमद अणाती नही देसा माहे भटारकजी रा दोही ठीकाणा है, खुद उदेपुर मध्ये सो अलग २ गच्छरा है एक तो नेणावाल गच्छ, दुसरा कँवला गच्छ रा है दोनो ही का कुरव कारण रा हजुरजादमेट तीन ही देसा माहे

हाल चालु है तब जे गच्छ रा भटारक गेर हाजीर होवे जी गच्छ में न गीच लागती रो लडकों होवे जीने बैठावे नगीच नहीं मीले तो दुरा गच्छ माहे तलास करे सायद गच्छ माहं भी योग नहीं बणे तो हमारी जात ८४ गच्छ हे जी माहे सु तलासी करके रखे, कदाचीत बादी जात माहे पोयोग नहीं बणे तो ब्राह्मण का लड़का ने लेर कायम भटारक जी होवे जारा हाथ सु बीरी दीक्षा का विधान करे पछे श्री'''जी माहे सु दुमालो आवे एक पछेवडी सहेर का समस्त पंचा की तरफ सु आवे पछेवड़ी धुमधाम सु गाजीत्र बाजीत्र सु थोबकी बाड़ी ले जावे उठे गुरु मन्त्र सुणावे अठासु पालकी माहे बैठाय पाछा पोसाल माहे लाय गादी ऊपर स्थापन करे, जीदिन सु वे भटारक जी कहलावे, इन मुजीब वो सुरत से हमारे चेला गादी का हकदार होता है फकत्

भटारक बरदमानजी ग्राम चकारडे पर लोकन्तास हुवा बारे हाथ सु चेलो नहीं मुंडो जी पर वि. सं १९२२ में महाराणाजी श्रीशम्भुसिंगजी के समय में दरियाफत हुई जद या हकीकत मालूम कराई लेखक का पिता खेमराजजी बीयाददास्त सुन कर की मालुम वेवा पर छोटी पोसाल कंवल गच्छ की हेवी पर भटारक देव राजेन्द्र सूरिजी जो नेणाबाल गच्छी महात्मा मयो-चन्द जी का पुत्र थे वे गादी पर कायम हावगे चेला किस्तूर-चन्दजी नाम का था वाने इगादी पर मुकरिर कर किशोर राजेन्द्र सूरिजी नाम दिया को राख्यो इरो दाखल लोपट दर्शनों का दारोगा भट रामशंकरजी का दफतर में है ।

(नकल ताम्रपत्र)

अकुस। स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज माहाराणा श्री भीमसिंहजी आदेशातु भटारक रामचन्द्र कस्य अप्र। उदयपुर मुक्नपुरा मे समस्त महाजन सोनी कछारों रे चॅवरी १ प्रत रुपयो १) एक थाहे दीदा जावेगा आगे परवानो महाराणा श्री बड़ा जगतसिंहजी री सही रो संवत् १६८५ रा जेठ सुद १५ भोमे रा दसवासरो सो फाट गयो जणी परवाणे यो परवानो है सो पाया जावेगा। चपरी एक प्रत १) चलण रो पाया जासी दूवे श्रीमुख। संवत् १८५७ वर्षे काति विद ६ रवे उ।

भटारक किशोररायजी के शिष्य मोहनलालजी सांडेर गच्छ के रक्खे गये उसको दीक्षा वि० सं० १९७१ दूती वैशाख सुद ८ को महोरथ था उस मौके पर नीशाण, हाथी, विरादडी मय करनाला के भेजने तावे राज श्री महक्मेखास से जरिये हुकम आदीं ओल राणावत इन्द्रसिंहजी दारोगा महक्मे फौज के नाम लिखा गया (राणावत इन्द्रसिंहजी) भटारक किशोररायजी के चेला मोहनलालजी के दीक्षा को महोरथ दूती वैसाख सुद ८ को है सो नीसाण, करनाला, हाथी, विराडडी आगे थाके काम पड्यो वे और भेजा गया वे, जीं माफिक अव भी कराय दोगा। संवत् १९७१ का दूती वैसाख सुदी ८ ता० २२-५-१९१५ ई०   द० कामवाला

दीक्षा होने पर थारो नाम प्रतापराजेन्द्रसूरिजी दीधो। दीक्षा होने बाद वैशाख सुदी १२ सं० ७१ को इस व्यक्ति के मकान पर पदरावणी हुई उस मौके पर महक्मे फौज के हाकिम के नाम दरख्वास्त वास्ते भिजाने निसाण मय करनालों व हाथी वीरादडी के दी गई। उस पर महक्मे फौज से जरिए रिपोर्ट मवरखा वैशाख सुदी १२ सं० ७१ राज श्री महक्मेखास में वास्ते हुकम मुनासिब के भेज दरज किया के सं० १९२२ का साल का पना यहाँ

पर दफ्तर नहीं होने से नहीं लगा; उस पर भट्ट रामशङ्करजी दरोगा षट्-दर्शन से दरियाफ्त हुआ। उसके जबाव में भट्टजी मोसुफ रिपोर्ट सवरखा दुती वैशाख सुदी १२ सं० १६७१ वि० बवापसी गुजारिश होके सं० १६२२ का वैशाख विद ८ के दिन गुरांजी खेमराजजी के भट्टारकजी की पधरावणी हुई सो हाथी व निशाण पहुँच्यो है वाजे रहे। उस पर राज श्री महक्मा खास से महक्मा फौज में हुक्म हुवो। पहला मुआफिक बन्दोवस्त करा देवे। सं० १६७१ का वैशाख सुदी १२ ता० २६ ५-१६१५ ई०

(द० काम करवा वाला का)

फिर दुबारा वि० सं० १६७८ का श्रावण विद ४ को पधरावणी हुई जिस मौके पर महक्मे फौज से जरिए चिट्ठी नं० ६ निशाण वगैरह व हाथी ताबे जरिए नं० १० आई।

भट्टारक किशोर राजेन्द्रसूरिजी का शरीर अस्वस्थ रहने से उन्होंने महाराणाजी श्री सर फतहसिंहजी के चरणों में निवेदन पत्री लिख मारफत बड़ा पुरोहित अमरनाथजी के आसोज विद १२ बुधवार के दिन नजर कराई। "मारी ऊमर ७५ साल की है और हाल में सारे बीमारी है और शरीर जो नाशवान है जीसु चरणारविन्दा में अरज है कि प्रतापराय ने शुभचिन्तक चेलो राख सं० १६७१ मे दीक्षा दीधी। अब या ठिकाणो व चेलो श्री चरणारविन्दा मे मेलू हूं सो धणी पालन करेगा।"

पहलां ई ठिकाणा का भट्टारक उदयचन्द्रसूरिजी का परलोक वास रामसेण इलाका मारवाड़ में हुआ। और भट्टारक वर्धमानसूरिजी का परलोकवास ग्राम चिकारड़ा मे हुआ। इस लिए उनकी अन्त्येष्टि क्रिया का वर्णन ठिकाना में न मिलवा सुं भट्टारक किशोर राजेन्द्रसूरिजी का परलोकवास वि० सं० १६८५ का आसोज शुक्ला ४ हुआ। उस दिन षट्दर्शनों का दारोगा को इत्तिला कराई तो स्वयं भट्टजी रामशङ्करजी पोशाले आया और कही के, चालचलावा को खर्चो तो ठिकाना

पूंवेगा सो करज्यो । या कह कर अर्जी से मालूम करवा महलों में गया, और मालूम कीधी । जिस पर हुक्म हुओ के डोल, लवाजमो पहले हुओ वे ना मुआफिक काम करे, सरकारी तरफ सु नहीं कियो जावेगा । ई वास्ते नेला प्रतापरायजी खर्चा को बन्दोबस्त कीधो । डोल वणायो जिस पर रुपहरी आशावरी लगाई और चारों कोनों पर छतरी के चार तुर्रे और ऊपर एक तुर्रा इस प्रकार पाँच तुर्रे रुपहरी लगाया डोल के अन्दर सफेद मलमल मंडाइ गई । डोल मे गादी मोडा रक्खा गया । डोल पर मोका मोका पर और कानों पर लाल टूल लपेट कोर लगेटी गई । भट्टारकजी का शरीर पर चादर पछेवडी, सराना पर दुशाला ओढाया और डोल में पधराया । नोकरवाली हाथ मे दी गई । मुंहपत्ति घुटने पर रक्खी । ओघा पास में रक्खा । पोशाल से जगदीश का चौक मे होकर, सदर कोतवाली व बडे बाजार के रास्ते से गंगोद्भव व आहड के पास पहुचे, साथमे लवाजमो व ज्योति लालटेन मे रक्खी हुई बराबर साथ थी, चवर उडाने गये । साथ मे दो पुलिस के व्यक्ति थे । गंगोद्भव पहुंच कर रथी जो भट्टारकदेव राजेन्द्रसूरिजो की छतरी के पास चुणाई थी उनमे प्रवेश कराने के पहले नवग्रह पूजन की गई, फिर रथी मे पधराकर आरती करने के बाद, अग्नि संस्कार नेणावाल श्रीलालजी जो रतनजी के वशज उनके नजदीक रिश्ता मे होने से उनके हाथ से सब कृत्य किया गया और प्रतापरायजी पोशाल पर ही रहे ।

अन्तिम संस्कार में प्रसिद्ध २ ओसवाल महानुभाव, ब्राह्मण, पडोसी व महात्मा बन्धु वगैरह अच्छी तादाद मे थे । भट्टारकजी को दाह संस्कार कराने ले गये । पीछे से ठिकाने पर बन्दोबस्त करने के लिए भट्टजी राम-शंकरजी व कामदार हिसाब दफ्तर दौलतसिंहजी पंचोली व चौकी का सर्दार स्वरूपसिंहजी शक्तावत, पुलिस का नारायणलालजी आमेटा सहित आये, और जरुरी सामान बाहर निकलवा कर मकानों पर चिट लगाये, डोल खर्च वगैरह में १२६।)॥ रुपये का खर्च ठिकाने का हुआ; डोल के साथ मे

पुलिस का आदमी भेजने व कोई रोक टोक न करने के लिये, भट्टजी के नाम लिखा उस मुआफक इन्तजाम होगया।

किशोर राजेन्द्रसूरिजी के पाट भट्टारक प्रताप राजेन्द्रसूरिजी को नियुक्त किये, जिस बारे में भट्टजी रामशङ्करजी पद् दर्शना का दारोगा के नाम, राज श्री महक्मा खास का रुक्का नं० ३३४१३ ता० १७-११-२८ मृगसिर शुक्ला ५ सं० १९८५—

सिद्धश्री भट्टजी श्री रामशंकरजी जोग राज श्री महक्मा लि० अपरंच रिपोर्ट राज नं० ६७ कार्तिक शुक्ला १२ संवत् हाल लिखी जावे है कि जगदीश के चोक के मुत्तशिल बड़ी पोशाल है, वहाँ के भट्टारक किशोर-रायजी, आसोज सुदी ४ संवत् हाल फोत हुआ बाके पीछे स्थान पर मुकर्रिर होने के सिलसिले में दरियाफ्त से इनके मुंडित शिष्य प्रतापरायजी जाहिर आया, तथा प्रतापरायजी का चालचलन अच्छा होने की १४ शख्स महाजनान वगैरह ने तस्दीक की है, और राज की रिपोर्ट इन्हीं प्रताप-रायजी जो ३२ वर्ष की उम्र का होकर पूर्व जन्म से महात्मा होना जाहिर आया है, इसलिए उनकी मंजूरी बाबत भट्टारक किशोररायजी के बजाय उनका शिष्य प्रतापरायजी को मुकर्रिर किया गया है, सो इनसे नेकचलन वगैरह का इकरार लिखवाने की हस्ब सरिश्ते कार्यवाही कर रिपोर्ट करें, ताके स्थान पर जो इन्तजाम है वो बरखास्तगी की कार्यवाही की जावे।

प० धर्मनारायणजी

(नकल इकरारनामा)

स्टाम्प नं० १३८३४ पोष शुक्ला १० सं० १९८५

लिखता भट्टारक प्रतापराजेन्द्रसूरि सा० शहर बड़ी पोशाल अप्रञ्च। इस पोशाल पर मेरे गुरुजी के पीछे श्री जी ने मुझे मुकर्रिर फरमाया सो मारा जैन ठिकाना की आगली मर्यादा है याने नागा ठिकानेदारों की जो

मर्यादा है उस मुजिब मैं भी बराबर चलूंगा, किसी प्रकार से बेजा चलूंगा नहीं, ठिकाने को आबाद रक्खूंगा, ठिकाने के बाहने जो जायदाद है उसको खुर्द बुर्द नहीं करूंगा और पोशाल की मान मर्यादा बराबर रक्खूंगा, शिष्य मेरी जाति सिवाय अन्य को नहीं रक्खूंगा, और गृहस्थाश्रम के रिश्तेदार यदि मेरे पास आवेंगे तो मुसाफिरान के तौर से रक्खूंगा, इस इकरार के अलावा चालूं नहीं, और किसी तरह से चलना साबित हो जाय तो सरकार से हुक्म होगा तामील करूंगा, यह इकरारनामा मैंने अपनी खुशी रंगियत व अक्ल होशियारी से लिख दिया सो साबित है। संवत १९८५ का पौष शुक्ला १३ द० भट्टारक प्रतापराजेन्द्रसूरि

साख १ पाणेरो अर्जुनलाल की भट्टारकजी प्रतापराजेन्द्रसूरिजी के कहने से द० अर्जुनलाल

साख १ रुघनाथसिंह चमेसरा. साख १ गणेशलाल सुराणा

साख १ जोशी नाथूलाल ब० प० की भट्टारकजी के कहने से दी

स्वीकृति भट्टारक प्रताप राजेन्द्रसूरि गुरु किशोर राजेन्द्रसूरिजी उपरोक्त सही। उक्त पद कर स्वीकृति दी है प्रताप राजेन्द्रसूरि।

पहले ३) रु० माहवार और पक्का पेटिया रोजाना मिलता था उसके बदले महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज समय रियासत के खर्च का बजट कायम हुआ, जिसमें धर्म सभा तालुके ८) रु० माहवार करा बढ़ाये और भट्टारक प्रताप राजेन्द्रसूरिजी ने बराबर मिलते रहने वास्ते धर्मसभा में राज श्री महक्मे खास से जरिए हुक्म नं० ४५६३६ पौष शुक्ला १३ हिसाब दफ्तर में रुको लिख्यो गयो जिसकी नकल तामीलन धर्मसभा में भेजी गई।

श्री बडा हजूर महाराणाजी श्री फतहसिंहजी वैकुण्ठ पधारे और हाल श्री जी गादी विराजमान हुवे सो आशीर्वाद देवा वि० सं० १९८६

का ज्येष्ठ सुदी ६ साढे आठ बजे महलों गये। भट्टजी रामशंकरजी को कहलाया के आशीर्वाद देवा तात्रे उपस्थित होने के लिये अर्ज कर जवाब देवावे; जिस पर भट्टजी ने कहलाया के हाल में कुर्सी में विराजे है सो गादी पर विराजवो वेगा जब आशीर्वाद वेगा। फिर दुबारा अर्ज कराई तो आज्ञा मिली के ज्येष्ठ शुक्ला ६ सोमवार के दिन सुबह ६ बजे आवें। सो भट्टजी ने कहलाया कि आज नौ बजे महलां आ जावें और पांडेजी की ओवरी बैठ जावे। आज्ञा मुआफिक ८॥ बजे रवाना होकर महला गया और पांडेजी की ओवरी आसन बिछा कर बिठाये। सवा नौ बजे पासवानजी का मन्दिर का महन्तजी आया फिर १। बजे लादुवास का आयसजी आया। बाद में भट्टजी तीनों को ही श्री जी मे ले गये। स्वरूप-चौपाड़ में श्री जी को विराजवो हो उठे गया। श्री जी की गादी सामने, दो हाथ की दूरी से आयसजी रो आसन, इसके दाहिनी तरफ भट्टारकजी का आसन और पास में पासवानजी का मन्दिर का महन्तजी बिना आसन बैठा। सिर्फ जाजम पर पांच हाथ की दूरी पर। बाद ५ मिनिट के सीख करी। श्री जी ने जाता आवतां ऊठ ताजीम दी।

आजीविका पर बन्दोवस्त था वो बरखास्त करवा तावे जरिए हुकम नं० २२२६४ सं० १९८७ भाद्रपद शुक्ला १५ ता० ७-८-१९३० ई० गिरवा, कपासन, चित्तौड व देवस्थान में लिखा गया।

छोटी पोसाल का देरासर में प्रतिमाजी थे उनको बडी पोसाल पधराने और लवाजमा के लिए हुकम नं० ७८४३१ वै० कृ० १४ सं० १९९२ हुआ। प्रतिमा पूजन विधि की है इसलिए हाथी के बजाय मियानो करा दियो जावे, बाकी फराशखाना से जाजमा २, कनात १, छायावान १ और कोतल में चालवा तावे घोड़ा १, हाथी, बिरादडी,

निमाण मय करनाला के आये । भट्टारकजी मूर्तियों के साथ पधारां की वाड़ी मन्दिर में पधराने के लिये पधारिया उनके साथ आये । मन्दिर की पूजा करने वास्ते पुजारी दो के प्रति नाम रु० ४१) इकतालीस तनख्वाह मिलती थी, वार्षिक वे ८२) रु० भट्टारकजी हस्ते मिलवा को हुकम नं० ४६८७६ पौष शुक्ला १२ स० १९९० हुआ ।

इसी नेणावाल अग्रवडी भारद्वाज गोत्री की निर्ग्रंथ ठिकाना "आचार्य पद" का भिणाय इलाका अजमेर में है जिसका वर्णन—

उदयपुर भट्टारक गम्भनसूरिजी का दूसरा शिष्य जयवन्तसूरिजी भिणाय जिला अजमेर में "आचार्य पद" की गादी स्थापित कर विराजे । इनके शिष्य नदमीचन्दजी, हँसराजजी, ठाकुरसीजी, मेघराजजी, कल्याणरायजी, गोदामजी, कुशालचन्द्रजी, हेमराजजी, श्रीचन्द्रसूरि, अनोपचन्द्रसूरि, गुलाबचन्द्रजी, हरकचन्द्रजी, शिवचन्द्रजी, धनरूपचन्द्रजी, विजयचन्द्रजी हाल विद्यमान हैं । (ठिकाने के साथ जीविका व लवाजमा की सनदों की नकलें वहाँ से नहीं आईं जिससे अङ्कित नहीं का ।)

भट्टारकजी उदयपुर से बाहर पधारे उसकी रीति भट्टारकजी किशोर राजेन्द्रसूरिजी गाँव सरदारगढ़ उपाध्यायज्ञानजी ओसवाला के द्वादसा पर पधारे । लवाजमा छड़ी, चामर, गोटा, मेघाडम्बर, मियाना के सहित । इसी तरह गाँव केलवा वाणारस मयाचन्दजी का द्वादसा में वि० सं० १९७४ में पधारे वहाँ भी उपरोक्त लवाजमा साथ में था ।

भट्टारक प्रताप राजेन्द्रसूरिजी विक्रम सं० १९९४ के माघ शुक्ला १२ को शाम की गाड़ी से आमेट पहुँच कर मियाने में विराज

कर रात का समय होने से आमेट बाहर अखाड़े में बिराजे और प्रातःकाल ठिकाने आमेट से रावतजी गोविन्दसिंहजी की तरफ से घोड़े २ चाँदी के साज के कोतल में रखने के लिये व छड़ी १ चाँदी की। ठिकाने की छड़ी मय छड़ीदार हरलाल व १० जवान पुलिस मियानो, नक्कारखाना, मय नक्कारचियों के व बैंड के भिजवाये।

ग्राम आमेट के समस्त महाजन ओसवाल पंच छोटी बडी तड़ के व यजमान माद्रेचा, बोहरा और महात्मा जाति के समस्त दर्शनीय अखाड़े पर आये। वहाँ पंच ओसवालों की तरफ से भेंट कर दुशाला ओढ़ाया। बाद पंचान को मांगलिक श्रवण करा फिर मियाने में बिराजमान कर छड़ी, चामर, गोटा, चपरास वगैरह कुल लवा-जमा ठिकाने के सहित सर्व पंचान के जय-घोष करते हुवे आमेट ग्राम में सरे बाजार होते हुवे पधारे। बाजार में दुकानदार महा-जन बोहरा वगैरह खड़े होकर वन्दना करते रहे और सत्यनारायण के पास जलूस सहित का फोटो लिया गया। रास्ते मे जैन मन्दिर जी के दर्शन कर भेंट करते हुवे श्री जैसिंहश्यामजी के मन्दिर दर्शन भेंट कर के पण्डित गुलाबचन्द्रजी कनरसा अवटंकी अग्नि वैश्यायन गौत्र के पोसाल पधारे। वहाँ पंडित रतनलालजी की पोशाल से पं० गुलाब-चन्द्रजी की पोशाल तक पगमंडे पर होकर पोशाल के बाहर दरीखाने (जाजम, पछेवडा, गादी मोड़ा लगा हुआ था उस पर बिराजे। गुलाबचन्दजी की तरफ से २५) रु० व दुशाला नजर हुआ और चरण-प्रक्षालन व नवांग-पूजा गुलाबचन्दजी ने की और दो २) रु० न्योछावर के किये। लवा-जमा वालों को पारितोषिक देकर बिदा किये, फिर पात्या हुआ सो जीमण जीम वहाँ से कोठारी मोड़ीलालजी के बंगले निवास-स्थान पर पधारे। शाम को फिर पांत्या हुआ और जीमे। वहाँ फिर

नजराना हुआ। माह सुद १५ दक्षिणा में जाति सरदारों को पीतल की बोगणिया दी। उस अवसर पर जाति के दर्शनीय मालवा के भी थे. उसी दिन पंडित सागरमलजी गौतम गोत्रिय ओसवाल अवटंकी के यहाँ पधरावणी हुई। वहाँ भी वैसे ही लवाजमा सहित पधारे। मार्ग मे मोडीलालजी कोठारी के यहां पगमण्डे होकर उन्होंने भेंट व चादर अर्पण की। वहां से लवाजमा समेत मियाने विराज कर रास्ते मे रावतजी के महलों के पास होकर जैसिहश्यामजी के मन्दिर पधार दर्शन किये। वहा से मियाने मे विराज कर सदर बाजार सोनियो के मोहल्ले मे होकर पधारे, रास्ते मे फूलचन्दजी बापणा ने मियाना रोक कर भेंट की। यहां से सागरमलजी के यहाँ उसी तरीके से पधरावणी हुई। बाद जीमवा के सभा की गई। वहां पर महाजनान के पंचों को उनके कर्त्तव्य व जैन धर्म की महत्त्वता का व्याख्यान पंडित काश्यप गोत्री कोरंटावाल अवटंकी बख्तावरलालजी उदयपुर निवासी ने दिया। इस स्थान पर कोठारी सरदारमलजी ने नजराना किया।

मेवाड़ में—
भट्टारकजी की दूसरी पोशाल

छोटी पोशाल कमलगच्छ की भट्टियानी चौहटे है। इस पोशाल को सिरोही से भट्टारक नाथाजी उदयपुर पधार कर कायम की। इन के शिष्य लक्ष्मीदासजी, उनके पट्ट पर शम्भूदासजी। यह महान् प्रतापी हुए। राज्य मेवाड़ की भांजगड़ महाराणाजी श्री भीमसिंहजी के राज समय में बाईजीराज श्री चन्द्रकॅवरजी, गांधीसोमजी और उक्त भट्टारकजी ने की, अपने गुरुजी का मेला किया। वि० १८६७ चैत्र शुक्ला १५ को पतवारी पास जो इनको बाड़ी थी, मन्दिर बनवा कर भगवान नेमीनाथजी की प्रतिमा स्थापन कर प्रतिष्ठा कराई। तीन प्रान्त के जातीय बन्धु इकट्ठे हुए, इनके पट्ट पर भट्टारक भीमराजजी, इन्होंके पट्ट पर देवराजेन्द्रसूरिजी देलवाड़ा से महात्मा मयाचन्दजी के पुत्र आकर बैठे। इनके दो शिष्य थे, एक गोपाललालजी जो जाति से शैव ब्राह्मण थे, दूसरे गुलाबचन्दजी जो देलवाड़ा के नेणावाल शिव-राजजी के दूसरे बेटे थे। देवराजजी के पश्चात् गोपाललालजी जिन का दीक्षा नाम कल्याणरायजी रक्खा गया। वि० सं० १६४५ मे पाट बैठा लेकिन चाल में शिथिल होने से पाट से अलग कर गुलाबचन्द्रजी जिनका दीक्षा नाम हुलासरायजी रक्खा था। वि० सं० १६६३ में पाट बैठे। थोड़े ही समय में परलोकवास हो गये। इनके शिष्य न होने से राज्य से प्रबन्ध रहा फिर जाति के दर्शनियों की व महाजनान के पञ्चों की पैरवी न होने से ठिकाना खालसे हुआ। इनका व उस ठिकाने का मरतबा, लवाजमा एकसा था और अन्त-क्रिया भी बड़ी पोशाल मुआफिक हुई। आयड़

धूलकोट के पास देवराजजी की छत्री कराई गई और पगलिये पध-राये गये जो विद्यमान हैं। फिर इनकी पोशाल के देरासर की प्रतिमा बड़ी पोशाल के सिपुर्द हुई समेत मन्दिर के।

पिपलिया (मालवा) में आचार्यजी की पोशाल वशिष्ठ गोत्रिय सुराणा अवटंक के आचार्यजी गादीधर ठिकाना पिपलिया (इन्दौर) मे है हाल में उस गादी पर आचार्यजी कचरूलालजी विद्यमान हैं। आपका चन्द मरतबे अपना इतिहास भेजने के लिये लिखा मगर नहीं भिजाया इसलिए जितना हाल मिल सका लिखा गया है।

इस पोशाल को नागोर (मारवाड़) से आकर यहाँ कायम की गई। पहिले आचार्य जयवन्तजी आये। उनके शिष्य हीरजी व हरकाजी इनके पट्ट पर गुलाबचन्द्रजी। इन महाशयों को चन्द्रावतों का दिया हुआ दत्त वि॰ सं॰ १७२६ में ग्राम पिपलिया मिला और यह कुकड़ेश्वर ग्राम से रामपुरे गये। गुलाबचन्दजी के पाट शिवजी इनके पाट पर देवराजजी बाद में सुखदेवजी। आप अच्छे योग्य और प्रतिभाशाली हुए। इनके समय मे गांव का मुकद्दमा चला जिसके लिए सुखदेवजी स्वयं इन्दौर गए और ६ मास तक मुक-द्दमा की पैरवी की और अभियोग समाप्त करा नई सनद हाँसिल करके वापिस आए। इन्दौर में भगवती-सूत्र का व्याख्यान देते रहे। देवराजजी का दूसरा शिष्य इनके पाट पर बैठा। इस विषय में एक दोहा भी है—

जैवन्त के पट्ट दो हुए, हर का हुआ जहीर।
जैवन्त तो कुकड़ेश्वर रह्या, रामपुरे जो हीर॥
मुनिवर भारी महात्मा, पीरा हन्दा पीर॥

वि० सं० ११११ में चित्तौड़गढ़ से रावचन्दाजी आवामोरी ने मार कर गढ़ आमद लिया, जिससे आमद देश कहलाया। गुरॉ वेणाजो ने विक्रम संवत् १७३५ में महाराणाजी श्री अमरसिंहजी ग्राम कुकडेश्वर मे जमीन बीघा २५-३० उदक दी।

इसके सिवाय मारवाड, गोडवाड में भी भट्टारकों के ठिकाने है लेकिन उनकी तरफ से भी कोई इतिहास नहीं आया जिससे दर्ज नहीं होसका।

प्राय: बहुधा लोगों का यह खयाल है कि निर्ग्रंथ यतियों के गृहस्थाश्रम करने से इस जाति की उत्पत्ति हुई। इस किंवदन्ती का मूल कारण यह है कि पहले से हमारे में गृहस्थ व निर्ग्रंथ दोनों तरह के होते चले आए हैं इसका हाल मैंने ऊपर प्रथम तीर्थङ्कर के समय मे वर्णन किया है। उन निर्ग्रंथों में से बहुत से लोगों ने अपनी जैन, जाति ब्राह्मणों की कन्याओं के साथ पाणिग्रहण कर लिया और बहुत से अब भी निर्ग्रंथ होते चले आ रहे हैं। ऐसी रस्म हमारे सिवाय दूसरे हमारे भ्रातागण वैदिक ब्राह्मणों मे भी प्रचलित थी यानि सर्व भूदेव अपनी उत्पत्ति ऋषियों से मानते हैं और ऋषी जो निर्ग्रंथ होते थे उनमें कईएक ऋषियों ने राजकन्याओं के साथ पाणिग्रहण करके ग्रहस्थाश्रम मे प्रवेश किया जिनकी सन्तानें आज लों होना मानी जाती है। इसके सिवाय सन्तानें दो तरह की शास्त्र-कारों ने मानी है। एक तो माता पिता से उत्पन्न। दूसरी गुरु से उपदेशित। हमारी जाति में दोनो प्रकार से विद्यमान है और ठिकानों मे इस समय प्रधान स्थान उदयपुर भट्टारकजी का माना जाता है।

कोरंट गच्छ के आचार्यों का वर्णनः—

यह कोरंटावाल अवटंक मुनिराज कनकप्रभवसूरिजी महाराज जो रत्नप्रभवसूरिजी महाराज के, गुरुभाई थे उनके उपदेशित जैन ब्राह्मणों का होना प्रमाणित है। उसके प्रमाण विक्रम संवत् १०० के आस-पास के मिले वे अङ्कित करता हूँ। हमारा जैन ब्राह्मण गोत्र काश्यप निगम प्रभाविक है। मुनिराज ने कोरंट नगर में उपदेशित किये वहाँ से कोरंटावाल अवटंक से सम्बोधित होने लगे। हम वैदान्ती हैं। विक्रम सं० १२५ मे कोरंटनगर (कोलापट्टन) के नाहड़ मन्त्री ने सत्यपुर (साचोर) मे जैन मन्दिर वनवा कर श्री महावीर प्रभू की प्रतिमा पधराई। उसकी प्रतिष्टा श्रीजज्जक्सूरिजी ने कराई। इसका इतिहास श्री मद् स्व० शा० वि० बुद्धिसागरजी महाराज रचित 'गच्छ मत: प्रवन्ध' जो वि० सं० १९७३ वीर सं० २४४३ में मुद्रित हुआ। उसके पेज २४, २५ मे लिखा है "पालनपुर मां पल्लवीय पार्श्वनाथ ना देरासर मां एक शिला-लेख छे जेमा संवत् १२७४ ना फाल्गुन सुदी ५ गुरुवार ना दिवसे कोरंट गच्छाचार्ये कक्कसूरि हस्ते अखण्ड सङ्घपतिये प्रतिष्ठा कराव्यानो वृतान्त छे। कोरंटगच्छ मां किया किया आचार्योंये क्या २ ग्रन्थ लख्या ते जणाया थी प्रसिद्ध करवा मे आवशे। लाडोल, पालनपुर विगेरे ठिकाणे गुजरात मां कोरंटगच्छ प्रवर्तती हतो एम लेखो थी सिद्ध थाय छे। कोरंट गच्छ सम्बन्धी विशेष हकीकतपास करवानी जरूर छे वि० सं० १२५ मां कोरंट नगर नो नाहड़ मंत्रीये सत्यपुर मा जिन मन्दिर बन्धाव्युँ ते मां महावीर प्रभूनी प्रतिमा नी प्रतिष्ठा श्री जज्जकसूरिये करी। "जयउवीरसच्चउरीमंडण" ये चैत्यवन्दन मा तेनो पाठ छे वि० सं० १२५ मा कोरंट गच्छ जेना थी प्रसिद्ध थयो ते कोरंट नगर नी जाहोजलाली प्रवर्तती हती।" फिर देखिये वि० सं० १५६५ माघ विद १२ द्वादश्यां ओसवाल ज्ञातिये

जैसा भा० जसमादे पुत्र नरसिंगेन भा० नायकदे पुत्र जयवन्त, देव-चन्द, सुरचन्द, हरिचन्द प्रमुख कोटुम्बयुतेन मुनि सुव्रत बिंब स्थापितम् । प्रतिष्ठितं कोरंटगच्छे कक्कसूरिभि । पुन: वि० सं० १४०८ वैसाख सुद ५ गुरुवार दिने कोरंट गच्छे श्री नन्नसूरि पट्टे श्री कक्कसूरिभि ।

यह लेख आबू पर निज मन्दिर के सभा-मण्डप में काउ-सग्गावस्था के प्रतिमाजी के नीचे दोनों तरफ दो प्रतिमाजी पर इसी तरह का लेख है और इसी मुआफिक वस्तुपाल की बमी में काउ-सग्गी प्रतिमा पर तीन लेख है । वि० सं० १४८४ वर्षे वैशाख सुद १० रवो श्री कोरंटीय गच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश ज्ञातिमय मलयसिंह भा० मानणदेवी सम मदनेन पु लुणा सहितेन भा० हेमा श्री सम्भवनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं कक्कसूरिभि । पुन. वि० सं० १५०२ वर्षे माघसुदी ११ शुक्रे श्री कोरंटगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने प्राग्वट ज्ञातीय नाथा भा० नीवणी पुत्रेण अमराकेन भा० अध्यवेल सहिते न स्वमातुश्रेय श्री अभि-नन्दन स्वामि बिब कारितं प्र० कक्कसूरिभि पट्टे श्री सांवदेवसूरि । फिर वि० सं० १५०६ वर्षे वेशाख सुद ११ शुक्रे श्री कोरंटगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उवसवंशे शंखवालेचा गोत्रे श्री लखमसि भा० सांसल देवी पुत्र रामा भा० रमादे पुत्र तेजा नान्ना स्वमाता पित्रो श्रेय से श्री वासपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठा सांवलदेवसूरिभि ।

वि० सं० १४६१ वर्षे फाल्गुण सुदी १२ गुरौ कोरंटावाल गच्छे उपकेश ज्ञातिय शंखवालेचा गोत्रे नरसिंह पु० जाणकेन श्रेयसी धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं कक्कसूरिभि ।

वि० सं० १५७७ धनवाड़ी (मारवाड) मे धातु की प्रतिमा पर वि० सं० १५७७ वर्षे ओसवाल ज्ञाति खामाणादा गोत्रे सं०

देना भा० विजलदे पुत्र पदमानाकर पदमा भा० पुंगीनाकर भा० नायकदे पु० हरिचन्द युतेन भ्रातृ धारणा पुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठित कोरंट गच्छे श्री कक्कसूरिभि ।

वि० स० १८४६ फाल्गुन विद ६ बुधे ठ० परवतठ० नाथा भा० जीवणी पु० अमराकेनस्वभार्यासिनरपत श्रेय श्री वासपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठ' कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने श्री कक्कसूरिभि पं० नावदेवसूरिभि पं० दाखुलाल सूरिभि ।

ऐसे २ बहुत से प्रमाण हैं लेकिन विस्तार भय से नहीं लिखता हूं।

कोरंट गच्छ के सम्बन्ध में अन्य प्रमाण:—

पूज्यपाद मुनिवर्य्य श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज ने जैन जाति महोदय में भी इस गच्छ की महत्वता का बहुत वर्णन किया है जैसा कि "कोरंट गच्छ मे भी बडे २ विद्वानाचार्य हो गये है।' जिनके करकमलों से कराई हुई हजारों प्रतिष्ठाओं के लेख मिलते हैं। वर्तमान शिलालेखो में भी कोरंट गच्छाचार्यों के बहुत शिला-लेख इस समय मे भी मौजूद हैं और वे मुद्रित भी हो चुके हैं। विक्रम संवत् १६१८ तक कोरंट गच्छ के श्रीमाल पोरवाल की शाखा उनके सुकृत कार्य व वंशावलियें कोरंट गच्छ वालों के पास थी और कोरंट गच्छ वालों का एक बडा भारी ज्ञान भण्डार कोरंट नगर में था। वहा के महाजनों से मालूम करने से ज्ञात हुआ कि कितनेक तो मुसलमानों के अन्याचारों से नष्ट हो गया। शेष रहा हुआ गृहस्थ लोगों के हाथ में रहा उसका संरक्षण पूर्णतया न होने से नष्ट होगया। फिर भी रहा, वह विक्रमी १६१० में कोरंट गच्छीय पूज्य बीकानेर आये तब कितनीक पुस्तकें लाये वह कँवला गच्छीय

पूज्य को दी । जिसमे एक बही वंशावलियो की थी वह विक्रम सं० १६७४ में यतिवर्य माणकसुन्दरजी द्वारा मुझे जोधपुर मे मिली । जिसमें कोरंट गच्छाचार्यों के प्रबोधित ओसवालो की वंशावलिएँ थी जिनके नाम मांडोत, सुधेचा, धुवागोता, रातडिया, बोथरा, (बच्छावत मुकीम फोफलिया) कोठारी, कोटडिया, वाडीवाल, धाकड़, नागागौता, नागसेठिया, धरकट, खीबसरा, मथुरा, सोनेचा, मकवाणा, फितूरिया, सुखिया, संखलेचा, डागलिया, पाउगोता, पोसालेचा, साहचेती, नागणखिमाणदिया, बडेरा, जोगणेचा, सोनाणा, जाडेचा, चिचड़ा, कपूरिया, निंबाड़ा, व फूलिया, एवम् ३४ गौत्र (१) खाबिया, ललवाणी, कलवाणी, मोलाणी कन्दरसा गच्छ के भी कहते है। शायद इन जातियों की वंशावलियाँ मोशाला व वर हमे दे दिये हों । अब तो सिर्फ कोरंटगच्छीय महात्माओं की पोशालें रह गई हैं और वह श्रावकों की वंशावलियें लिखतें है तदपि जैन समाज कोरंट गच्छ की आभारी है और उस गच्छ का नाम आज भी अमर है यह ग्रंथ संवत् विक्रमी १६८३ मे मुद्रित हुआ । इसी तरह षडेर गच्छ में भी बड़े २ प्रभावशाली निर्ग्रंथ भट्टारक व आचार्य हुए है। शोध से पत्ता चला है—

इतिहास '**राससंग्रह**' भाग २ जो संशोधक विजयधर्मसूरि पृष्ठ नं० ५६ की

नकल

नाडलाई नी पश्चिम दिशा माँ गाम नी भागोले एक ऋषभदेव नो विशाल मन्दिर छे आ मन्दिर ना रङ्ग-मण्डप मों डावी बाजू नी भीत माँ थाँभला ऊपर एक शिला लेख छे आ लेख नी पोलाई ६ इञ्च अने लम्बाई ४ फीट ६ इञ्च छे संवत् १५६७ ना वैशाख सुदी ६ ना दिवसे सडरेक गच्छ मा थयेला ईश्वरसूरि रचेली लघुप्रशस्ति नो आ लेख छे । श्री यशोभद्रसूरि गुरुपाद काभ्य नमः सं० १५६७ ना वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्यां तिथौ शुक्रवासरे पुनर्वसु ऋक्ष प्राप्ते

चन्द्र योगे । श्री संडेर गच्छे कलिकाल गोतमावतार समस्त भविक-जनमनोऽम्बुज विबोधने का दिनकर सकल लब्धि निधान युग प्रधान। जितानेक वादीश्वर वृंद प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि घृष्ट पदा-विंद । श्री सूर्य इव महाप्रसाद । चतुः षष्ठी सुरेन्द्र संगीमानं साधु वाद । श्री संडेरकीय गण बुधावतंस । सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंस यशोवीर कुलाम्बर नमो मणि सकल चारित्री चक्रवर्ती वक्र चूडामणि भ० श्री प्रभु श्री यशोभद्रसूरय ऽपरनाम ईश्वरसूरि तत्पट्टे श्री चहुमान वंश श्रृंगार लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलाधिपार श्री श्री बदरीदेवादत्त गुरु-पद प्रसाद रय विमल कुल प्रबोधनैक प्राप्त परम यशोवाद भ० श्री शालिसूरित श्री सुमतिसूरित० श्री शांतिसूरित श्री ईश्वरसूरि एवं० यथाक्रम मनेक गुणा-निगण रोहण गिरीणा महा सूरिण। वंशे.पुन श्री शालि सूरित श्री सूमतिसूरि तत्पट्टालंकार हार भ० श्री शांतिसूरि वराणा स परिकराणा विजय राज्ये अथेह श्री मेदपाट देशे श्री सूर्यवंशी महाराजा(णा)धिराज श्री शिलादित्य वंशे श्री गुहदित 'राउल श्री बप्पाक श्री खुमाणादि महा-राजन्वयेराणां हम्मीर श्री खेतसिंह श्री लखमसिंह, पुत्र श्री मोकल मृगांक वंसोद्योनकार प्रताप मार्तण्डावतार आ समुद्र महि मंडला खण्डल अतुल महाबल राणा श्री कुम्भाजी पुत्र राणा श्री रायमल्ल विजयमान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुँवर श्री पृथ्वीराजानु शासनात् श्री उवकेश वंशेय भण्डारी गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र श्री मं० दूदवंशे मं० मयूर सुत मं० सार्दुल तत्पुत्राभ्या मं० सीहासमंदाभ्या सद बाधव मं० कर्मसीधारा लाखादि सकुटुम्ब युताभ्या श्री नंदकुल वत्या पुर्या सं ९६४ श्री यशोभद्रसूरि मंत्र शक्ति समानिताया त० सायर कारित देव कुली कायुद्धारत सायर नाम श्री जीनवसत्या श्री आदिश्वरस्य स्थापनाका-रिता कृतः श्री शातिसूरिभि इति लघु प्रशस्तिरियं लि० आचार्य श्री ईश्वरसूरिणा उत्कीर्णा सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

इसके सिवाय "सोहन-कुल-रत्न-पट्टावली रास में भी ऐसा लिखा है।"

संवत दश दाहोतरे, किया चौरासीवाद।
वल्लभीपुर थी आणियो, ऋषभदेव प्रसाद ॥ १ ॥

सांडेरा गच्छ मे हुआ, जसोभद्रसूरिराय।
नवसे सतावन समे, जन्म वरस गच्छराय ॥ २ ॥

संवत नवसेह अड़सठे, सूरि पदवी पद जोय।
बदरीसूरि हाजिर रहे, पुण्य प्रबल संजोय ॥ ३ ॥

संवत नव अगण्योतरे, नगर मुंडाडा माय।
सांडेरा नगरे वली, कीधी प्रतिष्ठा त्यांहे ॥ ४ ॥

इस तरह बहुत से लेख विद्यमान हैं लेकिन विस्तार भय से नहीं लिखे गये है। आपको इस इतिहास से शायद यह शका हो कि यह आचार्यादि आधुनिक यतिवर्गों में से हों ! नहीं ! नहीं !! कदापि नहीं !!! आधुनिक यतिवर्ग तो श्री महावीर के पञ्चम गणधर श्री सुधर्मास्वामि की सम्प्रदाय से पौराणिक हैं और हमारे आचार्य तो महात्मा जाति के निर्ग्रंथ भट्टारक आचार्यों मे से है जो श्री महावीर स्वामि के समय मे भी थे और पार्श्व सन्तानिया नाम से सम्बोधित थे और वेदान्ती थे। इसके सिवाय मैं इस सम्प्रदाय के निर्ग्रंथो के और हमारे घनिष्ठ सम्बन्ध का और भेद होने का एक सूक्ष्म प्रमाण भी दे देता हूँ।

भगवान महावीर के समय मे ११ गणधर गौतमादि हुए वे सर्व ब्राह्मण जाति के थे जैसा कि इनमें से पाचवां गणधर सुधर्मास्वामि अग्निवैश्यायन गौत्र के थे जिन से यह आधुनिक सम्प्रदाय

चला । २ जम्बूस्वामी काश्यप गौत्री, ४ प्रभवस्वामि कात्यायन गौत्री ७ सम्भूतिविजयसूरि माढर गौत्रीय, ८ भद्रबाहुस्वामि प्राचीन गौत्री, ९ स्थूलिभद्रस्वामि कल्पक जैम्नी ब्राह्मण के पुत्र गौतम गोत्री और नवम नन्द के मन्त्री शकटाल के पुत्र थे । जो कट्टर जैनी था । १० आर्य महागिरि एलापत्य गौत्री । आर्य्य सुहस्ती सूरि वशिष्ठ गौत्री १२ आर्य्य सुस्थितसूरि व्याघ्रापत्य गौत्री । इनके वक्त में हमारे पार्श्व सन्तानिया वृद्ध दिवाकरसूरि के शिष्य सिद्धसेनदिवाकरसूरि जो कात्यायन गौत्री देव ऋषि जो राजा विक्रमादित्य का मन्त्री था उसके पुत्र थे जिन्होंने उज्जैन नगर में अवन्ति पार्श्वनाथ को प्रकट किये और कल्याणमन्दिर के प्रभाव से राजा विक्रम को प्रबोधित किया । भद्रबाहुस्वामि के ४ शिष्य गोदास, अग्निदत्त, यज्ञदत्त, सोमदत्त, काश्यप गौत्री थे । अब मै कहाँ तक लिखूं । यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि महावीर स्वामी ने गौतमादि गणधरों से लगा कर आचार्य्य तक ब्राह्मण जाति के ही लेने का क्या कारण हुआ ? आप जानते हैं कि भगवान महावीर स्वामी का जीव मरीची का माना है और मरीची जो भगवान ऋषभदेव स्वामी का पौत्र और भरतेश का पुत्र था तो इन्होंका ऐसा करना स्वाभाविक ही था क्योंकि भगवान ऋषभदेव ने भी माहणों को गुरु बनाया माना है तो फिर वे कैसे अपनी वंश परिपाटी के विरुद्ध करें ? इसीलिए भगवान् ऋषभदेव के समय के साधुओं का एक कल्प वेष भूर रक्खा । वैसे ही उपदेशकाचार्य स्थविर भी जैन ब्राह्मणों के ही आत्मज लेना स्वीकार किया । अब इसके विरुद्ध आचरण हो रहा है । जैसा ही जैनाचार्यों का प्रताप मार्तण्ड अस्ताचल में जा रहा है ।

निर्ग्रंथ साधुओं के सिवाय श्री गृहस्थ जैन ब्राह्मण कैसे कैसे सत्ताधारी राजगुरु होते आये हैं जिसका थोड़ा सा दिग्दर्शन कीजिये ।

प्रथम नन्द का मन्त्री कल्पक परम कट्टर जैनी ब्राह्मण था इसके बाद नवें नन्द का मन्त्री शकटाल भी जैनी ब्राह्मण था। इनके पुत्र ने दीक्षा ली जो स्थूलभद्र के नाम से प्रसिद्ध है। चाणक्य ने नन्द राजा की अनीति से उसको पदच्युत कर मौर्य वंश को राज्याभिषेक कराया और राजा चन्द्रगुप्त को बौद्ध से जैनी बनाया। इसका इतिहास देखना है तो आवश्यक चूर्णि परिशिष्ठ पर्व तथा परिशिष्ठ पर्व में आचार्य हेमचन्द्र ने लिखा है "व्याकरण कर्त्ता शाकटायन परम जैनी था उसका वर्णन ऊपर आ चुका है। इसके सिवाय पाणीनिय व वार्तिक का कर्त्ता वररुचि कात्यायन और व्याडी यह तीनो जैन ब्राह्मण थे। पाणीनिय ने इन्द्र, चन्द्र, जैनेन्द्र, शाकटायन आदि व्याकरण की छाया लेकर पाणीनिय-सूत्र अष्टाध्याई बनाई। फिर पातंजलि ने चन्द्रगुप्त राजा के राज्य में पाणीनिय सूत्र पर भाष्य रचा। इसका प्रमाण परिशिष्ठ पर्व कौमुदी सरला टीका कथा सरित सागर आवश्यक सूत्र और इतिहास व तिमिरनाशक वगैरा में (गच्छ मत प्रबन्ध पृष्ठ १२६ में भी लिखा है।) वैसे ही गोपागिरी (ग्वालियर) के राजा आमदेव को विक्रम आठवीं शताब्दी में बप्पभट्ट ने जो नागर जाति की ब्राह्मण थे जैनी बनाया। इस जैन ब्राह्मण (महात्माओं) में ऐसे अनेक राज-सत्ताधारी गुरु होते आ रहे हैं। इसका वर्णन कहाँ तक किया जाय। महाजन वंश के शिष्य होने लगे जब तक तो भेद भाव न रहा। पीछे २ तो पिछड़ते गये जबसे भिन्न-भाव रखने लगे। गोत्रों का व पट्टावलियों का प्रमाण देखना हो तो नागपुरीय बृहत् तपागच्छीय पट्टावलियाँ तथा नन्दी सूत्र चन्द्र गच्छ पट्टावलियों से प्रमाणित लिखा गया। फिर इसके प्रमाण के विषय में आधुनिक समय के साधु मुनिवरों ने जो २ ग्रन्थ बनाये हैं उनमें भी इस जाति का महत्व इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर लिखा है जैसा कि भट्टा-

रक राजेन्द्रसूरिजी ने सं० १६३६ जावरा नगर में मास कल्प किया। वहाँ जीर्ण पुस्तकें चूर्णि नियुक्तिकादिक पंचागिनी, वे चार शुद्ध प्रतियें इकट्ठी कर कल्पसूत्र को भाषा में बालव बोधक नाम रक्खा। उसमें भी महात्मा जाति की उत्पत्ति का महत्व वर्णन किया है। पं० प्रवर महा मुनि आनन्दविजयजी महाराज (आत्मारामजी) ने तत्व-निर्णय प्रसाद के चतुर्थ स्तम्भ के पेज ३२८ में वर्णन किया है। "आदिदेव श्री ऋषभदेव का पुत्र अवधि ज्ञानवान आदि चक्री भरत राजा श्री मढादि जिन रहस्योपदेश से प्राप्त किया है सम्यक् श्रुत ज्ञान जिसने सो राजा भरत व्यवहार संस्कार की स्थिति के वास्ते अर्हन की आज्ञा पाकर के धारे हैं ज्ञान, दर्शन, चारित्र रत्न त्रय करणा, करावणा अनुमति से निगुण रूप तीन सूत्र मुद्रा करके चिह्नित वक्षः स्थल वाले ब्राह्मणों को (महानों) को पूज्य तरीके मानता हुआ चार वेद संस्कार दर्शन संस्थापन परामर्शन, तत्वाववोध, विद्या प्रवोध इन चारों वेदों को महानों को पठन कराता हुआ।

पीछे महाना सात तीर्थङ्कर तक यानि चन्द्रप्रभव तीर्थङ्कर तक तो सम्यक्त्वधारी रहे और धर्मोपदेश करते रहे उस पीछे नवमें तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ पुष्पदन्त के तीर्थ का व्यवच्छेद हुआ यानि कितनेक अन्य मतावलम्वी हुए। ऐसे ब्राह्मणों में से जिन महानों (ब्राह्मणों) ने सम्यक्त्व त्याग न किया, उनकी सम्प्रदाय मे आज भी है। पहिले के इस ग्रन्थ मे पूर्ण वृतान्त था लेकिन दूसरी आवृति में विजयवल्लभ-सूरिजी महाराज ने कम कर दिया है।

इस प्रकार विजयानन्दसूरिजी (आत्मारामजी) ने 'जैन तत्वादर्श' नामक ग्रन्थ वनाया वो विक्रम संवत् १६४० में मुद्रित हुआ उसके एका-दश परिच्छेद के पृष्ठ ५०८ में लिखा है कि "जब भरत ने अपने

छोटे भाइयों को आज्ञा मानने के वास्ते दूत भेजा तब उन्होंने विचार किया कि राज तो हमको हमारे पिता दे गये है तो फिर हम भरत की आज्ञा क्योंकर माने। चलो पिता से कहें। जो अपने पिता श्री ऋषभदेव जी कहेंगे कि तुम भरत की आज्ञा मानो, तब तो हम आज्ञा मान लेवेंगे। जो हमारे पिता कहेंगे लडो तो, हम लडेंगे। ऐसा विचार कर कैलाश पर्वत के ऊपर श्री ऋषभदेवजी के पास गये, तब ऋषभदेवजी ने उनके मनका अभिप्राय जान कर उन को उपदेश करा जो उपदेश करा था सो श्री सूत्र कृतागसूत्र के दूसरे वैतालिय अध्ययन में लिखा है। तब तो उपदेश सुनकर अट्ठानवे पुत्रों ने दीक्षा ले ली और सर्व झगडे छोड दिये। इस वार्ता से भरत की अपकीर्ति हुई। तब भरत चक्रवर्ती पाचसौ गाडियों पक्वान्न की ले कर समवसरण मे आया और कहने लगा कि, मैं अपने भाइयों को भोजन कराऊँगा। और मेरा अपराध क्षमा कराऊँगा। इस पर ऋषभदेवजी ने कहा कि ऐसा अहार साधुओं को लेना योग्य नहीं है। जब भरत मन मे बडा उदास हुआ। भरत ने कहा अब मैं यह अहार किसको देऊँ? उस समय शक्र (इन्द्र) ने कहा कि तुम्हारे से गुणों मे अधिक होवे, उनको यह भोजन देओ। जब भरत ने मन मे विचार किया कि मेरे से गुणों मे अधिक तो श्रावक हैं। तब भरत ने बहुत गुणवान श्रावकों को वह भोजन कराया और उन श्रावकों को भरतजी ने कह दिया कि तुम सर्व ही मिलकर प्रतिदिन मेरे ही यहाँ भोजन किया करो खेती वाणिज्यादि कुछ काम मत करो। केवल स्वाध्याय करने में तत्पर रहो। भोजन करके मेरे महलों के दरवाजे आगे निकट बैठ कर तुम ऐसा कहना कि "जितोभवान वर्द्धते भयं तस्मान् माहन माहनेति," तब वे श्रावक ऐसा ही करते रहे और भरत राजा तो भोग विलासो में मग्न रहता था परन्तु जब उनका शब्द सुनता था तब

मन मे विचार करता था कि किसने मुझे जीता है ? तब विचार किया कि क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों ने मुझे जीता है। इनसे ही भय की वृद्धि होती है। ऐसा विचार करने से भरत को बडा भारी वैराग्य उत्पन्न होता था। इस अवसर मे रसोई जीमने वाले श्रावक बहुत हो गये। तब रसोईकार रसोई करने मे समर्थ न रहा तब भरत महाराज को निवेदन किया कि मै नहीं जान सकता कि इनमें श्रावक कौन है और कौन नहीं है ? तब भरत ने कहा कि तुम पूछ के उनको भोजन दिया करो। जब रसोई करने वाले उनको पूछने लगे कि तुम कौन हो ? वे कहने लगे हम श्रावक हैं। फिर उनको पूछा कि श्रावकों के कितने व्रत है ? इस प्रकार जब जाना कि यह श्रावक ठीक है तब उनको भरत महाराज के पास लाये भरत ने उनके शरीर मे काकणी रत्न से तीन-तीन रेखा का चिह्न कर दिया और छठे महीने अनुयोग परीक्षा करते रहे। वे सर्व श्रावक ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध हुए। क्योंकि जब भरत महाराज के दरवाजे आगे वे माहन-माहन शब्द बार-बार उच्चारण करते थे तब लोग उनको माहन कहने लगे। जैन मत के शास्त्रों में प्राकृत भाषा मे अब भी ब्राह्मणों को 'माहन' करके लिखा है और जो संस्कृत ब्राह्मण शब्द है वो प्राकृत व्याकरण से बंभण और माहण के स्वरूप में सिद्ध होता है श्री अनुयोग द्वार सूत्र में ब्राह्मणों का नाम 'वुड्ढ-सावया' अर्थात् बडे श्रावक ऐसा लिखा है। यह सर्व ब्राह्मणों की उत्पत्ति है और वे ब्राह्मण अपने बेटों को साधुओं को देते हुए। जिन्होंने प्रव्रजा नहीं ली, वे श्रावक व्रतधारी हुए। यह रीति तो भरत के राज्य मे रही। जब भरत का बड़ा बेटा सूर्ययश सिंहासन पर बैठा तब उनके पास काकणी रत्न नहीं था इस वास्ते सूर्ययश ने ब्राह्मणों के गले में स्वर्णमयी यज्ञोपवीत करवा दी और भोजन

प्रमुख सर्व भरत महाराज की तरह देता रहा। जब उसका बेटा महा-यश गद्दी पर बैठा तब उसने रुपे के जिनोपवीत बनवा दिये। आगे उनकी सन्तानों ने पंचरंगे रेशमी-पट-सूत्र-मय जिनोपवीत बनाते रहे। बाद में सादे सूत की बनाई गई। यह यज्ञोपवीत (जिनोपवीत) की उत्पत्ति है।

भरत के आठ पाट तक तो ब्राह्मणों की भक्ति भरत की तरह करते रहे। पीछे प्रजा भी ब्राह्मणों को भोजन कराने लगी। तब सर्व जगह ब्राह्मण पूजनीय समझे गये। आठवाँ तीर्थंकर श्रीचन्द्र-प्रभव स्वामी के वक्त तक सर्व ब्राह्मण व्रतधारी, जैनधर्मी श्रावक रहे और चन्द्रप्रभव भगवान के पीछे कितना काल व्यतीत हुए इस भरत खण्ड में जैन-मत अर्थात् चतुर्विध सङ्घ और सर्व शास्त्र विच्छेद हो गये। जब नवमें सुविधिनाथ पुष्पदन्त अरिहन्त हुए। उन्होंने फिर जैन धर्म प्रकट किया।

चारों वेदों की उत्पत्ति—

जब भरत राजा ने ब्राह्मणों को पूजा तब दूसरे लोग भी ब्राह्मणों को बहुत तरह का दान देने लग गये। भरत चक्रवर्ती ने श्री ऋषभदेव के उपदेशानुसार उन ब्राह्मणों के स्वाध्याय करने के वास्ते श्री आदीश्वर की स्तुति और श्रावक के धर्म का स्वरूप गर्भित ऐसे चार आर्य वेद बनाये। उनके यह नाम हैं। १. संसार-दर्शन-वेद, २. संस्थापन परामर्शन-वेद, ३. तत्वावबोध-वेद, ४ विद्या-प्रबोध-वेद। इन चारों में सर्व नय वस्तु के कथन संयुक्त उन ब्राह्मणों को पढ़ाये।

तक . ब्राह्मण और उपरोक्त चार वेद आठवें तीर्थंकर तक यथार्थ चले आये परन्तु जब आठवें तीर्थंकर का तीर्थविच्छेद हुआ उसके बाद उनमें से कितनेक ब्राह्मण भार्षों ने, धन के लोभ से उन वेदो में जीव हिंसा आदि की प्ररुपणा करके उलट-पलट कर डाले। जैन धर्म का नाम भी वेदो मे से निकाल दिया वल्कि अन्योक्ति कर के 'दैत्य दस्यु वेद वाह्य" इत्यादि नामों से साधुओं की निन्दा गर्भित ऋग, यजु, साम, अथर्व यह चार नाम कल्पना कर दिये। उन ब्राह्मणों में से जिन्होंने तीर्थंकरों का उपदेश माना उन्होंने पूर्व वेदो के मन्त्र न त्यागे वे आज तक करणाटक आदि देशों में जैन ब्राह्मणों के कण्ठ है। ऐसा सुना और देखा भी है। तथा उन प्राचीन वेदों के कितनेक मन्त्र मेरे पास भी है। यत उक्तं आगमे। "श्री भरह चक्क वट्टी आयरिय वेयाण विस्सु उप्पत्ती॥ माहण पढणत्थमिणं, कहियं सुह-झाण विवहारं॥ १॥ जिण तित्थे वुच्छिने, मिच्छते माहणे हि ते ठविया॥ अस्संजयाण पूआ, अप्पाणं काहिया तेहिं॥ २॥ इत्यादि (पृष्ट ४६६ में)

भोग वंश का वर्णन—

संग्रह के वास्ते हाथी, घोडे, गाय प्रमुख श्री ऋषभदेव राज्य में वनों से पकडे गये। तव श्री ऋषभदेव ने चार प्रकार का संग्रह करा १ उग्रा २ भोगा ३ राजन्य ४ क्षत्री। उसमें जिनको कोट वाल की पदवी दी उनके दण्ड करने से उनका उग्र वंश कहलाया तथा जिनको श्री ऋषभदेवजी ने गुरु अर्थात् ऊँचे वडे करके माने उनका भोग वंश कहलाया और जो श्री ऋषभदेवजी के मित्र थे उनका राजन्य वंश नाम रक्खा गया। शेष जो रहे उनका क्षत्रीय वंश हुआ। नाभि

कुलवर बहुलता से इक्ष्वाकुभूमि अर्थात् विनता नगरी की भूमि मे निवास करता था। यह भूमि काश्मीर देश के परे थी क्योंकि विनता नगरी के चारों दिशा में चार पर्वत थे। जिसमें पूर्व दिशा मे अष्टापद अर्थात् कैलाशगिरि था। दक्षिण दिशा मे महा शैल्य था। पश्चिम दिशा मे सुर शैल्य। उत्तर दिशा मे उदयाचल पर्वत था। पृष्ठ नं० ४६६ में। इसका समर्थन आधुनिक शोधकर्ताओं के लेख से भी होता है। जैसा कि सरस्वती पत्रिका सन्-१६३७ जनवरी के पृष्ठ २१ मे लिखा है— ताम्र युग पाषाण युग मे भी उदीच्य प्राच्य दो जाति होना माना। यह नूह का प्रलय का जमाना था। मनुष्यों का विकास भारत से ही हुआ और वहाँ से संसार भर मे फैला। प्रलय काका कलकरन्दी ने तो ईसा के पूर्व ४२०० वर्ष पूर्व माना। लेकिन यह ३४७५ वर्ष पूर्व का मानते है। पाषाण युग मे मनुष्य नर वानर थे पाषाण युग के पश्चात् मानव जाति में धातु का युग प्रारम्भ हुआ। धातु युग का प्रारम्भ ताम्र युग से हुआ। कश्मीर के पश्चिम सीमा चित्रालय में घास से गेहुं जव पैदा होना जर्मन के अन्वेषक दल ने अनुसन्धान किया। कृषि का जन्म स्थान चित्राल है। वहाँ से दक्षिण पञ्जाब मे आये। जहाँ सप्त नदियाँ बहती है उसका सप्त सिन्धु नाम रक्खा। उनमे सरस्वती व सिन्धु सब मे बड़ी। सिन्धु से भी सरस्वती बड़ी। सरस्वती उस समय आर्यावर्त को दो सीमाओं मे विभक्त करती थी। इसके पश्चिम ओर का भाग उदीच्य तथा पूर्व ओर का भाग प्राच्य कहलाने लगा। उत्तर भारत के ब्राह्मण आज भी प्राच्य और उदीच्य दो भागों मे विभक्त है। कान्यकुब्ज, मैथिल आदि प्राच्य, पञ्जाब, सिन्धु, राष्ट्र काठियावाड और गुजरात के ब्राह्मण उदीच्य इन दो जातियों से सारे ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई उदीच्य प्रदेश सरस्वती के पश्चिम तट देवयोनि वृत्त से मेसोपोटामिया तक फैला और प्राच्य देश इसके पूर्वी तट से बङ्गाल तक फैला। चित्राल कश्मीर ऋग्वेद मे ऋषि

ऊपर के इतिहास से घास से गेहुं जव की उत्पत्ति होना माना है, उसका प्रतिपादन हमारे जैन ग्रंथो से होता है, जैसा कि ऋषभदेवजी के समय में जब कल्प वृक्ष फल देने से रह गए तो लोग वृक्षो के कन्द, मूल, पत्र, फूल, व इक्षुरस तथा १७ जाति का अन्न खाने लग । देखो "जैन तत्वादर्श" पृष्ठ ५०० में । इसके सिवाय इस जाति के महत्व का प्रमाण रत्न-सागर उसको रत्नसार भी कहते हैं । यह ग्रंथ श्रीमान् मोहनलालजी गणि खरतरगच्छीय ने विक्रम सं० १६४६ मे बनाया उसमें भी हमारी उत्पत्ति इसी तरह लिखी है । इसके अलावा यतिवर्ग मे श्रीमान् गणि रामलालजी उपाध्याय बीकानेर निवासी ने 'महाजन वंश मुक्तावली' नामी पुस्तक स० १६६७ मे रची, उसकी प्रस्तावना के दसवें पृष्ठ मे लिखते हैं कि इस वक्त जैन महाणो का काम यतियों से लिया जाय, इससे आपको साफ विदित होगया होगा कि १६ संस्कारों पर हक महाणों का था इसके आगे पृष्ठ ८४ मे इस तरह वर्णन किया है— भरत चक्रवर्ती ने इन्द्र के कहने से वारह व्रतधारी श्रावकों को भोजन कराया। वे भरत राजा की भक्ति से महान कहलाये । संस्कृत में माहन प्राकृत शब्द का (ब्राह्मण) मतहण यानि ब्रह्म को पहिचानना । मनुस्मृति में भी 'ब्रह्मजानेति-ब्राह्मण' लिखा है। यथा राजा तथा प्रजा छः खण्ड के लोक महानों को भोजन वस्त्रादि से सत्कार करने लगे । विद्या महान लोगों के वालक पढ़ने लगे। तब भरत चक्रवर्ती ने इनको पढ़ाने के लिये ऋषभदेव ४ मुख से समवसरण में देशना देने वाले आदि ब्रह्मा के वचनानुसार यह स्वधर्म का स्वरूप, त्याग व्रत का स्वरूप, छः द्रव्य, नव तत्व का रूप, स्याद्वाद न्याय, गृहस्थ के उपनयन सोलह संस्कार आदि आदि अनेक भाव मिश्रित जिनयजन का स्वरूप चार आर्य्य वेद १ संसार दर्शन वेद, २ संस्थापन परामर्शन, ३ विद्या प्रबोध, ४ तत्वावबोध रचकर पाठशाला मे पढाने लगे ६ महीने से परीक्षा अनुयोग होने पर विद्या मुआफिक

पारितोषिक देने लगे और गृहस्थों के माननीय ७२ कला का जो ऋषभदेव ने दुनिया का सुख जीवन के लिये ग्रंथ बना कर प्रजा को सिखाया था उन सब ग्रंथ पर अधिकार चक्रवर्ती ने महाणों को सौंपा। सोलह संस्कार गृहस्थों के जन्म से लेकर मरण पर्य्यन्त गृहस्थों से कराना महाणों के सुपुर्द किया। इन्हों में से वैराग्य पाय बहुत ब्राह्मण ऋषभदेवजी पास दीक्षा लेकर जगह-जगह साधु होने लगे। गृहस्थ धर्म में त्रिकाल श्री जिन मूर्ति का अष्ट-द्रव्य से नाना प्रकार से याज (पूजा) करते साधुओं का वन्दन व्याख्यान सुनते, व्रत पच्चखाण करते ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, ४ शिक्षाव्रत पर्व तीथों से पौषह करते इस तरह ब्राह्मण प्रसिद्ध हुवे। जिन्हों की आज्ञा से माहण लोग प्रवर्ते यजन याजन आदि षट्-कर्म करे उन-उन अत्यन्त उत्कृष्ट ज्ञानवन्त महाणों को चक्रवर्ती ने आचार्य पद दिया। जो वेद आवश्यकादि सत्रों के अध्यापक उनको उवझाय (उपाध्याय) पद दिया जो आचारज का अपभ्रंश ओझा पुकारते हैं। इसके सिवाय इसी पुस्तक के पृष्ठ ८२ के नोट में लिखते हैं— कवले गच्छ के महात्मा रायजी वेदों की पोटी थी, जिसमें लिखा है और भी कई गोत्रों के नाम ग्राम देकर हमको यह इतिहास लिखने में पहली मदद दी है। इन्होंका यश माननीय है। पृष्ठ ६३ में कोचर वंश की उत्पत्ति का इतिहास इस प्रकार लिखा है। महिपालजी मंडोवर में बसे जो पुङ्गलिया कहलाते थे। राजा ने मुहता पद दिया सो मुहता कहलाये। उन महिपालजी के पुत्र नहीं था। एक दिन सोजत के वाशिन्दा पोमालिया महात्मा राजकाज के वास्ते मंडोवर आये वो काम महिपाल के हाथ में था महात्मा इन्होंके घर आये और बोले महताजी यह काम मेरा करो; तुम्हारा कोई काम मेरे लायक हो तो कहो। तब महिपालजी ने वह काम राव चुण्डाजी से कह कर करा दिया और

कहा कि मेरे पुत्र नहीं सो होवेगा या नहीं ? तब महात्मा बोले आज पीछे तेरी औलाद तपागच्छ के महात्माओं को गुरु माने तो विधि बता देता हूं, पुत्र होगा । इसके पहिले सिन्ध में तथा मंडोवर में रहते तब खरतरगच्छ के गुरु मानते थे । इस समय से महिपालजी ने तपागच्छ मानना स्वीकार किया तो महात्मा ने कहा आसोज चैत्र में नवरते करो, देवी मनाओ; पुत्र होगा । जब देवी कोचरी के रूप से बोलेगी, कोचर नाम देना । ऐसा करने से पुत्र हुआ वगैरह २ इतिहास' मे अङ्कित है । इसके सिवाय यति श्रीपालचन्द्र ने जैन संप्रदाय शिक्षा नामी पुस्तक सं० १६६७ में रची उसके पेज '६५० में भी मुक्त-कण्ठ से इस जाति के होने का इतिहास दिया है । आगे और देखिये, यह जाति चैत्यों (मन्दिरों) के पास पोसालों रखने के कारण इनको चैत्यवासी नाम से सम्बोधन करने लगे । आज भी प्राचीन मन्दिरों के पास पोसालें विद्यमान हैं । जैसा कि उसके महत्व का वर्णन श्री मद् शास्त्र-विशारद जैनाचार्य्य बुद्धिसागरजी महाराज विरचित 'गच्छ-मत-प्रबन्ध' की प्रस्तावना के पेज नं० १६ से लेकर २३ तक इस प्रकार वर्णन किया । "चैत्यवासी नाम की जैन श्वेताम्बरो परिचित छे बारसे वर्ष सुधी चैत्यवासी सम्प्रदाय नुं जोर रह्यो हतुं । चैत्य पासे वास करवा थी चैत्यवासी तरीके जे साधु प्रसिद्ध थया तेओथी चैत्यवास सम्प्रदाय गच्छ नी उत्पत्ति थई चैत्यवासी साधुओं नी जाहो जलाली ना समय माँ जैन निगमों, जैन उपनिषदो नी मुख्यता प्रवर्तती हता । जैनों मां सोलह संस्कारों नी मुख्यता वर्तती हती । अने आगमों नो गोणता वर्तती हती श्री आर्य्य-रक्षित व आर्य्य सुहस्ती ना समय लगभग माँ चैत्यवास निकल्यो जणाय छे चैत्यवासियों राजकीय धर्म तरीके जैन धर्म ने संरक्षियो हतो गुजरात माँ, मेवाड़ माँ, मारवाड़ माँ, वढियार मो, सौराष्ट्र माँ ते वखते चैत्यवासी

साधुओं नुं घणो जोर हतो वनराज चावडा ना गुजरात नो राज्य मां चैत्यवासी आचार्यो राज्य गुरु तरीके, देश गुरु तरीके प्रसिद्ध थया हता । चावडाओं ना राज्य-प्रदेश मां चैत्यवासियों विना अन्य साधुओं ने आवना ने पण राज्य तरफ थी प्रतिबन्ध हतो । वनराज, योगराज, क्षेमराजजी थी ते ठेठ सामंतसिंह सुधी ना चावडा राजाओ चैत्यवासियों ने धर्म गुरु अने राज गुरु तरीके मानता हता अने चैत्यवासी आचार्यो राजा ना राजा ना धार्मिक संस्कारों नी क्रिया करता हता। केटलाकोनो मत एवो छे। चैत्यवासी जैनाचार्यो राजा ना धार्मिक पुरोहितो नुं धार्मिक कार्य करता हता तेथी जैनो ना जैन वेद ना प्रचार थी राजकीय धर्म तरीके जैन धर्म प्रवर्ततो हतो। गुजरात मा चावडाओं ना राज मां ब्राह्मणों के जो वेदिक तरीके कर्मकाण्डी हता तेओनु जोर बिलकुल न हतुं । जैन वेदो उपनिषदो थी जैन ब्राह्मणो धार्मिक प्रवृत्ति करी ने जैन धर्म नी आराधना करता हता चैत्यवासियों नी जाहोजलाली ना समय नो आगम अने निगम नी सारी रीते प्रचलितता हती अने ब्राह्मणो, क्षत्रियो, वैश्यो अने शूद्रो ए चारे वर्णो जैन धर्म पालतां हतां मुख्यताए निगमवादी चैत्य-वासी आचार्यो नुं जोर सोलङ्की दुर्लभराय ना समय मां हठवा लाग्यो । "मन्जिणाणं सज्झाय नो उपदेश कल्प वल्लरीटीका मॉ निगमवादी चैत्य-वासिओ नी मुख्य ये मान्यता हती के जैन वेदों, जैन उपनिषदों अने जैनागमो वडे जैन धर्म मॉ चारे वर्णो ने सदा काल राखवी अने राजकीय धर्म तरीके जैन धर्म टकी रहे एवी सर्व प्रवृत्ति करिया करवी । आगमो नी मुख्यताएँ माननारा आगमवादी यानु जोर थवा लाग्युं त्यारे पण तेओ मॉ थी निगम प्रभावक गच्छ तरीके एक गच्छ कायम रह्यो जैन वेदों अने जैन उपनिषदों नो निगम मॉ समावेश थाय छे हालपण कहावत छे के 'आ तो आगम निगम नी वात जाणे छे'

अर्थात् आगम निगम जाणे छे। महन जिणाण नी उपदेश कल्प-वल्ली नी टीकामॉ जणाव्यो छे के आगमो अने निगमो ए बन्ने ने भेगा करिया विना जैन तत्व नो समाधान थाय नहीं। जैनागमों अने जैन निगमोए बन्ने थकी जैन धर्म विश्व मॉ प्रवृत्ति सके छे। भरत राजाए जैन निगमो प्रवर्ताव्या हता ते सर्व तीर्थंकरों ना समय मॉ कायम हता अने ते प्रमाणे सोलह संस्कारों आदि नी क्रिया थती हती अने दरेक तीर्थंकर ना समय मों जैनागमो नवा थता हता अर्थात् द्वादशागी जुदी रचाती हती। महावीर प्रभू ना समय मों जैन निगमों अर्थात् जैन वेदो कायम रह्या हता। चैत्यवासियो नुं जोर हतुं त्यारे जैन वेदों उपनिषदो सर्वत्र प्रचलित हता परन्तु आगमवादियों नुं वि० सं० १००० ना सेका मॉ जोर थवा लाग्युं त्यारे चैत्यवासियों नी धार्मिक प्रवृत्तियो नुं जोर हटवा लागुं। वर्द्धमानसूरि पूर्व चैत्यवासी हता तेमने चौरासी चैत्या नी मालकी छोड़ी त्यारे आगमवाद जोर पर आवा लाग्युं अने जैन निगमो मॉ थी आगमवादियों ने गृहस्त करवा योग्य धार्मिक संस्कारो ना मंत्रो ने वर्द्धमानसूरि 'आचार दिनकर' ग्रंथ बनावी ने तेमा गोठविया तेमज अने आगमवादी आचार्यों ने निगमो मॉ थी सार भाग ने गृही अन्य ग्रंथो रच्या एवी केटलाकनी मान्यता छे तथा शत्रुञ्जय महात्म्य ना कर्त्ता धनेश्वरसूरि चैत्यवासी हता एम परम्परा कर्ण श्रुति कह्या करे छे चैत्यवासियों सर्व तीर्थों ने मानता हता परन्तु तेओनी आचार सम्बन्धी .मान्यताओ मुख्यतये निगमो ना आधारे हती परन्तु तेओ आगमो नी उत्थापना करता न हता। योग विधि वगेरे नी मान्यताओं नी प्रणालिका चैत्यवासियों मॉ हती। साधु अने साध्वियों थवानी मान्यता पण चैत्यवासियों मों हती। चैत्यवासियों ने मान्यता प्रमाणे गृहस्थ गुरु तरीके जैन ब्राह्मणों धार्मिक गृहस्थ योग्य संस्कारो ने करावता हता चैत्यवासियों गृहस्थ गुरु अने त्यागी गुरु एवा बे प्रकार

ना गुरुओं मानता हता । श्री मद आत्मारामजी महाराजे तत्वनिर्णय प्रासाद मा गृहस्थ गुरु अने त्यागी गुरु क्या सोलह संस्कारो पेकी संस्कारो करावे तेनु वर्णन करियो छे। विक्रम सं० ६ नवमो सैंका माँ जैन ब्राह्मणों के जे जैन गृहस्थ गुरुओ तरीके हजारों नी संख्या माँ हता तेओना कुला ने आद्य शकराचार्य्य पोता ना मार्ग तरफ आकर्षिया तेथी जैन धर्म नु जोर घटवा लाग्युं अने ब्राह्मण अमुक वैदिक पौराणिक धर्म ने मानवा तरफ आकर्षिया। जैन गृहस्थ गुरु तरीके जैन ब्राह्मणा ने कायम राखवा माटे कुमारपाल ना समय माँ हेम-चन्द्रसूरि तरफ की प्रवृत्ति शुरु थई ते माँ जे ब्राह्मणों ने जैन गृहस्थ गुरु तरीके स्थाप्या (याने इन लक्षणों को देख कर जैसा कि कल्याण सन्ताङ्क प्रथम खण्ड संख्या १ श्रावण संवत् १९९४ के चारसौ चौहत्तर मे लेख ऋषभदासजी ने दिया—

"पंचेतानो पवित्राणां सर्वे-श्याम धर्मचारिणा ।
अहिंसा सत्य मस्तेयं, त्यागो मैथुन वर्जनम् ॥"

संसार मे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, त्याग और ब्रह्मचर्य ही संसार के सारे धर्मों की नींव है।

नोट—राजा कुमारपाल को हेमचन्द्राचार्य्यजी ने कहा कि जैन ब्राह्मण और वैदिक (आधुनिक) ब्राह्मणों को ब्राह्मण नाम से ही सम्बोधन करने से इनका भेद नहीं सूचित होता है सो कोई भेद जरूर होना चाहिए राजा ने पूर्वोत्तर पाचों धर्म लक्षणों में से प्रथम अहिंसा वृत्ति का पूर्ण पालन जैन धर्म मे होता है अन्य मे कम यह लक्षण पूर्ण तथा दूसरे

लक्षणों में भी पूरी तरह जैसा जैन ब्राह्मणों में पाये जाते हैं और में कम, ऐसा सोच कर इनको 'महात्मा' पद से भूषित किये ।

तेओ नी साथे वैदिक ब्राह्मणोए ज्ञाति व्यवहार नो सम्बन्ध राख्यो नहीं ।

इस लेख के पढ़ने से शायद वैदिक ब्राह्मण यह सन्देह करें कि यह इतिहास जैन मतावलम्बियों ने बना लिया होगा, सो कदापि नही । आज लो राजा महाराजा ऐसा जाति में घटाबढ़ी करते है जैसे हाल में विक्रम सं० २००१ में श्रीमान् हिन्दवा सूर्य सर भोपाल-सिंहजी साहब जी० सी० एस० आई० मेद-पाटेश्वर ने औदिच्य जाति और गोरवाल जाति अलग-अलग थी उनको भोजन प्रथा में संयुक्त कर दी । इससे प्रमाणित होगा कि राजा महाराजा ऐसा संयोग सनातन से करते आ रहे हैं । ऐसे ही उदीच्य (औदिच्य) अपनी जाति पंच द्राविड़ो में होना मानते है । लेकिन आमेटा जो पंच द्राविड़ संज्ञा में है वो भी अपने को उदिच्य (अवदिचो) अन्तर्गत मानते हैं । वैसे ही बड़े पल्लिवालों में पुरोहितजी के पूर्व पुरखा सरसलजी अव-दिच विजयदेव के कनिष्ट पुत्र अवव निवासी थे । परन्तु आधुनिक समय मे इनका भोजन व बेटी व्यवहार इन अवदिचो से नही है । आगे देखियेगा के आमेटा में वत्स गोत्र है और हमारे पूर्वजों में भी मल्लीनाग नामी पण्डित जिन्होंने कामंद-नीति रचित की, वे भी वात्सा-यन गोत्री थे । फिर देखियेगा कि हमारे भ्राता वैदिक मतावलम्बी गुर्जगोड़ अपनी उत्पत्ति गोतम से मानते हैं सो हमारे मे भी गौतम गौत्रिय है । ऐसे अनेक प्रकार का सम्बन्ध होना साबित है । लेकिन

देश प्रथानुसार, अलग-अलग अपनी २ जाति कर वर्तते हं ।

चैत्यवासी त्यागियो नी पडती दशा थई अने तेओना जोर हट्यो त्यारे तेओ तेनो कुमारपाल ना समय मॉ पूनम्या गच्छ मॉ दाखिल थया अने महात्माओं तरीके प्रसिद्ध हुआ । चैत्यवासियों ना जोर ना समय थी जे जैन कुल थया तेनो इतिहासी तेओ राखवा लागा अने हाल मे पण तेओ जैन वणिको ना कुलगुरु कायम रह्या छे हाल महात्माओं केटला घरबारी छे । परन्तु तेमा एकने त्यागी राखवा नो प्रचार छे । हाल मॉ तेओना लाडोल, मुंझपर, चाणसमों वगेरे गॉवा मे रहे छे अने जैन वणिको ना कुलगुरु तरीके वही वॉचवा नो कार्य करे छे तेओ असली चैत्यवासी गुरुओं मॉ थी उतरी आवेला छे । फिर उक्त ग्रन्थ के २५ वें पृष्ठ में इस प्रकार वर्णन है— "गुजरात मॉ चावडा राजाओं ना समय मॉ चैत्यवासी नी घणी चढ़ती हती । वर्द्धमानसूरि का शिष्य जिनेश्वरसूरि अने बुद्धि सागरसूरिए पाटन ना सोलंकी राजा दुर्लभसेन नी सभा में चैत्यवासी आचार्य साथे कास्यपात्र नी चर्चा कीधी । त्यॉ दशवैंकालिक नी गाथा कही ने जीत्या । चैत्यवासी गच्छ जैन तत्वादर्शा मॉ महावीर संवत् ८८२ मॉ चैत्यवासी स्थिति वर्णनवी छे । चैत्यवास गच्छ नी उत्पत्ति घणी प्राचीन काल नी पेली लागे छे विक्रमसंवत् पूर्व चैत्यवास उत्पन्न थयुं लागे—

शिशोदिया, संडेसरा, चोदगिया, चौहान ।
चैत्यवासिया, चावड़ा, कुलगुरु यह बखाण ॥

चावडा राजपूतोना कुलगुरु चैत्यवासी आचार्य्य हता श्री शील

गुणसूरिए वनराज चावड़ा ने आश्रय 'आपी उच्छेर मोटो करियो तेने शीलगुणसूरि ने गुरु तरीके मानिया । वनराजे पंचासर मां थी पंचासरा पार्श्वनाथ नी मूर्ति लावी ने पाटन मां जिन मंदिर करावी तेमां प्रतिष्ठा वड़े स्थापना करी । शीलगुणसूरि चैत्यवासी हता तेथी वनराज चावड़ा थी ते चावड़ा ना कुलगुरु तरीके गणाणा । वनराज ने चापोतकर ए विशेषण आपी ते विशेषण वड़े शीलगुणसूरिए चावडा वंश नी स्थापना करी त्यार थी चैत्यवासी आचार्य्य चावडा ना कुलगुरु तरीके प्रसिद्ध थया। केटलाक कहे छे के श्री आर्य्य रक्षित-सूरि पश्चात् चैत्यवासी साधुओं नी उत्पत्ति थई छे। गमे तेम होय पण चैत्यवासी नी प्राचीनता सिद्ध थाय छे । बारहसौ वर्ष सुधी गुजरात वगेरे देशों मा चैत्यवासी आचार्यों नुं महा जोर वरत्युं होय एम जणाय छे । चैत्यवासी आचार्योंए केटलाक सैंका सुधी जैनजगत ने पोताना वश मा करी लीधुं हतुं। श्री हरिभद्रसूरि ना समय मा चैत्यवासियों नुं पुष्कल जोर हतु । विक्रम संवत् ५वां ६ठा अने ७वाँ सैंका मा चैत्यवासियानुं अत्यन्त प्राबल्य हतुं चैत्यवासियों मुख्य-ताए जैन निगमो ने मानता हता अने गौणता थी आगमो ने मानता हता । उपनिषदों (निगमो) ने चैत्यवासियों मानता हता । हाल जे लाड़ोल, चाणसमो, मुम्फपर वगेरे ठिकाणे महात्माओ के जे श्रावकों नी वंशावली वांचे छे । तेओ चैत्यवासियो नी परम्पराए आवेला छे। जैन राजाओं क्षत्रियों वगेरे सर्व वर्ण ना लोकों चैत्यवासियोए जैन धर्मी बनाववानी व्यवस्थाओ ने करी हती ।

मुनि ज्ञानसुन्दरजी महाराज कृत जैन जाति महोदय की प्रस्तावना पेज १६ में इतिहास लिखने का ठेका इन्होंने (महाजनों) ने अपने कुलगुरुओं को दे रखा है । जिससे कुलगुरु अपनी जीविका

का साधन बना चुके हैं । कुलगुरु इतिहास सम्बन्धी एक भी बात प्रकट करना नहीं चाहते, कारण कि वे समझते हैं कि यदि हमने कुछ भी इस सन्बन्ध में बतला दिया तो हमारी जीविका जाती रहेगी वगैरह ।

हमारी जाति के कईएक महाशय अपने स्वाभाविकपन से इतिहास देने में शंका रख कर नहीं देते हैं जैसे कि कनरसा गोत्र जो कि अवटंक है उनमें (पुर) नामी ग्राम वालों के पास यवन बादशाहों के बहुत से परवाने मौजूद होना प्रमाणित है लेकिन किसी भ्रम वशात् इतिहास में उन्होंने नहीं दिए जो यहाँ दर्ज न हो सके । इसी प्रकार कई एक महाशय और भी हैं ।

उक्त पुस्तक के पेज १८ से लगा कर २३ तक जैन धर्म की प्राचीनता के प्रमाण जैन-तत्व निर्णय प्रासाद से देकर दूसरे प्रकरण के पृष्ठ १६ से जैन ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन इस तरह किया है— "इधर भरत सम्राट ने सुना कि मेरे राज लोभ के कारण ६८ भाइयों ने भगवान के पास दीक्षा ले ली है। अहो! मेरी कैसी लोभ दशा कि भगवान् के दिए हुए राज श्री मैंने ले लिये । भगवान् क्या जानेंगे ? इत्यादि । पश्चाताप करता हुआ विचार किया कि मैं ६८ भाइयों के लिमे भोजन करवा के वहाँ जा मेरे भाइयों को भोजन जिमा के क्षमायाचना करूं । वैसे ही ५०० पांचसौ गाडियाँ भोजन से भर के भगवान के समवसरण में आया । भगवान को वंदन कर अर्ज करी के हे प्रभो! मेरे भाइयों को आज्ञा दो कि मैं भोजन लाया हूँ सो वह कर के मुझे कृतार्थ करें । भगवान् ने फरमाया कि हे राजन् मुनियों के लिये बनाया हुआ भोजन मुनियों को करना

नहीं कल्पता है। इस पर भरत बडा उदास हो गया कि अब इस भोजन का क्या करना ? उस समय इन्द्र ने फरमाया कि भरतेश ! यह भोजन आपसे गुणी हों उनको करवा दीजिये। तब भरत ने सोचा कि मैं तो अव्रती सम्यक्-दृष्टि हूँ मेरे से अधिक गुण वाले देश व्रती हैं। तब भरत ने देश-व्रती उत्तम श्रावको को बुला के वह भोजन करवा दिया और कह दिया कि आप सब लोग हमेशा यहाँ ही भोजन किया करो। बस फिर क्या था ? सीधा भोजन जीमने में कौन पीछे हटता है। फिर तो दिन बदिन जीमने वालों की संख्या इतनी बढ़ने लगी कि रसोइया घबड़ा उठा। भरत महाराज को अर्ज की तब भरत ने उत्तम श्रावकों के हृदय पर कांकणी रत्न से तीन २ लींक खींच कर चिह्न कर दिया मानो वह जिनोपवीत ही पहिना दी थी। भोजन करने के बाद उन श्रावको को भरत ने कह दिया कि तुम हमारे महल के दरवाजे पर खड़े रह कर हर समय 'जीतो भगवान वर्द्धते भयं, तस्माहन माहाने।' ऐसे शब्दोच्चारण किया करो। श्रावकों ने इसको स्वीकार कर लिया। इसका मतलब यह था कि 'भरत महाराज सदैव राज का प्रपञ्च व सांसारिक भोग-विलास में मग्न रहते थे जब कभी उक्त शब्द सुनते तब सोचते थे कि मुझे क्रोध, मान, माया, लोभ ने जीता है और इन से ही मुझे भय है।' इससे भरत को बड़ा भारी वैराग्य हुआ करता था। जब वह श्रावक बार बार माहन २ शब्दों को उच्चारण करते थे इससे लोक उनको ब्राह्मण अर्थात् जैन सिद्धान्तों में ब्राह्मण को माहन शब्द से ही पुकारा है। अनुयोग सूत्रों में ब्राह्मणों का नाम "वुड्ढसावया" वृद्ध श्रावक लिखा है। जब ब्राह्मणो की संख्या बढ़ गई तब भरत ने सोचा कि वह सीधा भोजन करते हुए प्रमादी पुरुषार्थ-हीन न बन जावें इस वास्ते उनके स्वाध्याय के लिये भगवान आदेश्वर के

उपदेशानुसार चार आर्य्य वेदों की रचना करी उनके नाम संसार-दर्शन, संस्थापन-परामर्शन, तत्वावबोध, विद्या-प्रबोध। इन चारों वेदों का सदैव पठन पाठन ब्राह्मण लोक किया करते थे और छः मास परीक्षा भी हुआ करती थी। भरत के पास काकणी-रत्न था जिससे ब्राह्मणों के तीन २ रेखा लगा के चिह्न कर देता था परन्तु आदित्ययश के पास रत्न न होने से वह सुवर्ण की तीन लड़ें दे दिया करता था। बाद सोने से रूपा हुआ। रूपा से पंच वर्ण का रेशम रहा बाद कपास के सूत का। पृष्ठ ८ में वंश कायम करने के सिलसिले में ऐसा लिखा है। जिनको कोतवाल पद पर नियुक्त किया उनका उग्रवंश* जिनको को बड़ा माना उनका भोग-वंश, जिनको मंत्री पद पर नियुक्त किया उनका राजन-वंश, शेष जनता का क्षत्रिय वंश स्थापन किया। यहाँ भोग-वंश किनको कायम किया वर्णन गौण रख दिया। भगवान का दीक्षा लेना ८३ लाख पूर्व इन्होंने भी माना। इसी जैन जाति महोदय के प्रकरण ४ के पृष्ठ ४२ में फिर लिखा है कि ओसवालों के गुरु जैनाचार्य्य (निर्ग्रंथ) दूसरे कुलगुरु होते हैं वह ओसवालों के घरों में सोलह सस्कार वगैरह कार्य्य कराया करते हैं और ओस वालों की वंशावलिये भी लिखा करते हैं। फिर ओसवाल जाति निर्णय नामी पुस्तक के पृष्ठ ४२ में भी प्रतिपादन किया है। मुनि-वर श्रीमान् विद्याविजयजी महाराज ने विक्रम सं० १९६२ में 'मेरी मेवाड यात्रा' नामी पुस्तक बनाई उसके पेज ३३ में लिखा है कि जैन धर्म में एक महात्मा जाति है जो कुलगुरु के नाम से विख्यात है। 'महात्मा' जैनों में पहिले खास माननीय जाति समझी जाती थी किन्तु काल-क्रम से उसमें विद्या का अभाव होने के कारण वे

---

* उग्र-वंश के क्षत्री आज भी बंगाल में मौजूद हैं।

लोग लगभग बहुत ही दूर पड़ गये हैं। फिर भी वे शुद्ध जैनधर्म का पालन करते हैं और मूर्ति-पूजा मे श्रद्धा रखते हैं। उदयपुर में इस जाति के थोड़े ही घर हैं जिनमें मुख्य डॉक्टर बसंतीलालजी (लेखक का बड़ा पुत्र है) है जो आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने पर भी उच्च संस्कारों से युक्त तथा आध्यात्म प्रेमी हैं। देलवाड़े में श्रीलालजी रामलालजी राजमलजी। पुर में चम्पालालजी (उगमचन्दजी का नाम) मोहनलालजी आदि की तरह भी भिन्न २ गाँवों मे महात्मा की पोसालें हैं। इस मेवाड़ में काफी वस्ती है जैन जाति उदयपुर में ओसवाल, पोरवाल, सेठ, महात्मा और हूमड़। आगे देखिये यतिवर्ग के और महात्मा सबलसिंह सा० नागोर (मारवाड़) के आपस में महत्व बावत तकरार हुई उसमें यतियों का इकरार राज्य नागौर में हुआ उसकी व उसका परवाना हुआ उसकी नकल।

नकल परवाना

श्री परमेश्वरजी सत्य छे।

सिद्धश्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री इन्द्रसिहजी देव वचनायत सरकार नागोर के हवालदार जोग मत्येन सबलसिंह रे पोसाला २ मोहले लोढा रे छे—

जिणारी मरजाद आगे महाराज अमरसिंहजी री साहिबी में लिख्यो आयो छे, संवत् १६६४ री वर्ष री सनद में लिखी ज्यो है, पौसालां री हद्द में कोई जतियारी पटोलिगं आवण पावे नही, तपगच्छ री, खरतरगच्छ री, पायचंद्या गच्छ री, लूंका गच्छ री, कमला गच्छ री, इतरी पटोलियां आवण पावे नही, पटोलिया

री मरजाद इणारी पोसाल री रहसी, और ८४ गच्छ मत्थेन पहिला महाजना मे वहरसी, जति पीछे वहरसी, और जतिया में शहर शीरणी (मिठाई) वंटसी तो महात्मा ने दी जावसी, सबलसिंह री पोसाल री देसी, उत्थापण पावे नहीं, उत्थापे तो राज में रुपया १०० गुनहेगारी देसी, पौशाल री मरजाद भागसी जको देसी, उपासरा जतिया री मर-जादा नहीं छे, सं० १७६६ भाद्वा सुद १ परवानो हुक्म सुं लिखिजो है सही छे।

दूसरा परवाना

ऊपर सही मोहर

सिद्धश्री महाराज श्री राजा महाराजजी श्री १०८ श्री इन्द्र-सिहजी देव वचनायतु, सिरकार नागोर का हवालदारा जोग, मत्थेण सबलसिंह खरतरा ने इणारे वडेरा ने पातशाही नौ मोहरा दिल्ली पत पातशाह की वार मे कर दीनो सं० १३१७ हुवोडो है, श्री दिल्लीपत पातशाह री रजवाड में यारा नाम कीणी वात री चौलण वेवा पावे नहीं, मरजाद सदावंद की जमी जायगा इणा री है, पातशाह तख्त पर वेस निरधार सरव ने पूछ ने नो मोरो कर दीनो है। हिन्दवाणी, तुरकाणी इणरो नाम लेवण पावे नहीं मरजाद सरव राज, रेत, महाजन राखे, जो लाग मरजाद सदावंद देवो हो से दिया जावज्यो, नोमोहरो है जीमे सरव लिख्यो है मैं ही लिख दीनो है, हुक्म पातशाह दिल्लीपत रो है सो सही छे, कार लोपो तो तीन तलाक है, सं १७७२ वैशाख सुद ३ ।

नकल परवाना नागौर के अधिकारियों के नाम

मोहर

सिद्ध श्री अनेक सकल शुभ ओपमा बिराजमान महाराजाधिराज महाराजाजी (अक्षर गये) अजितसिंहजी महाराजकुंवार श्री अभयसिंहजी वचनायत सिरकार नागौर कोटवाले (अक्षर गये) उदयराम मुंसरफ मुंथा वखतरामदास (अक्षर गये) जोग तथा मत्थेरण खरतरा सबलसिंह जयरामदास हजूर में आयो सो अणारी पौशालां दों छे, २०५ वर्ष ते वसौड़ी है सो साबत।

चित्तौड़ महाजना री कराई पौसालां इणारी (अक्षर गये) डोडीवी है, इणारी मरजाद आगला (अक्षर गये) दी, आई है, महाजनां में सुं इणारा (अक्षर गये) मानसी पौशालं ओली री देवे नहीं (अक्षर गये) कराय दीजो आगलो डोडी री संदा मोकली है मैं ही कर दीनी है थें इणा री (अक्षर गये) वे दीज्यो महोला लोढा रा चोक मा पौशाला है ने इणारा वडेरा आया है (अक्षर गये) पौशाला री रकानो आगला सही छे इण मुजिब (अक्षर गये) दियो है परवाणो सही छे आगलो रजवाड़ो १८०२ फागण विद ३

खास यतिवर्गों का लिखित इकरार

श्री परमेश्वरजी सहाय छे।

सिद्ध श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री इन्द्रसिंहजी देव वचनायत सिरकार नागौर रा कोटवाली चौंतरा

हवालदार जोग मथेन सबलसिंह खरतरा री पौशाला २ महोला लोढा रा चौक में है सो इणारी मरजाद सदावंद री छे कोई जतिया में सीरणी देवे छे सो इणारी पौशाल री सीरणी देवे छे। दोवडी ठाणा प्रमाणे दे छे उपासरा ७ में देवे छे सो इणारा चेला ने दीरबी थाने मोसर री सीरणी छे सो दीना जावसी आगे महाराज रायसिंहजी रा रजवाड़ में देता आया छे जिण मूजब दीना करसी ठाणा १ रा लाड़ २ इणारा ठाणा १ रा लाडू ४ दीदा जावसी. जति सारा भेला होई ने इणारी पोशाल जाय ने देसी इसो पण सही छे नहीं जाय देवा तो राज में रुपया १००) गुनेगारी रा देवा । इणारी पौशाल पहला जाय ने देसा जति अणारी मरजाद सू कहे सो करेगा। नागौर मे सदावंद री रीत छे इणा री पौशाल री मरजाद भेर राखे है थेट रावसो तपा, खरतरा, लूंका, पायचंदिया, नागौरी लूंका कमला, गुजराती लूका, उपासरा ७ मे इणारी पौशाल रो हुक्म छे और मथेण समस्थाने मान्या जावे जतियाँ मे सीरणी देसा तो पेला समस्थ मथेन ने देस्या नहीं देवा तो चित्तौड़ मारया रो पाप लागसी श्री भगवान् सु वेमुख हुमी सं० १७६५ रा मितो भाद्वा सुद ५ मतु समस्थ जति खरतरा, तपा, पायचथा लूंका, गुजराती लूंका, नागौरी गच्छ जति भेला होयने मतो गालिओ छे द खरतरा रामचंदरा छे सर्व भाइया रे कहे गालिओ छे उथापे तो वेमुख होस्या ।

कोई महाशय यह शङ्का करे कि यह इकरार तो बीकानेर निवासी चन्द यति लोगो के नाम का है सो उन्होंने किसी कारण-वशात् दवाव मे आकर लिख दिया हो तो, समस्तों के मानने योग्य, नहीं माना जाता तो आपके मनन करने योग्य एक अति प्राचीन और प्रमाणिक फैसला जिसमें ८४ गच्छ के आचार्यों के दस्तखत और

भिन्नमाल के राजा भाणव व श्रावकों की शाखों लगी हुई तैरहसौ वर्ष का प्राचीन की नकल आपके अवलोकनार्थ दर्ज करता हूँ—

नकल

भिन्नमाल का राजा भाणसिंह ने शत्रुञ्जय गिरनार का संघ निकाला उसमें संघ पद का तिलक निकालने के विषय में झगड़ा पैदा हुआ उदयप्रभवसूरि व सोमप्रभवसूरि के बीच में उस वक्त तो इतरगच्छ के आचार्यों ने झगडा मिटा कर तिलक उदयप्रभवसूरि के हाथ से करवा दिया। आगे वर्द्धमानपुर में ८४ गच्छ के आचार्य सम्मिलित होकर यह मर्यादा बान्ध दी के आगे यह तिलक "आजथो माडी ने जे कोई आचार्य जैन प्रतिबोधे ते आचार्य ते माणस ना पुत्रादि परिवार ना नामो एक बहि मां लखवां कदाच कोई आचार्य परम गच्छ ना कोइक श्रावक ने प्रतिबोधी ने दीक्षा लेवा माटे तैयार कर्यो होय त्यारे तेना परंपरा कुलगुरु नी आज्ञा लई ने दीक्षा आपवी तेमज जिन प्रतिमादिक नी प्रतिष्ठा संघवी पद नों तिलक अने व्रतोपचार आदि कार्योंपण कुल गुरु पासेज करावववां, तेवे समय कुलगुरु कदाच परदेश मां होय तो तेमने त्याथी बोलावी ने ते कार्यों तेमनी सम्मति मूजब करवा, वली एवी रीते आमंत्र कार्य छता पण जो कदाच ते न आवे तो पछी बीजा गुरु पासे ते ते कार्य करावववां अने त्यार थी जेणे ते प्रतिमा प्रतिष्टादिक कार्यों कर्या ते ज तेना कुलगुरु थया।" आवी रीत नो मर्यादा नो श्री वर्द्धमानपुर मां विक्रम संवत् ७७५ ना चैत्र सुदी ७ में थयो ते लखाणमां सही करनारा आचार्यों ना तथा गच्छो ना नामा नीचे मूजब छे।

नागेन्द्रगच्छीय– सोमप्रभाचार्य, ब्राह्मणगच्छीय– जिजयसूरि, उपकेशगच्छीय– सिद्धसूरि, निवृतिगच्छीय– महेन्द्रसूरि, विद्याधरगच्छीय–

हरियाणदसूरि, साडेरगच्छीय—ईश्वरसूरि, वृहद्गच्छसंखेश्वरगच्छीय—उदयप्रभवसूरि, आहदसूरि, आर्द्रसूरि, जिनराजसूरि, सोमराजसूरि, राजहंससूरि, गुणराजसूरि, पूर्णभद्रसूरि, हंसतिलकसूरि, प्रभामनसूरि, रंगराजसूरि, देवरंगसूरि, देवाणदसूरि, महेश्वरसूरि, ब्रह्मसूरि, विनोदसूरि, तिलकसूरि, जयसिंहसूरि, विजयसिंहसूरि, नासिंगसूरि, भीमराजसूरि, जयतिलकसूरि, वीरसिंहसूरि, रामप्रभवसूरि, श्रीकर्णसूरि, विजयचन्द्रसूरि, तथा अन्तसूरि दर्णा ते लखाण में भाणरा जाये श्रीमाली जोगा राजसूर्ग तथा श्रीकृष्ण आदिक श्रावकोए पण साक्षी करी । इस लेख की सत्यासत्य निर्णय के लिये शंका हो तो पडित हीरालाल हंसराज जामनगर वाले की तरफ से संवत् १९८५ मे प्रकाशित 'अचलगच्छीय मोटी पट्टावली भाषान्तर की चोपड़ी के शखेश्वरगच्छीय श्री उदयप्रभवसूरि के अधिकार मे लिखा है वहाँ देख लेवें ।

यवन पातशाह ने भी सन्मान कायम रखने के लिए नोमोहरा परवाना कर दिया जिसकी तस्दीक नागोर महाराज के परवाने मे भी होती है वह ऊपर दर्ज किया गया है।

नकल नोमोहरा परवाना की ।

लिखना परवाना पातशाह दिल्लीपत पातशाही तख्त हुक्म पातशाही भारी का इण तरह पहोंचया गुरु महात्मा नानगदेव दामोदरदास मालदेव यह तीनो ही आय ने बादशाही जनाना मे अर्ज करी । मारा मकान पोशाल री हुरमत आवरू रहे किणी बात री खेचल राज दरबार सू हुवे नहीं इण तरह आय ने अर्ज करी तरे पातशाह कानी सूं हुक्म हुओ मारा रजवाडा मे, सरदारा मे, जागीरदारां

में शहर रा महाजना ने हुक्म पहुंच्यो थें सारा ही पौशाल री मरजाद आबरू राखज्यो किणी बातरी खैंचल करज्यो मती इणारी पौशाला री लाग मरजाद हुवे जो दीना जावज्यो महाजन सर्व मानता जावज्यो था बादशाह रा जनाना में दवा मागी ८द पातशाह हुक्म फरमायो जद नवमौहरो लिखिज्यो है दिल्लीपत पातशाह रा रजवाडा में मानसिंह सुं जादा कुरब रखावज्यो या कार लोपे नहीं सन् १७१३ माह थवन का। सरकार किला की, सरकार बीकानेर की, सरकार नागौर की, सरकार दीवलपुर की, सरकार भाननैज की, सरकार वझवारा की, सरकार लुधियना की, सरकार हजूर की, सरकार सुलतानपुर की, सरकार लाहौर की, सरकार आगम की, सरकार थाहर की।

यो परवानो मारफत ख्वाजा अब्दुलहुसैन के हुआ ।

लिखित महाजन न नगौर

॥ श्रीपरमेश्वरजी ॥ महोर सही

सिवश्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री इन्द्रसिंहजी देव वचनायतु सिरकार नागौर का कोटवाली चबूतरा रा हवालदार जोग महाराज श्री अमरसिंहजी महाराज का रजवाड में लिखियो आयो है चौरासी गच्छ महात्मा छे जीकारा गुरा राजपूतारा महाजन कीना नवसे नन्याणू गोत कीना छे रजपूत खाप खापरा प्रतिबोध्या छे इणा री लाग मरजाद सरब बादियो छे सं० १६६६ की साल में मिती चेत्र सुद १ ने समस्त ओसवाल समस्थो इण भात कोई जीमण करा, व्याव मोसरारो पंचचार जीमे जटे ८४ गच्छ महात्मानु भरवसी (बहरसी) मारे कुलगुरु छे इणाने पहला भेरणो कराज्यो पछे न्यात

जीमसी, हाती पाती पहला इणाने देस्यां कोई नहीं देवे तो राज दरवार में रु १००) भरा गुनेगारी भगवान सुं वेमुख हुआ इसो प्रण सही छे आगल बडेरा मानता आया छे सू मैंही मानस्या पेलां गुरा ने पछे न्यात जीमसी समस्था ओसवाला लिखत कीनो छे जिण परमाणे चालस्या चोधरी देवदुरस, चोरडिया पासदत्त, गोडावत सन्तोकदास, जगमाल गदिया, लोढा मारुदास, छजमल बागाणी सुराणा, भंडारी, सिंघवी, भुरट, महता, दुगड, कोठारी, वेदभूरा, समदड़िया मुहता, डागा, समस्त न्यात भेला होइने लिखत कर दीनो छे। उथापणा पावे नहीं। जीमण मण ३ तथा ४ करातो पेला गुरा महात्मा नुं चौरासी गच्छ समस्थ वेरसी पंच जीमे जठे वेरसी गाम माहे महाजन हुए जीमण करस्यॉ इणाने वरावसी नवसे गोत महाजन हुआ सो वरावसी झगड़ो जाटो करवा पावा नहीं करा तो राज दरवार में झूठा सं० १८५२ साल लिखत कीना छे महाराज में लिख दीनो छे संवत् १७७१ रा मिति वैशाख सुद ३ मंगलवार मतो चौधरी देवदुरस ऊपरलो लिख्यो सही छे समस्त पंचा रे केण सु द चौधरी देवदुरस। संख १ भगवान री समस्त पंचा रा कहरा गाली।

ऊपर के इतिहास से आप महाशयों को प्रमाण सहित विदित हुआ होगा कि यह जाति (जैन ब्राह्मण) सनातन से माननीय व वंदनीय है। अब फिर मैं इस जाति का चारों ही वर्णों का गुरु होने का जो सूक्ष्म प्रमाण ऊपर के इतिहासों में आया है उसका आज तक सन्मान प्राप्त होने का विस्तार सहित व प्रमाण सहित इतिहास देता हूं।

चारों वर्णों में प्रथम ब्राह्मण वर्ण गिना जाता है इस ब्राह्मण वर्ण में भी गुरुपद होने का इतिहास (ब्राह्मणों में ब्राह्मण ही गुरु होते हैं)

यों तो दूसरे ब्राह्मणों के भी गुरुपद से सम्मानित हैं लेकिन एक बहुत बड़ा उदाहरण देता हूं—

मेदपाटेश्वर के पाट पुरोहित जो बडे पल्लिवाल ब्राह्मण नाम से मशहूर है उनकी उत्पत्ति इस तरह से होना प्रमाणित है अयोध्या-निवासी अवदीच (उदीच्य) ब्राह्मण वंश मे विजयदेव जोशी नामी एक व्यक्ति था उनके बारह पुत्र थे सबसे कनिष्ठ पुत्र जिसका नाम सरसल था वो पठित न होने से भाइयों ने पैत्रिक सम्पत्ति का भाग न दिया। इस ग्लानि के मारे सरसल वहां से निकल कर घूमता हुआ साडेराव नामी ग्राम जो गौड़वाड प्रान्त में है यह पहिले राज्य मेवाड़ मे था कुछ समय से मारवाड़ में है। यहां पर आया और वहां भट्टारक यशोभद्रसूरिजी के पास पौशाल पर गया और वहां पर अपना हाल गुरु से निवेदन किया। गुरु ने कृपा पूर्वक उसको अपने पास रख के सरस्वती मन्त्राध्ययन कराके १२ साल में पूर्ण पण्डित बनाया और अन्त में यह आशीर्वाद दिया कि पुत्र जाओ तुम मेदपाटेश्वर के पाट पुरोहित होगा। सगुनानुकूल वह चिकलवास आया जहां रोहिता नामी भील राज करता था उसके आश्रित रहा। समय के चक्र से ऐसा अवसर आया कि महारावल रतनसिहजी चित्रकूटाधीश के कुँअर लक्ष्मणसिह जो गढ छूटने से पश्चिमी पहाड़ो में रावल कहलाते थे उनके २ कुँअर माहप व राहप थे सो माहप को आज्ञा हुई के "मंडोवर का पड़ियार मोकल जो पहिले की दुश्मनी के कारण इनके कुटुम्बियो पर हमला किया करता था" जिसको कैद कर लावे लेकिन यह कार्य माहप से न हो सका, आखिरकार राहप ने आज्ञा पालन कर मोकल को कैद कर लाकर हाजिर किया श्रीमानो ने उसका राणा पद छीन कर राहप को दिया। माहपजी चित्तौड़ लेने की

उम्मीद से निराश होकर डूंगरपुर मे गद्दी कायम की। राहपजी कभी शीशोदे में, जो उन्होंने आवाद किया था वहाँ और कभी केलवाड़े मे और कभी केलवे ग्राम में निवास किया करते थे। एक दिन शिकार खेलने को एक घने जङ्गल मे पधारे वहाँ एक वाराह निकला उस पर वाण चलाया। वाराह तो जंगल मे छिप गया। दैवयोग से वह वाण कपिल नामी ब्राह्मण जो वहाँ तप करता था उसके जा लगा और वह मर गया। इस कपिलदेव का इतिहास इस प्रकार है— कुंवारिया नामी ग्राम मेवाड का रहने वाला यह कपिल नामा व्यक्ति था। इसकी सगाई वहाँ पर ही रंगा नामी कन्या से हुई लेकिन कन्या के कुष्ट के चिह्न प्रकट होने से कपिल ग्लानि कर विवाह न करके तप के वास्ते जगल में चला गया। सती रङ्गा ने भी जो कपिल को वाकदान से वर चुकी थी दूसरे वर के साथ पाणिग्रहण न कर वह भी उसी जंगल मे तप करने चली गई और जुदे २ स्थानों पर तप करने लगे। ऊपर की घटना होने से तपस्विनि क्रोधातुर होकर राहप को श्रापित किया कि तुम्हारे को कुष्ठ होगा और वेदना उठाओगे। महाराजकुँआर ने शापानुग्रह की प्रार्थना की तो कुछ समय वाद क्रोध शान्त होने पर आज्ञा की कि यहाँ कुण्ड वना कर यज्ञ कराओ वगैरह २। फिर एक महात्मा जाति में महापुरुष होगा उसके जरिए से कुष्ट निवारण होगा, आज्ञानुसार महाराजकुँआर राहपजी ने तपस्वी की यादगार व प्रायश्चित निवारणार्थ कुण्ड वगैरह कइएक स्थान वनवाये जो आज लौं केलवाडा ग्राम के समीप विद्यमान हैं। राहपजी के कुष्ट रोग होने पर, सरसलजी के परामर्श से गुरु यशोभद्रसूरिजी को साडेराव से सरसल द्वारा वुलाए वे आकाशगामिनी विद्या से यहाँ पहुँचे और मन्त्रित जल से सिंचन कर के रोग निवारण किया सिर्फ एक पैर के अंगुष्ठ पर चिह्न रहा,

जब श्रीमानों ने भेंट ग्रामादि करना चाहा तो वे इन्कार हो कर सर्व भेंट अपने शिष्य सरसल को समेत पाट पुरोहिताई के दिलवा दी । विदायगी के समय श्रीमानों से कहा सरसन मेरा शिष्य यहाँ अकेला है और आपके पहिले के पुरोहित चोइसा जिनमें मुखिया रतनजी नामी हैं सो यह यदि इस द्वेष—वशात् इस पर घात करे तो मेरे आये बिना इसका दाह न किया जावे यह कह कर विदा हो गये । कुछ समय के पश्चात् वैसी ही सरसलजी पर घात हुई । खैर, गुरु ने आकर सचेत किये और चोइसा ब्राह्मणों को कहा क्यों लोभ-वशात् पंचेन्द्री घात करते हो यादे तुमको पुरोहितगी की चाह है तो श्रीमानों के अंगुष्ट पर जो चिह्न है मिटा दो मैं पीछी पुरोहितगी दिला दूं उन्होंने बहुत उपाय किये न मिटा, आखिर हार मान कर डूगरपुर रावलजी के यहाँ पुरोहित हुवे जो अद्यावदी वहाँ पर है । यह व्यक्ति सरसलजी उदीच्य जाति के ब्राह्मण थे उनको अपनी जाति का गोत्र पल्लीवाल दे कर इस नाम से सम्वोधन किए । यह लोग पाली से आना कहते हैं सो भ्रमात्मक है । क्योंकि यह मारवाड़ इलाके की पाली से नहीं आए ।

इस इतिहास के प्रमाण के लिये देखो रायबहादुर ओझा गौरीशकरजी कृत राजपूताना की तवारीख उसमें उदयपुर राज्य का इतिहास पेज ५१० में दर्ज है "राहप के विषय में यह जनश्रुति प्रसिद्ध है कि वह कभी शिशोदे में कभी केलवाडे में रहा करता था एक दिन आखेट करते समय उसने एक सूअर पर तीर चलाया जो दैवयोग से कपिलदेव नामी तपस्वी ब्राह्मण के जा लगा जिससे वह मर गया उसका राहप को बहुत बड़ा पश्चाताप हुआ । प्रायश्चित की निवृत्ति के लिये उसने केलवाड़े के निकट कपिल कुण्ड बनवाया । ('वीर विनोद' पुस्तक से) फिर लिखते हैं कि— ऐसा कहते हैं कि

राहप के कुष्ट रोग होगया था जिसका इलाज साडेराव (मारवाड़) के यति ने किया ।

उक्त पण्डितजी ने यति शब्द लिखा है इसका यह कारण है कि वह निर्ग्रंथ थे उनको यति नाम से ही सम्बोधित किया जाना दुरुस्त था क्यों कि यति, सन्यासी निर्ग्रंथ पदवाचक है इसका प्रमाण देखना है तो देखो—

प्रशस्ति जो वडे रामानन्दजी महाराज के समयकी है कैलाश-पुरी मेवाड में दक्षिण द्वार कालिका माता के मन्दिर के पास समाधि स्थान पर लेखक के पूर्वज वेलाजी के हाथ की विद्यमान है उसमें सर्व गोस्वामियों को यति नाम से सम्बोधन किया है ।

इसके सिवाय देखिये तुलसीकृत रामायण जहाँ रावण सन्यासी के रूप में सीता महाराणी को हरण करने को आया उस वक्त श्री महाराणी ने आज्ञा फरमाई है—

"कह सीता सुन यति गुंसाई । वोलेउ वचन दुष्ट की नाई ॥"

इस कारण यति शब्द दिया है । फिर देखिये लक्ष्मण व हनुमान को यति का पद है । सोचिये कि दरअसल वे भट्टारक यशोभद्रसूरि निर्ग्रंथ महात्मा जाति के थे तब से उनके शिष्य परम्परा का सन्मान शिशोदे के राणा तथा मेवाड के महाराणाओं में होता रहा । उक्त यति के आग्रह से उनके शिष्य सरसल को जो पल्लिवाल जाति के ब्राह्मण का पुत्र था राहप ने अपना पुरोहित बनाया । तब से मेवाड के राणाओं के पुरोहित पल्लिवाल ब्राह्मण चले आते हैं । इस के पूर्व चोईसा ब्राह्मण थे जो अब तक डूंगरपुर और बासवाडे के राजाओं के पुरोहित हैं ।

इस इतिहास को महामहोपाध्याय कविराज श्यामलदानजी ने अपने रचित 'वीर विनोद' नामी बृहद् इतिहास में इस तरह वर्णन किया है। यह इतिहास श्रीमान् मेदपाटेश्वर की आज्ञा से बनाया गया जिसमें एक लक्ष मुद्रा व्यय हुई है। कहते है कि कुम्भलमेर के पहाड़ों में शीशोदा ग्राम राहप ने ही आबाद किया था पहिले इन महाराणाओं के पुरोहित चोइसा जाति के ब्राह्मण थे जो तो माहप के साथ रहे जिनकी औलाद वाले अभी तक डूंगरपुर में पुरोहित कहलाते हैं और राहप का सलाहकार पल्लिवाल ब्राह्मण था उस को राहप ने अपना पुरोहित बना लिया और उनकी औलाद में अबतक उदयपुर की पुरोहिताई है।

नोट—पाठक स्वयं विचार लें कि राहप ने किस कारण चौवीसा ब्राह्मणों से पुरोहिताई ले ली और सरसल कबसे और किस कारण से राहप के पास पहुंचा ? और उसको क्यों दी ?

लेकिन उक्त ग्रन्थकार को श्रीमान् मेदपाटेश्वरों ने आज्ञा प्रदान की थी कि चमत्कारी बातें और तरह २ की बातें इनमें न आवें। चुनाचे उनकी आज्ञा पालन को, जैसा कि ग्रन्थकार ने स्वयं वीर विनोद में दर्ज किया है कि 'यद्यपि राजाओं की बनिस्बत करामाती बातों और प्रसिद्ध किस्से कहानियों को उनके हाल में दर्ज न करना राजपूतों में एक बड़ा भारी जुर्म समझा जाता है लेकिन मुझ अकिंचन को अपने स्वामी महाराणा साहब शम्भूसिंहजी श्री सज्जनसिंहजी और श्री फतहसिंहजी साहब की गुण ग्राहकता से इस बात का हौसला और हिम्मत दिलाई कि सही और असल हालात जाहिर करने के सिवाय किस्से कहानियों की बातें बहुत कमी के साथ

लिख कर पाठकों के अमूल्य समय को बचावें।"

इसी कारण से महाराणा मोकल वगैरहों का हाल श्री एकलिंग महात्म्य जिसको लोग वायु-पुराण का हिस्सा कहते हैं और जो मेवाड़ देश में एक पवित्र ग्रंथ माना जाता है उसमें लिखा है वो भी न लिखा तो फिर इस छोटे से इतिहास को पाठक स्वयं सोच लें। आगे फिर उक्त ग्रन्थ में कविराजाजी लिखते हैं—

"रत्नसिंह के पुत्र कर्णसिंह पश्चिमी पहाड़ों में रावल कहलाये उस समय में मंडोवर का रईस पडियार मोकल पहिली अदावतों के कारण रावल कर्णसिंह के कुटुम्बियों पर हमला करता था इस सबब से उक्त रावल का बड़ा पुत्र माहप तो आहड़ में और छोटा राहप अपने बसाये हुये शिशोदा में रहता था। माहप की टाला-टूली देख राहप ने अपने बाप की इजाजत से मोकल पडियार को पकड़ लाया तब कर्णसिंह ने मोकल का राणा पद छीन कर राहप को दे दिया। माहप चित्तौड़गढ़ लेने से नाउम्मीद होकर डूंगरपुर चला गया। राहप कभी शिशोदे में कभी केलवाड़े में कभी केलवे में रहता था। एक दिन शिकार खेलते समय राहप ने एक तीर सूअर पर चलाया दैवयोग से वह तीर कपिल नामी एक ब्राह्मण को जा लगा जो उसी जंगल में तपस्या करता था और उसी तीर के लगने से वह वहीं मर गया। राणा राहप को उस ब्राह्मण के मरने का बड़ा पश्चाताप हुआ और उन्होंने उसकी यादगार के लिये कुण्ड वगैरह कई स्थान बनवाये जो केलवाड़े ग्राम के समीप कपिल मुनि के नाम से अबतक मौजूद हैं।

भुवनसिंह के पीछे महाराणा लक्ष्मणसिंह के समय दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलक की फौज ने चित्तौड़ को आ घेरा। मालूम होता है कि यह लड़ाई बड़ी भारी हुई जिसमें महाराणा लक्ष्मणसिंह और उनके पुत्र अरिसिंह आदि बड़ी वीरता के साथ लड कर मारे गये। लेकिन अरिसिंह का छोटा भाई अजयसिंह जख्मी होकर केलवाड़े की तरफ पहाड़ों मे चला गया सो वहाँ महाराणा के नाम से प्रसिद्ध हुआ और साडेराव के यति (जैन गुरु) ने उन जख्मो का इलाज किया जिस पर अजयसिंह ने उसको कह दिया कि हमारी औलाद तुम्हारी औलाद को पूज्य मानती रहेगी। और इसी कारण से अबतक सांडेराव के महात्माओं का आदर सन्मान मेवाड के राणा करते है। (देखिये वीर विनोद पृष्ठ २८८, २८९)

आगे मैं और इस जाति के महात्मा को गुरु मानने के ताजा प्रमाण इन पुरोहितों के पूर्वजों के देता हूँ—

वीर विनोद नामी इतिहास के प्रारंभ में साडेराव के गुरा केरिंगजी को श्री मेदपाटेश्वर ने पुरोहित ऊँकारनाथजी द्वारा याद फरमाये जिससे पुरोहितजी ने पत्र लिखाः—

सिद्धश्री सेंवारी (इन दिनों में सांडेराव से सेंवाड़ी रहते थे) शुभ सुथानेक सरब औपमा लायक गुराजी श्री केसरसिंहजी चेलाजी श्री दीपचंदजी भैरवचंदजी (पुत्र थे) जोग श्री उदयपुर सुं लिखावतां पुरोहितजी श्री ऊँकारनाथजी रो नमस्कार बांचसी अठे उठे श्री जी सहाय छे अपरंच कागज आपरो आयो समाचार वांच्या आप लिखी के ताकीदी रो काम वे तो मेणा हाते लिखे सो उरो आऊँ और जेज़ वे तो दशरावा पे आऊँ जीसूं लिखवो है के अठे श्रीजी में

सु आपके वास्ते 'हरदम ताकीद मां सु करे है सो मारो लिखवो तो आपने यो है सो आप वरखा पाणी रो उगाड़ देखने भाद्वा में जरूर आवसी श्रीजी भी हलकारो भेज्यो हो और नहीं पधारिया सो आछी नहीं दीखे। अब आप आओगा जीमेहीज सारी बात ठीक दिख जावेगा। श्रीजी राजी रेवेगा जीनु आप सारी ख्याति री पोथियाँ श्रीजी की व मारी चितोड वारा की व आगली गुजरात की वे सो सारी लेता पधारसी। और आपने घणी कइ लिखा मारो तो जोर हो जो में लिख दीदो पछे आप जाणो संवत् विक्रमा १९४१ श्रावण सुद १२

यो पत्र खास दस्तखती पुरोहितजी को है। इसी तरह दूसरा पत्र वागोर के पाटवी पुरोहिता को—

सिधश्री गाम साडेराव शुभ सुथानेक लायक पूज्य अनेक ओपमा जोग गुराजी श्री केरींगजी जोग श्री उदयपुर थी लिखावता पुरोहित सुन्दरनाथ को जै श्री एकलिङ्गजी री बंचसी अपरंच अठाका समाचार तो श्री जी री सुनजर करने भला छे आपरा सदा भला चाहिजे तो माने परम सुख होवे। आप म्हारे घणी बात हो अठे आप तीरे वेणीराम ने मेल्यो सो आप जूनी पोथियाँ देख ने वंशा-वली री पोथी वे जिससे चिकलवास का पुरोहित निकुम गया सो वणा रा नामा री पीढ़ियाँ उतार ने अणी रे हवाले करजो। वेणीराम रे न्यावटो तुल रियो है जीसुं आप कने मोकेल्यो है सो निरधार वे सो लिखज्यो घर री वात है आपरो जवाब धर्मस्वरूपी आवे जदी न्यावटो टूटे। जवाब वेगो पुगावसी जेज करसीं नहीं अठा सारु काम काज होवे सो लिखावसी म्हारे तो आपरी वात घणी गाढी है जो आप वंशावली की पीढी उतारने वेणीराम ने दीजो

खोटी घणों करो मती यो म्हारी चाकरी करे है जो घणा दिन तो रेवा ज्यूं नही है आप सूरत करता ही ताकीद सुं सीख देशा संमत १९३४ का मह्रा विद ६ बुधवार।

पत्र नम्बर ३

सिधश्री उदयपुर सुथाने पुरोहितजी श्री शिवराजजी कंवरजीश्री ॐकारनाथजी वचनातु गुरा गेगराजजी तीरा सु ।नामा मंडाया १९२२ का वैशाख सुद ७ रे दिन नामा मंडाया और वदातो दी, गई और घोड़ो देणो बाकी सो सरदारा की तरवार वंदाई मे जावेगा सो आप रे पुगतो कर दांगा १९२२ का वैशाख सुद १० ।

पत्र एक माफीदारान बड़ा पल्लीवाल कोशीवाड़ा

सिधश्री बड़ा पल्लिवाल भाया परोथ जोग समस्थ सुं गाम कोशीवाड़ा थी समस्त भायां रो पगेलागणो बंचावसी अप्रंच आपणे आद उद्यापी सांडेराव का गुरुजी बावजी नामो मांडवा पधारे है और सं० १९८२ में कोशीवाड़े पधारिया और नामा मंडाइ ने शीख विदा दीदी और अबार भी गुरुजी बावजी श्री इन्द्रचन्द्रजी पधारिया भेंट पूजा तथा वायारो चवरी दापे दीओ सो अबे थांके अठे पधारेगा सो कोई बात री तकलीफ पड़वा दो मती ए आपणा गुरुजी है सं० १९८७ का फागण विद ५ दः जीवराजरा छे समस्थ भाइयांरा केवा सु दः पुरोहित अंबाशंकर रा हाथ रा छे दः पुरोथ सरीलाल का छे दः पुरोहित मोडीराम दः पुरोहित किशनलाल रा छे ।

इसी तरह छोटे, पल्लिवालों के भी गुरु हैं ।

अब दूसरा वर्ण क्षत्री— क्षत्रियों मे सिरमौर मुकुट-मणि रघुवंशी मेदपाटेश्वर जिन्होंके गुरुपद मानने के बारे में—

परवाना

स्वस्तिश्री उदयपुर सुथानेक महाराजाधिराज महाराणाजी श्री जगतसिंहजी आदेशात गाम साडेराव का श्री दरबार का वंशावलिया गुरु कुशाल कस्य अपर ॥ थाहे आगे मारा वडाउवा मान्या जिणी परमाणे मैं मानागा तथा म्हारा वंशरा सिसोदिया वेगा थाहे देश परदेश मानेगा नहीं जो ही ओलिम्भो पावेगा (संवत् को जगह कट जाने से पढ़ा नहीं गया) वैशाख विद ५।

दूसरा परवाना महाराणाजी श्री भीमसिंहजी

सिरे पर श्रीएकलिंगजी, बीच में श्रीरामोजयति, दूसरी ओर श्रीगणेशप्रसादात्

बीच में सही व सही भाला

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणाजी श्री भीमसिंहजी आदेशात् गुर नंदराम रायचन्द्रा कस्य अपर ॥ थेई श्री दरबार का गुर वंशावलीया परा पूर्वी हो सो म्हारा वंशरा तथा सिसोदिया वंशरा होसी सो थारा चेला "शास्त्र में चेला पुत्र को भी कहते हैं" तथा था गुरारा आवसी जाने मानसी म्हारा वंश री होसी सो थारा पगरो वेसी जीरा पग पूजेगा म्हारा ई नहीं माने जीने श्री जी री आण छे परवानगी भट्ट अमरेसर सं० १८५७ वर्षे वैशाख सुद ८

नकल परवाना

॥ श्री शिव ॥ श्रीरामजी

पाणेरी श्री गोपालजी जोग भट दयाशकर अप्रंच साडेरावरा गुर गेगजी आया सो याने विदा कराय देसी माहे ले जाय सामा वैठावे ने वंशावली वंचावे मुरजी सुने बिदा कराय देसी आगे सं० १८७३ का फागण वीद १२ आगे मिलाप हुवो १६२० का वैशाख सुद ३

महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी का परवाना

श्रीगणेशप्रस.दातु ॥ श्रीरामोजयति ॥ श्री एकलिंगप्रसादातु

सही और सही भालो

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी आदेशात गाम साडेराव का वंशावलिया गुर मोतीराम रान्दराम का केरिंग रायचन्दरा कस्य अपर ॥ थाहे आगे मारा वड़ावा मान्या जणी परमाणे म्हें तथा मारा वंश रा रावल राणावत आहड़ा चन्द्रावत चूंडावत सगतावत पूरावत कानावत वगेरा मात्र सिसोदिया वेगा जो थाने देश प्रदेश सुधा मानेगा और थारी मेर मरजाद आगला वड़ाउवारा नाम देख थाहे मानेगा तथा पग पूजेगा नहीं जोही ओलूम्बो पावेगा और परवानो १ महाराणाजी श्री भीमसिंहजी रा नामरो सं १८७७ रा वैशाख सुद ८ री मिति रो थें नजर कीदो वो जीरण वेगयो देखने नयो परवाणो कराय देवाणो परवानगी पंचोली हरनाथ सं० १९११ वर्षे भादवा सुद १३ सोमे।

नक्ल परवाना महाराणाजी श्री भोपालसिंहजी का

श्रीगणेशजी प्रसादात ॥ श्री रामो जयति ॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादात

नं० ४ सही और सही भालो

स्वस्तीं श्रीमत उदयपुर सुस्थाने महाराजधिराज महाराणाजी श्री भपालसिंहजीत् आदेशात् साडेराव का वंशावलिया गुर इंद्रचंद दीप-चंद्रा अपर ॥ महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी को परवानो मोतीराम केरांग का नाम को भादवा सुद १३ संवत् १६११ को ई मजमून को के थाहे आगे म्हारा वड़ावा मान्या जणी परमाणे म्हे तथा म्हारा वंशरा रावल राणावत अहाड़ा चंद्रावत चोंडावत सगतावत पूरावत कानावत वगेरे मात्र सिसोदिया वेगा, जी थाने देश परदेश सुदा मानेगा और थारी मरजाद आगला वडाउवारा नामा देख थाहे मानेगा तथा पग पूजेगा नहीं ज्योही ओलुम्बो पावेगा नजर कराय अरज कराइ के यो परवानो जीर्ण होगयो है सो नवो करा वक्षे जां पर जीवराज अर्जक हुओ के वडो मु हूँ सो परवानो म्हारे नाम करा वक्षे सो इरी दरियाफ्त कराइ गई तो थारा वड़ावा रो मान्य पहला दर्जा को हो वो साबित हुओ ई वास्ते यो परवानो थारा नाम पर कर वक्षो है सो मेर मरजाद थारा आगला वड़ावा माफक रहेगा परवानगी महक्मेखास लिखता पंचोली मोतीसिंह रामसिंहवत संवत १६६० रा आसोज सुद ७ भोमे।

दूसरी मरतबा संवत विक्रमी २००० का सावण सुद ७ रविवार श्रीजी हजूर श्री महाराणा सर भोपालसिंहजी के राज्य सम-यात में श्रीमान् महाराजकुंआर श्री भगवतसिंहजी साहिब का व श्री

भंवरजी बावजी श्री महेंद्रसिंहजी साहब के नामा भादवा सुद ११ मंडाया गया विदा सीख बदस्तूर मिली ।

गुरां इन्द्रचंदजी उदयपुर वि० सं० १९९९ का वैशाख सुद १५ उपस्थित हुए मुकाम भैंसरोडगढ़ को हवेली हुआ श्री जी में नामा वि० सं० २००० का सावण सुद ७ मंडे और पेट्या मास ४ के मिले । पेट्या मिलवा के वास्ते राजश्री महकमेंखास का हुक्म नं० १५२८६ भादवा सुद ९ ता० ८-९-४३ ई० बनाम दारोगा के ठार— श्री कॅंवरजी बावजी व भंवरजी बावजी का नामा माडवा तावे साडेराव का वंशावलिया गुरु इन्द्रचंदजी हाजिर हुआ जी बारा में दरख्वास्त वंशावल्या गुरु इन्द्रचंदजी मारूजा भाद्वा विद २ सं० हाल पेश हुई के मने दो मर्तबा एक २ मास का पेट्या घास लकडी मिली ने दो महीना के पेट्या असाढ़ सुद १३ पूरा वे गया हाल तक विदा को घोडो मिल्यो नहीं जीसुं ठहर रयो हुं सो पेट्या घास लकड़ी देवारो हुक्म फरमायो जावे । इस पर दरियाफ्त भट्ट रामशंकरजी व नगीनावाड़ी लिखी जावे है के इनको असाढ सुद १३ तक पेटिये पहिले मिल चुके इसके बाद के मिलना बाकी है सो दो माह के पेटिये पहले मिले उसी मुआफिक अबभी दिला देवे घास लकड़ी के लिये जंगलात में लिखा गया है।

रोशनी पानी के लिये जरिए हुक्म नं० २१०२० सं० २००० आसोज कृष्णा ४ ता० १७-९ ४३ ई० हिसाब दफ्तर व धर्मसभा में आज्ञा हुई ।

फिर देखिये ऐसे परवाने को देखकर भी बड़े उमराव या सरदार टालाटूली करे तो राज्य से मानने के लिये हुक्म जारी होते हैं—

नकल रुका राज श्री महकमेखास बनाम फोजदारां कामदारा आमेट मवर्खा जेठ. विद १४ सं• १६४५ का 'दरख्वास्त गाम सांडे-राव का गुरु केरींगजी लिखी जेठ विद ५ सं० हाल इस मजमून से कि अवार मारो आवो आमेट हुओ और नामा मंडावा तावे रावत जी ने कह्यो तो जवाव दियो कि हुकम मंगाय दो सो आमेट लिखाय देवे कि नामा मंडाय देवे— श्री जी हजूर में मालूम होकर वमूजिव हुक्म लिखी जावे है कि याके पास महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी को परवानो है सो यांने मानोगा फक्त्।'

आमेट नामा मंडाया और आमेट रा ठिकाणा सूं भाइयों के नाम लिखी—

सिध श्री समस्थ जगावतों रा ठिकाणा का समस्थ श्री भाइयां जोग आमेट थी रावत श्री शिवनाथसिंहजी लिखता जुहार वंचसी अप्रंच ॥ गाम साडेराव का गुरु केरींगजी पुनमचंदजी आपणा गुरु हैं सो अठे भी नामा मंडाया गया है हर थे वी या तीरा सू नामा मंडावोगा हर याने मानोगा मारफत काका सुलतानसिंहजी की दः पंचोली रतनचद का श्रीजी हजूर का हुकम थी सं० १६४६ सावण विद ६

इसी तरह ठिकाने देवगढ़ मे नामा मंडाय भाइयां ने लिखी—

सिधश्री महारावतजी श्री विजयसिंहजी वचनायतु समस्थ भायां भागावता जोग जुहार वांचजो समस्त पटायता दस्योस्व प्रसाद वांचज्यो अप्रंच गाम सांडेराव का वंशावलिया गुरुजी इन्द्रचंदजी दाम सिसोदिया नाम का गुरु है अवार देवगढ़ आया सो वांरे पास श्रीजी हजूर का परवाना व महकमे खास का रुका और अठा का व आमेट का

पट्टा देख नामा मंडाया और थांने मान्या है सो अठाका भाई सांगा- वत होवो सो याने मानोगा दुबे काका सिवसिहजी सं० १६८७ का चैत्र सुद ७

नकल परवाना ठि० बेड़ा गोड़वाड़ (मारवाड़) का:-

अज ठिकाणे बेड़ा ता० २४-११-३० ई० मोहर छाप युक्त कुलगुरु इंद्रचंदजी दीपचंदजी रा वास सांडेराव तथा मारे ठिकाणा रा कुलगुरु हो. और अबार मारे ठिकाणा रा नांव वगेरा माडिया है जिनरी सीख में अलावा दूजी सीख रे बन्दूक १ कारतूसी १२ नंबर री दी गई है फकत् दः अब्दुलाखां कामदार ठिकाणा। पंचोली गीसूलाल । ऊपर दर्ज है जी मूजिब महाराणाजी का परवाना व सलूंबर, बेगूं वगेरा उमरावां का पट्टा गुरां मगनलालजी प्यारचंदजी का निवास भींडर (मेवाड़) के पास भी हैं।

क्षत्रियों में राठोड़ खांप के कुलगुरु होने का प्रमाण वृज- पुरा के कुलगुरां पास—

जोधपुर महार जाधिराज का परवाना:-

स्वस्ति श्री- महाराजाधिराज महाराजाजी श्री गजसिंहजी महा राज कुमार श्री जशवंतसिंहजी मेड़ता कोठायता रीड़मल सिकेदार रामदास दीसेसुप्रसाद अठारा समाचार भला छे थारा देजो श्री दरबार रा उपाध्याय श्री भवानीकीरतजी रिखबदेवजी जावे है सो रू ३००) तीन सो ऊंट दोय आदमी चार साथे देजो ए कुलगुरु छे सं० १६६२ चेत विद ४ पाये तख्तगढ़।

दूसरा परवाना:-

स्विरूप श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री विज-यसिहजी महाराज कुँवार श्री जालमसिंहजी वचनायत महात्मा खरतरा राजसिहजी ने हमारा कुलगुरु छो सो थारा बेटा पोता ने हमारा मान्या जावसी सं० १८४६ भाद्वा विद ६ मुकाम पाय तगत जोधपुर ।

महाराजाधिराज मानसिंहजी साहेबों ने कुल की वंशावली पर गाव एक बृजपुरो भेंट कीदो जो आजतक कब्जे में है ।

ठिकाना पोहकरण का परवाना

सिद्धश्री राव बहादुरजी ठाकुरा साहब श्री मंगलसिंहजी कंवर जी श्री चेनसिंहजी भंवरजी श्री भवानीसिंहजी राजस्थान पोखरण खाप चापावत • विट्ठलदासोत लिखावता कुलगुरु महात्मा खरतरा आनन्दी-लालजी बेटा विरदीचंदजी रा पोता रघुनाथमलजी सूं वंदना वाचजो तथा थें मारा सदावंध सुं कुलगुरु छो सो म्हारा वंशरा चांपावत विट्ठलदासोत पीढ़िया लगत थारा बेटा पोता ने मान्या जावसी आप कुलगुरु पूजनीक छो सं० १९८४ का मिती वैशाख सुद १४ दः पंचोली किशनलाल रा छे श्री रावरे हुक्म सु ।

रास ठिकाना का परवाना:-

स्वरुप श्री राव बहादुर ठाकुर साहब राज श्री नाथूसिंहजी साहब कंवरजी श्री बहादुरसिंहजी राजस्थान रास खांप उदावत जगरा नोत लिखावता कुलगुरु महात्मा खरतरा आनंदीलालजी बेटा विरदी-

चंदजी रा पोता रुगनाथमलजी सुं वंदना वांचजो तथा थें मारा सदाबंध सुं कुलगुरु छो सो मारा वंश रा उदावत जगरामोत पीढिया लगात थारा बेटा पोता ने मानसी सं० १६८७ रा प्रथम आषाढ सुद १ दः कुशलराज कामदार कचहरी श्री रावला हुक्म ।

ठिकाना नींमाज (मारवाड़) -

स्वरूप श्री ठाकुरा साहेब राज श्री उम्मेदसिहजी साहेब राज स्थान नीम्बाज खांप उदावत जगरामोत लिखावत कुलगुरु महात्मा खरतरा आणंदीलालजी बेटा बिरदीचंदजी रा पोता रुगनाथमलजी सुं वंदना बाचज्यो तथा थें मारा सदाबंध सुं कुलगुरु छो सो म्हारा वंशरा उदावंत जगरामोत आपरा बेटा पोता ने मान्या जावसी सं० १६८७ प्र० असाढ़ सुद ६ मंगलवार दः राठौड़ लालसिंह कामदार ।

ठिकाना खरवाः-

सिध श्री समस्थां भायां सगत सिंगोत योग खरवा थी रावजी राज श्री गोपालसिंहजी लि० जै जगदीश्वरजी की वांचजो अप्रंच ॥ गांव विरजपुरा का कुलगुरुजी आणंदीलालजी पुखराजजी बेटा विरदी-चंदजी का पोता रुगनाथमलजी का राठोड़ वंशका कुलगुरु है और नामा मांडवा वाला हैं और आपणा बड़ेरा का नावा भी येहीज मांडता आया है सो अबभी मोजूदा ओलाद रा नावां मांडवा ने

आवे जद मंडाय दीज्यो अणारी मुरजादा माफक राखज्यो ए गुरु है मिति पोष विद १३ संवत् १६८६ का शनीवार। रावली सही।

ठिकाना भादराजण -

मरे पर ए कुलगुरु आपणा है सो इणाने मानस्यो ॥

स्वरूप श्री राज श्री समस्था भाया जोग भादराजण थी ठाकुरा राज श्री इंद्रभाणसिंहजी लिखावता जुहार वाचज्यो अठारा समाचार श्रीजी रा तेज प्रताप थी भला छे राजरा सदा भला चाहिजे अप्रंच ॥ आपणा कुलगुरु महाराज खरतरा महात्मा श्री दीनानाथजी मूलजी अजीतमलजी ये आपणा कुलगुरु है सदावंध सुं इणाने सारा भाई मानज्यो शीष नवावज्यो ओलाद रा नावा नहीं मंडाया होवे सो मंडाय दीज्यो सदावंध सुं आपणा है सो इणारी मुरजाद राखजो सं० १६०६ असाढ़ विद ३ -

ठिकाना रायपुर (मारवाड़) -

ठाकुरा राज श्री माधौसिंहजी राजस्थान रायपुर खांप उदावत राज सिंगोत लिखावता कुलगुरुजी महात्मा श्री दीनानाथजी सुं वंदना वाचज्यो तथा आप म्हारा वंशरा राज सिंगोत पीढिया लगात आप रा बेटा पोता ने मान्या जासी यो परवानो श्री ठाकुर साहब रा हुक्म सु कीनो छे द मूथा मोकमचंद पंचोली हीरालाल रा.छे सं० १६११ भादवा विद में।

मालवे में रईस व जागीरदारों के गुरु हैं उनका इतिहास -

महाराज दलपतसिंहजी जिस समय अपने भाई बेटे की जागीरी में परगना बलाहेड़ा पाकर जोधपुर से अलग हुवे उस समय गुरां महेशदासजी को भी जोधपुर से अपने साथ लाये और अपने अलग कुलगुरु स्थापन कर तमाम जाया परण्या का दस्तूर बन्ध कर बलाहेड़े में जागीर बक्षी व वशावली सुण करके नामे लिखवा कर लाख पसाव बक्षा। सं० १६८० गाम डावडियोप गुरॉ हीराजी को सं० १७६६ में रतलाम राज्य सस्थापक महाराजा रतनसिंहजी के पुत्र अखेराजजी से गाम रतनपुरा परगने उगदड दाल्या पाये जो आज कल देवास राज्य में है।

महाराजा रतनसिंहजी से सं० १७१५ मे नागड़ाखेड़ा जागीर में पाये जो आजकल सीतामोह राज्य में है। गुरा कानजी सं० १७४१ में महाराज रुगनाथ से सासण रुपे २००) की पाये। गुरा शोभजी सं० १७८७ में कुंवर वक्षसिंहजी के राजलोक से मोजे भुवाले में जागीर पाये। गुरॉ पेमजी जोधपुर महाराज अजीतसिंहजी से केरुरे मार्ग धरती बीघा २०० पाये। सं० १७६४ में व भुवाले में दरबार राजसिंहजी से जागीर पाये। गुरॉ रामलालजी से सं० १७८० में कुँअर वख्तसिंहजी से जागीर पाये। गुरॉ लालजी को महाराजा होलकर तुकोजीराव ने अपने गुरु माने थे। होलकर खानदान के उपाध्याय के बाद इन्हीं के गव अक्षत होता था। महाराजा होलकर ने अपने पास रखकर खास इन्दार में गजराबाई वाली हवेली ब्राह्मणों मुताबिक आठ आदमियों का भोजन व १५०) रुपया माहवार हतखर्च व तमाम जाया परण्या साल गिरह वगैरह के नेग दस्तूर मिलते थे' यह लालजी महाराजा सेंधिया जियाजीराव वो मेदपाटेश्वर महाराणाजी

स्वरुपसिंहजी व जोधपुर नरेश आदि बड़े २ नृपतियों की सेवा में हाजिर हुए इनको सीतामोउ रईस श्री राजसिंहजी ने मोजे भुवाला मे जागीर बक्षी। सं० १८६४ में व संवत् १६१६ में रतलाम दरबार श्री रणजीतसिंहजी ने मोजे इटावा में जागीर बक्षी व संवत १८६८ में जड़वासे महाराज तख्तसिंहजी से जागीर पाये व पोलिटिकल एजेन्ट गवर्नर जनरल सेन्ट्रल इण्डिया मिस्टर हमिलटन साहब बहादुर के साथ रह कर सेन्ट्रल इण्डिया के इतिसास व इस तरफ केएटपतियों के खानदान की पूरी २ वकफियत दी व इनके बनाये हुए वंश वृक्ष अभी तक ए० जी० जी० के दफ्तर में मौजूद हैं व जब कभी रईसों में गोद लेने व हक हकूक के विषय में झगड़ा पड जाता है तो इस वंश-वृक्ष को ही सच्चा मान कर इसी के आधार पर फैसला होता है। साहब बहादुर ममदूह ने अपनी कलम से सार्टीफिकेट में *"This is a tree Rathaor Kulguru."* ऐसा नोट किया है व समाचार पत्रों ने व इतिहासकारों ने समय पर आपके विषय में लिखा है—

इनके पुत्र केसरसिंहजी हुए यह महाशय महाराजा होल्कर शियाजीराव के पास रहे व इनके साथ जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंहजी साहब से मिले व वर्तमान सेंधिया महाराज के जन्मोत्सव में शरीक होके महाराजा माधोराव सेंधिया से मिले। वहां से मान पाये व जोधपुर महाराजा साहब श्री सरदारसिहजी की शादी उदयपुर दरबार महाराणा सर फतहसिंहजी साहब के बाईजी साहब के साथ हुई। उस उत्सव में जोधपुर गये व मान पाये। सं० १६८१ में श्रीमान् बीकानेर नरेश श्री गगासिंहजी ने नहर खोली (ओपनसिरेमनी) के जलसे में पधारे श्रीमान् बीकानेर नरेश ने वायसराय साहब बहादुर श्रीमद इरविन व लेडी साहिबा ने व पञ्जाब गवर्नर जनरल

आदि बड़े २ अंग्रेजों से खुद ले जाकर दस्तापोशी याने (हाथ मिलाया) और उनको सम्बोधन किया कि यह हमारे गुरु हैं। परिचय कराया दूसरी मरतबा महाराजा साहब के बाई साहिबा की शादी में शरीक हुवे। सन् १९११ में बादशाह पंचम जॉर्ज सम्राट के ताजपोशी के दरबार में भी हाजिर हुवे। झाबुए राजा दिल्ली कॉन्फ्रेंस में गये वहाँ भी शरीक हुए। रईस सीतोमोह के कंवर रघुवीरसिंहजी के नाम कर्ण के मौके पर मोजा नागड़ाखेड़ा में जागीर बख्शी। पोलीटिकल एजेंट सरदारपुर ने झाबुआ गोदनशीनी के मामले में सार्टिफिकेट दिया। झाबुआ रईस ने १००) सालाना कर बख्शे इनके पुत्र निर्भय-सिंहजी को रियासत सेलाना झाबुआ अलीराजपुर व मालवा प्रान्त के तमाम ठिकानों में अपने कुलगुरु मान कर फिर नई सनदें कर दीं।

रतलाम दरबार का पट्टाः-

सिधश्री महाराजाधिराज श्री श्री रणजीतसिंहजी आंगु कुलगुरु लालजी धनराज भैरू ने शुभ नजर फरमाय श्री बड़ा हजूर भैरव-सिंहजी रतलाम में पास राख्या और पटो ३६०) को कर बख्यो सो उ पटो देत माहे जमीन बीघा १८१ मोजे इटावा माताजी बिजासण में चोतरा सूं उगमणी तरफ की मपा दी गई सो हमेशा पुस्त दर-पुश्त पाल्या जासी पुण्यारत कर दीवी और जो कुलगुरु को हक दस्तूर जाया परण्या व नामा माडने का होवेगा वो मिल्या जावेगा थें अठे हाजर रिया जाज्यो। श्लोक मामूल। सं० १९२१ भाद्वा विद ३ हस्ताक्षर उपाध्याय मथुरालाल।

वंशावली में नामा मंडे वो सत्कार

श्रीमन्त महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री कर्नल हिज हाइनेस सर सज्जनसिंहजी साहब बहादुर जी० सी० एस० आई० के० सी० एस आई० के० सी० वी० ओ० एडी सी टु हिज रायल हाईनेस दी प्रिन्स ऑफ वेल्स की सेवा में तेजसिंह वल्द भैरजी कुलगुरु सा० हाल रतलाम ने एक दरख्वास्त नामा लिखाने बावत पेश होने से श्रीजी ने बराये खावन्दी ता० १-६-३३ ईस्वी मिती भाद्रा सुद १२ सं. १६८६ शुक्रवार के सुबह १० बजे का मुहुर्त होने से वंशावली बंचने की तजवीज महल रणजीत-विलास के पूर्व जानीब ऊपर के गोखड़े में की गई। पूजन के सामान का प्रबन्ध मारफत मुन्सरिम जागीरदारान के किया गया। वहाँ श्रीजी हजूर साहब बहादुर मय श्रीमान् बड़े महाराजकुँवार श्री लोकेन्द्रसिहजी साहब और छोटे बापूलालजी श्री चंद्रकँवरजी साहब गोखडे में विराजमान हुए, बाद कुलगुरु तेजसिंहजी मदनसिंहजी को गोखड़े में बिठा कर सामने एक बाजोट के ऊपर वंशावली रखी गई और पूजन विधि सहित श्रीमन्त बडे महाराजकुँवार साहब के हाथ से श्रीमती छोटा बापूलालजी श्री चन्द्रकुँवर साहिबा के हाथ से पूजन हुई भेंट ५) रुपये श्रीफल एक प्रसाद ५ पाँच सेर पूजन कराने में गुरु भागीरथजी और दाना दीक्षित सुन्दरवल्लजी थे। बाद में श्रीमन्त बडे महाराजकुँवार साहब व श्रीमती छोटे बापूलालजी साहबा ने कुलगुरु तेजसिंहजी के तिलक किया बाद में मदनसिंहजी के तिलक किया इसके बाद तेजसिंहजी ने श्रीमान् श्री हजूर साहब के तिलक किया। फिर महाराजकुँवार साहब के व छोटे बापुलाल के तिलक किया। पश्चात् वंशावली बंचनी प्रारम्भ हुई उस वक्त वहाँ पर दीवान साहब दरबार राय-

बहादुर देवीशंकरजी दवे व मेजर शिवजी परसनल असिस्टेन्ट जागीर-दार साहब गजोड़ा मुरारीलालजी मुंसरिम जागीरदारान लक्ष्मीनारायणजी, सेक्रेटरी कौंसिल महाराज अमरसिंहजी, शिवनाथसिंहजी, मुनीम नन्द-लालजी, सरदार भभूतसिंहजी, व्यासजी नाथूलालालजी चोपदारों के जमादार याकूबजी वगैरह लोग हाजिर थे। बाद सुनने वंशावली दीवान साहब ने मुख्तसिर नाम लिखा कर मुहुर्त किया बाद दरबार बरखास्त हुआ।

इसी तरह कुलगुरु होने बाबत—

झाबुआ, कणेरी, आम्बासुखेड़ा, बरमावल, धारसीखेड़ा आदि की सनदें भी हैं:—

जैसे सरवण जागीरदार साहब ने लिखा—

राजश्री ठाकुर साहब अमरसिंहजी स्वस्थान सरवणआ कुल-गुरु लालजी चिरंजीव धनराज भेरां से पायलागणो वंचसी अपरंच॥ म्हारा पुरखाए थाँरा पुरखा का पग पूजा सो थें मारे वंश लारे हो सपूत कपूत वेवेगा जाने मान्या जावांगा। थें राठोड़ वंशरा कुलगुरु हो सो थांरा वंश सिवाय दूसरा कुलगुरू आवे तो मानागा नहीं और थांने हमेशा पुश्तदरपुश्त म्हारो थांणो वंश रहेगा जठातक मान्या जावांगा। मारफत ठाकुर साहब लालसिंहजी नकल तिर-वाड़ी सदाशिव मिती चेत सुद ७ सं० १६४४ का

इसी तरह इडर में भी बरताव है।

कानोड़ (मेवाड़) रावतजी सारंगदेवोत खांप प्रथम श्रेणी के सामन्तः-

सिधश्री महारावत श्री सारंगदेवजी वचनायतु गुरुजी हीरा है बाई उम्मेदकंवर री भणावणी में गाम अचलाणा रा तलाव पार

पाछे धरती वीघा डोड गोड़ा ऊपर वारी वद्यो आसोज विद १३ सं० १७६६ वर्षे

दूसरा

सिधश्री महारावतजी श्री सारंगदेवजी वचनायतु गुरुजी गणेश है न मरजाद गामोटा श्री रावले समस्थ महाजना व सिरदारां गामाचा माहे जन्मपत्री रो नेग आगे थो सो सावत कराय दियो सं० १७८१ रा भादवा विद १३

तीसरा

सिधश्री महारावतजी श्री जगतसिंहजी वचनातु लिखता समस्थ वसीदारान महाजन समस्थ गामेचा महाजन अप्रच ॥ म्हारा डावड़ा गुरुजी री पोशाल भणवा मेलणा जणीरी या रीत वर्ष १० रो डावडो भणे सो वर्ष १ सुदो तो पोशाले भणसी और एक वर्ष माहें डावडो भणे गुणे सावधान वेसी तो जठा पाछे डावडा ने डावड़ा रा मावित उपासरे तथा चत आवे जठे ड़ावड़ा ने भणावसी जणी बावत गुरुजो खेंचल करे नहीं ने वरस १ सुदी महाजन पण डावडा ने ओठे मेलवा पावे नहीं ने अठा पेली उपासरे डावड़ा भणे जे तो उपासरे ही भणे, अणी पछे डावडा ने भणावा सारु पोशाले मेलसी सो लिख्या परमाणे भणावसी प्रतदुवे सा० धना सं० १८३३ रा आसोज विद ७।

सांप डोडिया राजपूत के ठिकाणा सरदारगढ़ लावा ।

सिधश्री महाराजधिराज ठाकुर श्री सरदारसिंहजी वचनायतु गुरुजी रुपा है सरदारगढ़ माहे मरजाद करे दीदी अणी परवाणे दीधा जासी । विगत महाजन री डावड़ी परणे जणी रो रुपयो ॥) आवो तोरण रे माथे देवासी डावड़ो परणे जणी रो नालेर एक देवासी और लोग रे आवी चंवरी परणावा बामण जासी सो आधा गुरुजी ने देवो, महाजन रे जमणार, जवारा ओसर मोसर माहें गुरुजी जावसी और बाजार री खुणची भोडो वके जीरां संवारथु लेवासी नाम लगन तथा डावड़े गुरु रुपजी रे भणसी और भणावे तो ओलंबो पावसी नालेर आवे जणी रे नालेर देवासी आड़ा लोगा रे ओसर मोसर हुए जणी रो भातो पावसी अणी मुरजाद परमाणे चाल्या जासी मरजाद उथापसी सो ओलूम्बो पावसी गाम री थाणा पत रा टुकड़ १६ देवासी ढोल वाजसी जठे टुकड़ १६ देसी भात माहे जीमण जीमणी हुक्म श्रीमुख लखतु शाह धना मंडोवरा श्री हजूर रा हुक्म थी लिख्यो लेण लेणो दूणेठो पावसी सं० १८१६ काती सुद ३

ओसवाल (कँवला) गच्छ पोशाल आमेट जोधपुर को परवानो

श्री परमेश्वरजी (महोर) सही

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री अजितसिंहजी महाराज कुंवार श्री अभेसिंहजी आदेशात् वचनायतु अप्र ॥ मथेन गणपत गांव आमेट रहे सो श्री महाराज हजूर राठोड़ा री वंशावली वाची श्री महाराज प्रसन्न हुआ विदारा घोड़ा रा रुपया ५०१) पान

सो एक रोकड़ दुशालो एक थुरमा रो मया कीदो अठा पाछे मथेन गनपत रो बेटो पोतो श्री महाराज हजूर के आवे वंशावली सुणावे वर्ष तीसरे इतरो पावसी रुपया २०१) रोकड़ दुसालो एक थुरमा रो या तीसरो. कोठार थी पावसी श्री महाराज री विदा . पावे जतरे भाता दरबार थी पावसी रुपियो ॥) अरथ दिन परत हथ खरच रो पावसी समस्थ राठोड़ वंशी इणारी घणी सेवा कीज्यो राठोड वंशी होवे इणा थी ना मुकर होवे तिणने लानती हैं प्रत दुवे जनि ज्ञान विजय सं० १७६७ रा पोष सुद ७ मु० देवीजर ।

मेदपाटेश्वरों का ताम्बा पत्र

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी आदेशात् १ अपर ग्राम आमेट माहे तथा पारवती रे गाम म्हे महात्मा मानसिंह रे श्री दरबार थी तथा जागीर थी घर ग्राम पाया है सो श्री हजूर थी उदक आघाट शिवार्पण करे मया का धोती बावत अठा पछे जागीरदार तथा खालसे कामदार चोलण करवा पावे नहीं चोलण करेगा सो श्री दरबार थी ओलुम्बो पावसी श्लोक मामूली परवानगी भट देवराम सं० १७८४ काती सुद १३ सोमे

दूसरा फिर ताम्बा-पत्र

महाराजाधिराज महाराणा श्री जवानसिंहजी आदेशात् महात्मा निहालचंद गच्छ ओसवाला कम्य गाम जूणदो परगणे भरखरेतणी माहे धरती बीघा २० बीस रो उदक महाराणा संग्रामसिंहजी री सही रो तावापत्र हो सो इं गाम माहे जातो रयो सो अवार नरथार

करे ।पाछो नवो ताम्बापत्र करे लागत विलगत रुख वरख कूडा निवाण सुदी उदक आघाट श्री रामार्पण कर दीदो है सो चलु खाता पीता वेगा ज्या ·थु थारी खाया पीया जाजे राज में लागत लागती वेगा जो लेवाइगा सवाई खेंचल वेगा नही जूनी मटे नही नवी 'वे नहीं यो पुण्य श्रीजी रो है जमी री विगत पीवल १० वेहत जमे बीघा २० श्लोक मामूली प्रत दुवे महता उमेदसिंहजी लिखतां पंचोली सूरतसिंह नाथू रामोत सं० १८१३ श्रावण सुद ३ सोमे ।

रावतजी आमेट का राज गांव जीरण में भी था— उसवक्त की सनद.—

सिध श्री महारावतजी श्री पृथ्वीसिंहजी वचनातु जीरणगढ़ माहें गुरुजी मानसिंहजी री पोशाल बंधावी सो श्री रावतजी अतरी मरजाद कर दीधी तीरी विगत सं० १७८७ वर्षे चेत सुद ७ प्रतदुवे आचारज कोजूरामजा कोठारी थानसिंह विगत पीवल धरती बीघा १० कमठाणो दरबार थी करा देवासी वर्षफल रा रुपया ५) वरस एक प्रत सीयालु बीघा २० आघाट हुक्म छे आठम री पूजा रो १) रुपयो पावसी, कुँवरजी रा नाम रो १) रुपयो वेला लेवाई रो २) रुपया राखी री दक्षिणा पावे बाइ रा विवाह रा जान प्रत ५०) पावसी गाम आमेट में जूनी रीत थी सो सारी भरे पावसी ११) नालेर जेलाता भाई बंधा माहे लखणा रो हुक्म छे सही पंच महाजना रो रुपयो १) कुंवर भणाता रु० ५) गुल ऽ५ सेर गेंहु मण १।) काप १ खास दस्तखता गुरुजी रा अतरा नेग साबत छे महारा वंश रो सपूत वेसी सो सवाई मरजाद चलावसी कपूत वेसी सो मेटसी फकत् ।

अब तीसरा वर्ण वैश्यः-

हालॉ के पूर्वाचार्यों ने बहुधा क्षत्रियों को प्रतिबोधित कर मद्य मासादि हिंसक कर्म छुडा कर महाजन पद पर पहुँचाये अर्थात् जैनी बनाये जो जैन क्षत्री हैं लेकिन समय के प्रभाव से इन लोगों ने कुलगुरु याने (गृहस्थ गुरुओं) से सम्पर्क कम कर दिया। कम क्या यों कहना चाहिए कि बिल्कुल उन लोगों के उपकारों व महत्व को भूल कर उनसे छेटी पड गये। सिर्फ उनका सम्मेलन जानता है तो पूर्व पुरुषों की वंशावली से बल्कि आजकल के नव-शिक्षित युवाओं को तो यह भी बुरा मालूम होने लग गया है। इसी कारण अनेक कुवाच्य पदों से भूषित जाहिरा करने लग गये है। खैर गुरुओं का तो भविष्य होगा सो होगा लेकिन आप लोग जो क्षत्री होते हुए भी तीसरे वर्ण वैश्यों में गिने जाकर कायर व तुच्छता से जनता की नजरों मे गुजर रहे हैं, आप लोगो को यह भी अनुभव नही है कि कुलगुरु (गृहस्थ गुरुओं) को आज लों भी अन्य मति कैसी सन्मानित दृष्टि से पूज्यपाद गिनते हैं। पहिले राम कृष्णादि समय में तो वशिष्ठादि गृहस्थ गुरुओं का वे राजन्य कैसा सन्मान व सत्कार करते थे जिसका वृतान्त रामायणादि धर्म-ग्रन्थों से व जैन सूत्र सिद्धान्तों से पूर्ण तौर प्रकाशित होता है। कितनेक महाशय यह सी शङ्का करते हैं कि "महात्मा तो निर्ग्रन्थों का पद है" खैर ! मैं यहाँ ज्यादा समय इस प्रश्न के लिये लेना न चाह कर सिर्फ इतना ही

कहूंगा कि "गोस्वामि" शब्द में देखिये कि दण्डी भी होते हैं और गृहस्थ भी। जैसा कि वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य भी गोस्वामि कहे जाते हैं। अब मैं इस प्रसङ्ग को यहाँ ही छोड कर लिखता हूं कि यह वर्ण तो खास करके हमारे ही पूर्वाचार्यों का बनाया हुआ है सो जगत्प्रसिद्ध है इसमें कोई शङ्का नहीं कि मैं ज्यादा प्रमाण दूं। जैन समाज तो इस प्राचीन सनातन महत्वशाली जाति का सन्मान करे उसमें तो आश्चर्य ही क्या है! लेकिन वैष्णव सम्प्रदायक महा मान्यवर आचार्य काकरोली गोस्वामीजी महाराज के गोस्वामी श्री सौन्दर्यवती भाभीजी महाराज ने गोस्वामीजी महाराज बड़े बावा श्री बृजभूषणलालजी के लालन प्रकट हुए उस मंगलमय समय पर श्री ठाकुरजी महाराज को विट्ठल-बाग में पधरवा कर महोच्छव किया कार्तिक शुक्ला ७ से लगा कर मार्गशीर्ष ६ सं० १६८४ में छप्पन भोग किया उस उत्सव पर इस व्यक्ति पर भी कृपा कर पत्र बक्सा उसमें मान्य बताया "परम वैष्णवेषु श्री २ बावजी श्री बक्तावरलालजी महात्मा करके लिखा यह मेरे महद् भाग्य का फल प्राप्त करने का लाभ मिला।" चौथा वर्ण जो शूद्रादि है उसके लिये प्रमाण बताने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि जब तीन उच्च वर्णों के गुरु होना प्रमाणित है इनके गुरु मानने में शङ्का ही कौनसी रही?

वर्तमान में भी ब्राह्मणों के साथ ब्रह्म-भोज में जीमे उसकी याद्दाश्तः-

संवत् १९८७ का ज्येष्ट कृष्णा ११ रात्रि में श्रीमान् महोदय महाराजाधिराज महाराणाजी श्री सर फतहसिंहजी का स्वर्गवास हुआ। उत्तर क्रिया में ब्रह्मभोज हुआ समग्र ब्राह्मण करीब दो लक्ष के जीमा कर नाम प्रति दो दो रुपया स्वरूपशाही सिक्के के दक्षिणा में दिये उस मोके पर इस जाति को भी निमंत्रण कमेटी प्रबंधक की ओर से दिया जिसके जवाब में कहलाया गया के त्रयोदशा पहले हम लोग यह अन्न ग्रहण नहीं कर सकते। ब्रह्मभोज के सिवाय उदयपुर नगर की समस्त प्रजाजनों को हिन्दू, मुसलमान व वोहरा आदि को जीमाये गये उनमें महाजन लोगों के लिये पंचायती नोहरे में रसोई कराई गई उस वक्त पंचान की तरफ से व निज कमेटी की ओर से फिर निमन्त्रण हुआ। हालाके उस जीमन में ओसवालादि सारा बारह जाति के लिये भोजन बनाया गया था। और उसमें यतिवर्गों को पहोरणे कराये और श्री शीतलनाथजी का उपाश्रय के यतिवर्य को पञ्चान की तरफ से पामड़ी मामूली दुशालो ओढ़ायो और यतिवर्गों को पछेवड़ियें ओढाई गई। सेवग जाति भी जीमाई गई लेकिन इस जाति ने यह कहलाया के हम इसतरह मजमे में जीमना मुनासिब नहीं समझते हैं अगर सरकार को जीमाना मंजूर है तो हमारी जाति मर्यादानुसार अलग रसोई बनवाई जाकर वहाँ पर श्री भट्टारकजी महाराज को मय लवाजमा के पधराये जावे और उनको हस्व दस्तूर दुशाला ओढाया जावे सरकारी तोर से और हम लोगों को नाम प्रति वोही दक्षिणा २) दिलाई जावे। इस पर कमेटी की तरफ से बहोत कुछ कहन की गई लेकिन मर्यादा

उल्लंघन करसा मुनासिब न समझा गया । आखिरकार फिर छः मासिक के मौके पर याने मृगसिर विद ४ सोमवार वि० सं० १६८७ उक्त सर्व बातें स्वीकार होकर जीमाना तजवीज हुआ । जिसका प्रबन्ध कराने के लिये मोतीलालजी बोहरा दारोगा हिसाब दफ्तर ने दुआ की चिट्ठी कोठारी बलवन्तसिंहजी के नाम लिख कर भेजी उसके जरिए सर्व इन्तजाम हुआ । जीमण बनवाने के इन्तजाम पर भण्डारी देवराजजी व पारख हिम्मतरामजी व एक अहलकार हिसाब दफ्तर मुकर्रिर हुए इन्होंके सामलात से रसोई केशरिया लड्डू मीतीचूर के व झकोलमा पुड़ियें, साग दाल चणा की, अमचूर रायता, भुजिया को शाक जीतमल कन्दोई बणायो और सर्व सामग्री भट्टारकजी की पौशाल पर पहुँचाई । वहाँ पर हम लोगों को जीमाए गए । जीमने में उपस्थिति इस प्रकार थी भट्टारकजी महाराज मय लवाजमा का आदमी व ठिकाणा का वकील उदयलालजी सिखवाल, पंडित वक्तावरलालजी सकुटुम्ब के सिवाय १ नौकर व १ डावडो, पं० नाहरमलजी सकुटुम्ब व पं० रंगलालजी कमलकरसा बड़ीसादड़ी व पं० हीरालालजी सकुटुम्ब भदेसर हाल उदयपुर और पं० रतनलालजी कमलकरसा सा० मोजा नाही सकुटुम्ब जो यहाँ हाजिर थे जीमाए गये और भट्टारकजी महाराज के लिए दुशालो सरकार सुं आयो वो दारोगा षट्दर्शन के भट्टजी रामशङ्करजी के पुत्र बसन्तीलालजी लाए थे अपने हाथ से ओढाया फिर सर्व जाति को दो २ रुपया सरूपशाही दक्षिणा भण्डारी देवराजजी के हाथ से दिए गये ।

इसके सिवाय हमारी कौम को ब्राह्मणों के मुआफिक जीमण व दक्षिणा देने के और रियासता मे भी रिवाज होनेके विषय में

राजकीय परवाना राज बीकानेर का

महोर

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजांजी श्री अनूपसिंहजो वचनात् श्री महाराजाजाजी मया कर मत्थेन सोम नथु नु कर दीवो. मु सदा सर्वदा पाया जावे १. ब्राहाण भोज होवे ते माहेवारा ४ दखणा सुधा पासी, यो ही सीरकार माहेवारा दिखणा आश्रित ब्राह्मण माहे देवे, अथवा सरवाले घरदीठ मुंडके दोंठ जे भोंते बटे ते भात पासी ।

१) रावले डोडी मे वार तीवार जाये परणिये सरब जाकर भागवंटे में आवे छे तें भाते एही पावे । आखातीज, दीवाली, होली सरब लोग पावे छे ते भाते एही पावे इही भाति पाया जासी सं० १७४० वैशाख सुद ३ मु० आदुली दुवे श्री मुखे ।

बीकानेर कॅवलागच्छ के महात्मा अबभी ब्रह्मभोज में शरीक होकर दक्षिणा लेते हैं ।

मेदपाट देश उदयपुर नगर में सरूपसागर नामक तालाब के ओटे की तरफ एक जिनमन्दिर में सर्व धातुमय प्रतिमा पर लेख—

संवत् १४८२ वर्षे फाल्गुण सुद ३ रवौ श्री खयरज गोत्रे हूमड़ नीयंव्य खेता भार्या वालहु सुत रामा भा० आखीसुत हापा गागा भा० सहितेन आत्मेश्रय श्री वासुपूज्य बिम्ब कारितं प्रतिष्ठित कुलगुरु श्री सर्वाणंदसूरि नाणक्य गच्छे भाव गुरु श्री जयशेखरसूरिभिः खरतरगच्छे श्री रस्तु ॥

भारद्वाज गोत्रीय नाणावाल अवटंकीय गृहस्थ कुलगुरु महात्मा पोशाल देलवाड़ा (मेवाड़) के सनदों का हाल—

राजराणा राघवदेवजी के परवाने की नकल:-

श्री आदमाताजी श्री रणछोड़रायजी

सीधश्री लखावतां महाराणा श्री राघवदेवजी वचनातु अप्रंच गुरुजी नरपतजी ने धरती बीघा ११ अग्यारा बीघा ८ तो सियोल मे धरखेती सारु बीघा ३ माणसोल में दीवी आगाट करे पटो करे दीवो अणी सीनाय राज थी मेर मुरजाद फेर करे दीवी लगन लखणो, मोरथ व नाम देणो, जनमपत्री लोखणो, श्री राजरा कुंवरजी थी ले ने समस्थ डावडा गामरा पोशाले भणेगा दुजो कोइ करवा पावेगा नही अतरी मरजाद माजना थी तथा कामदारा थी करे

दीधी रोठी वेरावणी, पजुसण मे पछेवड़ी व्याव में नालेर ४ देणा समेला रो, वरणा रो, थम्भ पुजा रो, काज करावर में भात में लेण पेण दुणो परो देणो अतरी मरजाद करे ने उदेपुर थी आण ने देलवाड़े पोशाल वाथ दीधी अणी पोशाल रो आवरु मारा गढ ज्युं है असल झाला रो मुंतरो वेगा ने मारा पग रो वेगा ज्यो अणारा वेटा रा वेटा री मरजाद राखेगा अणारी मरजाद लोपेगा जीने श्री रणछोड़रायजी पुगेगा दान दखणा रावज्ञा परमाणे अणाने देवा-यगा यो मारो गुरुद्वारो है, गादी सामा वैठ के वैठेगा अरज मुंडामुंडी करेगा सदा सुभचिन्तक है। आप दत्त पर दत्त जे लोप ति वसुंधरा जे नरा नरकं जायति यावत चन्द्र दीवाकरा· आपदत्तं परदत्तं जे पालंति वसुंधरा जे नरा वेकुंठ जायति पावत चंद्र दीवा-करा·। दुवे स्हा रामा माडावत श्री हजुर हुकम कीदो जणी परनाणे लख्यो समत १६४२ माघ सुदी १५ सोमे।

राजराणा जेतजी के ताम्बापत्र की नकल-

श्री रणछोड़रायजी

(सही का अखर)

सीधश्री लखावता महाराणाजी श्री जेतजी वचनातु अप्रंच गुरुजी कर्मचन्दजी ने धरती वीगा ११ वीगा ८ तो सीयाले में घर खेती सारु वीगा ३ गाम भाणसोल में दीधी आगाट करे ताम्बा पत्र करे दीधी जने वीगा ११ अग्यारा श्री राजथी अतरी मेर मर-जाद करे दीधी, लगन सुमहोरत नाम देणो जन्मपत्री लखणी श्री राजकंवरजी थी ले ने समस्थ डामडा गाम रा पोशाले भणेगा दूजो

काइ करवा पावे नही अतरी मरजाद म्हाजना थी तथा कामदारा थी करे दीदी रोठी वेरावणी, पजूसणा री पक्रेवडी व्याव में ४ नालेर देणा समेलो वरण, ढोल रो थम्भ पूजा री, काज करयत्वर भात में लेण पेण दूणो परो देणो अतरी मुरजाद करेने महाराणा श्री राघ-वदेवजी भट्टारकजी श्री महेशजी तीरायी गुरजी नरपतजी ने आणेने देलवाड़े पोशाल बांधे दीधी अणी पोशाल रो आवरु म्हारा गढ ज्यू है अणाहे म्हारा हाथ री लही ज्यु जाणेगा असल झाला रा वंश रो वेगा ने म्हारा पग रो वेगा जो अणा रा चेला री मरजाद राखेगा यांरी मरजाद लोपेगा जीने श्री रणछोड़रायजी पुगेगा दान दखणा रावला परमाणे अणा ने देवायगा यो म्हारो गुरुदुवारो है अणारे आगे परवानो थो सो चुवाणी थी भींज गयो सो राज रे नजर कीदो सो ताम्बा पत्र करे दीदो उथापेगा जीने गदेडे गाल है गादी सामा बेठ के बैठेगा अणारी अरज मुंडासुंडी करेगा सदा सुभचिन्तक है । श्लोक (ऊपर माफक लिखा गया) दुवे पंचोली गोकल दास श्री हजूर हूकम कीदो जणी परमाणे लीख्यो वेसाख सुद १५ संमत १७३५ वर्षे ।

एकलिंगजी के गुँसाईजी के ताम्बापत्र की नकलः-

श्री एकलिंगजी

सही

सीधश्री लीखावता गुंसाइजी श्री प्रगासानन्दजी वचनातु ग्राम प्रगासपुरा मे रेंठ चमारबा म्हे धरती वीगा ४ चार घर खेती सारु गुरुजी कर्मचन्दजी ने मया हुइ आघाट करी ताम्बा पत्र करे दीधा

को टाट उथापेगा नहीं अणी जायगा री चोलण कोइ हजूरी पासवान कामदार करेगा जणाने श्री एकलिंगजी पुगेगा अणी गादी बैठेगा हमारा चेला चाटा री मरज्याद पाल्या जासी आपदन्तं परदन्तं वाज्या हरनी वसुंधरा जे नरा नरकं यांती थवत चन्द्र दीवाकरा· नोरी बावा नाथ नंगरी मुथा दीवी दुवे सारवला टंकार वेसाख सुद १५ सोमे संवत १८६२ रा। सावत

दूसरे [illegible] की नकल:-

श्री एकलिंगजी

गदी

सीधश्री लांबावता गुंसाइजी श्री प्रकाशानन्दजी वचनातु गाम नगासपुरा रा रेठ चमारवा माहे बीगा २ दोय रेवारी ठाकुरसी [illegible]रे ज्या गुरजी टूंगार्जी हैं मथा हुड आघाट करे ताम्बा पत्र करे दीवी नो कोइ उथापेगा नहीं श्लोक सामुन्नी वि० सं० १८[illegible]८ म्हा सुद [illegible] रे सावत जमी वर खेती सारु दीधी ।

मेवाड़ाधीश महाराणा श्री भीमसिंहजी के परवाने की नकल:-

सही भालो

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंहजी आदेसातु महात्मा तिलोकचन्द देवीचन्द कस्य अप्रच थारे

तांबापत्र है श्रीजी री सेवा करे श्री गुसाइंजी वड़ा रे धरती वीगा ४ प्रगासपुरा रेठ चमारवा माहे संवत् १७६१ रा वेसाख सुदी. रो दीदो दत्त तथा धरती वीगा २ दोय फेर चमारवा में श्री गुसाइंजी उणा केड़े हुआ जणा दीधी संवत् १८०८ साह सुद १५ रो दत्त जमे वीगा ६ छ ऊणीरा तावा पत्र २ श्री हजूर नजर हुआ सो या धरती थारे थारी साबत है सो अठा पाछे श्री जी री आडां थी तथा गुसाइंजी री आड़ी थी चोलण करवा पावे नहीं थें श्री दरवार रा शुभचीन्तक हो प्रवानगी भट ददेसर १० १८५६ वर्षे काति वद ८ शुक्रे ।

चमारवाहे की जमीन के बारे में बाईजीराज चन्द्रकुंवरजी ने देलवाड़े राज्य के नाम अपनी तरफ से भी रुक्का लिख कर मेद-पाटेश्वर महाराणा श्री भीमसिंहजी के दिये हुवे ताम्बा पत्र की ताईद की—

रुक्के की नकलः-

म्हारी आशीस वंचावसी

॥ सीधश्री देलवाड़ा सुथाने सर्व ओपमा राज श्री कल्याण सींघजी जोग श्री उदयपुर थी श्री बाई चन्द्रकुंवरजी लिखावता आशीष वांचसी अप्रंच गाम प्रकासपुरा म्हे गुरजी तलोकचन्द देवजी रे धरती वीगा ६ छे रेठ चमारवा म्हे तावा पत्र श्री बड़ा गुसांईजी री दीधी थकी है सो अबार गुसाई श्री रा कामदारा अटकाइ है सो अठाथी पण गुसाइंजी रे नामे लखी मोकल्यो है ने आपही केवाय हासल गुरुजी रे खोले घलायेदेगा श्री भाइजी पण पण परवानो लीखाय देवायो है संवत् १८५४ रा काती सुद ७

सरदारगढ के सगतावत राज महारावत श्री संग्रामसिंहजी के परवाने की नकलः—

सीधश्री महारावत जी श्री संगरामसिंगजी वचनातु गुरुजी रतन जी ने देलवाडा सु आणा ने लावा म्हे पोसाल वंधात्री पोसालरी सुरगाढ पुन्य अरथ करे दीदी सो अणी परवाणे राज सु लेर गाम सुदा रुप्या २) श्री रावला सु पजुसणा री पछेवडी रा लगन समो-स्थ नाम देणो जन्मपत्री लगणी रावला कुंवरजी सुलेर गाव रा डावडा गारा सींगाल भगोगा म्हाजना रे विवाह माडो होसी जणा रै नासेला रु० ॥) आदो रोकड नालेर १ देणो । काज करयावर आतरो तुरं। देणो लेणो नालेर दुणो दो देवासी रु० २) पजुसणा री पछेवडी रा गाम रा पचारा गाम मे डावडी परणसी म्हाजना सु लेने हर गामरा करसा कमवा समस्थ गामेटा री चंवरी रा रु० ॥) आदो देवानो अणी परवाणे करे देवाणी सो रतनजी रा माड बेटा पोता सुदा पाल्या जावसी रतनजी रा पगरो वेसी वो लेसी उरापे जणी ने श्री जी पूगसी दुवे नंदलाल मुंदडा छे १८३७ जेठ सुद १५

राजराणा श्री कल्याणसिंहजी के ताम्रपत्र की नकलः-

॥ श्रीआदमाताजी श्रीरणछोडरायजी

सावत

सीधश्री महाराणा श्री कल्याणजी वचनातु गुरुजी रतनजी ने गैंठ गजेला पछोर टापरा अनोपरामजी री पागती वीगा ८॥ साडा आठ आसरे मया हुओ आगाट तांबा पत्र कर देवाणो सो या जायगा अणा रा बेटा पोता वश रो आगाट खासी कोई कामदार हजुरयो

पासवानो चोलण करवा पावे नहीं श्री हजूर घणा रज बंद वेर मया कीदी जायगा घर खडाउ बगसी (श्लोक मामूली) प्रतदुवे भाला सुलतानसींग द. सहा लालचंद देपुरा का श्री हजूर सु अस्यो हुकम हुवो सो जो कोई अणी जायगा सु खेचल करसी जीने श्री रणछोडरायजी पुगसी सं० १८७० म्हा विद ११ सोमे ।

राजराणा श्री कल्याणसिंहजी के रुक्के की नकल:-

॥ श्रीआदमाताजी ॥ ॥ श्रीरणछोड़रायजी ॥

साबत

सीधश्री महाराणा श्री कल्याणजी वचनातु जमादार सोमवार जी जोग अप्रंच पालव गुरजी रतनजी ने दीदी है सो हासल अणा ने लेवा दीज्यो अणी बाबत वोलो मती था जायगा ठेट बामणी है सीयाला री साक थारी मरजी राखे हासल परो देवायो अबे इ. मे नीपज्ये वे सो रतनजी ने परो देवाडजो वि० सं० १८७५ रा वेसाक वीद ६ रवेउ ।

संवत् १८८३ में मेवाडाधीश ने देलवाडा के पञ्चो के नाम रतनजी के सम्बन्ध में नानी मुंदड़ी का रुक्का बख्शा—

रुक्के की नकल:-

स्वस्ती श्री हजूर रो हुकम देलवाड़ा रा समस्थ पंच म्हाजना है अप्रंच गुरजी रतनजी रे पजुसणा री बैठक री मरजाद रोटी पछेवड़ी री मरजाद जूनी ठेठ हे तांबापत्र म्हे हे जणी माफक नवाया जाजो दीदा जाजो नवी करो मती जुनी मेटो मती तांबा

पत्र परमाणे नवाया जाजो दुवे स्हा सवलाल संवत् १८८२ भादवा सुद १ रवेउ ।

वडीसादड़ी नरेश के ताम्बापत्र की नकल,–

श्री राज वचनातु गुरजी रतनजी परथी रांजी है जाएगा घर मुदी वगस्या माराज पदमसिगजी वाली वचे नाथ उपरे पोल मेडी नीचे आदि अणाने वगसी डूगरवाल चेना रा पडोस री आ ने वगसी पेली सोगरा रा पाडोस री नइ आदी वगसी तावापत्र करे दीदी सो रेसी यायी उथपवा पावे नहीं नाथ मेली तो यारे नाथ गेली रावली जायगा आघाट तांवापत्र करे 'दीदी सो रतनजी रा पग रो वेसी जोई रेसी (श्लोक मामूली) आगमचे नंदवाणा मयाराम रे श्री हजूर रा हुकम थीं सं० १८८६ चेत सुद ११ ।

दूसरे ताम्बापत्र की नकल–

' श्री आदमाताजी श्रीरामजी श्रीपीतावरजी

सही

॥ स्वस्ती श्री महाराजाधीराज महाराणा श्री कीरतसींघजी वचनातु गुरजी रतनजी हे कुडो १ तो धावाइ वारो कुडो १ पीतरो फौजमें कुडा २ दोय करे दीधा जायगा वीगा ११ रे आसरे करे दीवो सो ई रो हासल भोग वेसी सो थें खाया जाजो खुणाचीरो कुडछो नग १ करे दीधो सो ताम्वापतर करे दीदो (श्लोक मामूली)

पाले जीरो पुन हे आगाट करे दीदो कोइ कामेती अणी की चोलणा करे तो श्री आदमाताजी की आण छे आगमचे महेता तलोकचन्द री, दसगत बगसी सुरजमल रा श्री हजुर का हुकम सु लीख्यो छे स० १८६२ भादवा वीद ० सोमे ।

सं० १८६४ में रतनजी के छोटे पुत्र वर्धभानजी को उदयपुर बड़ी पोशाल में भट्टारकजी की गादी बिठाया जिस विषय मे महाराजाधिराज महाराणा श्री जवानसिंहजी ने रुक्का बक्षाया—

रुक्के की नकल—

श्री एकलिंगजी श्रीरामजी श्रीनाथजी

सावत की छाप

॥ स्वस्ति श्री हजूर रो हुकम मातमा रतना है अप्रंच वड़ी पोसाल रा भट्टारक उदेचंद वेचाल सु लुगाई ले ने परो गयो जठा पछे मातसो लालो वना पामतो पोसाल मे मालक वे बेठो ने आजीवका खाया गयो जणी तावे अबार सेर रा पंचारी अरज सु लाला ने माफ करने तने पात्र जाणने पोसाल मे मेल्यो ने थारा छोटा वेटा वरधभान ने भटारक की जायगा वेठाय पछेवड़ी ओढाइ है सो कुसी थी पोसाल म्हे रीजे अणी पोसाल री लारे सदेप री जमी जायगा खावण पावण तथा सेर में लागत ठेठ री हाल चलु वेगा सो तने सावत कर देवाणो है भटारकजी री लारे सो खाया

पाया जाजे अणी पोसाल री सदीव री राह मरजाद है जी मुजब पल्या जायगा ओर अणी पोसाल री लारे सन्द कवज सराजाम वणी तीरे वेगा सो तने देवाड जायगा दुवे म्हेता मोखो संवत १८६४ वर्षे काती सुद ५ सुकरे ।

शिवराजजी को संवत् १६२० में राजराणा फतहसिंहजी ने देलवाडे ने फाडीघाटी के पास कमली के गुडा के रास्ते मे २५ बीघा जमीन (मकोडा मगरी) को खादरा सहित बक्षी ।

पूर्व परम्परा के अनुसार राजराणा फतहसिंहजी के कुंअरजी श्री जालमसिंहजी विजयसिंहजी आदि पढने पोशाले पधारे और पूर्व नियमानुसार शारदा माताजी के मुहर १ कची, ५) रु० रोकडे, एक श्रीफल, नैवेद्य वागा पोशाक पट्टी आदि भेंट किये तथा गुरुजी के मुहर १ पकी रु० ५) श्रीफल १ प्रसाद ।) गुड भेंट किया । इसके अलावा रविवार के दिन पूजा व भेंट ।), श्रीफल १ गेहूँ ऽ५ सेर गुड ऽ२॥ सेर, आच्छाद (कपड़ा) २॥ हाथ, घृत ऽ॥=) दस आने भर व सिन्दूर मारीपन्ना ।

गुरुजी को शिवराजजी की पढाई के बाद विदा के समय सरोपाव सारे कुटुम्ब को व रु० १७५) रोकड का रुक्का बक्षा—

रुक्के की नकल:-

सीधश्री महाराणा श्री फतहसिंहजी वचनातु गुरा शिवराजजी जोग अप्रंच चरण जालमसींगजी चरण वीजेसींगजी वाइ राजकंवरजी

छाइ प्रतापकंवरजी थारे पोसाले भएया जीरी वदारा सरोपाव तो भंडार सु अर रोकड़ रु० १७५) अखरे पुणा दोयसे रुप्या री वरात करे देवाणी सो देवायगा श्री हजूर का हूकम सु द. महा चौथमल रा सं० १६४४ का मगसर सुद ८ इ वरात रो डोरो करा दीनो जावेगा वरात रुप्या पुणा दोसे री है ।

ऊपर पुर ग्राम के पंडित अग्नि-वैश्यायन गौत्र कनरसा अवटक के लिए लिखा गया कि उन्होंने अपनी सनदें नहीं भेजी जिससे दर्ज नहीं करी हाल में पण्डित रतनलालजी ने चन्द नकलें भेजी वो अव दर्ज करता हूँ ।

नकल सनद जयपुर महाराज मानसिंहजी के नाम की:-

(ऊपर फारसी में छाप)

श्री गोपालजी

सिद्ध श्री महाराज श्री मानसीघजी वचनातु मुत्सदी हाल इस्तकबाल सदी दीसे अप्रंच आसुराम रेंवड़ा री परवानो नोमोहरा सफदर खा री धरती वीगा ७ सात इनाम थारे माडल में आगेथी हे सो कदीम माफिक कुल ज़मीन वाग की खावे पीवे छे सो सदा माफिक छोड दीज्यो कही वात मुजाहमत हो मती जमी मजकुर नोवाहीवोरो

आपरी फसल नफसल लीया जावे इण बात री ताकीद जाणो— हुवे श्रीमुख परवानगी राठोड करणजी खास महोर सही से १७३० चेत वीद १४ ता० २६ जीलाईज

इस माफिक फारसी मे है—

जमीन का असनाद सफदरखा जमी वीगा ७ वागरी मांडल मे खावो पीवो यो हुक्म छे ॥ रजु दफतर हीदवी ॥

माडल मेवाड के कवजे मे आई जद महाराजधिराज महाराणा जवानसिंहजी ताम्बा-पत्र कर वद्यो—

जी री नकल:-

॥ श्रीगणेशप्रसादातु ॥ श्रीरामोजयति ॥ श्री एकलिंगप्रसादातु

सही व सही शालो

महाराजधिराज महाराणा श्री जवानसींघजी आदेशातु सेवडा संमुदाग खुमाण वनरूप महारामरा कस्य गाम माडल माहे सेवडा रे वाग धरती वीगा ७ सात पीवल वो नाडी १ थारा वडाडवा सेवडा आसु हे आगे वादशाही उदक आगमचे महाराज मानसींघजी री हाथ री कवज हीव्वी तथा फारसी अवार नजर हुइ तीरो पाछो तावापत्र कर उदक आघाट श्री रामा अरपण कर देवाणो हे सो अणी जमी री नीम सीम कुडा नीवाण रुख वरख दरखती गत वर गत सरव सुदी थारा वेटा पोता खाया पीया जासी अणी जायगा थी फकीर तथा दुजोइ कोइ चोलण करवा पावेगा नहीं 'यो पुन्य श्री जी रो है ॥ स्वदत्त. परदत्त वाजे हरती वसुन्धरा' वगैरा

मासूली श्लोक। प्रतदुवे महता उमेदसींघ लीखता पंचोली सुरतसींघ नाथु रामोत संवत १८६१ फागण वीद ऽऽ शुक्रे ॥

दूसरा ताम्बापत्रः-

श्रीरामोजयती

॥श्री गणेशप्रसादातु ॥श्रीएकलिंगप्रसादातु

सही भालो व सही

नीसाण अंकुश ॥ महाराजाधीराज महाराणाजी श्री जवान सींघजी आदेशातु सेवडा संभुदास चेला खुमाण धनरुप महारामरा कस्य गाम पुर म्हे धरती वीगा ८। सवा आठ आगे महाराणा श्री वडा जगतसींघजी सेवडा आसु हे उदक दीदो जारी कवज दंगा माहे जाती रही तींरा अबार नरवार कर पाछी उदक आघाट श्रीरामा-रपण कर ताम्बापत्र कर देवाणो हे सो अवार चलु वेगा जणी जमी री नीम सीम कुडा नीवाण रुख द्रख्त लागत वलगत सरव सुदी थारा वेटा पोता खाया पाया जासी आगे राज म्हे लागत लागी वेगा तो लेवायगा सीवाय कोइ वात री नवेसर खेंचल वेगा नही यो पुन्य श्री जी रो हे। जमी री वीगत—

२॥ पीवल वीगा अढाइ तलाव री मोरी सु पीवे

५॥। राखड खेत वीगा पुणाछे नाडी सुदा

जमे वीगा सवा आठ ८। पुन्य श्री जी

मामूली श्लोक ॥ स्वदत्ता परदत्ता वाये हरन्ती वसुन्धरा षटी वर्ष सहस्त्राणी वीष्टाया जायते कमो। प्रतदुवे महता उमेदसींघ लीखता पंचोली सुरतसींघ नाथु रामोत संवत १८६१ वर्षे चेत सुद ६ सनीसर

तीसरा परवानाः-

१ श्री गणेशप्रसादात् ॥ श्रीरामोजयती ॥ श्रीएकलिंगप्रसादात्

सही व सही भालो

अकुस। स्वस्ती श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री जवानसींगजी आदेशातु संभुदास कस्य २ अपर गाम पुर रे चोतरे पईसो १ एक पुन्य अरथ दीन १ प्रत चलु कर देवाणो हे सो पाया जासी पईसो ॥- आधो दाण म्हेथी ने पईसो ऽ॥ गोतख महे थी जमे पइसो १ दीन १ प्रत पाया जासी यो पुन्य श्री जी रो हे प्रवानगी सहा एकलींगदास बोलथा संवत १८८६ रा वर्षे फागण वीद ५ खेड— अंडी कवज आज तो श्री ने पाया जायहा तीरी कवीज करे देवाणी दंगा म्हे नही देता जणी सु पाछे करदीदो ॥

पट्टा नोमोहराः—

॥ श्री ॥

(मोहमद अलादीन) खादीम खादीम

तहरीर सुवा अजमेर ता० माह तवर इलाही सन् १०८४ हीजरी बावत आमदनी सेवडा देवचंद आसाचंद जो बाद दरीयाफ्त हालात मुकदमा के तसफीया होकर मीला जमीन का परवाना सरकार शाही से मिला मोहर गवाई की करोवन पनरा—

गवाह फतेहखां गवाह जमालमहमद शयद बुलाखा खादीम दरगाह वगेरे— गुरजणिया जीला मॉडल में ५०० वीघा बादशाह

अलाउद्दीन ने हिजरी सन १०८४ में अता फर्माया नोमोहरा

(२) पटा दूसरा अतया महाराज मानसींगजी ता० २६ जीलाईज सन १०८४ हीजरी बाबत जमीन बीघा ७० मांडल में हरचंद मयाचंद गोवींददास को अता फरमाया ।

(३) पटा तीसरा महोर आलमगीर पर्वाना मनोहरदास इसरदास अतीया बमुजोब फर्माने आलीश्यान सामलात मयाचंद जमीन ता० ४ महोरम सन १४ (आगे पढ़ा नहीं गया)

(४) पटा मकान बाबत ।

(५) बनाम हरदास देवचंद अतीया नवाब साहब ता० २६ महा बाबत हासल दीलाने ।

॥ श्री गोपालजी ॥

सीधश्री महाराजजी श्री मानसींघजी वचनातु मुत्सदी हाल इस्तकबाल रादी से अप्रंच मयाचंद व हरीचंद गोवीददास रे परवानो महोर सफदरखा रो, धरती वीगा ७० सतर इस नाम इसम हरीचंद व गोवीददास रे नामे गुरजणा पास मांडल में छे सो कदीम माफिक तो कुल जमीन की पावे छे सो थें सदामंद पाइयो छे सो छोड दीज्यो कीं भांती मुजाहमत जमी मजकुर तोर वाइ हासील वीरो अपरो फसल बफसल हासल लीया जावे इण वातरी ताकीद जाणजो दुवे श्रीमुख परवानगी राठोड करणजी खासा मोहर होई तो सही सं० १७३० चेत बद १४ तोरा जीलही मु० जमीन जमें मु० असनाद सफदरखा जमी वीगा ७० मु० २० गुलजणा में बाकी की माडल में वीघा ५०

श्री वीर-प्रभु की प्रार्थनाः-

[लेखकः- पं० बख्तावरलालजी महात्मा काश्यपगोत्री]

श्री वीर-प्रभू दीजे यह वरदान,
जाति हमारी का हो उत्थान ॥ टेर ॥

पूर्व सदृश हम सब होवें, कुरीतियों को बिलकुल खोवें।
उन्नत होकर सुख से सोवें, बन उत्तम विद्वान ॥ १ ॥

आपस का लड़ना हम छोड़ें, तड़बन्दी से नाता तोड़ें।
ईर्षा द्वेष का अब सिर फोड़ें, करें नहीं अभिमान ॥ २ ॥

दुखिया को हम सुखी बनावें, शान्ति प्रेम का पाठ पढ़ावें।
मूर्खों को सद्‌मार्ग बतावें, कहे धैर्य्य की बान ॥ ३ ॥

कष्टों से कभी नहीं डरावें, कर उन्नति हम दिखलावें।
गिरे हुए को उच्च बनावें, करें तुम्हारा ध्यान ॥ ४ ॥

विद्योन्नति का श्रोत बहावें, अबलाओं को सबल बनावें।
प्रेम एक्य का बिगुल बजावें, करें जाति उत्थान ॥ ५ ॥

श्री वीर प्रभु दीजे यह वरदान।
जाति हमारी का हो उत्थान ॥

लेखक की अन्तिम अभिलाषा

पाठक वृन्द महाशयों ! आप सज्जनो को इस संक्षेप इतिहास द्वारा इस जाति के महत्व का पूर्ण परिचय हुआ होगा, लेकिन साथ ही आपको आश्चर्य युक्त यह सन्देह अवश्य उत्पन्न हुआ होगा कि ऐसी महत्वशाली जाति का अध पतन कैसे होगया ? इस संशय को मिटाने के हेतु मेरा अल्प बुद्धि में आया वो निवेदन किये देता हूं। आप सज्जनो को विदित है कि, समय परिवर्तनशील है, जो आज उन्नति के शिखर पर है अवश्य एक दिन अवनति की गोद में जा बैठता है। जैसा कि सूर्य प्रात-काल पूर्व दिशा मे उदय होकर मध्यान्ह तक अपना प्रचण्ड तेज दर्शाता है आखिर पश्चिम दिशा मे जाकर अपना तेज घोर निशा के अन्धकार में खो देता है और निशा रूपी अन्धकार का बल पाकर उल्लू (घुग्घू) आदि निशाचर अपने अपने स्वर से कोलाहल करने लगते हैं। वैसा ही यह कारण समझ लीजियेगा कि इस जाति की महत्वता की शिथिलता देख कर कईएक अनजान बन्धु नाना प्रकार की तर्कना पैदा करने लग गये हैं। इसके सिवाय एक और प्रबल कारण है कि इस जाति का जीवन विद्या रूपी प्राण था जो अर्वाचीन समय मे निकल गया उससे आर्थिक दशादि सर्व उन्नति मूल नष्ट हो कर अविद्याऽन्धकार फैल गया साथ ही इसके दो प्रबल शत्रु फूट और झूठ) विशेष उठ खडे हो गये। अब यहा यह सवाल पैदा होता है कि इस बीसवीं सदी मे सर्व प्रकार विद्या संग्रह करने का मौका है तो यह बताना दूषित न होगा कि इस जाति की आर्थिक दशा बहुत घट गई है और बिना मुद्रा के आज के समय मे विद्या प्राप्त होना दुष्कर

है । इस जाति के लिये जो जीविका है उससे सिवाय भरण-पोषण के बचत नहीं रहती उस पर भी तुरफा यह है कि इतना कष्ट होते हुवे भी, मृतक भोजन व विवाहादि में धनवानों के समान करने को दौड़ते हैं जिससे रही सही जीविका भी खोकर जीवन कष्टमय कर देते हैं। इस कष्ट को पराजित करने का मेरी बुद्धि में यह उपाय आता है कि मृतक भोजन और कन्या विक्रय व दूसरी फिजूल खर्चिएँ आणे-टाणे की कम करके यथाशक्ति जो इन रश्मियात में खर्च होता हो उस रकम को एकदम एक इकट्ठी कर विद्योपार्जन के फंड में जमा करे और हर तरह इस फण्ड को बढ़ाने की तरफ पूर्ण ध्यान रक्खे तो, ईश्वर कृपा से यह सङ्कट भाग जायगा । लेकिन इसके तोड़ने में एक झूठा भय यह रखते हैं कि हमारा मान्य कम हो जायगा । इस शङ्का को मिटाने के लिये लेखक अपने पुत्रों को प्रेरणा करता है कि मेरा शरीरान्त होने पर ठाट-पाट का भोजन न करके सामान्य ब्रह्म-भोजन कर देवें, और जाति के सज्जन मेरे निवेदन को मंजूर कर लें तो विशेष खर्च की रकम जाति उन्नति के फंड में अर्पण कर जाति सेवा का लाभ उठावें। ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

॥ श्रीएकलिंगजी ॥ श्रीरामजी

नकल रुक्का आदी ओल अजतरफ श्रीमान् मान्यवर पंडितजी यमुनालालजी साहब दशोरा सेशन जज व सुपरवाइजर मर्दुमशुमारी बी० ए० एल० एल० बी० उदयपुर मेवाड़--

(बनाम लेखक) ता० १३-१२-४४ ई०

श्रीयुत काकासाहब की सेवा में,

गजटीयर के सिलसिले में आपके पास से जो किताब आई वह वापस भेज रहा हूं। किताब वाकेही अच्छी लिखी हुई है लेकिन गजटियर में तो इसके हालात बहुत ज्यादा है गजटियर में तो इसके हालात बहुत संक्षेप में चाहिये मेरा टाइम देखते हुवे मैं इसको अपनी जरूरत के माफिक संक्षेप में कर सकूं यह बहुत मुश्किल मालूम होता है सो और आप इसको संक्षेप में दो या तीन पेज टाइप किये हुए फुलस्केप साइज में भिजवा सकें तो बडी मेहरबानी होगी। फकत

(यमुनालालजी के हस्ताक्षर)

बापूकी झाँकियाँ

लेखक

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

बापूकी झाँकियाँ

लेखक

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

प्रसंग

सन् १९४२ के आन्दोलनके दिनोंमें जब हम सबके सब जेलमें भेजे गये, तो वहाँ भी हमें अेक जगह नहीं रखा गया। मैंने अुन दिनों कुल मिलाकर छह जेलें देखीं। सरकारने सोचा कि प्रतिष्ठित लोगोंको अुन्हींके प्रान्तमें रखना खतरनाक है। अिसलिअे मध्य प्रान्तके प्रमुख व्यक्तियोंको अुसने सुदूर मद्रास प्रान्तके वेल्लोर जेलमे रखा था। वहीं मेरा युक्त प्रांतके कांग्रेसी नेताओंसे परिचय हुआ। सरकारको जब कुछ होश आया और परिस्थिति काबूमे आ गयी, तब हम लोगोंको वेल्लोरसे निकालकर सिवनी जेलमे भेजा गया। वहाँ लेखन, वाचन, और चर्चामे हमारे दिन अच्छी तरह कटते थे। भोजनके बाद जबलपुरवाले ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी चौहान, अमरावतीके डॉ० शिवाजीराव पटवर्धन, मैं और दूसरे चंद सज्जन अेक बड़े कमरेमें साथ बैठकर अिधर अुधरकी बातें करते रहते थे। बरामदेकी अपेक्षा वहाँ पर गरमी कुछ कम थी।

यह स्वाभाविक ही था कि लोग मुझे पूज्य गांधीजीके बारेमे पूछते। मैं भी अपनी गपशपमे आश्रमजीवनका कोअी न कोअी किस्सा कह सुनाता था। अेक दिन ठाकुर लक्ष्मणसिंहजीने कहा — 'आपके पास बापूके बारेमे जब अितने किस्से हैं, तब अुन्हें लिखकर क्यों नहीं रखते?' मैंने जवाब दिया — 'मेरी हालत श्री व्यासजी-जैसी है। अुनके दिमागमें महाभारतका सारा अितिहास भरा हुआ था, लेकिन अुसे लिपिबद्ध कैसे किया जाय। अुसे लिखनेवाला अिस दुनियामें कोअी है ही नहीं (पर न लेखकः कश्चित् अेतस्य भुवि विद्यते)। जब गणेशजी-जैसे चार हाथवाले बुद्धिमान् लेखक अुन्हें मिले, तब कहीं महाभारत दुनियामे प्रगट हुआ।' लक्ष्मणसिंहजी हँसकर बोले — 'ठीक है। मैं आपका गणेशजी बननेके लिअे तैयार हूँ।' मैंने कहा — 'दिनरात लिखनेकी बात नहीं

है। 'भोजनोत्तरका गपशपका समय ही अिसमें देना है। अेक-दो संस्मरण लिखे कि अुस दिनका काम पूरा हुआ। अैसा करनेसे दूसरे कार्यक्रमोंमें बाधा नहीं आयगी और रोज कुछ न कुछ लिखा भी जायगा। अगर रोज अिसी कामको सारा समय दिया जाय, तो बाकीके सब काम रह जायँगे और अुसके पश्चात्तापमे अिस कामको भी छोड़ना पड़ेगा।' अिसपर रोज थोड़ा थोड़ा लिखनेका तय हुआ, और धीरे धीरे किस्सोंकी संख्या बढ़ने लगी। लिखी हुअी चीज और भी साथियोंने पढ़ी। अुन्होंने प्रोत्साहन दिया कि 'लिखवाते जाअिये'।

ये किस्से किसी खास अुद्देशको ध्यानमें रखकर नहीं लिखे गये हैं। कोअी चर्चा छिड़ी, अुसमें जो प्रसंग याद आ गया, अुसीको तुरन्त अुस दिन दोपहरमें लिखवा दिया।

अब राजबंदियोंके छूटनेके दिन आ गये। सरकारके बड़े अफसर कभी कभी जेल देखने आते रहते थे। अेक दिन अेकने खानगी तौर पर कहा,—'और तो सब छूट जायँगे, लेकिन काका और विनोबा जल्दी छूटनेवाले नहीं हैं। अिनमेंसे श्री विनोबा तो शायद छूट भी जायँ। अुनके खिलाफ हमारे पास कुछ नहीं है। लेकिन काका साहबके लेखोंने बड़ा अूधम मचा दिया था। अुनके छूटनेकी आशा तनिक भी नहीं है।'

मैंने आरामसे अपने किस्से लिखवाना जारी रखा। जब किस्सोंकी संख्या काफी हो गयी, तो विचार आया कि कमसे कम अेक सौ आठ किस्से तो होने ही चाहियें। जब वह संख्या सौके नजदीक पहुँचते दिखी, तो दिनमें दो दो दफे लिखवाना शुरू किया। अिस तरह सौके बाद अेक और बढ़ा था कि विनोबाजी और मैं दोनों अेक साथ छूट गये! अिसके बाद तो लक्ष्मणसिंहजी आदि सबके सब क्रमशः छूटते गये।

श्री लक्ष्मणसिंहजी बाहर आनेके बाद मेरी भाषा सुधार कर ये किस्से प्रकाशित करनेवाले थे। लेकिन जेलमें किये हुअे संकल्प बाहर आने पर टिकते नहीं। बाहर आते ही बाहरी दुनियाके अनेकानेक काम सिर पर सवार हो जाते हैं। न लक्ष्मणसिंहजी अिसकी भाषा सुधार सके, न

मैं। मेरी ख्वाहिश थी कि ये सारे संस्मरण, जहाँ तक हो सके, काल-क्रमके अनुसार रख दूँ, लेकिन वह भी मुझसे नहीं हो सका। बहुत दिन तक ये हस्तलिखित जैसेके वैसे पड़े रहे। आखिर मैंने सोचा कि जैसे हैं वैसे ही अेक दफे छाया करवा दूँ। समय मिलने पर दूसरी आवृत्तिमें सब तरहके सुधार हो सकेंगे। फलतः यह पुस्तक आजके रूपमें प्रगट हो रही है।

जब ये संस्मरण लिखे गये, तब पू० बापू जीवित थे। अुनका संकल्प और राष्ट्रकी प्रार्थना थी कि वे दीर्घकाल तक जीयें। मैं जानता था कि मुझे ये किस्से संयमके साथ लिखने चाहियें। अगर पू० बापूजीके देखनेमें आ जायँ और कहीं श्रद्धाभक्तिकी अूर्मि अुसमें दिख पड़े, तो अुन्हें अच्छा नहीं लगेगा। अिधर तो यह हस्तलिखित प्रति मैंने 'नवजीवन'को सौंपी और अुधर पू० बापूजी चल बसे। अेक बार सोचा भी था कि अब अिनमें कुछ परिवर्तन करूँ, लेकिन फिर मनमें यही निश्चय हुआ कि फिलहाल जैसे लिखे गये थे वैसे ही रखना अच्छा है।

अिन झाँकियोंमें पाठकोंको पू० गांधीजीका यथार्थ दर्शन तो जरूर मिलेगा, लेकिन वह संपूर्ण दर्शन नहीं कहा जा सकता। ये संपूर्ण दर्शनके कुछ ही पहलू हैं। गांधीजीकी विभूतिकी पूरी पूरी भव्यता अिनमें प्रतिबिंबित नहीं हुअी है। देखनेवाला अपनी शक्तिके अनुसार ही देख सकता है। तिस पर भी प्रसंगवश जो याद आया, वही यहाँ लिखा गया है। यदि गांधीजीके चरित्रकी पूरी छबि खींचने बैठता, तो दूसरे ढंगसे लिखता। यहाँ वैसा संकल्प था ही नहीं। तो भी बापूका संपूर्ण चरित्र लिखनेवालोंको अिन झाँकियोंमेंसे कुछ न कुछ अुपयोगी मसाला मिलेगा ही। अिन झाँकियोंका महत्त्व पू० बापूकी महत्ताके कारण है। मेरी ओरसे तो सिर्फ अितना ही दावा है कि ये बयान प्रामाणिक हैं। जैसे मुझे याद रहे हैं ठीक वैसेके वैसे यहाँ दिये गये हैं। कुछ झाँकियाँ औरोंसे सुनी हुअी बातों पर निर्भर हैं। लेकिन मेरा विश्वास है कि वे सब प्रामाणिक हैं।

नजदीकके या दूरके जिन जिन लोगोंके पास अैसे संस्मरण हों, अुन्हें चाहिये कि वे अपनी यह दौलत दुनियाके सामने धर दें। गांधीयुगकी यह विरासत मानवजातिको मिलनी चाहिये।

नअी दिल्ली,
गांधी जयती, १९४८

काका कालेलकर

बापूकी झाँकियाँ

१

सन् १९१४ की बात है। जब दक्षिण अफ्रीकाका कार्य पूरा करके महात्माजी विलायत गये और वहाँसे हिन्दुस्तान लौटे, तब दक्षिण अफ्रीकाके अिस विजयी बैरिस्टरकी मुलाकात लेनेके लिअे अेक पारसी पत्र-प्रतिनिधि बम्बअीके बन्दर पर ही जाकर अुन्हें मिला। मुलाकात लेनेवालोंमें सबसे प्रथम होनेकी अुसकी ख्वाहिश थी।

अुसने जो सवाल पूछा, अुसका जवाब देनेके पहले बापूने कहा— 'भाअी तुम हिन्दुस्तानी हो, मैं भी हिन्दुस्तानी हूँ। तुम्हारी मादरी ज़बान गुजराती है, मेरी भी वही है। तब फिर मुझे अंग्रेजीमे सवाल क्यों पूछते हो? क्या तुम यह मानते हो कि चूँकि मैं दक्षिण अफ्रीकामे जाकर रह आया, अिसलिअे अपनी जन्मभाषा भूल गया हूँ या यह कि मेरे जैसे बैरिस्टरके साथ अंग्रेजी ही मे बोलनेमे शान है?'

पत्र-प्रतिनिधि शर्मिन्दा हुआ या नहीं मैं नहीं जानता, किन्तु आश्चर्य-चकित तो जरूर हुआ। अुसने अपनी मुलाकातके वर्णनमें बापूके अिसी जवाबको प्रधानपद दिया था।

अुसने क्या क्या सवाल पूछे और बापूने क्या जवाब दिये, सो तो मैं भूल गया हूँ। किन्तु सब लोगोंको यही आश्चर्य हुआ, और बहुतों को आनन्द भी, कि हमारे देशके नेताओंमे कमसे कम अेक तो अैसा है, जो मातृभाषामे बोलनेकी स्वाभाविकताका महत्त्व जानता है।

अुस समयके अखबारोंमें यह किस्सा सब जगह छपा था।

२

बापू जब विलायतसे हिन्दुस्तान लौटे, तब मैं शान्तिनिकेतनमे था। अुस संस्थाका अध्ययन करनेके लिअे अुसमें कुछ महीनों रहकर और

शिक्षकका काम करके अुसके अन्दरूनी वायुमण्डलको मुझे समझना था। रविबाबूने बड़ी अुदारतासे मुझे वह मौका दिया था।

वहीं पर बापूके फिनिक्स आश्रमके लोग भी मेहमानके तौर पर रहते थे। बापू जब दक्षिण अफ्रीकासे विलायत गये, तब अुन्होंने अपने आश्रमवासियोंको श्री अेंड्र्यूज़के पास भेजा था। श्री अेंड्र्यूज़ने अिन्हें कुछ दिन महात्मा मुंशीरामके गुरुकुलमें हरिद्वारमें रखा और बादमें शान्तिनिकेतनमें।

अखबार पढ़नेके कारण मैं दक्षिण अफ्रीकाका अपने लोगोंका अितिहास जानता ही था। मेरे अेक स्नेहीके द्वारा गांधीजीके अफ्रीकाके आश्रमके बारेमें भी सुना था। सम्भव है अुन्हींके द्वारा आश्रमवासियोंने भी मेरा नाम सुना हो। शान्तिनिकेतनमें जाते ही मैं अिस फिनिक्स पार्टीमें करीब करीब शरीक हो गया। सुबह और शामकी प्रार्थनायें अुन्हींके साथ करने लगा। शामका खाना भी वहीं पर खाने लगा। ये आश्रमवासी सुबह अुठकर अेक घण्टा मेहनत मजदूरी करते थे। शान्तिनिकेतनवालोंने अिन्हें अेक काम सौंप दिया था। शान्तिनिकेतनकी भूमिके पास अेक तलैया थी और पास ही अेक टीला था। अिस टीलेको खोदकर तलैयाका गड्ढा भरनेका यह काम था। हम दस बीस आदमी यदि रोज अेक घण्टा काम करते रहते, तो न जाने कितना समय अुसे पूरा करनेमें लग जाता। लेकिन हमें तो निष्काम कर्म करना था। रोज बड़े अुत्साहसे हम अपना काम करते जाते थे। मि० पियर्सन भी हमारे साथ आते थे।

जब बापू शान्तिनिकेतन आये, (अुनके आनेका सारा बयान मैं अलग दूँगा।) तो रातको देर तक हम बातें करते रहे। सुबह अुठकर प्रार्थनाके बाद हम मजदूरीके लिअे गये। वहाँसे लौटकर आये तो क्या देखते हैं! हम लोगोंका नाश्ता — फल आदि सब काटकर — अलग अलग थालियोंमें तैयार रखा है। हम सबके सब काम पर गये थे, तब माता-जैसी यह सब मेहनत किसने की? मैंने बापूसे पूछा (अुन दिनों मैं अुनसे अंग्रेजीमें ही बोलता था) — 'यह सब किया किसने?' वे बोले — 'क्यों, मैंने किया है।' मैंने सकोचसे कहा — 'आपने क्यों किया? मुझे अच्छा नहीं लगता कि आप सब तैयारी करें, और हम बैठे खायें।'

'क्यों अुसमें क्या हर्ज है!' वे बोले। मैंने कहा—'आप सरीखोंकी सेवा लेनेकी हममें योग्यता तो हो।'

अिस पर बापूने जो जवाब दिया, अुसके लिअे मैं तैयार नहीं था। मेरा वाक्य 'we must deserve it' सुनते ही बिलकुल स्वाभाविकतासे अुन्होंने कहा 'which is a fact.' मैं अुनकी ओर देखता ही रहा। फिर हँसते हँसते अुन्होंने कहा—'तुम लोग वहाँ काम पर गये थे और यहाँ नाश्ता करके फिर और काम पर ही जाओगे। मेरे पास खाली समय था। अिसलिअे तुम्हारा समय मैंने बचाया। अेक घण्टेका काम करके अैसा नाश्ता पानेकी योग्यता तो तुमने हासिल कर ही ली है न!'

जब मैंने कहा था we must deserve it, तो मेरा मतलब यह था कि अितने बड़े नेता और सत्पुरुषकी सेवा लेनेकी योग्यता तो हममें हो। लेकिन मेरी यह भावना अुनके दिमाग तक पहुँची ही नहीं। अुनके मनमें तो सब लोग अेक सरीखे। मैंने सेवा की, अिसलिअे अुनकी सेवा लेनेका हकदार बन गया।

३

सन् १९१४ की ही बात है। महायुद्ध छिड़ गया था। और गांधीजी हिन्दुस्तान लौटे नहीं थे। शान्तिनिकेतनमें जब मैं था, तो वहाँके आम रसोअी घरमें गेहूँकी रोटी नहीं बनती थी। सब लोग भात ही खाते थे। वहाँ दो तीन बंगाली लड़के थे, जो अजमेरकी तरफ रहे थे। अुनके लिअे थोड़ी रोटियाँ बनती थीं। पहले दिन जब मैंने रोटी माँगी, तो सबकी रोटियाँ मैं अकेला ही खा गया। रोटी अैसी बनी थी कि बिलकुल चमड़ा हो। अुसका नाम मैंने मोरेक्को लेदर (Moracco Leather) रखा था।

अुन दिनों मैं स्वभावसे ही बड़ा प्रचारक था। सबके आहारमें भात कम और रोटी ज्यादा हो, यह मेरा आग्रह था। मेरे प्रचारके फलस्वरूप पाँच अध्यापक और ग्यारह विद्यार्थी अलग रसोअी करनेके लिअे तैयार हो गये। मैंने अुस दलका नाम रखा था Self-helpers' Food Reform League (स्वावलम्बियोंका भोजन सुधारक

मण्डल)। हम सब मिलकर अपने हाथसे पकाते थे, बरतन भी मॉजते थे, और मसाले आदिका व्यवहार नहीं करते थे। रोटी तो मुझे ही बनानी पड़ती थी। वह अैसी अच्छी बनती थी कि लीगके बाहरके आदमी भी खाने आते थे। हमारे क्लबमें सतोष बाबू मजूमदार थे। वे अमेरिकासे अध्ययन करके आये थे। मैंने अेक दिन कहा कि बरतन मॉजनेसे और कमरा साफ करनेसे हमारी आत्मा भी साफ होती है। वे हँस पड़े और कहने लगे — 'हृदयको साफ करना अितना आसान नहीं है।'

कुछ भी हो हम लोगोंका बन्धुभाव खूब बढ़ा। शान्तिनिकेतनने हमें अपने प्रयोगके लिअे पूरा सुभीता कर दिया था।

जब गांधीजी वहाँ आये, तो अुन्होंने हमारा यह कार्य देखा। बड़े खुश हुअे किन्तु अुनका स्वभाव तो बड़ा ही लोभी। कहने लगे — 'यह प्रयोग अितने छोटे पैमानेपर क्यों किया जाता है? शान्तिनिकेतनका सारा रसोअीघर ही अिस स्वावलम्बन तत्त्वपर क्यों नहीं चलाया जाता?'

बस, दक्षिण अफ्रीकाके विजयी वीर तो ठहरे। वहाँके अध्यापकोंको और व्यवस्थापकोंको बुलवाया और अुनके सामने अपना प्रस्ताव रखा। वे बड़े संकोचमें पडे। अितने बड़े मेहमानको क्या जवाब दिया जाय? गांधीजीकी यह जल्दबाजी मुझे अनुचित-सी लगी। मैंने कहा — 'मेरा छोटासा प्रयोग चल रहा है। अगर अुन्हे पसन्द आयेगा, तो धीरे धीरे अैसे क्लब और भी बन जायँगे।' मैंने यह भी कहा कि 'दो सौ आदमियोंका आम रसोअी-घर नये ढंगसे चले न चले। अिससे बेहतर यह होगा कि यहाँ पर पच्चीस पच्चीस यां तीस तीस आदमियोंके छोटे छोटे क्लब बन जायें।'

कर्मवीर मेरा प्रस्ताव थोड़े ही कबूल करनेवाले थे! कहने लगे — 'अगर आठ क्लब बनाओगे तो तुम्हे कमसे कम सोलह expert (विशेषज्ञ) चाहियें। अितने है तुम्हारे पास? बड़ी बड़ी फौजें जैसे काम करती हैं, वैसे ही हमें करना होगा और साथ मिलकर काम करने और साथ खानेकी आदत डालनी होगी। अगर छोटे छोटे क्लब ही बनाने हैं, तो कुछ महीनोंके बाद बना सकते हो। आज तो आम रसोअी ही चलानी होगी।'

अुनकी दलील ठीक थी। मै चुप हो गया। लेकिन मैंने मनमें कहा — 'सस्था न आपकी है, न मेरी; और गुरुदेव भी (शान्तिनिकेतनमें रविबाबूको गुरुदेव कहते थे) अिस समय यहाँ नहीं हैं। अितना बड़ा अुत्पात आप क्यों करने जा रहे हैं?'

बापूने श्री जगदानन्द बाबू और शरद बाबूको बुलवाया और पूछा कि 'यहाँ रसोअिये और नौकर मिलकर कुल कितने आदमी हैं?' जब अुन्हें पता चला कि करीब पैंतीस, तो बोले — 'अितने नौकर क्यों रखे जाते हैं? अिन सबको छुट्टी दे देनी चाहिये।' व्यवस्थापक बेचारे दिङ्मूढ़ हो गये। अुन्हें सीधे कहना चाहिये था कि हम अेकाअेक अैसा नहीं कर सकते। किन्तु अुन्होंने देखा कि मि० अेंड्रूयूज़ और पियर्सन बापूके प्रस्तावके पक्षमे है, और गुरुदेवके दामाद नगीनदास गांगोली भी अुसी प्रभावमे आ गये हैं; और विद्यार्थी तो ठहरे बदर। किसी भी नयी बातका खफ्त अुन पर आसानीसे सवार हो जाता है। सारा वायुमडल अुत्तेजित हो गया। मैंने देखा कि मि० अेंड्रूयूजको स्वावलम्बनका अितना अुत्साह नहीं था जितना ब्राह्मण जातिके रसोअियेको निकाल देनेका। विश्व-कुटुम्बमें विश्वास करनेवाली अितनी बडी संस्थामें ये ब्राह्मण रसोअिये अपनी रूढ़ि चलाते और किसीको रसोअीघरमें पैठने नहीं देते।

लेकिन हम लोग 'सामाजिक या धार्मिक सुधारके खयालसे प्रेरित नहीं हुअे थे; हमे तो जीवन सुधारकी ही लगन थी।

तय हुआ कि बापू विद्यार्थियोंको अिकट्ठा करके पूछें कि अैसा परिवर्तन अुन्हें पसन्द है या नहीं। क्योंकि, नौकरोंके चले जाने पर काम तो अुन्हींको करना था। मि० अेंड्रूयूज़ बापूके पास आकर कहने लगे — 'मोहन, आज तो तुम्हे अपनी सारी वक्तृता काममें लानी पड़ेगी। लड़कोंको अैसी जोशीली अपील करो कि लड़के मंत्रमुग्ध हो जायँ। क्योंकि तुम्हारी अिस अपील पर ही सब कुछ निर्भर है।' बापूने कुछ जवाब नहीं दिया।

विद्यार्थी अिकट्ठे हुअे। हम लोग तो गांधीजीकी जोशीली अपील सुननेकी अुत्कण्ठासे अपना हृदय कानमें लेकर बैठ गये।

और हमने सुना क्या? ठडी मामूली आवाज़; और बिलकुल व्यवहारकी बातें। न अुसमें कहीं वक्तृता थी, न कहीं जोश। न भावुकता (sentiment) को अपील थी, न बहुत अूँची या लम्बीचौड़ी फलश्रुति।

तो भी अुनके वचन काम कर गये। जिन विद्यार्थियोंको मैं अच्छी तरह जानता था कि वे शौकीन और आरामतलब हैं, वे भी अुत्साहमें आ गये और अुन्होंने अपनी राय अिस प्रयोगके पक्षमें दी।

अब व्यवस्थापकोंने अपनी अेक आखरी किन्तु लूली कठिनाअी पेश की। कहने लगे — 'नौकरोंको आजके आज नौकरीसे मुक्त करना हो तो अुनको तनख्वाह देनी पड़ेगी। पैसे लाने पड़ेंगे। अिस वक्त खज़ानचीके पास नहीं हैं।' गांधीजीके पास होते तो वे तुरन्त दे देते। वे यहाँ मेहमान थे, किससे माँग सकते थे? अुनके आश्रमवासी भी आश्रमके मेहमान ही ठहरे। अुनके पास कुछ नहीं था। मि० अेंड्रयूज़के पास भी अुस वक्त कुछ नहीं था। मैं था अेक घूमनेवाला परिव्राजक। तो भी पता नहीं कैसे गांधीजीने मुझसे पूछा — 'तुम्हारे पास कुछ है?' मैंने कहा — 'है।' मेरे पास करीब दो सौ रुपये निकले। मैंने अुन्हें दे दिये। फिर क्या! नौकरोंको तनख्वाह दे दी गयी, और वे आश्चर्यचकित होकर चले गये। अब सवाल अुठा, रसोअीघरका चार्ज कौन ले। मेरी तो फुड रिफार्मर्स लीग चल ही रही थी। गांधीजीने मुझसे पूछा — 'लोगे?' मैंने अिन्कार किया। आत्मविश्वासके अभावके कारण नहीं, अिस प्रयोग पर मेरी अश्रद्धा थी सो भी नहीं, किन्तु मैं जानता था कि यह सारी अनधिकार चेष्टा है। मैंने कहा — 'मेरा छोटासा प्रयोग चल रहा है। अुससे मुझे सतोष है। अितना बड़ा व्यापक परिवर्तन अेकाअेक करना मुझे ठीक नहीं जँचता।' लेकिन अिस तरह गांधीजी रुकनेवाले थोड़े ही थे। और अुनका भाग्य भी कुछ अैसा है कि अगर अेक आदमीने अिन्कार किया, तो अुनका काम करनेके लिअे दूसरा कोअी न कोअी अुन्हें मिल ही जाता है। मेरे मित्र राजंगम् अथवा हरिहर शर्मा शान्तिनिकेतनमें ही काम करते थे। अिन्हें हम अण्णा कहते थे। वे तैयार हो गये। कहने लगे — 'मैं चार्ज लूँगा।' अब सवाल आया, मदद कौन करेगा। तब मैंने कहा — 'जब मेरे मित्र कोअी काम अुठाते है, तब मदद करना मेरा धर्म होता है। मैं यथाशक्ति मदद करूँगा।' गांधीजीने कहा — 'तुम्हारा प्रयोग जो छोटे पैमाने पर चल रहा है, अुसका अिस बड़े प्रयोगमें विसर्जन करो और सारी शक्ति अिसीमें लगा दो।'

वैसा ही किया गया। और फिर मैं तो राक्षस जैसा काम करने लगा। बारह-अेक बजे यह सब तय हुआ होगा। तीन बजे हमने चार्ज लिया और शामको लड़कोंको खिलाया। गांधीजी स्वय आकर काम करने लगे। शाक सुधारनेका काम अुन्होंने किया। रोटियाँ तैयार करनेका काम मेरा था। मेरी रोटियाँ अितनी लोकप्रिय हुअीं कि जहाँ छह रोटियाँ बनती थीं, वहाँ दो सौ बनने लगीं। पत्थरके कोयलेके चूल्हे, अुनपर लोहेकी गरम चादरें, और अुनपर मैं दो दो रोटियाँ अेकपर अेक रखकर हिराफिरा कर सेंकता था। अिस तरह चार जुफ्त याने अेक साथ आठ रोटियोंकी ओर मैं ध्यान देता था। विद्यार्थी रोटियाँ बेलबेलकर मुझे देते थे। गूँधनेका काम चिंतामणि शास्त्री कर देते थे। सुबहका नाश्ता दूध केलेका था। बर्तन माँजनेके लिअे भी बड़े विद्यार्थियोंकी अेक टुकड़ी तैयार हो गयी थी। अुनका भी सरदार मै ही था। बर्तन माँजनेवालोंका अुत्साह कायम रहे, अिसलिअे वहाँपर कोअी विद्यार्थी अुन्हें कोअी रोचक अुपन्यास पढ़कर सुनाता था, कभी कोअी सितार बजाता था। मेरी यह योजना शान्तिनिकेतनवाले रसिक अध्यापकोंको बहुत ही अच्छी लगी।

अिस तरह दो-चार दिन गये और गांधीजी अपने मित्र डाक्टर प्राणजीवन मेहतासे मिलनेके लिअे बर्मा (ब्रह्मदेश) जानेके लिअे तैयार हो गये। हरिहर शर्माने कहा—'मैं भी अिनके साथ जाअूँगा।' (शर्माजी पहले डा० प्राणजीवन मेहताके यहाँ लड़कोंके ट्यूटर रह चुके थे।) मुझे बड़ा गुस्सा आया। मैं शिकायत करने गांधीजीके पास गया। गांधीजीने मेरा काम तो देखा ही था। अुन्होंने ठंढे पेटे मुझे कहा,—'तुम तो सब कुछ चला सकोगे। लेकिन अगर तुम्हारी अिच्छा है, तो अण्णाको चार छह दिनके लिअे यहाँ रख जाअूँ। वे मेरे पीछे आयेंगे।' मै और भी झल्लाया। मैंने कहा—'जिम्मेदारी तो अुन्होंने ही ली थी। अब यह छोड़कर कैसे जा सकते हैं! और अगर अुन्हें जाना ही है, तो चार छह दिनकी मेहरबानी भी मुझे नहीं चाहिये। अगर अुन्हें कल जाना है, तो आज चले जायँ।'

गांधीजीने देखा था कि मैं तो नये प्रयोगमे रँगा हुआ हूँ। कुछ भी दया किये बगैर अुन्होंने कहा—'अच्छा, तब तो ये मेरे ही साथ जायँगे।' और सचमुच दूसरे ही दिन अण्णा गांधीजीके साथ चले गये!!

अिस प्रयोगका आगे क्या हुआ, सो यहाँ बतानेकी ज़रूरत नहीं। रवीन्द्रबाबू कलकत्तेसे आये। अुन्होंने अिस प्रयोगको आशीर्वाद दिया। कहा कि अिस प्रयोगसे संस्थाको और बंगालियोंको बड़ा लाभ होगा।

धीरे धीरे नावीन्य कम होता गया। लड़के थकने लगे। मि० पियर्सनने भी मेरे पास आकर कहा—'काम तो अच्छा है, लेकिन पढ़ने लिखनेका अुत्साह नहीं रह जाता है।' बड़ी बहादुरीसे हमने चालीस दिन तक अिसे चलाया। फिर छुट्टियाँ आ गयीं। छुट्टियोंके बाद किसीने अिस प्रयोगका नाम भी नहीं लिया। मैं भी शान्तिनिकेतन छोड़कर चला गया।

४

थोड़े ही दिनोंमें गांधीजी बर्मासे लौटे। हमारा प्रयोग चल ही रहा था। अितनेमें पूनासे तार आया: गोखलेजीका देहान्त (फ़रवरी १९१४) हो गया। गांधीजीने तुरन्त पूना जानेका तय किया। अिसके पहले गोखलेजी अुनसे कहते थे—'सर्वेण्ट्स आफ अिण्डिया सोसायटीके सदस्य बनो।' लेकिन गांधीजीने निश्चय नहीं किया था। अपने राजकीय गुरुकी मृत्युके पश्चात् अुनकी यह अंतिम अिच्छा गांधीजीके लिअे आज्ञाके समान हो गयी। वे पूना गये, और सर्वेंट्स आफ अिण्डिया सोसायटीमे प्रवेश पानेके लिअे अर्जी दे दी।

अर्जी पाकर गोखलेजीके अन्य शिष्य घबरा गये। वह सारा किस्सा नामदार शास्त्रीजी ने दोतीन जगह अपनी अप्रतिम भाषामें वर्णन किया है। अुसे यहाँ देनेकी ज़रूरत नहीं। सार यह था कि वे जानते थे कि गांधीजीको वे हजम नहीं कर सकेंगे। किन्तु गोखलेजीके ही (creed) (राजनीतिक सिद्धान्तों) को गांधीजी मानते थे। अैसी हालतमें अुनकी अर्जी अस्वीकार कैसे की जाय, अिसी असमंजसमें वे पड़े थे। परिस्थिति ताड़कर गांधीजीने ही अपनी अर्जी वापिस ले ली और अपने गुरुभाअियोंको संकटसे मुक्त कर दिया। फिर भी अवैधरूपसे सोसायटीके जलसोंमें वे अुपस्थित रहते, और संस्थाको अुन्होंने समय समय पर मदद भी काफी दी।

गोखलेजीके देहान्तका समाचार सुनते ही गांधीजीने अेक सालके लिअे जूते न पहननेका व्रत लिया। अिस कारण अुन्हें काफी तकलीफ़ हुअी। किन्तु अुन्होंने यह व्रत अच्छी तरहसे निबाहा।

५

जब बापू बर्मासे लौटे, तो रवि बाबू शान्तिनिकेतनमे थे। भारतके दो बड़े पुत्र किस तरह मिलते है, यह देखनेके लिअे हम सब अध्यापकगण अत्यन्त अुत्सुक थे। मि० अेंड्रयूज़ हमारी यह अुत्कण्ठा क्या जानें! अुन्होंने तो मानो अपने गुरुदेव और अपने मोहनका ठेका ही ले लिया था। वे हममेंसे किसीको अंदर कमरेमे जाने ही न दें। पुराने अध्यापक अिसपर बिगड़ गये और अंदर घुस ही गये। क्षिती बाबूने समझाया कि अिन बड़ोंका प्रथम मिलन हमारे लिअे अेक पुण्यप्रसंग (sacrament)–सा है। अुनकी खानगी बातें सुननेके लिअे हम अुत्सुक नहीं है। थोड़ा समय बैठकर हम चले जायेंगे। तब कहीं मोहनके चार्लीको तसल्ली हुअी।

दीवानखानेमें बापूके साथ हम गये। रविबाबू अेक बड़े कोच पर बैठे थे, खड़े हो गये। रविबाबूकी अूँची भव्य मूर्ति, अुनके सफेद बाल, लम्बी दाढी, और भव्यता बढानेवाला अुनका चोगा, सब कुछ प्रौढ़, सुन्दर था। अुनके सामने गांधीजी छोटीसी धोती और अेक कुरता और काश्मीरी टोपी (दुपल्ली) पहने हुअे जब खड़े हुअे, तब अैसा मालूम हुआ मानो सिंहके सामने चूहा खड़ा हो।

दोनोंके मनमें अेक दूसरेके प्रति हार्दिक आदर था। रविबाबूने गांधीजीको अपने साथ कोच पर बैठनेका अिशारा किया। गांधीजीने देखा कि जमीन पर गालीचा है ही, वे क्योंकर कोचपर बैठें। जमीनपर ही बैठ गये। रविबाबूको भी फर्शपर बैठना पड़ा। हम सब लोग कुछ समय तक अिर्दगिर्द बैठे रहे। मामूली कुशल प्रश्न हो गये और हम चले आये।

फिर तो वे दोनों अनेक बार मिले। संतोष बाबूने अेक दिन मुझे कहा — "अिन दोनोंके बीच अेक दिन आहारकी भी चर्चा छिड़ी थी। पूरी (लूचीं)की बात थी। गांधीजी तो केवल फलाहारी ठहरे। अुन्होंने

कहा — 'घी या तेलमें रोटी तलकर पूरी बनाते हैं, यह तो अन्नका विष बनाते हैं।' यह सुनकर रविबाबूने गंभीरतासे जवाब दिया— It must be a very slow poison. I have been eating *puris* the whole of my life and it has not done me any harm so far.' "

६

मि० अेंड्रयूज़ अेक अद्वितीय व्यक्ति थे। अुनकी विद्वत्ता तो असाधारण थी ही। वे मिशनरी बनकर अिस देशमें आये, अिससे अुनका त्याग और सेवाभाव पूरा प्रतीत होता है। यहाँ आकर जब अुन्होंने देखा कि भारतकी सेवामें अपना मिशनरीपन अन्तरायरूप है और मिशनरी संस्थाका नियंत्रण भी केवल बन्धनरूप है, तब अुन्होंने अपना रेवरेंड पद छोड़ दिया और केवल मिस्टर अेंड्रयूज़ रह गये। अुनमें हृदयकी असाधारण नम्रता थी। अेक दिन मेरे साथ खानगी बातचीतमें अुन्होंने कहा — 'मैं हिन्दुस्तानकी सेवा यहाँके लोगोंकी अिच्छाके अनुसार करना चाहता हूँ। अंग्रेज़ आये और यहाँके लोगोंका गुरु बन जाय, अैसी भूमिका मुझे नहीं लेनी है, (शायद अुनका अिशारा मिसेज़ अेनी बेसेंटकी तरफ़ था।) और मैं हिन्दू बनकर हिन्दुओंको अुनका धर्म सिखाने बैठूँ, यह भी मुझे नहीं करना है। (अिसमें अुनकी दृष्टिके सामने शायद सिस्टर निवेदिता थीं।) मैं तो भारतवासियोंका सेवक बनकर ही रहना चाहता हूँ।' और सचमुच वे वैसे ही रहे।

जब दक्षिण अफ्रीकामें बापूके सत्याग्रहने अुग्र स्वरूप ले लिया, तब अुनकी मददके लिअे यहाँसे मिस्टर अेंड्रयूज़को भेजनेका गोखले आदिने तय किया। अपनी अपनी शुभ कामनाके साथ मिस्टर अेंड्रयूजको विदा करनेके लिअे मित्र लोग अिकट्ठे हुअे। हरअेकने अेंड्रयूज़को यादगारके तौर पर कुछ न कुछ सौगात दी। अुनके मित्र पियर्सन भी अेक सौगात ले आये। हँसते हँसते कहने लगे — 'मैं तुम्हारे लिअे अेक अजीब भेंट लाया हूँ।' मिस्टर अेंड्रयूज़ समझ नहीं पाये कि क्या चीज़ होगी। मिस्टर पियर्सनने

कहा — 'मैं तुम्हें अपनेको ही दिये देता हूँ। तुम्हारे साथ जाऊँगा और जितनी हो सके तुम्हारी मदद करूँगा।' दोनों दक्षिण अफ्रीका गये। अंग्रेज़ोंके बीच रहनेके कारण बापू अंग्रेजोंको झट पहचान लेते हैं। वहाँ जाते ही ये दोनों मित्र गांधीजीके भी मित्र बन गये। मिस्टर अँड्रयूज़ने गांधीजीसे कहा — 'आयन्दा मैं तुम्हें मोहन कहूँगा, तुम मुझे चार्ली कहना।' तबसे अिन दोनोंका सम्बन्ध मा-जाये भाअियों-जैसा रहा। जब कभी मिस्टर अँड्रयूज़ विदेशसे हिन्दुस्तान आते, तो कुछ दिन पहले नज़दीकके बन्दरसे To Mohan love from Charlie यह केबल (तार) भेजे बिना अुनसे नहीं रहा जाता। अिस तरहसे पैसा खर्च करना बापूको अखरता तो बहुत था, लेकिन अुनको मना करनेकी हिम्मत अुन्होंने कभी नहीं की।

मिस्टर अँड्रयूज़का स्वभाव कुछ भुलकना था। नहाने जाते वहीं घड़ी भूल जाते। किसीसे कुछ लेते अथवा देते, वह भी अक्सर भूल ही जाते। अिसलिअे जब बापू अुन्हें कहीं भेजते तो ज्यादा पैसा देकर भेजते थे, और हँसकर कहते थे—'भूलकर खोनेके लिअे भी तो कुछ पैसा चाहिये।' वे कभी पैसेका हिसाब नहीं रखते थे। लौटने पर जेबमें कुछ पैसा बचता, तो अपने मोहनको वापिस दे देते थे।

मैंने देखा कि आगे जाकर मिस्टर अँड्रयूज बापूको मोहन नहीं कह सके। हम लोगोंकी देखादेखी वे भी बापू ही कहने लगे।

७

१९१५ का दिसम्बर होगा। बम्बअीमें कांग्रेसका अधिवेशन था। बापू अपने आश्रमवासियोंको लेकर मारवाड़ी विद्यालयमें ठहरे थे। मैं अन्य जगह ठहरा था, लेकिन बहुतसा समय बापूके पास ही गुजारता था। अेक दिन अुन्हें कहीं जाना था। डेस्क परकी सब चीजें वे सँभालकर रखने लगे। देखा तो कोअी चीज़ वे ढूँढ़ रहे हैं, बड़े परेशान हैं। मैंने पूछा — 'बापूजी क्या ढूँढ़ रहे हैं?'

"मेरी पेन्सिल। छोटीसी है।"

अुनके कष्ट और अुनका समय बचानेके लिअे मैं अपनी जेबसे अेक पेन्सिल निकालकर अुन्हें देने लगा। बापू बोले — 'नहीं नहीं, मेरी वही छोटी पेन्सिल मुझे चाहिये।' मैंने कहा — 'आप अिसे लीजिये, आपकी पेन्सिल ढूँढ़कर मैं रखूँगा। आपका वक्त नाहक ज़ाया होता है।' अिस पर बापूने कहा — 'वह छोटी पेन्सिल मैं खो नहीं सकता। तुम्हें मालूम है, वह तो मुझे मद्रासमे नटेसनके छोटे लड़केने दी थी! कितने प्यारसे ले आया था वह! अुसे कैसे खो सकता हूँ!'

फिर हम दोनोंने अुस शरारती पेन्सिलकी तलाश की। कहीं छिप गयी थी। जब मिली तब बापूको शान्ति हुअी। मैंने देखा दो अिंचसे कुछ कम ही होगी। अितनी छोटीसी पेन्सिल प्यारसे बापूको देनेवाले अुस लड़केका चित्र मैं अपने मनमें खींचने लगा।

८

शान्तिनिकेतनमें मैं बापूके काफी परिचयमें आया था। वहाँ अुनके आश्रमवासी ठहरे थे। अुनके बीच रहकर मानो मैं अुन्हींका हो गया था। अुन दिनों बापूके बड़े लड़के हरिलाल अुनसे मिलने आये थे। अुनके साथ भी मेरा परिचय हो गया था।

बम्बअी कांग्रेसके समय मारवाड़ी विद्यालयमे शामकी प्रार्थनाके बाद बापू कुछ लिखने बैठे थे। मैं भी पास ही बैठकर कुछ पढ़ रहा था। अितनेमें हरिलाल मेरे पास आकर बैठ गये। मुझे पूछने लगे — 'काका, आप तो शान्तिनिकेतनमें बापूके परिचयमे अितने आये थे और फिनिक्स पार्टीके लोगोंके साथ अितने हिलमिल गये थे कि हम मानते थे कि गांधीजीके आश्रममें आप कबसे शरीक हो गये होंगे। आश्चर्य है कि अभी तक आप दूर ही रहे!' मैंने जवाब दिया— 'बापूके प्रति मेरा जो आकर्षण है, सो तो आप जानते ही है। लेकिन मैं अुनके पास कैसे जा सकता हूँ? हिमालयकी यात्रा पर जानेके पहले जिनके साथ मैं राष्ट्रसेवाका काम करता था, अुनका मेरे अूपर अधिकार है। वे अगर कोअी नया कार्य शुरू करें, तो मुझे चाहिये कि अपनी

सेवा अुन्हीको दूँ; नहीं तो वे नये नये आदमी ढूँढ़ते फिरें और मैं जहाँ आकर्षण बढ़ा, वहाँ नये Boss पकड़ता फिरूँ। यह क्या अच्छा होगा?'

बापू अपने लेखन कार्यमें तल्लीन थे। अिसलिअे हम धीरे धीरे बातें कर रहे थे। अित्तफाकसे बापूने हमारे प्रश्नोत्तर सुन लिये। अुनसे रहा न गया। कहने लगे — "काका, तुम्हारा विचार 'सोना मुहर' के जैसा है।" फिर हरिलालकी ओर मुँह करके कहने लगे — 'अगर हिन्दुस्तानमें सब कार्यकर्ता अैसी ही परस्पर निष्ठासे काम करें, तो हमारा बेड़ा पार होनेमें देर नहीं लगेगी।'

मैंने सिर नीचा कर लिया। मनमे अितना प्रसन्न हुआ! और कुछ अभिमान भी हुआ कि मुझमें भी कुछ है। अुसी क्षण मैं पूराका पूरा बापूका हो गया।

बम्बअीकी कांग्रेस खतम होनेके बाद मैं बडोदा गया और वहाँसे चार पाँच मीलपर सयाजीपुरा नामके अेक देहातमे ग्राम्सेवाका कार्य करने लगा। जब बापूको मालूम हुआ कि 'हालाँकि मैं बैरिस्टर केशवराव देशपांडेके मातहत काम कर रहा हूँ, फिर भी मेरे लिअे वहाँ कुछ विशेष काम नहीं है, तो अुन्होंने स्वयं देशपांडेजीको पत्र लिखा कि 'काकाका आप कुछ विशेष अुपयोग नहीं कर रहे हैं और आश्रममें हम अेक राष्ट्रीय शाला खोलना चाहते हैं, तो काकाको हमें दे दीजिये।'

देशपांडे साहब मुझे अहमदाबाद ले गये और कहा — 'हम जो गंगनाथ राष्ट्रीय शाला चलाते थे, अुसीका यह व्यापक स्वरूप समझो और यहाँ रह जाओ।' जिस तरह कन्याको मातापिता सुसराल भेजते हैं, अुसी तरह वे मुझे गांधीजीके आश्रममें पहुँचा गये।

मैं आया और अेकाअेक गांधीजी चंपारनकी ओर चले गये। बड़ोदेका काम बिगड़े नहीं, अिसलिअे अंतिम व्यवस्था करनेके लिअे मैं फिरसे चार दिनके लिअे बड़ोदा गया। आश्रमके व्यवस्थापकोंने गांधीजीको लिखा होगा कि काका बड़ोदा गये हैं। बस, वहाँसे फौरन दो खत आये, अेक मेरे पास और अेक देशपांडे साहबके पास। देशपांडे साहबको लिखा था कि 'आपने काकाको दे दिया है, अब आपका अुनपर कोअी अधिकार नहीं रहा। अुन्हें

आप अिस तरह नहीं बुला सकते।' मुझे लिखा कि 'मनुष्य दो जिम्मेदारियाँ साथ साथ नहीं चला सकता।' मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने कैफियत तो भेजी, लेकिन सोचा कि अितना बस नहीं है। तबसे करीब अेक साल तक आश्रम भूमि छोड़कर कहीं बाहर भी नहीं गया। शामको घूमनेके लिअे जो कुछ बाहर जाता था अुतना ही। फिर गांधीजीको विश्वास हो गया कि अिसकी निष्ठामें अेकाग्रता है। फिर तो स्वय मुझे अपने साथ मुसाफिरीमें अेक दो जगह ले गये।

गांधीजीने जब चंपारनमे सत्याग्रह शुरू किया, तब मुझसे रहा न गया। मैंने अुन्हे लिखा कि मुझे आने दीजिये, मैं वहाँके आन्दोलनमें और सत्याग्रहमें शरीक होअूँगा। जवाब आया — 'तुम तो जूने जोगी हो। राष्ट्रसेवाका काम तुम्हारे लिअे कोअी नअी चीज नहीं है। वहाँका काम छोड़कर यहाँ आकर जेलमें जा बैठोगे, तो तुम्हारे लिअे वह तपस्या नहीं होगी बल्कि स्वच्छन्द होगा। नये लोगोंको मैं यह मौका देना चाहता हूँ। तुम अपना काम वहाँ अेकाग्रतासे करते रहो।'

९

श्री किशोरलालभाअी मशरूवाला अकोलामे वकालत करते थे। श्री ठक्कर बापाका अुनपर कुछ प्रभाव था। मशरूवालाजीने सोचा कि देशसेवाका अच्छा मौका है। वे चंपारनमे गांधीजीके पास चले गये, क्योंकि गांधीजीने स्वयंसेवकोंके लिअे अपील की थी। गांधीजीने देखा कि अिनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। अिन्हें दमाकी व्यथा है; साथ साथ यह भी देखा कि मसाला अच्छा है। थोड़ी बातचीत होते ही कहा — 'तुम्हारा काम यहाँ नहीं है, आश्रममें मैंने अेक शाला खोली है, वहाँ सॉकळचन्दभाअी है, काका हैं, फूलचन्द और पोपटलाल है, अुनकी मददको जाओ। आज ही जाओ यहाँसे। यहाँ रहोगे तो मुझे तुम्हारी चिंता करनी पड़ेगी और मुझपर नाहक बोझ होगा। अिसलिअे आज ही जाओ।

क्या करते! सीधे आ गये आश्रम, और कायमके हो गये गांधीजीके।

१०

१९१६–१७ में बापूजी गुजरातमे आकर बसे और 'हम भी कुछ हैं' अैसी अस्मिता गुजरातमें जाग्रत हुअी। अिसके पहले बम्बअी प्रांतीय कान्फरेन्सके अधिवेशन हुआ करते थे, जिनमे सिंधी, गुजराती, महाराष्ट्रीय, और कर्नाटकी सब प्रान्तोंके लोग आते थे। देशके सरकारी प्रान्त ही कांग्रेसके प्रान्त थे। यह जानकर कि गांधीजी भाषाके अनुसार प्रांत बनानेके पक्षमे हैं, चन्द गुजराती कार्यकर्ताओंने गुजरात प्रांतीय पोलिटिकल कान्फरेन्सकी स्थापना करनी चाही। वे गांधीजीके पास आये। गांधीजीने अपनी शर्तें यानी अपनी कार्यपद्धति अुनके सामने रखी। कार्यकर्ताओंने अुसे स्वीकार किया, तब गांधीजीने अध्यक्ष बनना मजूर किया।

खूबी यह थी कि किसीको यह खयाल भी नहीं हुआ कि हम जो बम्बअी प्रांतीय कान्फरेन्सका अिस तरह विकेन्द्रीकरण करने जा रहे हैं, अुसकी अिजाजत लेनी चाहिये, या कांग्रेसको पूछना चाहिये। अुन दिनों कांग्रेस अितनी सगठित नहीं थी।

कान्फरेन्सका 'गुजरात राजकीय परिषद्' यह शुद्ध देशी नाम रखा गया। परिषद् गोधरामें हुअी। गांधीजी सभामे समय पर पहुँच गये। अुनका भाषण गुजरातीमें था। परिषद्के लिअे श्री लोकमान्य भी बुलाये गये थे। वे अपनी आदतके मुजब परिषद्मे कुछ देरसे आये। गांधीजीने बड़े आदरके साथ अुनका स्वागत किया। लेकिन साथ साथ अितना कहे बिना न रहे कि लोकमान्य आधा घंटा देरसे आये हैं। अगर स्वराज्य प्राप्त करनेमें आधे घण्टेकी देर हुअी, तो अुसके लिअे लोकमान्य जिम्मेवार गिने जायेंगे।

११

मैं भी बापूके साथ गोधरा गया था। विषय-निर्वाचिनी कमेटीमें चर्चाके लिअे वहाँके कार्यकर्ताओंने प्रस्तावोंके ड्राफ्ट बनाकर गांधीजीके सामने रख दिये।

अुनमे पहला प्रस्ताव था — 'हम हिन्दके बादशाहके प्रति राजनिष्ठा जाहिर करते है, अित्यादि।' अुस जमानेमें हर राजकीय सभाका मंगला-चरण अैसे ही प्रस्तावोंसे हुआ करता था।

गांधीजीने प्रस्ताव पढ़ा और फाड़ डाला। कहने लगे — 'अैसा प्रस्ताव पास करना बेहूदापन है। जब तक हम बगावत नहीं करते, हम राजनिष्ठ है ही। अुसके अैलान करनेकी जरूरत ही क्या? किसी स्त्रीने कभी अपने पतिके पास अपने पतिव्रता होनेका अैलान किया है? अुसने शादी की है, अुसका अर्थ ही यह है कि वह पतिव्रता है।'

कार्यकर्ता अवाक् हो गये। अुनकी मुद्रा देखकर बापूने कहा — 'अगर आपको किसीने पूछा कि राजनिष्ठाके प्रस्तावका क्या हुआ, तो बेशक मेरा नाम लेकर कहिये कि गांधीने रोक दिया।'

१२

अुस परिषद्‌में शायद विरमगामके बारेमें अेक प्रस्ताव पास हुआ था, जिसे अध्यक्षकी हैसियतसे गांधीजीको वायसरायके पास भेजना था। गांधीजीने तुरन्त अेक तार लिखवाया, जिसके नीचे अपने नामके बाद "अध्यक्ष, गुजरात राजकीय परिषद्" ये शब्द रखे। मैंने कहा — "बेचारा वायसराय ये देशी शब्द क्या जाने 'अध्यक्ष, गुजरात राजकीय परिषद्'!" बापूने जवाब दिया — "अगर अुन्हें यहाँ राज करना है तो हमारी अितनी भाषा वे सीख लें, या किसी दुभाषियेको अपने पास रखें, जो अुन्हें समझाया करे। अपनी गरजसे ही तो राज कर रहे हैं।"

आखिर तार वैसा ही गया, और अुसका जवाब भी ठीक ठीक मिला।

१३

गोधरा परिषद्‌के कुछ ही दिन पहले महादेवभाअी देसाअी गांधीजीके पास आये । अुनके अेक घनिष्ठ मित्र श्री नरहरि परीख आश्रमकी शालामें आ चुके थे । दोनोंने मिलकर रविबाबूकी अेक दो बंगाली कृतियोंका गुजरातीमें अनुवाद किया था ।

महादेवभाअीने अेल-अेल० बी० पास करनेके बाद वकालत नहीं की। कुछ दिन ओरिअेण्टल ट्रॅन्स्लेटर्स आफिस बम्बअीमे काम करते रहे। अुसके बाद सर लल्लूभाअी शामळदासकी सिफारिशसे को-ऑपरेटिव सोसायटीके अिन्सपेक्टर बने । फिर किसीके प्रायवेट सेक्रेटरी रहे । अब अुन्हें बापूकी ओर आकर्षण हुआ । वे अुनसे मिलने गोधरा ही आये । कहने लगे — ‘अगर आप मुझे साथमे ले, तो मैं आपके सेक्रेटरीका काम कर सकूंगा ।’ अुन्होंने अपने पुराने Boss के लिअे तैयार किया हुआ अेक अंग्रेजी व्याख्यान भी बताया । अुनके अक्षर तो मोतीके दानों जैसे थे । अुनके चेहरेपर जवानी और निर्मलता तो टपक ही रही थी । अुन्होंने कोअी दस-पद्रह मिनट बातें की होंगी ।

पता नहीं बापू अिन बातोंसे प्रभावित हुअे या फिर अुन्होंने महादेव-भाअीकी विरली आत्माकी खूबी पहचान ली, अुन्होंने अुसी समय कह दिया — ‘तुम मेरे साथ आ सकते हो ।’ महादेवभाअीने बीस बरसके लिअे अपनी सेवा देनेका वादा किया । बस, अितनेमे ही दो आत्माओंकी शादी हो गयी । महादेवभाअीने पूछा — ‘मैं कबसे काम शुरू करूँ?’ बापूने कहा — ‘तुम्हारा काम शुरू हो चुका । यहींसे मेरे साथ मुसाफिरीमें चलो ।’ महादेवभाअी कहने लगे कि घर होकर आअूँ तो अच्छा हो । बापूने कहा — ‘नहीं, कोअी जरूरत नहीं, यह सब बादमे हो सकेगा ।’

कुछ दिन बाद महादेवभाअीसे मेरी बातें हो रही थीं। वे कहने लगे — “अेक वक्त बापूजी किसीसे मिलने गये । वे तो कुर्सी पर बैठ गये, मैं फर्श पर ही बैठा । बापू बोले — ‘यह ठीक नहीं; मेरे साथ दूसरी कुर्सी पर बैठो ।’ मेरी हिम्मत न हुअी । तब अुन्होंने डॉटकर कहा — ‘जमानेका ढंग भी तुम्हें सीखना चाहिये । अुठो; बैठो अिस कुर्सी पर ।’ मैं शर्माता शर्माता अुठकर कुर्सीपर बैठ गया ।”

मैंने हँसते हुअे कहा — ‘नववधूके जैसे ही न!’

१४

गोधरासे हम लोग आश्रम लौटे। बापू अपना कहींका दौरा पूरा करके आये। अुनके लिअे आश्रममें कोअी कमरा नहीं था। हम सब बाँसकी चटाअियोंकी झोंपड़ियोंमें रहते थे, जो हमें न धूपसे बचा सकती थीं न बारिशसे। बुनाअीका काम चलानेके लिअे अींट और खपरैलकी अेक चौरस पड़छी बनाअी गयी थी। अुसीके अेक कोने पर बापूजीके लिअे अेक कमरा खाली किया गया। महादेवभाअीको तो जगह मिलती कहाँसे? अुनका सारा असबाब पड़छीमें पड़ा रहा। वे अिधर अुधर दिन काटने लगे। अेक दिन हवा आअी और अुनका 'मॉडर्नरिव्यू' मासिक पत्र अुड़ गया। फिर तो हम लोगोंको अपने झोंपड़ोंमें ही अुनके लिअे कुछ व्यवस्था करनी पडी।

शामका वक्त था। हम प्रार्थनाके लिअे अिकट्ठे हुअे। बापूजीने आया हुआ कोअी खत महादेवभाअीसे माँगा। महादेवभाअी तो अुसके टुकड़े टुकड़े करके रद्दीकी टोकरीमें फेंक चुके थे। वे झट अुठे और टोकरीमें कागजके टुकड़े ढूँढ़ने लगे। वे टुकडे आसानीसे कैसे मिलते। बापूने कहा — 'जाने दो, अुसके बिना काम चल जायगा।' लेकिन महादेवभाअी थोडे ही माननेवाले थे। अुन्होंने टोकरी जमीन पर औंधाअी और अुस खतका अेक अेक टुकड़ा बीनने लगे। बापू बहुत नाराज हुअे। बोले — 'यह क्या कर रहे हो महादेव? सब लोग प्रार्थनाके लिअे अिकट्ठे हुअे हैं, तुम्हारी राह देख रहे हैं। मैं कहता हूँ अुसके बिना चलेगा।' महादेवभाअीने सुनी-अनसुनी की। वे तो अपने बीने हुअे टुकड़े सिलसिलेसे जमाने लगे। अुनका कपाल पसीनेसे तर हो रहा था। जब सारा खत जम गया, और अुसकी नकल हो गयी, तब कहीं वे आकर हमारे साथ प्रार्थनामें शामिल हुअे।

बापूजीके काममें अुनकी अैसी और अितनी ही निष्ठा जीवनभर रही।

साबरमतीके किनारे नये वाड़ज गाँवके पास आश्रमकी स्थापना हुअी। प्रारंभमें हम दो चार तंबुओंमें ही रहते थे। झोंपड़ियाँ अुसके बादमे बनीं।

आश्रम भूमि पर हम लोग आ पहुँचे हैं, अिसका समाचार सबसे पहले आसपासके चोरोंको मिला। वे रातको हमारे स्वागतके लिअे आने लगे। शरीफ लोग जब मिलने आते हैं, तो भेंट-सौगात दे जाते हैं। लेकिन चोरोंका कानून अुलटा है। वे कुछ न कुछ स्वेच्छासे भेंटमें ले जाते हैं। फलतः हमने रातको पहरा देना शुरू किया। मैं अक्सर रातको अेक बजेसे तीन बजे तक पहरा देता था। पहली रातकी कुछ नींद लेनेके बाद शरीर प्रसन्न रहता था और अुत्तर रात्रीकी गंभीर शान्ति ध्यानके लिअे अनुकूल रहती थी। अुपनिषद्के मंत्र बोलते बोलते मैं सारी भूमिका चक्कर लगाया करता था।

कुछ दिनके बाद अपने दौरेसे बापू लौटे। शामकी प्रार्थनाके बाद चर्चाके लिअे अुन्होंने चोरोंका सवाल ले लिया। काफी चर्चा हुअी। फिर बापू बोले — 'अगर मगनलाल (गांधीजीके भतीजे और आश्रमके व्यवस्थापक) चाहें तो मैं अुनके लिअे सरकारसे लाअिसेन्स लेकर बन्दूक खरीद दूँ, और अगर लोग अुनकी टीका टिप्पणी करेंगे कि ये अहिंसक लोग बंदूक क्यों रखते हैं, तो अुनको जवाब देनेके लिअे मैं यहाँ बैठा हूँ।'

अिस पर भी कुछ चर्चा हुअी। बापूने कहा — 'हम सब लोग — स्त्री, पुरुष, बालबच्चे — यहाँ भयभीत दशामें रहें, अिससे बेहतर है कि हम बंदूकसे अपनी रक्षा करें। भयग्रस्त मनुष्य अहिंसक हो ही नहीं सकता। मनसे निर्वीर्य हिंसा करते रहनेके बजाय हम चोरोंको डर दिखावें यही बेहतर है।'

अिस पर राय ली गयी। मैंने अिसका विरोध किया। सबको ताज्जुब हुआ। मैं महाराष्ट्रीय बापूसे भी बढ़कर अहिंसक कहाँसे हो गया, यही भाव सबके चेहरों पर था। मैंने कहा — 'अहिंसाके खयालसे मैं विरोध नहीं कर रहा हूँ। मेरी दलील है कि आज सरकारके दरबारमें

बापूजीकी कीमत है, वह बापूजीको अपना खैरख्वाह समझती है। अिसलिअे हमें अेककी जगह चार रायफलें मिल सकेंगी। किन्तु देशके करोड़ों किसानोंको ये हथियार कहाँसे मिलेंगे? हमारे किसानोंको बंदूकके बिना आत्मरक्षा करनी पड़ती है, अुसी मर्यादामें रहकर हमें भी अपनी रक्षा करनी चाहिये।'

बापूको मेरी दलील जँची होगी। बदूकका प्रस्ताव वैसा ही रह गया।

अुसके बाद जब सरकारने बापूसे युद्ध कार्यमें मददके लिअे प्रार्थना की और बापूने खेड़ा जिलेमें रँगरूट भरतीका काम शुरू किया, तब अुन्होंने सरकारसे लिखा-पढ़ी करके खेड़ा जिलेके किसानोंको बदूकके लाअिसेन्स भी काफी सख्यामें दिलवाये। जिस दिन मैंने यह बात सुनी, मुझे बड़ा संतोष हुआ।

१६

गुजरातमें गांधीजीके पास जो कार्यकर्ता सबसे प्रथम आये, अुनमें श्री शंकरलाल बैंकर और श्री वल्लभभाअी पटेल दो मुख्य थे। श्री विट्ठलभाअी पटेल भी शुरूसे गांधीजीके पास आये थे, लेकिन अुनके निकट सहवासमें नहीं।

गोधरामें जो प्रथम राजकीय परिषद् हुअी, अुसके साथ श्री ठक्कर बापाने (ये सरवेंट्स ऑफ अिण्डिया सोसायटीके अेक सीनियर मेंबर होनेके नाते स्वाभाविक ही गांधीजीके संपर्कमें आये थे और आते ही अुनकी घनिष्ठता भी हो गयी थी।) अेक अस्पृश्यता-निवारण-परिषद्का आयोजन किया। बापूने कहा — 'अस्पृश्यता-निवारण-परिषद् तो यहाँ ढेड़वाड़ेमें ही हो सकती है।' बात तय हो गयी। राजकीय परिषद्मे ही घोषणा कर दी गयी। तारीख, समय और स्थान बतला दिया गया। सबको आमत्रण भी दे दिया गया। लोग काफी तादादमें आये। परिषद्के बहाने ढेडवाड़ेकी अच्छी सफाअी हो गयी। श्री विट्ठलभाअी पटेल भी अुसमें आये थे। अुनका स्वभाव तो वैसे कुछ नाटकी था ही। जब आये, तो अेक

लुंगी, लम्बा-सा कुरता और साधुओंका-सा कनटोप पहनकर आये। सभामें मचका आयोजन नहीं था। गांधीजी अध्यक्षकी हैसियतसे किसी कुर्सी या पेटी पर खड़े हुअे। अुन्हे सहारा देनेके लिअे श्री विट्ठलभाअी खड़े हुअे। अुनके कंधे पर हाथ रखते हुअे बापूने कहा — 'अूपरी पोशाकसे मैं प्रभावित होनेवाला नहीं हूँ। कधे पर हाथ तो रखने दे रहे हो, लेकिन दिलको भी टटोल लूँगा।'

अुस सभामे महाराष्ट्रके सर्व-प्रथम और सर्व-श्रेष्ठ हरिजन सेवक विट्ठलरामजी शिंदे भी आये थे। अुनका मेरा थोडा पूर्व परिचय था। सभाके बाद हम दोनों बातें करने बैठ गये। शिंदेजी कहने लगे — 'आपके गांधीजी हमें यहाँ टिकने दें यह आशा नहीं। कबसे अुनके साथ विचार-विनिमय करना चाहता हूँ। अपना अनुभव अुनके सामने रखना चाहता हूँ, किन्तु मेरी सुने ही कौन? वे तो तेजीसे आगे बढ़ना चाहते हैं। अपना ही अेक संगठन खड़ा करना चाहते है। काम है भी अितने जोरोंका कि अिनके खिलाफ कोअी शिकायत भी नहीं हो सकती। हमारे लिअे यहाँ स्थान नहीं। हम तो चले।'

अुसी परिषद्में तय हुआ कि यहाँ अत्यज सेवाके लिअे अेक आश्रम खोला जाय।

आश्रम खुल गया। किन्तु योग्य सचालक नहीं मिला। यह सुनते ही मैंने अपने मित्र मामा साहब फड़केको वहाँ भेजा। वे मेरेसे पहले आश्रमके सदस्य हो चुके थे।

अुस दिनसे आजतक मामा साहब गोधरामें ही काम करते आये हैं। अगर तपस्वीकी अुपाधि किसीके योग्य है, तो वह अुन्हींको दी जा सकती है।

१७

शकरलाल बैंकर और मामा साहब दोनोंके मुँहसे भिन्न भिन्न समय पर मैंने सुना है कि गांधीजीके साथ अुनका प्रथम परिचय कैसे हुआ।

शंकरलालजीका बयान है — "हम लोग बम्बअीमें राजनीतिक कार्य करते थे। विलसन कॉलेजमें पढ़ते थे। तभीसे हर शरारतमें कुछ न कुछ हिस्सा लेते ही। (शकरलाल बैंकर और जीवतराम कृपलानी विलसन

कॉलेजमें समकालीन थे और कॉलेजके झगड़ोंमें अेक दूसरेसे परिचित हुअे थे।) मैं और अुमर सोभानी दोनोंने मिलकर होमरूल लीगका काम जोरोंसे चलाया था। अेक दिन सुना गांधी नामका कोअी आदमी देशमें आया है। वह कुछ करना चाहता है। अुसे हम कहाँ तक exploit कर सकते हैं, यह देखनेके लिअे हम अुसके पास गये।

"गांधीजी जमीन पर बैठे थे। हम कुर्सी पर जाकर बैठ गये। बड़े patronizing ढंगसे हमने बातें कीं। लेकिन जब लौटे, तो हम ही प्रभावित हो गये थे। अुन दिनों बम्बअीका Politics हमारे ही हाथमें था। सरकारने मिसेज़ बेसेंटको intern किया था। (गांधीजीके शब्दोंमें कहें तो दफन किया था) मैंने गांधीजीको अेक पत्र लिखा। गांधीजीने जवाब दिया — 'असह्य दुःख या अन्यायका अिलाज सत्याग्रहसे ही हो सकता है।' मैंने गांधीजीका यह पत्र प्रकाशित करके काफी आन्दोलन किया। गांधीजीने भी अुसमें मुझे काफी प्रोत्साहन दिया। फलतः अेनी बेसेंट छोड़ दी गयीं।

"फिर रौलेट अेक्टका आन्दोलन आया। अुसी समयसे अुमर सोभानी और मैं गांधीजीके नेतृत्वमें आ गये। सत्याग्रह सभाकी स्थापना हुअी। गांधीजीका 'हिन्द स्वराज्य' बम्बअी सरकारने जब्त (proscribe) कर ही रखा था। (वह पुस्तक तब जब्त की गयी थी, जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीकामें ही थे।) मैंने 'हिन्द स्वराज्य' की हजारों प्रतियाँ छपवाअीं और खुले आम बम्बअीके रास्तों पर बेचीं। लोगोंने मुँह माँगे दाम (fancy prices) देकर खरीदीं।

"बम्बअी सरकारने देखा कि दमनसे यहाँ काम नहीं चलेगा। तुरन्त ही अुसने रुख पलटा। अैलान किया गया कि 'जो 'हिन्द स्वराज्य' डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में फिनिक्स प्रेसमें छपा है, वह हमने जब्त किया है। अिसके पुनर्मुद्रण पर हमें कोअी कार्रवाअी नहीं करनी है।' मैं तो खुशीसे अुछल पड़ा।" फिर कहने लगे — 'हम अिस बूढ़ेको exploit करने चले थे, लेकिन देखते हैं कि खुद ही अुसकी जालमें फँस गये हैं।'

सचमुच वे अैसे फँसे हैं कि शरारती Politics (राजनीति) तो सब गया किधर ही। अब सिर्फ खादीके काममें ही रमे रहते हैं।

अेक वक्त श्री वल्लभभाअीको मैंने विद्यापीठमें विद्यार्थियोंके सामने भाषणके लिअे बुलाया था। बातचीत करते करते वे आत्मकथाके मूड (mood) में आ गये। अुन्होंने वही विषय ले लिया। कहने लगे — " विलायतसे लौटनेके बाद अपनी प्रैक्टिस और पैसे कमानेमें मशगूल रहा। देशकी राजनीतिका निरीक्षण तो करता था, लेकिन कोअी भी नेता आदर्श तक पहुँचनेवाला नहीं दिखाअी दिया। जितने थे सब बकवास करनेवाले। अिसलिअे मैं तो रोज शामको वकीलोंके क्लबमें जाता और ताश खेलता। सिगार बीड़ी फूँकना ही मेरा आनन्द था। अिस बीच यदि कोअी वक्ता आ ही निकलता, तो अुसकी दिल्लगी करनेमें बड़ा लुत्फ आता था।

" अेक दिन हमारे क्लबमें गांधीजी आये। अिनके बारेमें कुछ पढ़ा तो था ही। अिनका जो व्याख्यान हुआ, वह मैंने दिल्लगीकी वृत्तिसे ही सुन लिया। वे बातें करते थे, मैं सिगरेटका धुआँ निकालता था। लेकिन आखिरमें देखा कि यह आदमी बातें करके बैठनेवाला नहीं है, काम करना चाहता है। तब जाकर विचार हुआ कि देखें तो सही, आदमी कैसा है। मैंने अुनसे कुछ सम्पर्क बढ़ाया। अुनके सिद्धान्तोंका तो मैंने खयाल नहीं किया। हिंसा अहिंसासे मेरा कुछ मतलब नहीं था। आदमी सच्चा है, अपना जीवन सर्वस्व दे बैठा है, देशकी आज़ादीकी अिसे लगन लगी है, और अपना काम जानता है, अितना मेरे लिअे काफी था।

" खेड़ा जिलेमें महसूल तहकूबीका झगड़ा हमने चलाया। गुजरात सभा यह काम अपने सिर लेनेको तैयार नहीं थी। गांधीजीने आश्रममें सत्याग्रह-सभा स्थापित की और काम शुरू किया। अुस वक्तसे मैंने अपनी सेवा गांधीजीको अर्पण की। तभीसे अुनका होकर रहा हूँ। लोग मुझे अंध-अनुयायी कहते हैं, मुझे अुसकी शरम नहीं। जब मैंने अुनका नेतृत्व स्वीकारा था, तब यह भी सोच लिया था कि अिनके पीछे चलनेमें किसी दिन लोग मुँह पर थूकेंगे भी, अिसके लिअे भी तैयार रहना चाहिये। तबसे किसी भी समय मेरे मनमें विक्षेप नहीं आया है। वे रास्ता दिखाते हैं और अुनके कहे अनुसार काम करनेमें मैं विश्वास करता हूँ।"

१९

जब बापू हिन्दुस्तानमें आकर काम करने लगे, अुस वक्त सरकारके पास अुनकी बड़ी अिज्जत थी। अुसने अुन्हें कैसरे-हिन्द मेडल भी दिया था। जब मेडल आश्रममें आया, मैंने अुसे हाथमें लेकर देखा। सोनेका था, काफी मोटा था। अुसकी शकल दोनों ओरसे दबे हुअे अंडे-जैसी थी। मैंने कहा — 'बापू आपने साम्राज्यको बहुत मदद दी है। अुस साम्राज्य-निष्ठाके बदले आपको यह मिला है। सरकार आपको अपने जालमें फँसाना चाहती है।' बापू हँस पडे। बोले — 'क्यों, तुम भी अैसा मानते हो?'

मैं नहीं जानता था कि कैसरे-हिन्द मेडल सिर्फ Humanitarian Service (मानव-दयाके काम) के लिअे दिया जाता है। बापूने मुझे बतलाया। मैंने फिर कहा — 'है तो बड़ा कीमती। आप शायद अिसे बेचकर अिसके पैसे देशसेवाके कार्यमें लगायेंगे। आप तो अैसी कअी चीज़े बेच चुके हैं।' जवाब अितना ही मिला — 'नहीं, अिसे बेचनेका विचार नहीं है, पड़ा रहेगा।'

हम तो अिस तमगेकी बात भूल ही गये; और बापू गये चंपारन, कामके लिअे। वहाँके किसानोंके दुःखकी कहानी सुनकर अुन्हें जाँच करनी थी। वहाँकी सरकारने बापूको बिहार प्रान्त छोड़कर चले जानेकी आज्ञा दी। बापूने जवाब लिखा — 'अपने देश-भाअियोंकी सेवा करनेके लिअे आया हूँ। यहाँसे हटनेकी जिम्मेवारी मैं अपने सिर पर नहीं लेता।' अुस जवाबके साथ ही साथ बापूने आश्रममें भी खत लिखा कि 'सरकारका दिया हुआ तमगा आश्रममें पड़ा है, अुसे तुरन्त वायसरायके पास भेज दो। अगर मेरी सेवाकी कदर नहीं है, तो मैं अिसे कैसे रख सकता हूँ'।

बापूकी यह जागरूकता, जिसे बौद्ध परिभाषामें स्मृति कहते हैं, देखकर मुझे आश्चर्य है।

२०

अैसी ही अेक बात यहाँ याद आती है। अुसे भी यहीं पर दे दें।

१९२१ या २२में बापूको छह बरसकी सजा देकर यरवडा जेलमें रखा गया। वहाँ दो बरसके अन्दर अुन्हें (appendicites) जलोदर हो गया। सरकारने अुन्हें ऑपरेशनके लिअे पूनाके सेसून अस्पतालमें रख दिया। वे थे तो सरकारके कैदी ही, लेकिन मुलाकातके बारेमें ज्यादा सख्ती नहीं थी। अुसी समय मैं भी अपनी अेक सालकी सजा पूरी करके पूना पहुँचा। देखा तो अस्पतालमें बापू अस्पतालके कपड़ोंमें खटिया पर सोये हुअे हैं। विशेष आश्चर्य तो तब हुआ, जब कपड़े विलायती देखे। मैंने अिस पर पूछताछ की। मालूम हुआ बापूजी अस्पतालके सब नियमोंका पालन करना चाहते हैं। अस्पतालका नियम था कि मरीज अपने खुदके कपड़े नहीं पहन सकता। अुसे अस्पतालके दिये हुअे कपड़े ही पहनना चाहिये।

ऑपरेशन हो गया। बापू बहुत ही कमजोर हो गये थे। सबको चिन्ता थी ही। अैसे ही कुछ दिन गये। अेक दिन कर्नल मॅडॉकने आकर बापूसे कहा—'सरकारका हुक्म आया है। मुझे कहते खुशी है कि आप रिहा हो गये। अब आप चाहे यहाँ रह सकते हैं, चाहे जा सकते हैं। मेरी मेडिकल सलाह है कि आपको और कुछ दिन यहीं रहना चाहिये।' अुस सलाहकी स्वीकृतिमें बापूने शायद अेकाध ही वाक्य कहा होगा। लेकिन अुसी वक्त पासके आदमीसे कहने लगे—'मेरे ये कपड़े अुतार दो। मेरे निजी कपड़े ला दो। अब तो अेक क्षणके लिअे भी ये कपड़े बरदाश्त नहीं हो सकेंगे।'

मैं नहीं समझता कि काँटोंका कुरता होता तो भी बापू अितने व्यग्र हो अुठते। खादीके कपड़े पहने, तब कहीं जाकर शान्तिसे बातें करने लगे।

२१

हिन्दुस्तान भरके लोग जानते थे कि बापू केवल फल ही खाते है। हिन्दुओंके विचारसे फलाहारमें दूध भी शामिल है। बापूने जोरोंसे अिसका विरोध किया है। अुनका कहना है कि दूधका आहार फलाहार तो है ही नहीं, वह तो महज मांसाहार है। रक्त, मांस, मज्जाके सत्वसे ही दूध बनता है। वह फलाहारमें नहीं आ सकता। अुसमें हिंसा भले न हो, लेकिन वह मांसाहार तो है ही।

किसी समय बापू कलकत्ता गये थे। वहाँ भूपेन्द्रनाथ वसुके घर मेहमान रहे। बंगालियोंकी खातिरदारी मशहूर तो है ही। जितने सूखे और ताजे मेवे अिकट्ठे हो सकते थे, अिकट्ठे किये गये और अुनसे जितनी भी चीजें बन सकती थीं सब बनवा दीं, और बापूके सामने रख दीं। देखकर बापू हैरान थे। कहने लगे — 'यह क्या, मैं सादगी-पसन्द आदमी हूँ। कितनी झंझट की मेरे लिअे!' बापूने तुरन्त व्रत ले लिया — 'मैं अब हर दिन कुदरती पाँच चीजोंके अलावा अेक भी चीज नहीं खाअूँगा।'

अिसके बाद हम लोगोंमें शास्त्रार्थ छिड़ा। नीबू, संतरा और मोसम्बी अेक ही चीज़ मानी जाय या अलग अलग? गुड़, मिश्री और शक्कर अेक ही चीज़ गिनी जाय या नहीं? कअी सवाल सामने आये। बापू अैसे सवालोंकी चर्चा करनेमें किसी स्मृतिकार-जैसी दिलचस्पी लेते हैं और बालकी खाल निकालने तक चर्चा बढ़ानेसे भी नहीं अूबते।

अब तो सुबह अुन्होंने क्या क्या खाया है, अिसका स्मरण रखकर शामकी तैयारी करनी पड़ती थी। वे अक्सर सुबह तीन ही चीजें खाकर, वे ही चीज़ें शामको न मिलें और दूसरी खानी पड़े, अिसलिअे दो नयी चीज़ोंकी गुंजायश रखते थे। सूर्यास्तके पहले शामका भोजन कर लेनेका अुनका नियम था ही। शामकी सभाओंका समय सँभालना और साथ साथ अुनके भोजनका समय सँभालना अुनके साथ रहनेवालोंके लिअे योगसिद्धि-सा कठिन हो जाता था।

कुछ दिन बाद बापूने अनुभव किया कि हिन्दुस्तान कोअी दक्षिण अफ्रीका नहीं है। यहाँ फल आसानीसे नहीं मिलते। दक्षिण अफ्रीकामें केले,

अनानास, सेव, संतरे आदि सब कुछ आसानीसे मिल जाते थे और पेटभर खाते थे। चिल्गोजाकी भी भरमार थी। वैसे खानेमें वे कमजोर तो थे ही नहीं। अिसलिअे जब देखा कि हिन्दुस्तानमें फलाहार नहीं चल सकता, तो जहाँ गये वहीं मूँगफली सेककर साथ ले जाने लगे। नारियल मिलता तो अुसका भी दूध या रस ले लेते। लेकिन आखिर बहुत सोचने पर यही तय किया कि हिन्दुस्तानमें अनाजके बिना काम नहीं चल सकता। तबसे चावल, रोटी या खिचड़ी लेने लगे। फिर यह अनुभव हुआ कि जब अनाज लेने लगे, तो नमक भी लेना ही पड़ेगा। वह भी शुरू हो गया।

खेड़ा जिलेमें रंगरूट भरती करानेका काम किया, तब अुन्हें खूब पैदल घूमना पड़ा। आहारमें बहुत हेरफेर हुआ। वह माफिक नहीं आया। फिर बीमार पड़े। अेक रातको तो पेटमें अैसा जबरदस्त दर्द रहा कि अुन्होंने मान लिया कि अब यह शरीर नहीं रहेगा। अुसी दिन बापूका छोटा लड़का देवदास मद्राससे साबरमती आ रहा था। सारी रात बापूने:

'विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निस्पृह ।
निर्ममो निरहंकार. स शांतिमधिगच्छति ॥'

रटते रटते पूरी की। दूसरे दिन सुबह अुठकर रातका अनुभव कहने लगे। बोले — 'अुस हालतमें अेक कामना मनमें रह जाती। देवदास मद्राससे आ ही रहा है, अुसके पहुँचनेके पहले अगर शरीर छूट जाय तो अुसे कितना दुःख होगा। अुसके आने तक यदि शरीर रह जाय, तो अुसे अुतना आघात न लगेगा।'

गीताके श्लोकने अुन्हें शान्ति दी और रात टल गयी।

सुबह हम शिक्षकोंको बुलाया। मेरे साथियोंने सोचा कि हमसे अलग अलग बातें करना चाहते हैं। सबने मुझे पहले भेजा। मैं जाकर चुपचाप बैठ गया। बापूने कहा — 'सबको बुलाओ।' सबके अिकट्ठा होने पर अगली रातका अनुभव सुनाया और कहने लगे — 'मुझे विश्वास नहीं कि मेरा शरीर टिकेगा। मेरी ओरसे हिन्दुस्तानको मेरा आखिरी संदेश

कह दो कि हिन्दुस्तानका अुद्धार अहिंसासे ही होगा और हिन्दुस्तान अहिंसाके द्वारा जगतका अुद्धार कर सकेगा। बस अितना कहकर चुप हो गये। हमारी अपेक्षा थी कि आश्रमके बारेमें कुछ कहेंगे, हममेसे हर अेकको कुछ न कुछ कहेंगे। लेकिन कुछ भी नहीं कहा। फिर अुसी गीताके श्लोकमें मग्न हो गये। बड़ी देर तक हम लोग बैठे रहे। फिर अुठकर चले गये।

अुनकी बीमारी बढ़ती ही गयी। हम सब लोग चिंतित हो गये। अितनेमें सरकारने रौलेट अेक्टका मसविदा प्रकाशित किया और गांधीजीके अन्दर जिजीविषाने प्रवेश किया। कहने लगे — 'मैं अिस वक्त तगड़ा होता, तो सारे देशमें घूमकर अुसे जाग्रत करता। युद्धमें हमने सरकारको मदद दी, अुसके बदलेमें हमें रौलेट अेक्ट मिल रहा है!'

बम्बअी और महाराष्ट्रसे चन्द राष्ट्रसेवक बापूको मिलने आये। रौलेट अेक्टका विरोध करनेके लिअे, अंतिम हद तक जानेके लिअे कौन-कौन तैयार है अिसकी अेक फेहरिस्त बापूने तैयार करवाअी। अुनका खयाल था कि अैसे लोगोंको वे बिस्तर पर पड़े पडे सलाह सूचना देते रहेंगे। लेकिन कार्यके महत्वने दवाका काम किया। वे खूब चंगे हो अुठे और अुन्होंने स्वयं ही आन्दोलन शुरू किया।

२२

हम साबरमती आश्रममें थे। बापू मगनलालभाअीके घरमें रहते थे। अिसका अर्थ यह हुआ कि मगनलालभाअीके देहान्तके बादकी यह घटना है। बापूको जिस तरह देशके सार्वजनिक कार्योंकी समस्यायें हल करनी पड़ती हैं, अुसी तरह अुनके मित्रोंकी कौटुंबिक समस्यायें भी अनेक बार हल करनी पड़ती हैं। शायद अैसे नाजुक कार्योंमे अुनको अधिक सफलता मिलती है और अैसे कार्योंके द्वारा की हुअी राष्ट्रसेवा सार्वजनिक सेवासे बढ़ी चढ़ी है।

बापूके परिचयके अेक परिवारके युवकका ब्याह तय हुआ था। और जब कन्या पक्षके लोग सम्बन्ध तय करके अेक चिन्तासे मुक्त हुअे

ही थे कि अितनेमे लड़का बिगड़ बैठा । कहने लगा — 'मुझे यह शादी नहीं करनी है ।' अुसे बहुत समझाया गया, पर वह नहीं माना । अन्तमें कन्या पक्षके लोग हताश होकर बापूके पास आये । अुनको सकोच था ही कि बापू जैसे विश्ववंद्य पुरुषका समय अैसे काममें हम कैसे लें । लेकिन लाचार आदमी क्या नहीं करता! बापूने अुस लड़केको बुलवाया और अुससे बहुत बातें कीं । कन्या पक्षके लोग बैठकर सब सुनते ही थे । दो तीन दिन तक लगातार बापूने अुस लड़केके साथ सिरपच्ची की । लड़का कितना वाहियात था, यह सब देख रहे थे ।

तीसरे दिन किसी कार्यवश मैं बापूके पास गया । लड़का जोर जोरसे अपनी कठिनाअी बताते हुअे अपने दिलकी फरियाद कर रहा था । कहता था — 'मेरे पिता तो मुझसे पॉच घण्टेका काम मॉगते हैं। कहते हैं कि दुकान पर पॉँच घण्टे तक बैठना होगा । अब बापू, आप ही बताअिये आजकलके लड़के दो घण्टेसे ज्यादा काम दे सकते हैं? मेरी परेशानी आपको क्या कहूँ —' अित्यादि ।

बापूने सब कुछ शान्तिसे सुना और अन्तमें लड़केके मुँहसे विवाहकी स्वीकृति निकाल ली । शादी करनेके लिअे वह राजी हुआ । कन्या पक्षके लोग चिन्ता मुक्त हुअे ।

अितनेमें बापू गभीर हो गये । फिर अुस लड़केको जरा बाहर बैठनेको कहा और कन्यावालोंसे अपील की कि अिस लड़केकी हालत तो आपने तीन दिन तक देखी ही है । कैसी परिस्थितिमे अुससे स्वीकृति लेनी पड़ी, यह भी आपने देख लिया । अब मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या अब भी आप अिस विवाहको चाहते हैं?

कन्या पक्षका जो प्रधान पुरुष था, अुसके चेहरेकी ओर मैं देखता रहा । अुसके मनमें न जाने सारी दुनिया घूम रही थी । अुसके मुँहसे न हाँ निकले न ना । और बापू तो अपनी विलक्षण भेदक दृष्टिसे अुसकी तरफ देखते ही रहे । खूब सोचकर अुस आदमीने कहा — अुसका गला गद्गद हो गया था — 'महात्माजी आपकी बात सही है । हमारा आग्रह अब नहीं रहा ।' अुसी क्षण बापूजीने अुस लडकेको बुलाया और तुरन्त कहा — 'तुम पर मैं बोझ नहीं डालना चाहता । अुनसे मैंने

बातचीत की है। तुम अिस विवाह सम्बन्धसे मुक्त हो। अब तुम जाओ।'

लड़का चला गया। कन्या पक्षके लोग भी वहाँसे अुठे। बापूजी मेरी ओर मुड़े। मेरी बात सुननेके पहले कहने लगे—'काका, आज गोरक्षाका काम किया। जब मैं गोरक्षाकी बात करता हूँ, तब केवल चतुष्पद जानवरोंका ही खयाल मेरे मनमें नहीं रहता। न जाने हम अुस बेचारी बालिकाका क्या करने बैठे थे! यह मंगलकार्य हो गया।'

अितना कहकर मेरे कामकी ओर बापूजीने ध्यान दिया। फिर भी अुनके चेहरे पर मुक्तिका निःश्वास दीर्घ काल तक बना रहा।

२३

बिहार और अुड़ीसाके लोगोंके प्रति बापूके मनमें विशेष करुणा है। अुड़ीसाकी जनता बिलकुल असहाय, पिसी हुअी है। बिहारके निलहे-गोरोंने वहाँकी जनताको कम नहीं पीसा था। बिहारकी जनता भोली और निष्ठावान् है। वहाँ परदेकी प्रथा है। अुसे दूर करनेके लिअे वहाँके लोगोंने बापूसे अेक प्रचारिका माँगी। आश्रमवासियोंकी शक्तिके अूपर बापूका विशेष विश्वास रहता है। अुन्होंने अपने भतीजे, आश्रम व्यवस्थापक श्री मगनलालभाअीकी लड़की राधाको बिहार भेज दिया। चि० राधा भी आत्मविश्वासके साथ वहाँ गयी। अुसने वहाँ अच्छा काम किया। अेक समय अपनी लड़कीको मिलनेके लिअे मगनलालभाअी वहाँ गये। वहीं पर बीमार होकर अुनका देहान्त हो गया। आश्रमके लिअे तो वह वज्रपातके जैसा था। तार आते ही सबके होश अुड़ गये। वह सोमवारका दिन था। बापूका मौन था। तार सुनते ही बापू अपने स्थानसे अुठकर मगनलालभाअीके घरमें पहुँच गये। अितनेमें मैं भी पहुँचा। मुझसे रहा न गया। मैं रो पड़ा। तब बापूने अपना मौन तोड़कर मेरा सांत्वन किया। मगनलालभाअीके लड़के लड़कियोंको बुलाकर अपने पास बैठाया। जब मैं वहाँसे जानेके लिअे तैयार हुआ, तो बापूने कहा—'जब मैंने सोमवारके मौनका व्रत लिया, तभी अुसमें दो अपवाद रखे थे। अगर मेरे शरीरको कोअी असह्य

पीड़ा होती हो, या दूसरेका अैसा ही दुःख हो, तो आवश्यक बातें करनेके लिअे मौन टूट सकता है। अितने बरसों बाद आज ही अुस अपवादका सहारा लेना पड़ा।'

बापू मगनलालभाअीके घरमें अुनकी पत्नी और बच्चोंको सान्त्वना देनेके लिअे गये थे, लेकिन वहीं रह गये, अपने स्थानपर लौटे ही नहीं। आवश्यक चीज़ें वहीं पर मँगवा लीं। मगनलालभाअीके परिवारको अनुभव होने ही नहीं दिया कि अब वे अनाथ हो गये हैं।

२४

आश्रमके प्रारंभके दिनोंकी बात है। अहमदाबादमें मिल मजदूरोंने अपनी मजदूरी बढ़ानेके लिअे आन्दोलन शुरू किया। मिल मालिकोंके मुखिया थे श्री अंबालाल साराभाअी। और मिल मजदूरोंके पक्षमें थीं अुन्हें संगठित करनेवाली श्री अंबालाल साराभाअीकी बहन अनसूयाबहन। दोनोंके मनमें गांधीजीके प्रति श्रद्धा थी। दोनोंके प्रति गांधीजीके मनमें सद्‌भाव था। समझौता नहीं हुआ और सत्याग्रहकी नौबत आयी। गांधीजीने मिल मजदूरोंसे प्रतिज्ञा करवाअी कि जब तक ३५ फी सदी वृद्धि न हो, तब तक कामपर वापस नहीं जायेंगे। सत्याग्रहकी अवधिमें मजदूरोंके खानेपीनेका क्या प्रबंध? अनसूयाबहन अिसकी चिन्तामें पड़ीं। करीब दस हजार रुपये तो वे खर्च कर ही चुकी होंगी। जब बापूने सुना तो कहने लगे — 'यह गलत रास्ता है। मिल मालिकोंके सामने तुम्हारी पूँजी कहाँ तक काम आयेगी? अगर अुन्हें पता चल गया कि तुम्हारे पैसेके बल ये लोग लड़ रहे हैं, तो वे हरगिज़ समझौता नहीं करेंगे। और मजदूर तो तुम्हारे पशु आश्रित बनेंगे। सत्याग्रह कोअी खेल नहीं है। वह अग्नि-परीक्षा है। अिन लोगोंको अपने ही बलपर लड़ना चाहिये।'

अब गरीब लोग कहाँ तक फाका करके सत्याग्रह कर सकते थे! सत्याग्रह थी भी अेक नयी चीज। अुनके लिअे ही नहीं, सारे देशके लिअे। कुछ ही दिनोंमें मजदूरोंमें कमजोरी दिखाअी देने लगी। वे हारकर काम पर जाने के लिअे तैयार हो गये। बापूसे यह सहा न गया। 'हम

भूखे मरेंगे, किन्तु प्रतिज्ञा नहीं तोड़ेंगे', असी वृत्ति मजदूरोंमें अगर पैदा करनी है, तो स्वयं ही अुन्हें भूखका पाठ भी सिखाना पड़ेगा।

मजदूरोंकी सभा बुलाअी गयी। अुसमें लोगोंको समझाते हुअे बापूने कहा — 'जब तक आप लोगोंको ३५ फी सदी वृद्धि न मिले, आपको अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना चाहिये। आप लोग हार जायँ, यह मुझे सहन नहीं होगा। मुझे साक्षी रख कर आपने प्रतिज्ञा ली है। अिसलिअे अब मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक आपकी शर्त पूरी नहीं होगी, मैं भूखा ही रहूँगा।' अिसका असर बिजली-जैसा हुआ। मजदूरोंमें दैवी शक्ति आ गयी। रोज शामको बापू आश्रमसे चार-छह मील चलकर मजदूरोंके मुहल्लोंमें जाते और वहाँ प्रतिज्ञा पालन और अहिंसा पालनका महत्व समझाते। अुनके बीच पढ़नेके लिअे रोज अेक नयी पत्रिका भी छपवाते।

बापूके अुपवासकी बात सुनते ही महादेवभाअीने और मैंने बापूके साथ अुपवास करनेका सोचा। बापू नहीं खाते तो हमसे कैसे खाया जा सकता है। महादेवभाअीने बापूसे अपना अिरादा जाहिर किया। अुन्होंने मना किया। महादेवभाअीने माना नहीं। चर्चा और दलीलके लिअे समय नहीं था। बापू सख्तीसे बोले — 'देखो महादेव, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा धर्म क्या है। जाओ, खाना खाओ। नहीं खाओगे, तो मैं तुम्हारा मुँह नहीं देखूँगा।'

बेचारे महादेव अपना-सा मुँह लेकर मेरे पास आये। कहने लगे — 'बापू मेरा मुँह न देखें, तो मैं जीअूँ कैसे?' मैंने कहा — 'बापू ही तो हमारी conscience हैं। जब वे कहते हैं कि खाना खाना चाहिये, तो हमें खाना चाहिये। खाना खाकर ही हमें अपनी परीक्षा देनी है।'

मेरा नाम भी बापू तक चला गया था। मैं अुनके पास गया और सफाअी देने लगा — 'मैंने महादेवसे सब कुछ सुन लिया है। हम दोनोंने खानेका तय किया है। मैं सिर्फ खजूर और पानी पर रहूँगा। लेकिन अिसका अुपवासके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं है। यह मेरा स्वतंत्र प्रयोग है।' अुन्होंने तुरन्त कह दिया — 'हाँ, ठीक है, अपना प्रयोग तुम कर सकते हो।'

सचमुच ही मैं अैसा प्रयोग करनेका सोच ही रहा था। मुझे डर था कि बापू शायद शंका करेंगे कि मैंने चालाकीसे नया रास्ता निकाला है। लेकिन बापूके मनमें शंका कभी आती ही नहीं। बिना किसी शक-शुबहाके अुनसे अिजाजत पाकर मुझे बड़ा संतोष हुआ।

हमारा झगड़ा तो अिस तरह निपटा। अुधर अनसूयाबहनने भी सोचा कि मैंने ही बापूको अिस मजदूरोंके झगड़ेमे खींचा है। अिसलिअे जब वे अुपवास कर रहे हैं, तो मुझे भी अुपवास करना चाहिये। अनसूया बहनकी यह बात मजदूरोंके कानों तक पहुँच गयी। वे बड़े ही बेचैन हुअे। अनसूयाबहन आश्रममें आयी थीं। वहाँ अेक मुसलमान मजदूर आया और कहने लगा — 'महात्माजी तो महात्माजी है। वे अुपवास करें तो हम बरदाश्त कर सकते हैं। लेकिन अगर आप अुपवास करेंगी, तो हमसे सहन नहीं होगा। मेरा सिर ठिकाने नहीं रहेगा, शायद किसी मिल मालिकका खून भी कर बैठूँ।' यह तो अिदं तृतीयम् (नयी बात) हुआ। बापूने अनसूया बहनको भी अुस वक्त समझाया कि अुपवास करनेका तुम्हारा धर्म नहीं है। फिर, प्रार्थनाके समय कहने लगे— 'अगर मेरे साथ तुम लोग अुपवास करोगे, तो अुससे मेरी शक्ति बढ़नेवाली नहीं है। अुलटी तुम लोगोंकी चिंता मुझे रहेगी। अिसलिअे तुम्हारा धर्म यह है कि अच्छी तरह खा-पीकर मेरे साथ काम करते रहो। अगर अिस अुपवासमें मेरा देह छूट जाय, तो अुस दिन भी तुम्हें अफसोस नहीं करना चाहिये। अगर आश्रम जीवनमें मिष्टान्न भोजनकी गुंजायश हो, तो अुस दिन तुम्हें मिष्टान्न बनाकर खाना चाहिये। मगर मेरे साथी मेरे साथ फाका करने लगें, तो मेरा सब काम ही रुक जायेगा और मैं कभी अुपवास कर ही नहीं सकूँगा।' यह सत्याग्रह कब तक चला और अुसका अंत कैसा हुआ और बापूके शब्दोंमें 'दोनों पक्षोंकी जीत' कैसे हुअी, सो यहाँ बतानेकी आवश्यकता नहीं। महादेवभाअीने 'अेक धर्म युद्ध'* में अिसका स्पष्ट विवरण दिया है।

---

* हिन्दी अनुवादक . श्री काशिनाथ त्रिवेदी, प्रकाशक — नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद।

२५

सन् १९२६ की बात होगी। बापूजी दक्षिणकी तरफ खादीके लिअे दौरा कर रहे थे। तमिलनाडका दौरा तो पूरा हो चुका था। आंध्रमें मोटरसे मुसाफिरी चल रही थी। हम चिकाकोल पहुँचे। रातके दस बजे होंगे। वहाँ पहुँचे तो देखा कि अच्छी अच्छी कातनेवालियोंके कताओी-दंगलका कार्यक्रम रखा गया है। चिकाकोलकी महीन खादी सारे हिन्दुस्तानमे मशहूर है। हम दिन रातके मोटरके सफरसे थके हुअे थे। हमने सोचा, बापूके लिअे तो चारा ही नहीं। अुन्हें दंगलमें बैठना ही पड़ेगा। हम नाहक क्यों परेशान हों। सीधे जाकर सोना ही अच्छा है। महादेवभाओी और मैं अपने अपने स्थानपर जाकर सो गये। बापूका बिस्तर लगा हुवा था। वे कब आकर सोये हमें मालूम नहीं।

सुबह ४ बजे हम प्रार्थनाके लिअे अुठे। हाथ मुँह धोकर प्रार्थना शुरू करते हैं, अुसके पहले बापूने पूछा — 'रातको सोनेके पहले क्या तुम लोगोंने प्रार्थना की थी?' मैंने कहा — 'जब आया तो अितना थक गया था कि आते ही सो गया। प्रार्थनाका स्मरण ही न रहा। जब अभी आपने पूछा तो खयाल हुआ कि रातकी प्रार्थना रह गयी।'

महादेवभाओीने कहा — 'मैं भी सोया तो अैसे ही था। लेकिन आँख लगनेके पहले स्मरण हो आया। अिसलिअे बिस्तर पर बैठकर ही प्रार्थना कर ली। काकाको नहीं जगाया।'

फिर बापूने अपनी बात सुनाओी। कहने लगे — 'मैं तो घटा डेढ़ घंटा दंगलमें बैठा। वहाँसे आकर अितना थक गया था कि मैं भी प्रार्थना करना भूल गया और यों ही सो गया। फिर जब दो ढाओी बजे नींद खुली, तो स्मरण हुआ कि रातकी प्रार्थना नहीं हुओी। मुझे अैसा आघात लगा कि सारा शरीर काँपने लगा। मैं पसीनेसे तर बतर हो गया। अुठकर बैठा, खूब पश्चाताप किया। जिसकी कृपासे मैं जीता हूँ, अपने जीवनकी साधना करता हूँ, अुस भगवानको ही भूल गया! कितनी बड़ी गलती हो गयी यह! मैंने भगवानसे क्षमा माँगी। लेकिन तबसे नींद आयी ही नहीं, अैसा ही बैठा हूँ।'

अिसके बाद हमने सुबहकी प्रार्थना की। महादेवभाअीने भजन गाया। फिर बापू बोले — 'मुसाफिरीमें भी हमें शामकी प्रार्थना मुकर्रर समय पर ही करनी चाहिये। हम सारे दिनका कार्यक्रम पूरा करके सोनेके पहले जब मौका मिले प्रार्थना करते हैं। यही गलती है। आजसे शामके ७बजे प्रार्थना होगी, फिर हम कहीं भी हों।'

हमारी मोटरकी मुसाफिरी चालू तो थी ही। शामके ७बजे हम कहीं भी हों, जंगलमें या किसी बस्तीमें, मोटर रोककर हम प्रार्थना कर लेने लगे।

२६

अभी अभी लोकमान्यका अेक छोटासा जीवन-चरित्र राष्ट्रीय-शिक्षणके आचार्य श्री आपटे गुरुजीने प्रकाशित किया है। अुसकी प्रस्तावनामें बम्बअीके स्पीकर माननीय श्री मावळंकरने नीचेकी बात लिखी है:

१९१५में अहमदाबादमें कांग्रेसकी प्रान्तीय परिषद् थी। अुन दिनों यह परिषद् नरम दलके हाथमें थी, हालॉकि परिषद्की कार्रवाअी चलानेका काम नवयुवक ही करते थे। मि० जिन्ना अध्यक्ष थे। अुनका जुलूस निकलनेवाला था। स्वागत समितिने लोकमान्य तिलकको भी निमन्त्रण भेजा था। अुन्होंने आना स्वीकार किया था। युवक वर्ग चाहता था कि लोकमान्यका भी अेक जुलूस निकले। लेकिन परिषद्के सर्वेसर्वा अिसके लिअे तैयार नहीं थे। लोकमान्य गरम दलके जो ठहरे। अुन्होंने दलील की कि फिर तो सब नेताओंका जुलूस निकालना होगा। गरज यह कि परिषद्की ओरसे लोकमान्यका स्वागत नहीं हो सका। नवयुवक हतोत्साह हो गये।

अुन दिनों गांधीजीका राजनीतिक आन्दोलनमें कुछ स्थान नहीं था, न वे अभी महात्मा बने थे। यहाँ तक कि वे परिषद्के सदस्य भी नहीं थे। जब अुन्होंने सुना कि लोकमान्यका सार्वजनिक स्वागत नहीं हो रहा है, तो अुन्होंने अपने दस्तखतसे अेक पत्रिका छपवाकर हजारों प्रतियाँ अहमदाबादमें बँटवा दीं। अुसमें अितना ही था कि लोकमान्य

जैसे अलौकिक राष्ट्रपुरुष हमारे शहरमें पधार रहे हैं, अुनके स्वागतके लिअे मैं स्टेशन जा रहा हूँ। नगरवासियोंका धर्म है कि वे भी अुपस्थित रहें।

अिस पत्रिकाका जादू-सा असर हुआ। स्टेशन और रास्तोंपर लोगोंकी बेशुमार भीड हुअी और अपूर्व शानसे स्वागत हुआ।

२७

आश्रमके शुरूके दिन थे। हम बापूके पास देर तक बैठकर अिधर अुधरकी बातें भी कर सकते थे।

अेक दिन रातको देर तक हमारी बातें होती रहीं। अुसमें लोकमान्यका जिक्र आया। बापूने कहा — 'हिन्दुस्तानके स्वराज्यका दिनरात अखण्ड ध्यान करनेवाला वही अेक पुरुष है।' अितना कहकर वे अेक क्षण ठहरे, फिर कहने लगे — 'मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि अिस क्षण अगर लोकमान्य सोते नहीं होंगे, तो या तो स्वराज्यकी ही कुछ न कुछ बात सोच रहे होंगे या फिर अुसीकी चर्चा कर रहे होंगे। अुनकी स्वराज्य-निष्ठा अद्भुत है।'

२८

३१ जुलाअी १९२०का दिन था। लोकमान्यका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है, यह सुनकर मैं बम्बअी गया था। सरदारगृहमें जाकर मैंने लोकमान्यके दर्शन किये। दर्शनकी अिजाजत पाना आसान नहीं था। क्योंकि वे करीब करीब अुनके अन्तिम क्षण थे। अिजाजत पाकर मैं अंदर गया। साँस बहुत तेजीसे चल रही थी। बम्बअीके सब बड़े बड़े डॉक्टर अिर्दगिर्द खड़े थे। मुझसे अुस कमरेमें ज्यादा ठहरा न गया। हृदय भर आया। मैं वहाँसे लौटकर अुस कमरेमें गया, जहाँ महाराष्ट्रके सब नेता गमगीन होकर बैठे थे। मुझे कुछ अस्वस्थ देखकर श्री बापूजी अणेने अपने पास बुलाया और असहयोगकी नीतिके बारेमें कुछ चर्चा की।

शामकी ही गाड़ीसे मैं अहमदाबाद रवाना हो गया। मैंने बापूसे अितना ही कहा — ‘दर्शन हो चुका, अब मैं आश्रम लौटता हूँ।’

अुसी रातको लोकमान्यका देहान्त हो गया। फोन पर समाचार सुनते ही बापूके मुँहसे पहला वाक्य यह निकला — ‘अरे रे, मैंने काकाको रोक लिया होता तो अच्छा होता।’

अिसके बाद बहुत ही गंभीर विचारमें पड़ गये। सारी रात बिस्तर पर बैठे ही रहे। नजदीक ही दिया जल रहा था, अुसे भी वैसा ही रहने दिया। दियेकी ओर ताकते हुअे सोचते ही रहे।

पिछली रातको महादेवभाअीकी आँख खुली। अुन्होंने देखा बापू तो वैसे ही बैठे हैं। वे अुनके पास गये। बापूके मुँहसे निकला — ‘अब अगर मैं किसी अुलझनमें पड़ूँगा, तो श्रद्धापूर्वक किसके साथ परामर्श करूँगा। और जब कभी सारे महाराष्ट्रकी मददकी जरूरत आ पड़ेगी, तो किससे कहूँगा।’ कुछ ठहरकर फिर बोले — ‘आज तक मैं स्वराज्यका कार्य करता रहा, लेकिन स्वराज्यका नाम जहाँ तक हो सका टालता रहा हूँ। लेकिन अब तो लोकमान्यका चलाया हुआ स्वराज्यका अखण्ड जाप आगे चलाना होगा। अिस बहादुर वीरके हाथकी स्वराज्यकी ध्वजा अेक क्षणके लिअे भी नीचे न झुकने पाये।’

दूसरे दिन लोकमान्यकी स्मशान यात्रामें बापू शरीक हुअे। अुन्होंने अरथीको कंधा भी दिया। लेकिन अैसे गंभीर प्रसंगों पर जो शान्ति और गाम्भीर्यका वायुमण्डल रहना चाहिये, वह लोगोंमें न देखकर बापूके मनको आघात पहुँचा। बहुत ही दुखी हुअे। किन्तु बादमें अुसी चीजको अुन्होंने नयी दृष्टिसे देखा। जब अहमदाबाद आये, तो प्रार्थनामें अुसे दर्शाते हुअे कहा — ‘जो जनता वहाँ अिकट्ठी हुअी थी, वह कुछ शोक करनेके लिअे थोड़े ही थी। वह तो अपने राष्ट्रनेताका सम्मान करने आयी थी। अुसके पाससे शोकके गाम्भीर्यकी अपेक्षा ही हम क्यों करें?’

२९

सन् २६ की बात है। बापू राजाजीके प्रबन्धके अनुसार दक्षिणमें खादी यात्रा कर रहे थे। यात्रा करते करते हम शिमोगाके पास पहुँचे। वहाँसे गिरसप्पाका प्रपात नजदीक था। राजाजीने वहाँ जानेके लिअे मोटर आदिका पूरा प्रबन्ध किया था। रास्ता करीब दस-बारह मीलका था। राजाजी, अुनके बालबच्चे, देवदास, गंगाधरराव देशपांडे, मैं, मणिबेन पटेल (वल्लभभाअीकी लड़की) अैसे बहुतसे लोग तैयार हो गये। मैंने बापूसे प्रार्थना की कि आप भी चलिये। अुनकी अरुचि देखी तो मैंने कहा — 'लार्ड कर्जन हिन्दुस्तानमें आया, तो मौका मिलते ही पहले वह गिरसप्पा देखने आया था। दुनियामें यह प्रपात सबसे अूँचा है।' बापूजीने पूछा — 'नायगेरासे भी?' अपने ज्ञानका प्रदर्शन करते हुअे मैंने कहा — 'नायगेरामें गिरने-वाले पानीका घनाकार (volume) सबसे अधिक है, लेकिन अूँचाअीमें तो अुससे बढ़नेवाले सैकड़ों प्रपात हमारे यहाँ हैं। गिरसप्पाका पानी ९६० फीटकी अूँचाअीसे अेकदम सीधा गिरता है। दुनियामें कहीं भी अितना अूँचा प्रपात नहीं है।'

मैं चाहता था कि बापू पर भी पानी चढ़ जाय। लेकिन अुन्होंने तो मेरे पर ही पानी डाल दिया। धीरेसे पूछने लगे — 'और आसमानसे बारिश गिरती है, वह कितनी अूँचाअीसे?' मैं मनमें झेंप गया। फिर भान हुआ कि — 'मैं अेक स्थितप्रज्ञसे बातें कर रहा हूँ।' मैंने अब अुन्हें फुसलानेकी कोशिश नहीं की, लेकिन दूसरा प्रस्ताव रखा — 'अच्छा, आप नहीं आते, तो न आअिये। महादेवभाअीको भेज दीजिये। आपके कहे बिना वे नहीं आयेंगे।' बापूने बिना झिझकके कहा — 'महादेव नहीं आयगा। मैं ही अुसका गिरसप्पा हूँ।' मुझे खयाल नहीं था कि वह अुनका 'यंग अिण्डिया' का दिन है। अपने अुस तूफानी दौरेमें भी 'यंग अिण्डिया' और 'नवजीवन' दो अखबार चलानेका भार वे दोनों लिये हुअे थे। अुस दिन वे अगर नहीं लिखते, तो अखबार

नहीं निकल पाते । मैं चिढ़ गया, बोला — 'न आप आते हैं, न महादेवको भेजते हैं, तो मैं भी किसलिअे जाअूँ? मुझे भी नहीं जाना ।' बापूने बड़ी नरमीसे समझाया — 'गिरसप्पा देखने जाना तुम्हारा स्वधर्म है। तुम अध्यापक हो न? वहाँ हो आओगे तो अपने विद्यार्थियोंको भूगोलका अेक अच्छा पाठ पढ़ा सकोगे । तुम्हें तो जाना ही चाहिये ।'

बचपनसे जिस गिरसप्पाकी बातें सुनता आ रहा था, और जिसे देखनेके संकल्प करते करते ही मैं छोटेका बड़ा हुआ था, अुसे देखने जानेके लिअे अिससे अधिक आग्रह मेरे लिअे आवश्यक नहीं था । मैं तरस तो रहा ही था, लेकिन बापूका आदेश पाकर अब जाना कर्तव्यरूप हो गया। मैं खुशी खुशी तैयार हो गया । गिरसप्पा * देखा और कृतार्थ हुआ ।

मैंने बापू परकी चिढ़का सारा किस्सा गुजरातीमें कहीं लिखा है। बापूने भी अुसे पढ़ा तो होगा ही ।

अिसके कोअी १५ बरस बाद किसी कारणसे बापूने महादेवभाअीको मैसूरके दीवान सर मिर्ज़ाके पास भेजा । कोअी भी नाजुक चर्चा (negotiations) होती, तो बापू महादेवभाअीको ही भेजते थे। महादेवभाअी जाने निकले । बापूने कहा — 'देखो मैसूर जा रहे हो । वहाँके कामके लिअे कुछ तो ठहरना ही पड़ेगा । अैसे यहाँ भी जल्दी लौटनेकी जरूरत नहीं है । अबकी बार गिरसप्पा जरूर देख आओ । मैंने सर मिर्जाको भी लिखा है । वे तुम्हारा सब प्रबन्ध कर देंगे ।'

महादेवभाअी गिरसप्पा देख आये । मै समझता हूँ अुनसे भी ज्यादा समाधान मुझे हुआ । और बापूको शायद यह समाधान होगा कि मैं अेक कामसे दोनोंको संतुष्ट कर रहा हूँ ।

---

* जहाँ प्रपात गिरता है, वहाँ नीचे अेक गाँव है। अुसका नाम है गिरसप्पा। अुसपरसे अंग्रेज़ोंने अुसका नाम रखा गिरसप्पा फाल्स। अुसका असली नाम है 'जोग'। पुरानी कन्नड भाषामें प्रपातको ही जोग कहते हैं । शरावती नदीका यह जोग है । शरावतीको भारंगी भी कहते हैं।

अिसी दौरेकी बात है। हम सुदूर दक्षिणमें नागरकोविल पहुँचे थे। वहाँसे कन्याकुमारी दूर नहीं है। अिसके पहले किसी समय बापू कन्याकुमारी हो आये थे। वहाँके दृश्यसे प्रभावित भी हुअे थे। आश्रममें लौटकर कन्याकुमारीके बारेमें अुत्साहके साथ बात भी की थी।

हम नागरकोविल पहुँचे तो बापूने तुरन्त ही गृहस्वामीको बुलाकर कहा — 'काकाको मैं कन्याकुमारी भेजना चाहता हूँ। अुसके लिअे मोटरका प्रबन्ध कीजिये।' अुन्होंने स्वीकार किया।

कुछ समय बाद मेरे जानेका कोअी लक्षण न देखकर अुन्होंने गृहपतिको फिरसे बुलाया और पूछा कि मेरे जानेका प्रबन्ध हुआ या नहीं। किसीको काम सौंपनेके बाद अुसके बारेमें फिरसे दर्याफ्त करते बापूको मैंने कभी नहीं देखा था। मैं समझ गया कि बापू अुस स्थानको देखकर कितने प्रभावित हुअे हैं। मैंने कहीं पढ़ा भी था कि स्वामी विवेकानन्द भी वहाँ जाकर भावावेशमें आ गये थे और दरियामें कूदकर कुछ दूर अेक बड़ा पत्थर है वहाँ तक तैरते गये थे। मैंने बापूसे पूछा — 'आप भी आयेंगे न?' बापूने कहा — 'बार बार जाना मेरे नसीबमें नहीं है। अेक दफा हो आया अितना काफी है।' मुझे कुछ नाराज हुआ देखकर गंभीरतासे अुन्होंने कहा — 'देखो अितना बड़ा आन्दोलन लिये बैठा हूँ। हजारों स्वयंसेवक देशके कार्यमें लगे हुअे हैं। अगर मैं रमणीय दृश्य देखनेका लोभ संवरण न कर सकूँ, तो सबके सब स्वयंसेवक मेरा ही अनुकरण करने लगेंगे। अब हिसाब करो कि कितने जनोंकी सेवासे देश वंचित होगा। मेरे लिअे संयम करना ही अच्छा है।'

गिरसप्पाका अनुभव तो मुझे था ही, और बापूकी बात भी जँच गअी। मैंने कहा — 'ठीक है। मैं बाको साथ ले जाअूँगा। चन्द्रशंकर (मेरा सेक्रेटरी) तो आयेगा ही।'

हम गये। रास्तेमें शचीन्द्रका सुन्दर मंदिर था। कन्याकुमारीके अन्तरीपके स्थान पर कुमारी पार्वतीका मंदिर है। अुसके अँदर हम नहीं

गये, क्योंकि हरिजनोंको वहाँ प्रवेश नहीं था। लेकिन मेरे मनमें तो यह सारा विशाल और भव्य अंतरीप ही भारत माताका बड़ा मंदिर था। पूर्व सागर, पश्चिम सागर और दक्षिण सागर, तीन महासागरोंका यहाँ मिलन था। यहाँ सूर्य अेक सागरसे अुगता है और दूसरे सागरमे डूबता है। भारतके पूर्व और पश्चिम दोनों किनारे यहाँ अेक हो जाते है। यात्राकी यहाँ परिसमाप्ति होती है। समुद्रमे नहाकर मैं अेक बड़ी चट्टान पर जा बैठा और अुपनिषद्के जो मन्त्र याद आये महासागरके तालके साथ गाने लगा। अिस प्राकृतिक और सांस्कृतिक भव्यताकी कसौटी पर मैंने बापूका जीवनक्रम कसकर देखा, तो सिद्ध हुआ कि अुस जीवनकी भव्यता अिससे कम नहीं है।

३१

बापूके दूसरे लड़के मणिलालका विवाह कुछ देरीसे हुआ। वे दक्षिण अफ्रीकामें रहते थे। हिन्दुस्तानमे विवाह करना था। कन्या पसन्द करनेका काम मणिलालने पिता पर ही छोड़ दिया था। बापूके छोटे मोटे सब कामोंमें श्री जमनालालजीको बड़ी दिलचस्पी रहती थी। अुन्होंने मशरूवाला कुटुम्बमेंसे अेक लड़की पसन्द की। वह थी अकोलाके नानाभाअी मशरूवालाकी लड़की सुशीला। जमनालालजीकी सूचना बापूने तुरंत स्वीकार कर ली। विधिके अनुसार विवाह हो गया और गाँधी कुटुम्बके सब लोग अकोलासे रवाना हुअे।

स्टेशन पर आते ही हँसते हुअे बापूने कहा — 'मणिलाल तुम्हें हमारे डब्बेमें नहीं बैठना चाहिये। तुम अपनी जगह ढूँढ़ लो। सुशीला भी वहीं बैठेगी। अेक दूसरेसे परिचय करनेका यही तो मौका है।'

बापूजी आश्रममें आये, तब प्रार्थनाके समय बापूने स्वयं अिस विवाहका सारा वृत्तान्त सुनाया।

३२

यह बात महादेवभाओके मुँहसे सुनी हुओ है। अुत्तर हिन्दुस्तानमें महादेवभाओ बापूके साथ मुसाफिरी कर रहे थे। चलती ट्रेनमें लिखनेका अभ्यास बापूको भी है और महादेवभाओका तो पूछना ही क्या। अेक दिन महादेवभाओ शामसे जो लिखने बैठे तो पिछली रात तक लिखते ही रहे। काम खतम करके ही सोये। अब सुबह जल्दी अुठना असम्भव था।

जब जागे तो देखा कि बापूने स्वयं स्टेशनके वेटिंग रूममें जाकर अपने महादेवके लिअे चाय, दूध, शक्कर, पावरोटी, मक्खन सब मँगवाकर ट्रेमें तैयार रखा है। वे स्वयं तो चाय पीते नहीं थे, लेकिन अुन्हें मालूम था कि महादेवको चायके बिना नहीं चलता। अिसलिअे यह सब तैयारी करके महादेवके जागनेकी राह देखने लगे। महादेवभाओ जागे तो यह सब तैयारी देखकर बड़े झेंपे। विशेष तो अिसलिअे कि अुनकी चायकी पोल बापूके सामने खुल गयी। किन्तु बापूने अिधर अुधरकी मीठी मीठी बातें करके अुनका सारा संकोच दूर कर दिया। मतलब था कि रातकी थकान भी तो दूर होनी चाहिये।

३३

सरकार जब बापूको चम्पारनसे नहीं हटा सकी, तो अुसने अेक दूसरी चाल चली। लेफ्टिनेंट, गवर्नर आदि बड़े बड़े अफसरोंने बापूको बुलाकर कहा — 'आप तो बड़े अच्छे आदमी हैं, लेकिन जो लोग आपको सहयोग दे रहे है वे कुटिल है। अुन्हे हम जानते हैं।'

ये अफसर नहीं जानते थे कि बापूके साथ पेश आनेका यह सबसे बुरा तरीका है। बापूने तुरन्त कहा — 'आप तो अुन्हें दूरसे जानते हैं। मैं अुनके साथ दिन रात रहता हूँ। निजी अनुभव पर कहता हूँ कि ये लोग मुझसे कहीं ज्यादा अच्छे हैं। बुरा तो मैंने किसीको नहीं पाया।'

शायद पुलिस कमिश्नर वहीं था। वह बोला — 'आपके साथ जो प्रोफेसर कृपलानी हैं, अुनका रेकार्ड तो बड़ा खराब है हमारे पास।

वह शख्स mischief monger (शरारती) है। Agitator (भड़कानेवाला) तो है ही।

बापूने हँस कर कहा — 'आप जानते हैं, प्रो० कृपलानी मेरे यहाँ क्या काम करते हैं? वे तो मिसेस गांधीके साथ सारे समय हम सबके लिअे रसोअी बनानेमें व्यस्त रहते हैं। वहाँ वे कौनसी शरारत कर सकते हैं भला?'

बेचारा पुलिस कमिश्नर तो बापूका मुँह ताकता रह गया। अुसकी समझमें नहीं आया कि बिहारके विद्यार्थियोंको बहकानेवाला यह बड़ा प्रोफेसर गांधीजीके यहाँ बाबाजी * बनकर कैसे रह रहा है!

बापूने कहा — 'किसी दिन आकर देखिये तो सही, बेचारेको सिर अूँचा करने तकका समय नहीं मिलता।'

अिसके बाद जब बापूकी वह प्रख्यात जाँच शुरू हो गयी और हजारों किसान अपना दुखड़ा रोनेके लिअे अुनके पास आने लगे, तब तो अुन्हें अनेक बार कलेक्टरको किसी न किसी कामसे खत लिखने पड़ते थे। और हर वक्त अपनी चिट्ठी कलेक्टरके बंगले पर बापू कृपलानीके हाथ ही भेजते थे। बेचारा गोरा हैरान रहता कि यह arch sedition monger गांधीके यहाँ चपरासीका भी काम करता है!

३४

किसी समय बापू महाराष्ट्रमें दौरा कर रहे थे। मीरजमें अुनका थोड़ासा कार्यक्रम था। वह तो पूरा हो गया। लेकिन लोगोंकी अिच्छा थी कि वे कुछ अधिक रहें। जब देखा कि बापू मानते नहीं हैं, तो अुन्होंने भारतमें प्रचलित असंस्कारी ढंगसे आग्रह करना चाहा। समय हो गया, तो भी मोटर आयी ही नहीं।

बापू बेचैन हो गये। लोगोंसे पूछा तो कहने लगे — 'मोटर बिगड़ गयी है।' बापूका धीरज टूट गया, बोले — 'मुझे तो अिसी क्षण

---

* बिहारमें रसोअियाको बाबाजी कहते हैं।

अगले मुकामके लिअे रवाना होना चाहिये। मैं यहाँ नहीं रह सकता।' अितना कहते ही अुन्होंने तो पैदल ही रास्ता पकड़ा। कुछ स्वयंसेवक अुनके साथ हो लिये। बापूने अुनसे पूछा — 'अगले मुकामका रास्ता किधरसे जाता है?'

अभी भी अुन लोगोंकी शरारत पूरी नहीं हुअी थी। अुन्होंने अेक गलत दिशा बतला दी।

अुन दिनों बापू जूता नहीं पहनते थे। गोखलेजीके देहान्तके बाद बापूने जो अेक साल जूता न पहननेका व्रत ले रखा था, शायद वे ही दिन थे।

बापूने जब देखा कि रास्ता तो आगे है नहीं, तो अुसी दिशामें खेतमेंसे जाने लगे। पैरोंमें काँटे चुभ गये पर रुके नहीं। तब तो स्वयंसेवक शरमाये। अुन्हें बड़ा दुःख हुआ। अुन्होंने क्षमा माँगी, सही रास्ता बताया और अेक दो आदमियोंको दौड़ाकर मोटरका प्रबन्ध कर लानेके लिअे तैयार हुअे।

३५

१९२७की बात है। मैं बापूके साथ अुड़ीसामें बालासोर गया था। वहाँसे भद्रक जानेकी बात थी। भद्रकमें कुछ सभाका प्रबन्ध किया गया था। बापू नहीं जा सकते थे। अुन्होंने मुझसे कहा — 'तुम जाओ और सभाको मेरा संदेश सुनाओ।' मैं तैयार हो गया। लेकिन मुझे ले जानेवाला कोअी आया ही नहीं।

करीब अेक घंटा हो गया होगा। बापूने मुझे वहीं देखा। पूछने लगे — 'गये क्यों नहीं?' मैंने कहा — 'मैं तो तैयार बैठा हूँ। कोअी मुझे ले जाय तब न!' बापू बड़े नाराज हुअे। कहने लगे — 'अिस तरहसे काम नहीं होते हैं। समय होते ही तुम्हें चले जाना चाहिये था। मोटर न मिली तो क्या हुआ? पैदल निकलते। दो दिन लगते, तो लग जाते। हमारा मतलब पहुँचनेसे नहीं है, समय पर निकलनेसे है।'

मै बड़ा ही शरमिन्दा हुआ और अुसी क्षण चल दिया। रास्ते पर जो भी लोग दीख पड़े, अुनसे पूछता था कि भद्रकका रास्ता कौनसा है? करीब अेक मील अिस तरह पैदल गया। वहाँ मेरे पीछे श्री हरेकृष्ण मेहताब आ गये। अुन्हे पता लगा कि मैं अिस तरहसे गया हूँ। अुनसे रहा न गया। अुन्होंने मोटरके प्रबन्धके लिअे किसीको आज्ञा दे दी और स्वयं पैदल निकले। हम दोनों करीब अेक मील और पैदल गये होंगे, अितनेमें पीछेसे अुनकी मोटर आ गयी।

जब हम भद्रक पहुँचे तो शाम होने आयी थी। जहाँ सभा होनेको थी, वहाँ सरकारी कर्मचारियोंके तम्बू लगे हुअे थे। वे टेक्स वसूल करनेवाले अमलदार थे। लोग अुनसे अैसे डरते थे कि वहाँ कोअी आता ही न था। बड़ी मुश्किलसे हम लोग चन्द लोगोंको बुलाकर अिकट्ठा कर सके। वे आसपासके देहातसे आये हुअे थे। मैंने अुनको निर्भयताकी बातें बतायीं। सरकारी अमलदार आखिर हैं तो हमारे नौकर। अुन्हे हमसे डरना चाहिये, हम अुनसे क्यों डरें? वगैरा वगैरा कअी बाते मैंने कहीं। लोगोंके अूपर क्या असर हुआ, यह तो भगवान जाने। लेकिन वे अमलदार तो मुझसे चिढ़ गये।

दूसरे दिन बापू भी भद्रक आ पहुँचे। फिर तो पूछना ही क्या था! लोग हजारोंकी सख्यामें अिकट्ठे हुअे और बाढ़में जिस तरह कूड़ा कचरा बह जाता है, अुसी तरह वे अमलदार न जाने कहाँ चले गये।

३६

१९२२ मे बापू पहली बार जेलमे गये थे। अुन्हें यरवड़ा जेलमें रखा गया। हिन्दू और मुसलमान दोनोंकी गांधीजीके प्रति असाधारण भक्ति है, यह जानकर यरवड़ाके जेल सुपरिण्टेण्डेण्टने अुनका काम करनेके लिअे अफ्रीकाके अेक सिद्दी कैदीको नियुक्त किया। वह बेचारा कैदी हिन्दुस्तानकी कोअी भी भाषा ठीक नहीं जानता था। बहुतसा काम अिशारेसे और जो दस बीस शब्द वह जानता था अुनसे चलता था। अैसा आदमी गांधीजीकी भक्ति नहीं करेगा, अुनके प्रति पक्षपात नहीं

करेगा, यह गोरे अमलदारकी अपेक्षा थी। बेचारा अमलदार! वह नहीं जानता था कि मानव-हृदय सर्वत्र अेक-सा ही है।

अेक दिन अुस कैदीको बिच्छूने काटा। बेचारा रोता चिल्लाता बापूके पास आया। कहने लगा कि हाथमें बिच्छूने काटा है।

किसीका दुःख देखकर बापूका हृदय तुरन्त पिघल जाता है। अेक क्षणकी भी देरी किये बिना अुन्होंने अुस आदमीके हाथका वह भाग पानीसे अच्छी तरह धो लिया। पोछकर सूखा किया और तुरन्त डंककी जगह चूसने लगे। अितने जोरोंसे चूसा कि जहर कम हो गया। बेचारेकी वेदना कम हो गयी। अुसके बाद बापूने और भी अिलाज किये और वह अच्छा हो गया।

अुस गरीबने जिन्दगी भरमें अितना प्रेम कभी नहीं पाया था। वह तो प्रेमके वश अुनका दास ही बन गया। अुनके अिशारों पर नाचने लगा। अुनके सब काम भक्तिसे करने लगा। अुसने देखा कि गांधीजीको सूत कातना प्रिय है। अुसने तकली अुठाअी और देख देखकर स्वयं भी सूत कातने लगा। फिर तो अुसने चरखा भी चलाना शुरू किया। आगे जाकर धुनकनेकी कला भी सीख गया और बापूके लिअे पूनी बनाकर देने लगा। सुपरिण्टेण्डेण्टके ध्यानमें आ गया कि यह तो अुलटी ही बात हो गयी। लेकिन करता क्या?

३७

जब १९३०में मैं बापूके साथ यरवडा जेलमें था तबकी बात है। अुनकी रसोअी बनानेके लिअे सुपरिण्टेण्डेण्ट मेजर मार्टिनने दत्तोबा नामक अेक महाराष्ट्री कैदीको नियुक्त किया था। दत्तोबाको काम तो बहुत नहीं था। बापूके कपड़े धोता था, बकरीका दूध गरम करके रखता था, और अैसे ही छोटे मोटे काम कर देता था। बेचारेके पाँवमें कुछ दर्द था। लँगड़ाता लँगड़ाता सब काम करता था।

अेक दिन बापूने मेजर मार्टिनसे बात की। अुसने कुछ दवा दी। लेकिन पाँवका दर्द नहीं गया। अिस तरह करीब अेक महीना बीत गया।

तब बापूने मेजर मार्टिनसे कहा — 'अगर अिस आदमीकी मैं चिकित्सा करूँ, तो आपको कोअी अेतराज है?' मेजरने कहा — 'बिलकुल नहीं।' बापूने कहा — 'मेरी चिकित्सामें आहार ही मुख्य चीज है। मेरी ओरसे मैं अुसे खास आहार दूँगा।' अिस पर भी मार्टिनने कहा कि ठीक है।

बापूकी चिकित्सा शुरू हुअी। पहले तो अुन्होंने अुसको कुछ दिनके लिअे अुपवास करनेको कहा, अेनिमा वगैरासे अुसका पेट साफ करवाया और फिर अुसे कुछ दिन केवल शाक पर रखा। बादमें आहारमें समय समय पर परिवर्तन करते गये। लँगड़ेको अच्छा फायदा हुआ। अुसने मुझे कहा — 'बरसोंसे अिस दर्दसे परेशान हूँ। अब तो मेरा पैर ठीक हो गया। चलनेमें थोडी भी तकलीफ नहीं होती। मुझे खुदको आश्चर्य होता है कि अब मैं सब जैसा कैसे चल सकता हूँ।'

बापूके छूटनेके बाद वह भी छूट गया। अुसने बम्बअीमें कुलबाकी ओर चाय-कॉफीकी अेक दुकान खोली। अेक दिन अुसने कहीं सुना होगा कि बापू बम्बअी आये हैं। वह दर्शनके लिअे आया और साष्टांग दण्डवत किया। अुसकी आँखोंसे कृतज्ञता बह रही थी। बापूने मुझे कहा — 'अिससे कहो कि आज बहुत काममें हूँ, कल जरूर मिलने आवे।' मैंने दत्तोबाको समझाया कि बापू अुससे मिलना चाहते हैं, कल जरूर आवे। अुसने कहा कि कल जरूर आअूँगा। लेकिन कमबख्त आया ही नहीं। बापूका खयाल था कि अुसे अुसकी दुकान चलानेके लिअे अगर सौ-पचास रुपये दिये जावें तो बेचारा खुश होगा। अुसने अगर अपना पूरा पता मुझे दिया होता, तो मैं अुसे ढूँढ़ कर ले आता। लेकिन बम्बअीके मानव-सागरमें मैं अुसे कैसे ढूँढ़ सकता था? दूसरे दिन जब वह नहीं आया, तो बापूको अफसोस हुआ। कहने लगे — 'कल ही अुसे कुछ दे देता तो अच्छा होता। परिश्रम करके जीनेवाला आदमी बार बार आनेके लिअे समय कहाँसे निकालेगा।'

३८

शायद १९१५की बात होगी। बापू कुछ लिख रहे थे। मैं पास बैठकर अुमर खय्यामकी रुबाअियातका अनुवाद पढ़ रहा था। फिट्ज़ जेरल्डके अनुवादकी तारीफ मैंने बहुत सुनी थी, किन्तु अुसे पढ़ा नहीं था। अपना अितना अज्ञान कम करनेकी दृष्टिसे मैंने वह किताब ली और चावके साथ पढ़ने लगा। किताब करीब करीब पूरी होनेको थी, अितनेमे बापूका ध्यान मेरी ओर गया। पूछा — 'क्या पढ़ रहे हो?' मैंने किताब बताअी।

नया ही परिचय था। बापू प्रत्यक्ष अुपदेश देना नहीं चाहते थे। अेक गहरी साँस लेकर अुन्होंने कहा — 'मुझे भी अंग्रेजी कविताका बड़ा शौक था। लेकिन मैंने सोचा कि मुझे अंग्रेजी कविता पढ़नेका क्या अधिकार है? जितना संस्कृतका ज्ञान मुझे होना चाहिये अुतना कहाँ है? अगर मेरे पास फ़ालतू समय है, तो मैं अपनी गुजराती लिखनेकी योग्यता क्यों न बढ़ाअूँ? मुझे आज देशकी सेवा करनी है, तो मेरा सारा समय मेरी सेवा-शक्ति बढ़ानेमें ही लगाना चाहिये।' कुछ ठहर कर फिरसे बोले — 'अगर देश-सेवाके लिअे मैंने कुछ त्याग किया है, तो यह अंग्रेजी साहित्यका शौक। पैसे और career के त्यागको तो मैं त्याग ही नहीं समझता। अुसकी ओर मेरी रुचि थी ही नहीं। लेकिन अंग्रेजी साहित्यका तो शौक पूरा पूरा था। लेकिन मैंने ठान लिया है कि यह भी मुझे छोड़ना ही चाहिये।'

मैं समझ गया। मैंने फिट्ज़ जेरल्ड अुसी समय बाजूको रख दिया।

*　　　*　　　*

बापूके अुस अुपदेशका मैं पालन नहीं कर सका हूँ, किन्तु फिट्ज़ जेरल्ड तो फिर पूरा किया ही नहीं। और सामान्य तौर पर कह सकता हूँ कि जब तक गुजराती बोलने-लिखनेकी शक्ति नहीं आयी, तब तक मैंने कोअी अंग्रेजीकी किताब नहीं पढ़ी। गुजराती सीखनेके लिअे मुझे

कोशिश नहीं करनी पड़ी। वह तो गुजराती वातावरणमे रहनेसे और गांधीजीके लेख पढ़नेसे ही मुझे आने लगी।

मैं गुजराती लिखने लगा अुस समय कोअी गुजराती शब्द नहीं मिलता, तो अुस जगह आसान संस्कृत शब्द बिठा देता। फलत. मेरी गुजराती शैली आसान होते हुअे भी संस्कृत प्रचुर प्रौढ़ बन गयी। और विद्वान और आम जनताके बीच मैंने वही लेकर प्रवेश किया।

बापूकी सूचनाका मुख्य लाभ यह हुआ कि जिस शक्तिसे पहले मैं अंग्रेजी शब्द ढूँढ़ता था और हरअेक शब्दकी प्रकृति और खूबी समझनेकी कोशिश करता था, वह सब मैंने गुजरातीकी ओर मोड़ दी।

३९

मैं आश्रममें गया तब मुझे न गुजराती आती थी न हिन्दी। दोनों भाषायें मैंने सुनी तो थीं, लेकिन बोलने-लिखनेका तनिक भी अभ्यास नहीं था। पढ़ाते समय अलबत्ता मैं हिन्दीमे पढ़ाता था, क्योंकि वहाँ कोअी मेरे जितनी भी हिन्दी नहीं जानता था। मैं जानता था कि मैं सुरक्षित भूमि पर नहीं हूँ, अिसलिअे थोड़ी हिम्मत होने पर गुजरातीमे बोलने लगा। फिर जब 'नवजीवन'मे कभी कॉलम दो कॉलमकी कमी पडती, तो स्वामी आनन्द मुझसे कुछ लिखवाकर ठीकठाक करके छाप देते थे। लेकिन सन् २२ में जब बापू जेलमें गये, तब तो मुझे साराका सारा 'नवजीवन' भरना पड़ता था।

जेलमे बापूने सुना होगा कि मैं 'नवजीवन'को ठीक सँभाल रहा हूँ, तो अेक दिन अुनका पत्र आया। अुसमे लिखा था — 'जिस तरह अंग्रेजीमे शब्दोंका spelling (हिज्जे) निश्चित है, वैसा गुजरातीमें नहीं है। मराठी, बंगला, तामिल, अुर्दू आदि भाषाओंमें भी शुद्ध हिज्जोंका आग्रह मैं देखता हूँ। अेक गुजराती ही अैसी भाषा है, जिसमें हर आदमी जैसा मनमें आया वैसे हिज्जे कर लेता है। अिससे गुजराती भाषा भूत-जैसी हो गयी है। (भूत कलेवरके अभावमें हवामें भटकता रहता है)। अुसकी दुर्दशा दूर करनेका काम अगर तुम्हारा

नहीं है तो किसका है ? मुझे अेक अैसा कोश बना दो कि जिसमें गुजरातीके सब शब्द हों और हर अेक शब्दके हिज्जे नियमके अनुसार शुद्ध हों। किसीको भी शंका हुआी तो तुम्हारे कोशमें देखकर वह शुद्ध हिज्जे लिख सकेगा । अंग्रेजीमें तो हम अैसा ही करते हैं न ?'

बापूका यह खत पाकर मैं आश्चर्यचकित हो गया । बादमें तो मैं भी जेलमें ले जाया गया । जब मैं छूटा तो थोड़े ही दिनों बाद बापू भी छूटे। मिलने पर मैंने अुनसे कहा —'बापूजी, आपने मुझसे यह कैसी अपेक्षा की ? न गुजराती मेरी जन्मभाषा है, न अुसके साहित्यका मैंने अध्ययन किया है । व्याकरण तो मैं जानता भी नहीं ।'

बापू बोले —'यह तो सब ठीक है। मैंने कब कहा कि यह सब तुम्हें अकेले ही करना चाहिये । जिसकी मदद चाहिये अुसकी लो, जिससे करा सकते हो अुससे कराओ । मैंने तो यह काम तुम्हें सौंप दिया है, तुमसे माँगूँगा । अिस चीजका महत्त्व तुम समझो और अेक भी भूल न रहे अैसा निर्दोष कोश देकर गुजरातीके हिज्जोंको अेक सिलसिलेसे बना दो । यह काम तुम्हारा है।'

मैंने सिर झुकाया। मैं जानता था कि 'संन्यासीको अगर शादी करनी है, तो सिर पर चोटी रखानेसे प्रारम्भ करना चाहिये'। मैं गुजरातीका व्याकरण लेकर बैठा। पिछले चालीस बरससे हिज्जोंके बारेमें जो चर्चा हुआी थी सब अिकट्ठी की । महादेवभाआी, नरहरिभाआी और मैं, अैसे तीन आदमियोंकी कमेटी मैंने मुकर्रर की और आखिरकार अनेक मित्रोंकी मददसे पाँच बरसकी मेहनतके बाद बापूको अेक शुद्ध जोड़णी कोश अर्पण किया ।

बापू बड़े संतुष्ट हुअे । 'नवजीवन'में अुन्होंने लिखा कि 'अब आगे किसीको गुजरातीमें मनमानी जोड़णी करनेका अधिकार नहीं है'।

अुनके संकल्पके प्रभावसे आज वही जोड़णी कोश गुजरात भरमे प्रमाणरूप हो गया है। बम्बअी सरकारका शिक्षा विभाग, बम्बअी युनिवर्सिटी, गुजरात काठियावाड़के देशी राज्य, सबने अुसीका प्रामाण्य माना है । यहाँ तक कि Cross Word Puzzle में भी हमारा जोड़णी कोश ही सब झगड़ोंको तय करता है।

४०

जब बापू दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तान लौटने लगे, तब अुन्होंने सोचा कि मुझे अिस देशसे कुछ भी धन नहीं लेना चाहिये। अंग्रेज जब अपना कमाया हुआ सब धन हिन्दुस्तानसे विलायत ले जाते हैं, तब हमें कैसा बुरा लगता है! हम अुसे अन्याय और लूट कहते हैं। तब दक्षिण अफ्रीकाका धन हमें हिन्दुस्तान ले जानेका क्या अधिकार है?

बस, अिसी विचारसे अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें जो कुछ भी कमाया था, सबका वहीं पर ट्रस्ट बना दिया और वहींके सार्वजनिक कार्यके लिअे अुसका विनियोग हो अैसा प्रबन्ध कर दिया। वहाँसे चलते समय अुन्होंने साथ लिये सिर्फ अपने मिले हुअे मानपत्र और भेंटकी किताबें। किताबें तो जब सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना हुअी, तब सारी आश्रमको दे दी गयीं। और जब आश्रमका विसर्जन हुआ, तब अहमदाबादकी म्युनिसिपैलटीको दे दीं। कोअी तीस हजार किताबें होंगी। और मानपत्र तो बिचारे अिधर अुधर पडे पड़े नष्ट हो गये।

हिन्दुस्तानमें लौटने पर बापूके सामने अपनी पैतृक सम्पत्तिका सवाल आया। पोरबन्दर और राजकोटमें अुनके घर थे। सबमें गांधी खानदानके लोग रहते थे। बापूने अुन सब रिश्तेदारोंको बुलाकर कहा कि पैतृक सम्पत्तिमें मेरा जो भी कुछ हिस्सा है, वह मैं आपके नाम छोड़ता हूँ। अितना ही नहीं, अुन्होंने जो त्यागपत्र लिखा अुस पर अपने चारों पुत्रोंके भी हस्ताक्षर करवा दिये कि हम सब अिसीके साथ अपना अधिकार भी छोड़ देते हैं।

अिस तरह बापूने अपनेको और अपने पुत्रोंको मुक्त किया।

सन् १९२७ की बात है। खादी-कार्यके लिअे चन्दा अिकट्ठा करनेके लिअे राजाजीने दक्षिणमें बापूके दौरेका प्रबन्ध किया था। अिसी सिलसिलेमें हम सीलोनकी भी यात्रा कर आये। सीलोनमें बापूके बड़े ही प्रभावशाली व्याख्यान हुअे। अेक दिन, शायद जाफनाकी बात है, बापू बुद्ध भगवानके कार्य पर बोल रहे थे। बुद्ध भगवानकी कैसी परिस्थितियाँ थीं, किस तरह अुन्हें अुसमें अपना मिशन मिला, अिसीकी चर्चा थी। बापू अपने विषयमें अितने तल्लीन हो गये थे कि अेक स्थानपर, जहाँ बुद्धके बारेमें अुन्हें कहना चाहिये था then he saw, वहाँ निकल गया then I saw. पता नहीं यह गलती अुनके ध्यानमें आयी या नहीं। व्याख्यान बड़ा ही प्रभावशाली रहा।

रातको बापूके व्याख्यानकी हम चर्चा कर रहे थे। महादेवभाअी, राजाजी और मैं। मैंने कहा — 'आजके व्याख्यानमें Star of the East वाले कृष्णमूर्ति-जैसी बात हुअी। अितना कहना था कि तुरन्त ही राजाजी बोल अुठे — 'Did you also mark that Kaka?'

हम दोनों हँस पड़े।

मैंने कहा — 'व्याख्यानमें बापूका बुद्ध भगवानके साथ अैसा तादात्म्य हो गया था कि प्रथम पुरुषी सर्वनाम यों ही निकल गया। अिसका कोअी गूढ़ अर्थ करनेकी जरूरत नहीं। जो कार्य बुद्ध भगवानने अपने जमानेके लिअे किया, वही कार्य आजकी परिस्थितियोंके अनुसार बापू नयी भूमिका पर कर रहे है, अितना ही अनुमान निकालना बस है।

'बापू अगर अपनेको बुद्ध भगवानका अवतार मानने लेंगे, तो मुझे अुसमें खतरा दिखायी देगा। मैं नहीं मानता कि बापू कभी अपनेको बुद्धका अवतार मान सकते हैं। बापू कभी के हिन्दू गिरोहके परे हो

चुके हैं, किन्तु अुन्होंने अुससे अपना सम्बन्ध नहीं तोड़ा है। अुनको आखिर तक हिन्दू ही रहना है। हिन्दू रहकर ही वे दुनियाकी सेवा करेंगे और हिन्दू-धर्मको अपने अर्थके हिन्दू-धर्म जैसा ही बनायेंगे। अगर आज-जैसी गलती फिर हुअी, तो मुझे अपना अभिप्राय बदलना पड़ेगा।'

अैसी गलती फिर कभी नहीं हुअी।

४२

रौलेट अेक्टके विरुद्ध बापूने जो आन्दोलन अुठाया, अुसके पहलेकी बापूकी गम्भीर बीमारीका जिक्र मैं कर चुका हूँ। रातकी परेशानीके बाद सुबह बापू हम लोगोंसे मिले और अहिंसाका सन्देश हिन्दुस्तानको देनेको कहा, यह भी लिख चुका हूँ। अुसके बाद शामकी प्रार्थनामें हमारे संगीतशास्त्री नारायणराव खरेने भजन शुरू किया:

"गुरु बिन कौन बतावे बाट।
बड़ा विकट यम घाट। गुरु बिन०।"

मुझे लगा कि अैसे मौके पर अैसा भजन पसन्द नहीं करना चाहिये था। बापू अपनेको मृत्युके समीप पहुँचा हुआ मानते थे। अगर अैसे वक्त हम कहे कि आपको तो गुरु नहीं मिले हैं, यम घाट आप कैसे पार करेंगे, तो अैसे भजनसे बापूके मनकी ग्लानि ही बढ़ेगी।

अनसूया बहनको भी भजन ठीक न जँचा। लेकिन अुनका कारण कुछ और था।

कुछ भी हो, बापू हमेशा गुरुकी खोजमें रहते हैं अिस बातकी चर्चा हम लोगोंमें बढ़ी। गोखले बापूके गुरु थे, किन्तु थे केवल राज-नैतिक क्षेत्रके ही। अितना भी हम अिसलिअे मानते हैं कि बापूने अनेक बार स्वयं अैसा कहा है। आज हम विश्लेषण करते हैं, तो गोखलेकी और बापूकी राजनीतिमें कोअी साम्य नहीं दीख पड़ता। मैं तो मानता हूँ कि जब बापू गोखलेजीसे पहले पहल मिले, अुस वक्त अुनकी विभूति-पूजाकी

अुग्र थी। अुन्हें अपने लिअे कोअी विभूति (Hero) चाहिये थी। गोखलेजीने असाधारण सहानुभूति बतायी और अुनकी कदर की, जिसीसे अुन्होंने गोखलेकी राजनीतिमें अपने सब आदर्श देख लिये। कुछ भी हो। गोखले बापूके जीवन गुरु नहीं थे।

श्रीमद् राजचन्द्र (जो बम्बअीके अेक शतावधानी जौहरी थे) की धर्मनिष्ठा और आत्मप्राप्तिकी बेचैनी देखकर बापूने अुनसे बहुतसे प्रश्न पूछे थे और समाधान भी पाया था। तबसे 'श्रीमद्'के शिष्य तो यह कहते नहीं थकते कि राजचन्द्र गांधीजीके गुरु थे।

बापूने कुछ हद तक जिस बातको स्वीकार भी किया। लेकिन जब यह बात बहुत आगे बढी, तब अुन्हें जाहिर करना पड़ा कि मैं राजचन्द्रको मुमुक्षु तो जरूर मानता हूँ, किन्तु साक्षात्कारी पुरुष नहीं।

किसी समय बापूने अपने किसी लेखमें लिखा था कि 'मैं गुरुकी खोजमें हूँ। क्योंकि गुरु मिलने पर मनुष्यका अुद्धार हो ही जाता है'। बस, जितना लिखना था कि अुनके पास सैकड़ों चिट्ठियाँ आने लगीं। कोअी लिखता था, अमुक जगह अेक बड़े महात्मा रहते हैं, वे बड़े योगी हैं, अुन्हे सब सिद्धियाँ प्राप्त हैं, आप अुनके पास जाकर अुपदेश लीजिये। कोअी किसी सत्पुरुषकी सिफारिश करता था। यदि किसीने खुदकी ही सिफारिश करते हुअे बापूके गुरु बननेकी तैयारी दिखायी हो तो मैं नहीं जानता। लेकिन बापूके अुद्धारकी अिच्छासे लोगोंने अुन्हें अनेक मार्ग दिखाये। अन्तमें बापूको जाहिर करना पड़ा कि 'जिस गुरुकी खोजमें मैं हूँ वह स्वयं भगवान ही है। भगवान ही मेरे गुरु बन सकते हैं, जिन्हें पानेके बाद कोअी साधना बाकी भी नहीं रहती। मेरी यह सारी जिन्दगी, सारी प्रवृत्ति अुस गुरुकी खोजके लिअे ही है।'

* * *

जिस तरह हम आश्रमवासी गांधीजीको बापू कहते हैं, अुसी तरह शान्तिनिकेतनमें लोग रविबाबूको गुरुदेव कहते थे। अब गांधीजीका यह स्वभाव या रिवाज है कि जो व्यक्ति जिस नामसे मशहूर हो जाय, वही नाम वे भी स्वीकार कर लेते हैं। रविबाबूका जिक्र वे 'गुरुदेव'के नामसे करने

लगे। तिलकजीको ही लीजिये · पहले बापू अुन्हें तिलक महाराज कहते थे। बादमें अुन्होंने देखा कि महाराष्ट्रमें लोग अुन्हें लोकमान्य कहते हैं, तो अुन्होंने भी लोकमान्य कहना शुरू कर दिया। यही बात है मि० जिन्नाके बारेमें भी। मि० जिन्नाके अनुयायी अुन्हें कायदे आजम कहते हैं, अिसलिअे बापू भी अुनका जिक्र अुसी नामसे करते हैं। श्री वल्लभभाअी पटेलको गुजरातके कार्यकर्ता श्री मणिलाल कोठारीने सरदार कहना शुरू किया और लोग भी अुन्हें सरदार कहने लगे। बापूने यह बात सुनी तो अुन्होंने भी वही नाम चलाया।

अिन बड़े लोगोंकी बात तो छोड़ दीजिये। मै अपने परिवारमें, विद्यार्थियोंमें और मित्र मण्डलीमें काकाके नामसे मशहूर हूँ। यहाँ तक कि जब मेरा पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर कहीं लिखा जाता है, तो लोग मुझे पूछते हैं कि क्या ये दत्तात्रेय बालकृष्ण तुम्हारे कोअी रिश्तेदार हैं? बस, अिसी परसे बापू भी मुझे काका ही कहते हैं। अुनकी चिट्ठियोंमें भी 'चिरजीव काका'से प्रारम्भ करते हैं और समाप्त करते है 'बापूके आशीर्वाद' से। नामके लिअे 'काका' शब्द केवल विशेष नाम रहा है, अुसका कोअी विशेष अर्थ नहीं है। अिसी तरह, रथीबाबू (रविबाबूके लड़के)को अथवा श्री विधुशेखर शास्त्रीजीको लिखते समय रविबाबूका जिक्र गुरुदेव नामसे ही करते है, क्योंकि वही नाम अुन लोगोंको प्रिय है। ज्यादा नहीं जाननेवाले लोगोंने अिससे अनुमान लगाया कि गांधीजी रविबाबूको अपना गुरुदेव मानते हैं!

अिसी सिलसिलेमे अेक छोटा-सा प्रसंग यहाँ लिख देता हूँ। मैं शान्तिनिकेतन गया, तो सबसे पहले गुरुदेवसे मिला। अुनसे कहा कि मैंने आपके गीतांजलि आदि ग्रथ पढे हैं, अब मैं आपके कुछ आध्यात्मिक अनुभव जानना चाहता हूँ। मै विशेष प्रश्न पूछूँ अुसके पहले वे कहने लगे —'लोग मुझे गुरुदेव तो कहते हैं, लेकिन मैं गुरुमें विश्वास नहीं करता। मैं नहीं मानता कि कोअी किसीका गुरु बन सकता है, कोअी किसीको मार्ग बता सकता है। अध्यात्म अेक अैसा क्षेत्र है कि जिसमें हरअेकको अपने लक्ष्यकी ओर जानेका रास्ता भी अपने आप तैयार करना पड़ता

है। अध्यात्म हमेशा unchartered sea के जैसा क्षेत्र ही रहा है। मेरी साधना मुझे मेरे कवि होनेसे मिली है। जब मैं 'सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म' कहता हूँ, तब यह सारा विश्व मुझे सत्य रूप दीख पड़ता है। अिस विश्वको अिन्कार करनेवाला मायावाद मेरे पास नहीं है।' अिसी तरह अनेक बातें कहीं। सारे प्रवचनकी रिपोर्ट देनेका यह स्थान नहीं है। मुझे अितना ही बताना है कि गुरुदेवके नामसे अपनी मण्डलीमें जो हमेशा पुकारे जाते थे, वे स्वयं गुरु-जैसी किसी वस्तुको मानते ही नहीं थे।

४३

१९२१में बेजवाडाकी अखिल हिन्द कांग्रेस महासमिति (A. I. C. C.) ने तय किया था कि लोकमान्य तिलकके स्मारकमें अेक करोड़ रुपया अिकट्ठा किया जाय। अुसी सिलसिलेमें धन अिकट्ठा करनेकी कोशिशें चल रही थीं। अेक दिन श्री शंकरलाल बैंकरने आकर कहा — 'हमारे प्रान्त (बम्बअी) में जितनी मुख्य मुख्य नाटक कम्पनियाँ हैं, वे सब मिलकर अपने सबसे अच्छे नटों द्वारा अेक किसी अच्छे नाटकका अभिनय करेंगी। अुस दिन अगर बापू थियेटरमें अुपस्थित हो जायँ, तो वे लोग अुस खेलकी सारी आमदनी तिलक स्वराज्य फण्डमें देनेके लिअे तैयार हैं।' अुन्होंने आगे कहा — 'हजारोंकी नहीं, लाखोंकी बात है, क्योंकि टिकटोंकी मनमानी कीमत रखेंगे।' बापू अेक क्षणका भी विलंब किये बगैर बोले — 'यह नहीं हो सकता। मैं कभी धंधादारी नटोंके नाटक देखने नहीं जाता। कोअी मुझे करोड़ रुपया भी दे, तो भी मैं अपना नियम नहीं तोड़ सकता।'

शंकरलालजीका प्रस्ताव जैसाका तैसा रह गया।

४४

सन् २१ की ही बात है। अहमदाबादमें गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुअी। स्थापनामें मेरा काफी हाथ था। अुन दिनों मैं दिनरात भूत-जैसा काम करता था। अेक दिन विद्यापीठके नियामक मण्डलकी बैठक थी। अुसमें मि० अेंड्रूयूज भी आये थे। अुन्होंने सवाल छेड़ा — 'विद्यापीठमें हरिजनोंको तो प्रवेश रहेगा न?' मैंने तुरन्त जवाब दिया — 'हाँ, रहेगा।' किन्तु हमारे नियामक मण्डलमें अैसे लोग थे, जिनकी अस्पृश्यता दूर करनेकी तैयारी नहीं थी। हमारी सम्बद्ध संस्थाओंमें अेक था मॉडल स्कूल। अुसके संचालक अिस सुधारके लिअे तैयार नहीं थे। और भी लोग अपनी अपनी कठिनाअियाँ पेश करने लगे। अुस दिन यह प्रश्न अनिश्चित ही रहा। अितना ही तय हुआ कि अिसके बारेमें बापूजीसे पूछेंगे। मैं निश्चिन्त था। आखिर बापूसे पूछा गया। अुन्होंने भी वही जवाब दिया जो मैंने दिया था।

अिस बातकी चर्चा गुजरात भरमें होने लगी। बम्बअीके चन्द वैष्णव धनिकोंने बापूके पास आकर कहा — 'राष्ट्रीय शिक्षाका कार्य बड़ा धर्म कार्य है। हम अुसमें आप कहें अुतने पैसे दे सकते हैं, किन्तु हरिजनोंका सवाल आप छोड़ दीजिये। वह हमारे समझमें नहीं आता।' आये हुअे वैष्णव कुछ पाँच सात लाख रुपये देनेकी नियतसे आये थे। बापूजीने अुन्हें कहा — 'विद्यापीठ निधिकी बात तो अलग रही, कल अगर कोअी मुझे अस्पृश्यता कायम रखनेकी शर्त पर हिन्दुस्तानका स्वराज्य भी दे, तो अुसे मैं नहीं लूँगा।' बेचारे वैष्णव धनिक जैसे आये थे वैसे ही चले गये।

४५

आश्रमके प्रारम्भके दिनोंमें आसपास हमें अच्छा दूध नहीं मिलता था। अिसलिअे हमने अपना प्रबन्ध कर लिया, अच्छी अच्छी गायें और भैंसें रख लीं।

कुछ दिनोंके बाद बापूने हमे समझाया कि हमें गोरक्षा करनी है। भैंसको रखकर हम गायको नहीं बचा सकते। दोनोंको आश्रय देकर हम दोनोंका नाश कर रहे हैं। गायकी सबसे बड़ी प्रतिस्पर्धी है भैंस। बैल तो अपनी सेवाके बल पर बच जाता है, और भैंस अपने दूध, घीकी अधिकताके बल पर। रही गाय और भैंसके पाड़े। सो गाय कतल की जाती है और भैंसके पाड़े बचपनमें ही मार डाले जाते हैं।

नतीजा यह हुआ कि आश्रमसे सब भैंसें हटायी गयीं। केवल गोशाला ही रही।

अेक दिन गायका अेक बछड़ा बीमार हुआ। हम लोगोंने अुसकी दवाके लिअे जितनी कोशिशें हो सकती थीं कीं। देहातोंसे पशुरोगोंके जानकार आये। व्हेटरनरी डॉक्टर आये। जितना हो सकता था सब कुछ किया। किन्तु बछड़ा ठीक नहीं हुआ।

बछड़ेके अन्तिम कष्ट देखकर बापूने हम लोगोंके सामने प्रस्ताव रखा कि अिस मूक जानवरको अिस तरह पीड़ा सहन करते रखना घातकता है। अुसे मृत्युका विश्राम ही देना चाहिये।

अिस पर बड़ी चर्चा चली। श्री वल्लभभाअी अहमदाबादसे आये। कहने लगे — 'बछड़ा तो दो-तीन दिनमें आप ही मर जायेगा, किन्तु अुसे आप मार डालेंगे तो नाहक झगडा मोल लेंगे। देश भरके हिन्दू समाजमें खलबली मचेगी। अभी फंड अिकट्ठा करने बम्बअी जा रहे हैं। वहाँ हमें कोअी कौड़ी भी नहीं देगा। हमारा बहुतसा काम रुक जायेगा।'

बापूने सब कुछ ध्यानसे सुना और अपनी कठिनाअी पेश करते हुअे कहा — 'आपकी बात सब सही है। लेकिन बछड़ेका दुःख देखते हम

कैसे बैठ सकते हैं? हम अुसकी जो अन्तिम सेवा कर सकते हैं, वह न करें तो धर्मच्युत होंगे।'

अैसी बातोंमें वल्लभभाअी बापूसे कभी वादविवाद नहीं करते थे। वे चुपचाप चले गये। फिर बापूने हम सब आश्रमवासियोंको बुलाया। हमारी राय ली। मैंने कहा — 'आप जो करते हैं सो तो ठीक ही है। किन्तु अगर मुझे अपनी राय देनी है, तो मैं गौशालामें जाकर बछड़ेको प्रत्यक्ष देख लूँ तभी अपनी राय दे सकता हूँ।' मैं गौशालामें गया। बछड़ा बेभान पड़ा था। मैं अपनी राय तय नहीं कर पाया। अिसलिअे वहाँ कुछ ठहरा। बादमें जब देखा कि बछड़ा जोर जोरसे टाँगें झटक रहा है, तो मैं बापूके पास गया और कह दिया — 'मैं आपके साथ पूर्णतया सहमत हूँ।' बापूने किसीको चिट्ठी लिखकर गोली चलाने वाले आदमियोंको बुलवाया। अुन्होंने कहा — 'गोलीसे मारनेकी जरूरत नहीं। डॉक्टर लोगोंके पास अैसा अिन्जेक्शन रहता है जो लगाते ही प्राणी शान्त हो जाता है।' अुस पर अेक पारसी डॉक्टर बुलवाया गया। अुसने अुस पीड़ित बछड़ेको 'मरण' दे दिया।

अिस पर तो देशभरमें खूब हो-हल्ला मचा था। बापूको कअी लेख लिखने पड़े थे। सारा हिन्दू समाज जड-मूलसे हिल गया था। बापूकी अनन्य धर्मनिष्ठा और गौभक्तिके कारण ही वे अिस आन्दोलनसे बच सके।

४६

पंजाबके अत्याचार, खिलाफतका मामला और स्वराज्य प्राप्ति अिन तीन बातोंको लेकर बापूने अेक देश-व्यापी आन्दोलन शुरू किया। भारतके अितिहासमें शायद यह अपूर्व आन्दोलन था, जिसमें हिन्दू और मुसलमान अेक हुअे थे। यह अद्भुत दृश्य देखकर अंग्रेज भी घबरा गये। सरकारको लगने लगा कि गांधीजीके साथ कुछ न कुछ समझौता करना ही चाहिये। वाअिसरायने बापूको मिलनेके लिअे बुलवाया।

पंजाबका अत्याचार तो हो ही चुका था। अुसके बारेमें किसीको सजा दिलानेकी शर्त भी बापूने देशको नहीं रखने दी थी। सरकार अपनी भूल स्वीकार कर लेती, तो मामला तय हो जाता। बाकी रही थीं दो बातें। खिलाफत पर वाअिसरायकी दलील थी कि यह सवाल हिन्दुस्तानका नहीं, अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिका है। अुसमें कअी नाजुक बातें भरी हुअी हैं। अुसे छोड़ दो और केवल स्वराज्यकी बातें करो, तो आपसे समझौता हो जायगा। बापूने कहा — 'यह नहीं हो सकता। हिन्दुस्तानके मुसलमान हिन्दुस्तानका महत्वपूर्ण अंग हैं। अुनके दिलमें जो अन्यायकी चोट है, अुसके प्रति मैं अुदास नहीं रह सकता।'

अिसी पर समझौतेकी बात टूट गयी। देशके बड़े बड़े नेताओंने खानगी बातचीतमें बापूको दोष दिया। अुनका कहना था कि खिलाफतकी बात हिन्दुस्तानकी है ही नहीं। अुसे छोड़ देते तो क्या हर्ज था। स्वराज्य तो मिल जाता! (अुन दिनों स्वराज्यकी हमारी कल्पना आज-जैसी शुद्ध और निश्चित नहीं थी। जो कुछ मिलता अुसे ही शायद लोग स्वराज्य समझकर ले लेते और बड़ी राजनीतिक प्रगति मान लेते।) लेकिन बापूके सामने हमारे राजनैतिक चारित्र्यका प्रश्न था। मुसलमानोंको साथ दिया, अुनका दुःख अपना दुःख बनाया और अब अपनी चीज मिलते ही अुनका हाथ छोड़ देना यह तो दगाबाजी कहलाती। अिस तरह दगाबाजी करके जो भी मिले वह बापूकी नजरमें मलिन ही था। अिसीलिअे अपना शुद्ध निर्णय वाअिसरायको कहते अुन्हें तनिक भी संकोच नहीं हुआ।

४७

चि० चन्दनकी मेरे लड़केके साथ शादी तय हुअी थी। वह आक्सफोर्डमें पढ़ता था और चन्दन अपनी अमेरिकाकी पढ़ाअी पूरी करके हिन्दुस्तान लौटी थी। वह वर्धा आयी। बापू कहने लगे — 'यह चन्दन तो अंग्रेजी सीखकर विदुषी होकर आयी है। यह क्या काम की? अुसे हिन्दी तो आती ही नहीं। शादी होनेके बाद क्या पढ़ेगी? अभीसे अुसे हिन्दी सिखानेका कुछ प्रबन्ध करना चाहिये।' हम दोनोंने

तय किया कि अुसे देहरादून कन्या गुरुकुलमे भेज दें। पूज्य बाको वहाँ अुत्सवके निमित्त जाना ही था। मुझे भी अुन्होंने बुलाया था। हम चन्दनको साथ ले गये। वहाँके लोगोंने अुसे हिन्दी पढ़ानेका प्रबन्ध किया और बदलेमे अुससे पढ़ानेका काम भी लिया। वह बोस्टन विश्वविद्यालयकी सोशियॉलाजी (समाजशास्त्र) मे अेम० अे० थी। अितनेमे बापूका राजकोटका सत्याग्रह शुरू हुआ। चन्दन काठियावाड़की लड़की ठहरी। अुससे कैसे रहा जा सकता था। वह सत्याग्रहमें शरीक होनेके लिअे देहरादूनसे राजकोट गयी। अितनेमें समझौता होकर सत्याग्रह स्थगित हो गया और बापू वर्धा आ गये। चन्दन राजकोटमे कुछ बीमार हो गयी।

वर्धामें चन्दनका पत्र आया कि मैं बीमार हूँ। अुस दिन बापू वर्धासे बम्बअी जा रहे थे। मैं बापूको पहुँचाने स्टेशन पर गया था। मैंने चन्दनके बीमार होनेकी बात सुनायी। बापू तफसील पूछने लगे। मैंने चन्दनका पत्र ही अुनके हाथमें दे दिया। स्टेशन पर भीड़ होनेके कारण वे अुसे पढ़ न सके, साथ ही ले गये।

दूसरे दिन सुबह बम्बअी पहुँचनेके पहले ही अुन्होंने चन्दनको अेक तार भेजा जिसमे क्या दवा करनी चाहिये, किन बातोंकी सँभाल रखनी चाहिये, सब कुछ लिखा था। और तुरन्त अहमदाबाद जाकर अमुक वैद्यकी दवा लेनेकी सूचना भी की थी। तार खासा १२-१५ रुपयोंका था। अैसे काममे चाहे जितना खर्च हो बापूको सकोच नहीं रहता है। और जहाँ कंजूसी करने बैठते हैं वहाँ तो पाअी पाअीकी काट कसर करते हैं।

४८

अेक समय बापू दार्जिलिंगमे थे। बंगालमें प्रान्तीय परिषद् होनेवाली थी। अुसमे चित्तरंजन दासका किसी पक्षसे बड़ा विरोध होनेवाला था। अुन्होंने बापूको अुपस्थित रहनेके लिअे कहा था। बापूने स्वीकार भी किया था।

निश्चित समय पर बापू दार्जिलिंगसे निकलनेके लिअे प्रस्तुत हुअे। (बापूकी गफलत नहीं थी, मोटरकी कोअी गड़बड़ी हुअी होगी या क्या,

मुझे ठीक याद नहीं है।) लेकिन स्टेशन पर पहुँचे तो देखा कि मेल चली गयी है। अब क्या किया जाय? बापूने सोचा यह अच्छा नहीं हुआ। अुन्होंने तुरन्त रेलवे स्टेशनसे ही तार भेजकर अेक स्पेशल ट्रेन मँगवायी और चले। अिसमें कुछ समय तो लगा ही। अुधर जहाँ कान्फरेन्स होनेवाली थी, वहाँ लोग स्टेशन पर बापूको लेने गये थे। अुन्होंने देखा बापू डाकगाड़ीमें नहीं है। दासबाबू बड़े मायूस हो गये थे। वह स्वाभाविक भी था।

कान्फरेन्सकी कार्रवाअी शुरू हो गयी थी। अितनेमें पंडालके सामने ही रेलवे लाअिन पर स्पेशल ट्रेन आकर खड़ी हो गयी। बापू अुतरे। बापूको देखकर दासबाबूकी आँखोंमें आँसू भर आये। विरोध हवा हो गया। और अुस दिनका काम कल्पनातीत सफलतासे सम्पन्न हुआ।

४९

यह तो हुअी बड़ोंकी बात।

अेक समय हम मद्रासकी ओर खादी दौरेमें घूम रहे थे। शायद कालीकट पहुँचे थे। वहाँसे अुत्तरकी ओर नीलेश्वर नामक अेक छोटा-सा केन्द्र है। वहाँ मेरा अेक विद्यार्थी बड़ी ही प्रतिकूल परिस्थितिमें खादीका कार्य करता था। अुसे बापूके आगमनकी आशा थी। अुसने स्वागतकी तैयारी भी की थी। पर कार्यक्रममें कुछ अैसी बाधा पड़ी कि नीलेश्वरका कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा। बापूसे यह सहा न गया। कहने लगे — 'बेचारा कितनी श्रद्धासे काम कर रहा है, अेक कोनेमें पड़ा है, किसीकी सहानुभूति नहीं। वहाँ तो मुझे जाना ही चाहिये।' बापूका स्वास्थ्य भी अुन दिनों अच्छा नहीं था। राजाजीने बताया कि किसी भी सूरतसे नीलेश्वर जाना सम्भव नहीं है। बापूने अुत्तेजित होकर कहा — 'सम्भव क्यों नहीं है? स्पेशल ट्रेनका प्रबन्ध करो। अुस लड़केकी श्रद्धाकी मुझे कीमत है।' राजाजी खर्च करनेके लिअे तैयार थे, किन्तु बापूको काफी कष्ट होनेका डर था। अुनके स्वास्थ्यको भी खतरा था। राजाजी बापूको समझानेकी कोशिश करने लगे। महादेवभाअीने भी समझाया। अन्तमें मैंने कहा — "राजाजीकी बात मुझे भी ठीक लगती है। मैं अुस

लड़केको लम्बा चौड़ा खत लिखकर समझा दूँगा कि आप तो आनेवाले थे, हम ही लोगोंने रोक लिया।" बापूने जब देखा कि मैं भी राजाजीके पक्षका हो गया तो हार गये, और दु:खके साथ मान गये।

मेरा विद्यार्थी सारी परिस्थिति समझ तो गया। बापू नहीं आये यह अच्छा ही हुआ, अैसा असने लिखा भी, लेकिन मैं जानता हूँ कि वह राजाजीको क्षमा नहीं कर सका। बेचारे राजाजी अिस तरह अनेकोंकी गलतफहमीके शिकार हुअे हैं।

८०

सादगीसे रहना और अपने हाथसे काम करना, अिन दोनों बातोंमें बापूको किसी विशेष प्रयाससे मनको तैयार करना पड़ा हो अैसा नहीं लगता। विलायतमे जब वे विद्यार्थी थे, तब अन्नाहार (शाकाहार) के होटलोंको ढूँढ़ते ढूँढ़ते चाहे जितनी दूर पैदल ही जाते थे। बादमें तो अपना भोजन अपने हाथसे ही पकाने लगे। अिस स्वयपाक प्रयासकी वजहसे ही श्री केशवराव देशपांडेकी और बापूकी विलायतमें दोस्ती हुअी थी। दोनों मिलकर दलिया (porridge) पकाते थे।

बापू जब बैरिस्टर होकर हिन्दुस्तान आ गये, तब भी वे बम्बअीमें घरसे कोर्ट तक पैदल ही जाया करते थे।

दक्षिण अफ्रीकामें जब अुन्होंने देखा कि गोरा हजाम अुनके बाल काटनेको तैयार नहीं है, तो अुन्होंने अुसकी खुशामद करनेके बजाय अपने हाथसे ही अपने बाल जैसे तैसे काट लिये और कोर्टमें भी वैसे ही पहुँचे। गोरे बैरिस्टरोंने जब मसखरी करते हुअे पूछा कि मि० गांधी क्या चूहेने तुम्हारे बाल काटे है? तब अुन्होंने सारा किस्सा सुनाया।

अिसके बाद जब अुन्होंने टॉल्स्टॉय और रस्किनके ग्रंथ पढे, तब तो सादगी और स्वावलम्बनकी ओर और भी मुड़े। झुलू युद्धके दिनोंमें बापूने अेम्बुलन्स कोरका काम लेकर जो कष्ट अुठाया है, अुसका वर्णन अुन्होंने नहीं दिया है। किन्तु वह सारा अितिहास रोमांचकारी है। मनुष्य शरीर जितना सहन कर सकता है, अुससे भी अधिक

कष्ट अुठा कर अुन्होंने अेम्बुलन्स कोरका काम किया। अुन्हीं दिनों अुनके मनमें अिस विचारका अंकुर पैदा हुआ कि जो कोअी आदर्श सेवा करना चाहता है, अुसे ब्रह्मचर्यका पालन करना ही चाहिये। टॉल्स्टॉयके ग्रंथ पढ़ते हुअे 'ब्रेड लेबर'का खयाल भी अुन्हें जँच गया। अुन्हें विश्वास हो गया कि जिसे शरीर जिन्दा रखनेके लिअे अन्न खाना है, गरमी-ठंढसे बचनेके लिअे वस्त्र पहनना है, अुसे अन्न और वस्त्रकी अुत्पत्तिमें कुछ न कुछ हिस्सा लेना ही चाहिये। यदि हरिजनोंके कष्ट दूर करने हैं, तो पेशाब और टट्टी साफ करनेका काम भी हमें अपने हाथों करना चाहिये और अिस काममें वैज्ञानिक ढंग दाखिल करके सफाअीका काम भी अुच्च आदर्श तक पहुँचाना चाहिये। यह सब अुन्होंने समझा ही नहीं, अुसे अमलमें लाना भी शुरू कर दिया।

* * *

सन् १९१७ में बापू चम्पारन गये। वहाँ जब अुन्होंने किसानोंकी कैफियतें लिखनेका काम शुरू किया, तो बिहारके अनेक वकील अुनकी मददके लिअे आये। श्री राजेन्द्रबाबू, ब्रजबाबू आदि सब अुसी समयके बापूके साथी हैं। बापूने अुन सबको अपने साथ रहनेके लिअे कहा। वह निवास अेक किस्मका आश्रम ही हो गया। ये सब वकील अुसका खर्च चलानेके लिअे चन्दा देते थे। लेकिन आश्रम तो अेक कंजूस बनियेका ठहरा। हर बातकी जाँच होती थी। किसी समय बहुत मँहगे आम आ गये, तो सबको सुनाया गया कि यहाँ पर अिस तरहसे खर्च नहीं किया जा सकता, जब आम सस्ते हों तभी मँगाये जायँ। फिर बादमें कपड़े भी अपने हाथसे धोनेका फर्मान निकाला गया। यह सब करनेमें बापूका सिद्धान्त यही था कि खर्च भले ये वकील ही देते हों, लेकिन जब पैसा दे दिया गया तो वह जनताका हो गया। अुसे हमें अेक गरीब और पीड़ित राष्ट्रके प्रतिनिधि बनकर ही खर्च करना चाहिये।

यों साधारण हालतमें बापू गरीबीके रहन सहनका कितना ही आग्रह क्यों न रखें, लेकिन किसी बीमारके लिअे तो वे चाहे जितने महँगे फल लाकर देते हैं। कभी कभी तो मरीजको महीनों केवल फलोंके रसपर ही रखते हैं।

५१

सन् १९३०में मैं बापूके साथ यरवड़ा जेलमें था। अब मैं जो बात कहनेवाला हूँ, वह अुसके पहलेकी है। जेलमें पहुँचते ही अिन्सपेक्टर जनरल ऑफ प्रिज़न्सने आकर बापूसे पूछा कि आपको हर सप्ताह कितने खत लिखने हैं। बापूने जवाब दिया — 'अेक भी नहीं।' अुसने फिर पूछा — 'बाहरसे आपको हर सप्ताह कितने खत मिलें तो आपका काम चलेगा।' बापूने कहा — 'मुझे अेक भी खतकी जरूरत नहीं।' अितने संवादके बाद वह भला आदमी सीधा हो गया। फिर अुसके साथ तय हुआ कि बापू हर सोम या मंगलके दिन चाहे जितने खत लिख सकते हैं।

फिर सवाल आया कि कौन कौनसे रिश्तेदारोंको वे खत लिखेंगे। बापूने कहा — 'सबके सब भारतवासी मेरे कुटुम्बी हैं। कमसे कम आश्रमवासियोंमें तो मैं भेद कर ही नहीं सकता।' तय हुआ कि आश्रमके पते पर बापू चाहे जिस आदमीको पत्र भेज सकते हैं।

यह सब होनेके बाद मैं यरवड़ा पहुँचा। सरकारने बापूके खर्चके लिअे मासिक १५० रुपयेकी व्यवस्था की थी, क्योंकि वे स्टेट प्रिज़नर थे। पहले ही दिन सुपरिण्टेण्डेण्ट मेजर मार्टिन फर्नीचर, क्रॉकरी, बरतन सब ले आया। देखते ही बापूने कहा — 'यह सब किसके लिअे लाये हो? अिसे वापिस ले जाओ।' बेचारा मेजर समझ नहीं पाया। अुसने कहा — 'मैंने सरकारको लिखा है कि अितने बड़े मेहमानके लिअे कमसे कम ३०० रुपये मासिक चाहिये। मुझे अुम्मीद है कि अुसकी मजूरी आ जायगी।' बापूने कहा — 'सो तो ठीक है, लेकिन यह सारा पैसा मेरे देशकी तिजोरीमेंसे ही खर्च होगा न? मुझे अपने देशका बोझ नहीं बढ़ाना है। मैं अुम्मीद करता हूँ कि मेरे भोजनका खर्च ३५ रुपये मासिकसे अधिक नहीं होगा। अगर मेरा स्वास्थ्य अच्छा होता, तो मैं 'सी' क्लासके कैदियोंकी खुराक ही लेकर रहता। लेकिन शरमकी बात है कि मुझे फल लेने पड़ते हैं, बकरीका दूध भी लेना पड़ता है।'

आखिर वे सब चीजें वापस भेज दी गयीं। अस्पतालसे लोहेकी अेक खटिया, अेक गद्दा और 'सी' क्लासके कम्बल मँगवाये गये। खानेपीनेके लिअे बरतन भी 'सी' क्लाससे ही मँगवाये गये थे: तसला, चंबू आदि। सब बरतन जस्ता मिश्रित किसी धातुके* थे। अेक दिन भी साफ करनेमें गफलत हुअी कि दूसरे दिन बिलकुल काले पड़ जाते, और अुनमें रखे हुअे पानी पर तेल-जैसा कुछ आ जाता था। बापूके लिअे शौचका अलग कमरा था, अुसमें कमोड रखा था। और सोते थे बगीचेके बीच खुलेमें। मेरे जानेके बाद मैंने बापूकी खाने-पीनेकी चीजें रखनेके लिअे अेक जालीदार अलमारी बनवायी थी और अुसे रखनेके लिअे अेक टेबल। साथ ही बापूका पेशाबका बरतन रखनेके लिअे अेक अूँचा स्टूल। यही सब हमारा वैभव था।

बापू जब लिखने बैठते, तो आये हुअे खतोंका जितना भाग कोरा रहता अुसे काटकर अुसी पर जवाब लिख भेजते थे। आश्रमसे जिस बड़े लिफाफेमें सबके खत आते, अुसी पर नये कागजका टुकड़ा लगाकर अुसमें अपने खत डालकर वापस भेज देते थे। लिफाफा पुराना हो गया हो तो अुसकी मरम्मत करके अुसे मजबूत करनेका काम मेरा था। अुस पर अेक दिन हमारी बहस भी हुअी। लेकिन हमारा मतभेद कायम रहा और बापूका वक्त व्यर्थ गया। अुसका हम दोनोंको अफसोस रहा।

मेरे स्वभावमें भी कंजूसीकी मात्रा काफी है। जब बाजारसे खजूर और किशमिशके पूड़े आते, तो अुन परके धागे मैं सब सँभालकर रख लेता था। बापूको अेक दिन धागेकी जरूरत पड़ी। मैंने तुरन्त अपने संग्रहसे निकालकर दे दिया। अिस पर बापू बड़े खुश हुअे। पूछने लगे — 'धागा कहाँसे मिला?' मैंने सारा हाल कह सुनाया। तब कहने लगे — 'दीख पड़ता है, देशकी दौलत तुम्हारे हाथमें सुरक्षित रहेगी। तुम्हें डायरेक्टर ऑफ पब्लिक अिन्स्ट्रक्शन बनाना चाहिये।'

अुन दिनों बापू सूत खूब कातते थे। साप्ताहिक खत लिखना, गीताके श्लोक याद करना और मेरे पास मराठी रीडरें पढ़ना, अितना

---

* अिस धातुको अंग्रेजीमें शायद Pewter (प्यूटर) कहते हैं।

समय बाद करके, बाकीके सारे वक्त वे सूत ही सूत कातते थे। (आजकल जो यरवड़ा चक्र प्रचलित है, अुसका आविष्कार बापूने अुन्हीं दिनों किया था।) सूत कातते तब जहाँ तक हो सके टूटन न निकले अिसका खयाल अुन्हें बहुत रहता था। फिर भी जितनी टूटन निकलती अुसे अिकट्ठा करके मैंने अुनकी छोटी छोटी डोरियाँ बनाअी थीं, जो अुनके सूतकी लटियाँ बाँधनेके काम आती थीं। तब भी हमारे पास टूटनका ढेर हो गया था। मैंने खादीके टुकड़ेकी छोटी-सी थैली बनाअी और अुसमें ये सब टुकड़े भरकर पिन-कुशन बनाना चाहा। लेकिन खादी तो रंगीन नहीं थी, और सफेद खादी जल्दी मैली हो जाय तो फिर वह बापूके सामने रखी नहीं जा सकती थी। बहुत सोचकर मैंने अेक तरकीब निकाली। हमारे पास आयडीन (Iodine) था। अुसमें थैलीको भिगोकर रंगा, और टूटन भर दी। बढ़िया पिनकुशन बन गया। बापूने खुशीसे अुसे स्वीकार किया और बहुत दिन तक सँभालकर अुसका अुपयोग किया।

मेरी कैदके दिन पूरे होते ही मैं छूट गया। लेकिन वह गद्दी बापूके डेस्क पर बहुत दिनों तक रही। किसी विशेष साधनके बिना बनायी हुअी अैसी हाथकी चीजें बापूको बहुत भाती हैं।

* * *

जब मैं मगनवाड़ीमें पहले पहल गया, तो वहाँ मैंने बाँसके बहुतसे मोटे मोटे टुकड़े पड़े देखे। अुन टुकड़ोंसे केवल अेक चाकूकी मददसे मैंने बाँसके चम्मच, पेपर कटर, आदि बहुत-सी चीजें बनायीं और बापूको भेंट कीं। जब मैंने देखा कि बापूने वे सब चीजें पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद जैसोंको अेक अेक भेंट दी और अुनका जिक्र 'हरिजनबंधु' मे भी किया, तब तो ५० सालकी अुम्रमें भी मुझे बच्चेका-सा आनन्द हुआ था।

५२

आश्रमके प्रारम्भके दिनोंकी ही बात है। अुन दिनों हमारा सत्याग्रह-आश्रम अहमदाबादके पास कोचरब (गाँव) में था। वहाँ स्वामी सत्यदेव आये। मैं अुन्हें सन् १९११-१२में अल्मोड़ामें मिल चुका था। तब वे अमेरिकासे नये नये आये थे। अुसके बाद ही अुन्होंने देशकी आज़ादीके लिअे संन्यास ग्रहण किया था।

वे आश्रममें आये, अुसके पहले तक वे अनेक ग्रन्थ लिख चुके थे। अुनका मशहूर नाम था सत्यदेव परिव्राजक। आश्रममें आते ही शामको प्रार्थनाके बाद हम अुनसे तुलसीकृत रामायण सुनने लगे। हिन्दीके प्रति अुनका अनुराग देखकर बापूने अुन्हें हिन्दी प्रचारके लिअे मद्रास भेजा। मद्रासके हिन्दी प्रचारकी पहली किताब सत्यदेवजीने लिखी थी।

हमारा आश्रम कोचरबके किरायेके बंगलेको छोड़कर साबरमतीके किनारे अपनी निजी जमीनपर आ गया था। वहाँ पर भी अेक समय सत्यदेवजी आये। देशकी आज़ादीके लिअे बापू काम कर रहे थे, अुसे देखकर सत्यदेवजी बहुत ही प्रसन्न हुअे। वे आश्रमके मेहमान थे। हम अपनी शक्तिभर अुनकी सेवा करते थे। अुनके खाने पीनेका प्रबन्ध कुछ विशेष करना पड़ता था। अुनको सतुष्ट रखनेमें ही हमारा परम संतोष था।

अेक दिन सत्यदेवजी बापूके पास आकर कहने लगे — 'हम आपके आश्रममें दाखिल होना चाहते हैं। आश्रमवासी बनकर रहेंगे।'

बापूने कहा — 'अच्छी बात है। आश्रम तो आप सरीखोंके लिअे ही है। किन्तु आश्रमवासी होने पर आपको ये गेरुअे कपड़े अुतारने पड़ेंगे।'

सुनते ही सत्यदेवजीको बड़ा आघात पहुँचा। बडे बिगड़े। लेकिन बापूके सामने अपना दुर्वासाका रूप तो प्रकट नहीं कर सकते थे। कहने लगे — 'यह कैसे हो सकता है? मैं संन्यासी जो हूँ।' बापूने कहा — 'मैं संन्यास छोड़नेके लिअे नहीं कहता हूँ। मेरी बात समझो।'

फिर बापूने शान्तिसे अुन्हें समझाया — 'हमारे देशमें गेरुअे कपड़ेको देखते ही लोग भक्ति और सेवा करने लगते हैं। अब हमारा काम सेवा कराना नहीं, सेवा करना होना चाहिये। लोगोंकी जैसी सेवा हम करना चाहते हैं, वैसी सेवा अिन कपड़ोंके कारण वे आपसे नहीं लेंगे। अुल्टे आपकी ही सेवा करने दौड़ेंगे। तो जो चीज हमारे सेवा-संकल्पमें अन्तराय रूप होती है, अुसे हम क्यों रखें? सन्यास तो मानसिक चीज है, संकल्पकी वस्तु है। बाह्य पोशाकसे अुसका क्या सम्बन्ध है? गेरुआ छोड़नेसे सन्यास थोड़े ही छूटता है। कल अुठकर अगर हम देहातमें गये और वहाँकी टट्टियाँ साफ करने लगे, तो गेरुअे कपड़ेके साथ आपको कोअी वह काम नहीं करने देगा।'

सत्यदेवजीको बात तो समझमें आ गयी, लेकिन जँची नहीं। मेरे पास आकर कहने लगे — 'यह तो मुझसे नहीं होगा। सकल्पपूर्वक जिन कपड़ोंको मैंने ग्रहण किया, अुन्हें नहीं छोड़ सकता।'

५३

हॉरेस अलेक्जेंडरने अेक जगह लिखा है कि 'शिष्टाचारके नाम पर समाजमें जो असत्य चलता है, अुसका विरोध करनेमें हम क्वेकर* बहुत ही मशहूर हैं। किन्तु गांधीजी तो हमसे भी बहुत आगे बढ़े हुअे हैं।' हॉरेस अलेक्जेंडरने जो अुदाहरण दिये हैं, वे मुझे नहीं देने हैं। मैं तो स्वयं देखे हुअे कुछ अुदाहरण देता हूँ।

बापूके मनमें बड़े छोटेका भेद है ही नहीं। जहाँ तक अुनका वश चलता है, वे समाजके नियमोंका पालन करते हैं। लेकिन तत्त्वकी बात आते ही अुनका स्वभाव प्रकट होता है।

---

* क्वेकर पन्थ अिसाअी धर्मकी अेक शाखा है, जिसमें अहिंसाका पालन विशेष होता है। वे लोग युद्धमें शरीक नहीं होते और अुनके पन्थमें कोअी धर्मोपदेशक पादरी भी नहीं होते। सब ध्यानके लिअे अेक जगह अिकट्ठा होते हैं और जिस किसीके मनमें आया, वह अुपदेश वचन बोलने लगता है।

पुरानी बात है। अुन दिनों बापू जब बम्बअी जाते, तब अपने मित्र डॉक्टर प्राणजीवन मेहताके भाअी रेवाशंकर जगजीवनदासके मकान पर ही ठहरते थे। 'महात्मा' बननेके बाद बम्बअीके बड़े बडे लोग अुन्हें अपने यहाँ ठहरानेमें अपना बड़ा सौभाग्य मानते थे। लेकिन बापू तो रेवाशंकरभाअी जब तक जीवित रहे, अुन्हींके यहाँ ठहरे।

जहाँ बापू ठहरे, वहाँ अुनके मेहमानोंकी तो कमी नहीं। गृहपतिको सबका प्रबन्ध करना पड़ता। अेक दिन हमारे स्वामी आनन्द वहाँ जा पहुँचे। स्वामी आनन्द संन्यासीके वस्त्र नहीं पहनते। धोती, कुरता और गॉधी टोपी, अिसी मामूली पोशाकमें वे हमेशा रहते है।

रेवाशंकरभाअीके घरके रसोअियाके साथ स्वामी आनन्दकी कुछ बोलचाल हो गयी। ये रसोअिये कभी कभी बहुत अुद्धत होते हैं। बडे छोटेका भेद अुनके मनमे बहुत रहता है। अुसने स्वामी आनन्दका कुछ अपमान किया होगा। स्वामीको गुस्सा आ गया। अुन्होंने अुसे अैसी थप्पड़ लगाअी कि वह बैठ ही गया। शिकायत बापू तक गयी। बापूने स्वामीसे कहा — 'अगर भद्र लोगोंमेंसे किसीसे तुम्हारा झगड़ा होता, तो अुसे थप्पड़ नहीं लगाते! वह नौकर ठहरा, अिसलिअे तुमने हाथ अुठाया। अभी जाकर अुससे माफी माँगो।' स्वामी जैसे मान-धनीसे यह कैसे हो सकता था? जब बापूने देखा कि स्वामी माफी माँगनेके लिअे राजी नहीं हैं, तो बोले — 'यदि अन्यायका परिमार्जन नहीं कर सकते, तो मेरा संग तुम्हें छोड़ना होगा।' बिचारे स्वामी क्या करते? सीधे जाकर रसोअियासे माफी माँग आये।

स्वामीने रसोअियाको जो थप्पड़ लगाअी, वह अितने जोरकी थी कि स्वामीकी कलाअीमें मोच आ गयी। पहले वे जब मेरे साथ रहते, बडे प्रेमसे मेरे कपड़े धो देते थे। लेकिन अब मोचके कारण वह प्रवृत्ति बन्द हो गयी। आज भी अुनकी कलाअीमें पहलेकी शक्ति नहीं है।

५४

१९०९ में हम तिलक पक्षकी ओरसे 'राष्ट्रमत' नामक अेक दैनिक पत्र बम्बअीमें निकालते थे, अुस वक्तसे मेरी और स्वामीकी पहचान है। अुसके बाद हम हिमालयमें साथ साथ घूमे। जब मैं आश्रममें रहने आया और बापूका काम करने लगा, तब भी वे कभी कभी मेरे पास रहनेके लिअे आ जाते। बापूसे मिलना तो स्वाभाविक था ही।

बापूने 'यंग अिंडिया' और 'नवजीवन' नामके दो साप्ताहिक अहमदाबादसे निकालने चाहे। स्वामीने वचन दिया कि वे आकर बापूके नवजीवन प्रेसको छह महीने तक सँभालेंगे और अुसका सारा प्रबन्ध ठीक कर देंगे। अिस ओरसे बापू निश्चिन्त हो गये।

जिस दिन स्वामी अहमदाबाद आनेवाले थे, अुस दिन नहीं आ पाये। ट्रेन आनेका समय हो चुका था। मैंने या किसीने बापूसे कहा कि स्वामी आज ही आनेको थे, लेकिन आये नहीं। बापूका जवाब हाजिर ही था, बोले—'या तो वे मर गये हैं, या बीमार हो गये हैं। आदमी दिन मुकर्रर करे, आनेका वचन दे और नहीं आये यह हो ही कैसे सकता है!'

बापूका यह कड़ा फैसला सुनकर मैं तो मनमें घबरा गया। मुझे फिक्र हुअी। कहीं स्वामीने आलस्य किया हो, तो बापूके सामने अुनकी प्रतिष्ठा क्या रहेगी? दूसरे दिन स्वामी आये। मैंने अुन्हें देखते ही पूछा— 'कल क्यों नहीं आये?' वे बोले—'मैं बम्बअीसे ठीक समय पर निकला तो सही, लेकिन ट्रेनमें मुझे बुखार आ गया। अिसलिअे सूरतमें अुतरना पड़ा। बहनके यहाँ गया, कुछ दवा ली, थोड़ा आराम किया, और आज आया हूँ।' मैंने अुन्हें गये दिनके बापूके शब्द कहे। बापूको भी स्वामीकी देरीका कारण बतलाया। बापू बोले—'मैंने तो मान ही लिया था कि अैसा ही कुछ हुआ होगा। नहीं तो आते कैसे नहीं?'

५५

अुसी दिन स्वामीने नवजीवन प्रेसका चार्ज ले लिया और अैसी लगनसे कार्यमें जुट गये मानो वे भी अुस प्रेसके अेक पुर्जे ही हों। फिर तो बड़े बड़े आन्दोलन शुरू हुअे। हम सब लोग बापूके काममें लीन हो गये। हमें न दिन सूझता था न रात।

अेक दिन मैं प्रेसमें गया। देखता हूँ कि स्वामी अपने दस्तूरके मुताबिक अपना काम कर रहे हैं। दूधका अेक गिलास पासमें रखा है। अच्छे पके केले सामने पड़े हैं। और प्रेसके प्रूफ अेकके बाद अेक हाथमें आ रहे हैं। वे बायें हाथसे केलेका अेक कौर तोड़ते हैं और दाहिने हाथसे प्रूफ सुधारते हैं। अेक प्रूफ हाथसे गया कि झट दूधका गिलास मुँहसे लगा लिया। अेक घूँट पीया और फिर लगे प्रूफ देखने। तीन तीन चार चार दिन तक न वे नहाते थे, न शौच जाते थे। जहाँ काम वहीं सोनेका बिस्तर।

अैसी हालतमें अुत्तर भारतके किसी स्थानसे बापूका अेक कार्ड स्वामीके नामसे आया। अुसमें सिर्फ अिसी मतलबकी कुछ बातें थीं कि 'तुमने नवजीवनका काम सँभाल लिया है, अिसलिअे मैं निश्चिंत हूँ। आशा करता हूँ कि तुम्हारा काम अच्छी तरहसे चल रहा होगा।' स्वामी असमंजसमें पड़ गये। अैसा कार्ड क्यों आया? न मैंने किसी कठिनाअीकी शिकायत की, न मेरे बारेमें किसीने शिकायत की होगी। खूब सोचमें पड़े। फिर याद आया कि 'नवजीवन' छह महीने तक चलानेका जो वायदा किया था, अुसकी मुद्दत आज ही पूरी होती है। स्वामीने कहा — 'बुड्ढा बनिया बड़ा चतुर है। यह तो मेरे वायदेका पुनारम्भ (renewal) है। मैं तो भूल ही गया था कि छह महीनेके ही लिअे यहाँ आया हूँ। लेकिन बुड्ढा भूलनेवाला नहीं। देखो, किस तरह मुझे फिरसे बाँधे ले रहा है। जीवतराम (कृपलानी) सही कहता है कि यह बुड्ढा बड़ा घाघ है।

५६

मुझे बापूने आश्रममें बुलाया था वह आश्रमवासीके तौर पर नहीं, किन्तु राष्ट्रीयशाला चलानेवाले अेक शिक्षकके तौर पर। श्री किशोरलालभाअी मशरूवाला और श्री नरहरिभाअी परीख भी अिसी तरह आये थे। मामा साहब फड़के और श्री विनोबा भावे आश्रमवासी बननेके लिअे ही आश्रममे आये। हम राष्ट्रीय शिक्षकों पर आश्रमका कोअी बन्धन नहीं था। आश्रमके मत भी हमारे लिअे अनिवार्य नहीं थे। फिर भी आहिस्ता आहिस्ता, पता नहीं कब और कैसे, हम आश्रमवासी बन गये।

बापू अहमदाबादसे चम्पारन जा रहे थे। मैं अुन्हें बड़ोदा स्टेशन पर मिला। अुन्होंने मुझे पूछा — 'चम्पारन कहाँ है, जानते हो तुम?'

भारतवर्षमें बहुत ही कम लोग अैसे होंगे जो अिस प्रश्नका जवाब दे सकते हैं। लेकिन मैं तो राष्ट्रीय शिक्षक था। यदि मैं जवाब नहीं दे पाता, तो मेरे लिअे बड़ी शरमकी बात होती। खुशकिस्मतीसे मैं जब मुजफ्फरपुर होकर नेपालकी यात्राके लिअे गया था, तो वहाँ मैंने चम्पारनका नाम सुन लिया था। मैंने कहा — 'मैं ठीक ठीक तो नहीं कह सकता, लेकिन अुत्तर बिहारमें कहीं है। चम्पारन कोअी शहर है या जिला यह मैं नहीं कह सकता। अितना जानता हूँ कि नैमिषारण्य या दंडकारण्यके जैसा कोअी जंगल नहीं है।' (वेदारण्यका नाम अुन दिनों मैंने नहीं सुना था।)

बापू खुश हो गये। फिर मैंने कहा — 'आप तो आश्रममे राष्ट्रीयशाला खुलवाना चाहते हैं और स्वयं चम्पारन जा रहे हैं। नींव तो आपको ही डालनी है। हर चीजमें हमें आपकी सलाहकी जरूरत होगी।' बापूने जवाब दिया — 'अभी तो प्रारम्भ ही करना है। हमें व्यापक रूप नहीं देना है। कुछ बिगड़ भी गया तो हमें सुधारते क्या देर लगेगी?' अितने जवाबसे मुझे सन्तोष नहीं हुआ। फिर बापू बोले — 'अभी तो आश्रमके शुरूके ही दिन हैं। मैं बहुत दिन तक दूर नहीं रह सकता हूँ। हर पखवाड़े अेक बार आश्रम आ ही

जाअूँगा ।' यह सुनकर मुझे जितना सन्तोष हुआ अुतना ही आश्चर्य भी । कहाँ अहमदाबाद और कहाँ चम्पारन! मेरे खयालमें भी नहीं था कि ये राजनीतिक नेता छोटेसे आश्रमके लिअे और हमारी छोटीसी शालाके लिअे हर पखवाड़े अितना कष्ट अुठाकर और अितना खर्च करके चम्पारनसे आश्रम आयेंगे । मैं बहुत ही खुश हुआ । मैंने मन ही मन कहा कि जब आश्रम जीवन और शालाकी व्यवस्थाका आपके मनमें अितना महत्व है, तो मुझे कोअी चिंता नहीं । हम तनतोड़ काम करेंगे ।

बापूने जो कहा था - सो करके भी दिखाया । वे हर पखवाड़े आते थे ।

५७

आश्रमकी हमारी शाला शुरू हुअी । बादमें मशरूवाला और परीख आये । बापू तो पखवाड़ेमें अेक बार आते ही थे । वे आते और हमारे बीच बैठकर छोटी मोटी सब बातोंकी चर्चा करते थे ।

अेक दिन बापू कहने लगे — 'अेक बात स्पष्ट कर दूँ । जो शाला तुम लोग चला रहे हो, यह मेरी नहीं है, तुम्हारी है । लोग मुझे पहचानते हैं और मुझ पर विश्वास रखते हैं, अिसलिअे शालाके खर्चका भार मैंने अुठाया है । लेकिन अिससे शाला मेरी नहीं होती । जो कुछ भी सलाह मैं यहाँ देता हूँ वह सिर्फ सलाह ही है । अगर तुम्हें वह न जँचे तो अुसे फेंक दो । जो कुछ तुम्हारी समझमें आये, अुसे सही मानकर बिना किसी हिचकिचाहटके अुस पर अमल करते चलो। हाँ, अगर मैं तुम्हारे साथ रहता और तुम जैसा शिक्षक बनकर काम करता, तब तो तुम्हें मैं अपनी रायके पक्षमें लानेके लिअे पूरी कोशिश करता । लेकिन क्योंकि मैं शिक्षकका काम नहीं कर रहा हूँ, मुझे अपने खयाल तुम पर लादनेका कोअी अधिकार नहीं । तुम लोगों पर मेरा विश्वास है । तुम जो भी कुछ करोगे अुससे खराबी नहीं होगी ।'

अेक दिन सुलेखनकी चर्चा निकली। बापूको अपने अक्षरोंका बड़ा रंज है। अिसलिअे वे सुलेखन पर विशेष जोर देते हैं।

बापूके अंग्रेजी अक्षर वैसे तो खराब नहीं हैं और जब वे ध्यानपूर्वक कोअी खास पत्र या मजमून लिखते हैं, तब तो अुनके अक्षरोंका व्यक्तित्व अपना असर किये बिना नहीं रहता। गुजराती तो वे दोनों हाथसे लिखते हैं। दाहिने हाथके थक जाने पर बायेंसे काम लेते हैं। 'हिन्द स्वराज्य' अुन्होंने विलायतसे दक्षिण अफ्रीका लौटते समय जहाजमें जहाजके ही कागज पर लिखा था। वह पुस्तक ब्लाक बनवाकर भी छपायी गयी है। अुसमें दोनों हाथोंकी लिखावट पायी जाती है। दोनोंमे भेद काफी है। बायें हाथकी लिखावट विशेष सुवाच्य है।

बापू हमें कहा करते थे कि बच्चोंको अक्षर सिखानेके पहले आलेखन यानी ड्राअिंग सिखाना चाहिये। ड्राअिंग पर हाथ बैठ जाने पर अक्षर खराब होनेका कोअी डर ही नहीं रहता। बापूके अिसी सिद्धान्तको मैंने जो अेक वैज्ञानिक रूप दिया है, अुसे यहाँ थोड़ेमें देता हूँ।

लिपियाँ दो प्रकारकी होती हैं: चित्र लिपि और अक्षर लिपि। चित्र लिपि सीधी होती है। जो आकृति जैसी देखी वैसी ही अुसकी प्रतिकृति अुतार देना यह चित्र लिपिका काम है। कोअी कुर्सी या घड़ा या आम देखकर अुसकी हुबहू आकृति अुतार देना चित्र लिपिका काम हुआ।

अक्षर लिपिका काम जटिल है और है भी भारी। किसी चीजका हम नाम रखते हैं। गलेसे ध्वनि निकालकर नामको व्यक्त करते हैं। कान अुस ध्वनिको ग्रहण करते हैं। और मन अुस चीजकी आकृति समझ लेता है। अिस ध्वनिको किसी आकृतिके द्वारा व्यक्त करना ही अक्षर लिपि है। सर्प विद्या* भी अैसी ही होती है।

---

* कहा जाता है कि साँपको कान नहीं होते। वह आँखोंसे ही सुनता है। अेक अिंद्रियके द्वारा दो दो कार्य हम भी करते हैं, जैसे जीभ द्वारा चाखना और बोलना। तो सर्प भी आँखोंसे सुनता हो तो आश्चर्य नहीं। अिसलिअे हमने अक्षर द्वारा आँखोंसे ध्वनिका बोध करानेकी तरकीबको सर्प विद्या कहा है। पढ़ना = आँखोंसे सुनना।

छोटे बच्चोंके लिअे आकृति देखकर आकृति खींचना आसान है। अिसलिअे चित्र लिपि पहले सिखानी चाहिये बादमें अक्षर लिपि।

शिक्षाका प्रारम्भ अक्षरोंके द्वारा न करते हुअे निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग, रचना आदि द्वारा करना चाहिये। और अुन चीजोंको व्यक्त करनेके लिअे चित्र लिपि सिखानी चाहिये। अैसी अेक दो सालकी शिक्षाके बाद अक्षरोंसे ज्ञान कराया जाय, तो शिक्षण यथायोग्य होगा।

चित्र लिपि सीखनेसे हाथकी अुंगलियों पर और कलम पर पूरा काबू आ जाता है, और मनमें जैसी आकृति हो वैसी ही अुतरती है। अुसके बाद अक्षर लिखनेसे अक्षर मोतीके दाने-जैसे सुन्दर आते हैं।

५९

हम दक्षिणकी मुसाफिरीमें थे। स्थान याद नहीं है, शायद बॅंगलोर होगा। बापू अपने कमरेमें कुछ काम कर रहे थे। दर्शनाभिलाषी लोग आते जाते थे। अितनेमें अेक सज्जन नवपरिणीत दम्पतीको ले आये। दोनोंका पोशाक अमीरी था। नवपरिणीतोंका पोशाक कुछ तो कीमती और तडक-भड़कवाला होता ही है, अिनका अुससे भी कुछ विशेष था। आगन्तुक सज्जनने कहा — 'महात्माजी, आज ही अिनकी शादी हुअी है। आपके आशीर्वादके लिअे आये हैं।' बापूने अुन दोनोंको अपने सामने बैठाया और कहा — 'अैसे मुफ्त ही आशीर्वाद नहीं मिल जाते। हरिजनोंके लिअे कुछ ले आये हो? शादीमें पुरोहितोंको खूब दक्षिणा दी होगी। हरिजनोंको भी कुछ दिया? हरिजनोंको ठगो यह नहीं चलेगा। लाओ, कुछ दक्षिणा दो तब आशीर्वाद मिलेंगे।'

नवपरिणीत दपती बोल कैसे सकते हैं! दोनों लानेवाले सज्जनकी ओर देखने लगे।

तब वे सज्जन बोले — 'महात्माजी आपकी बात ठीक है, लेकिन यह नवयुवक अेम० सी० राजाका* लड़का है और यह है अुनकी पुत्रवधू।

* अेम० सी० राजा स्वय हरिजन है और दक्षिणके हरिजनोंके प्रधान नेता है।

बापू जोरसे हँस पड़े। कहने लगे — 'तब तो तुम मेरे अिस टैक्ससे मुक्त हो।'

मैंने मनमें सोचा, विनोद तो हुआ लेकिन अिस हरिजन नवदम्पतीने देखा होगा कि बापूके मनमें अुनकी जातिके प्रति कितना प्रेम है!

६०

शायद सन् १९३३ की बात है। बापूके हरिजन दौरेके आखिरी दिन थे। बापू सिंध आये। मैं अुसी समय हैदराबाद जेलसे छूटा था। अुनके साथ हो लिया।

देखता हूँ तो बापूके पाँवों पर बहुतसे खरोंच हैं, अुनसे लहू निकल रहा है। जब पूछा कि यह क्या है? तो पता लगा कि महात्माके चरणस्पर्शसे पुनीत होनेवाले भक्तोंकी अुँगलियोंके नख-चिन्ह हैं। मनुष्यकी अिस भक्तिके सम्बन्धमें मुझे विचार आने लगे: मनुष्य अगर और किसीको परेशान करे तो नरकका अधिकारी होता है। पर महात्मा तो ठहरे जनताके अुपभोगकी चीज! अीसा मसीहको भी अिसी तरह क्रूस पर चढ़ाकर ही तो दुनियाने अपना प्रेम दिखाया था! महात्माके चरणोंका अैसा स्पर्श करनेसे स्वर्गका थ्रू टिकट मिलता है।

अुस दिन रातको मैंने गरम पानीसे बापूके पाँव धोये, वैसलीन लगाया और दूसरे दिनसे मैं खुद अुनका स्वय-नियुक्त चरण-सेवक नहीं किन्तु चरण-रक्षक बना। अिस सेवाके बदले जनताकी ओरसे गालियोंकी पूरी पूरी मजदूरी मिलती थी।

६१

सिंधसे हम लाहौर पहुँचे। वहाँ अनारकलीमें सर्वेण्ट्स ऑफ पीपुल्स सोसायटीके मकानपर ठहरे थे। वहाँके अेक प्रख्यात डॉक्टरको खबर मिली कि महात्माजीका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है और मुसाफिरीमें भी काफी परेशानी हुआी है। वे फौरन ही बापूको देखनेके लिअे आये।

कहने लगे — ‘महात्माजी हम आपकी डॉक्टरी जाँच करना चाहते हैं।’ बापूने कहा — ‘ठीक है, आप कर सकते है। लेकिन मैं अैसा बीमार नहीं हूँ।’ डॉक्टरने भक्ति-भीने स्वरमें कहा — ‘लेकिन जब तक आपकी जॉच न कर लें हमें तसल्ली नहीं होगी।’ बापूने कहा — ‘जब तसल्ली ही करना रहा तब तो ठीक है। लेकिन मेरी फीस दिये बगैर मैं किसीको अपनी जाँच करने नहीं देता। अितने मुलाकाती राह देख रहे हैं। आपके लिअे मैं समय मुफ्त क्यों निकालूँ?’

भले डॉक्टरने अपनी जेबसे १६) निकाले और बापूके सामने रख दिये। कहने लगे — ‘यहाँ आनेके पहले विजिट पर गया था। जो मिला सो सब आपके सामने रखा है।’ बापूने प्रसन्नतासे वे रुपये ले लिये और हरिजन फंडमें जमा कर दिये।

लाहोर छोड़ते समय वहॉके पत्रकारोंने समय माँगा। सबके सब अिकट्ठा होकर आये। यहाँपर भी बापूने वही अपनी फीसकी शर्त रख दी। शेरको, लहूकी चाट जो लग चुकी थी! पत्रकारोंने अुसी वक्त कुछ चदा अिकट्ठा करके भेट किया। बापू भी प्रसन्न हुअे और पत्रकार भी। पत्रकारोंको अखबारका मसाला चाहिये था। अुन्हें यह सारा किस्सा भी मिल गया।

६२

चम्पारनसे अेक दिन बापूका खत आया। अुन दिनों हमारा आश्रम कोचरबमें किरायेके बंगलेमें था। खतमें लिखा था:

‘अब वहॉ बारिश शुरू हुअी होगी। न हुअी हो तो जल्दी होगी। अब हवाकी दिशा बदल जायगी। अिसलिअे आज तक जिस गड्हेमें पाखानेके डब्बे खाली करते थें वहॉ आयन्दा न किये जायँ, नहीं तो अुधरकी हवासे बदबू आनेकी सम्भावना है। अिसलिअे पुराने गड्हे पूर दिये जायँ और अमुक जगह नये गड्हे खोदे जायॅ।’

अिस पत्रको देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। बापू चम्पारनमें जॉच पड़तालका काम भी करते हैं और आश्रमकी अिन छोटी

छोटी बातोंकी भी फिकर रखते हैं। मुझे नेपोलियनके वे वचन याद आ गये, जिनका आशय था: युद्धमें वही आदमी सदा विजयी होता है, जो छोटी छोटी तफसीलकी बातोंको सोचकर अुनका अुपाय और सरंजाम कर रखता है। साथ साथ डॉ० मार्टीनोका भी अेक वचन याद आया: Triflings make perfection and perfection is not a trifle — छोटी छोटी बातोंकी पूर्तिसे पूर्णता प्राप्त होती है और पूर्णता कोअी छोटी बात नहीं है।

६३

महादेवभाअी और नरहरिभाअीकी घनिष्ठ मित्रता थी। आश्रमके प्रारम्भके दिनोंमें अेक बार महादेवभाअीने कहीं लिखा होगा कि बापू अमुक अमुक काममें मुझे कायमके लिअे बाँधना चाहते हैं। नरहरिभाअीने विनोदमें जवाब लिखा: 'बुड्ढा बड़ा चालाक है। अेक बार अगर अुसके चंगुलमें फँसे तो फँसे। फिर छूट नहीं सकते।'

अैसे तो बापू कभी दूसरेके पत्र पढ़ते नहीं हैं। लेकिन अुस दिन सारी डाक बापूके हाथमें गयी। आश्रमसे महादेवके नामका पत्र है, अक्षर नरहरिभाअीके हैं, आश्रमकी खबरें होंगी, यह सोचकर बापूने वह पत्र खोला। पढ़ा तो बड़े दुःखी हुअे। अुन्होंने नरहरिभाअीको पत्र लिखा। अुसमें लिखा था — 'अकस्मात तुम्हारा खत मैंने पढ़ लिया। जिन्दगीके अितने वर्ष व्यतीत किये, अब अिस बुढ़ापेमें अैसा कौनसा मेरा स्वार्थ है, जिसके लिअे तुम लोगोंको मैं धोखा दूँगा।'

यह खत पाकर बेचारे नरहरिभाअी तो काटो तो खून नहीं अैसे हो गये। दौड़े दौड़े मेरे पास आये, सारा किस्सा सुनाया, और बापूका खत मेरे हाथमें रखा। फिर पूछने लगे — 'अब किन शब्दोंमें बापूसे माफी माँगूँ।' मैंने अुन्हें धीरज दिया। फिर बतलाया — 'यों माफी-वाफीकी बात न करो। जो माँगी कि मर ही गये समझो। अैसे संकट साँडकी तरह सींग पर ही लेने पड़ते हैं। बापूको लिखो कि 'हमारा पत्र

आपने पढ़ा ही क्यों? अच्छा हुआ कि अुसमें अिससे ज्यादा कुछ नहीं लिखा था। हम युवकोंकी अपनी दुनिया होती है। आपको मालूम हो अिसलिअे आपके बारेमें हम और भी जो जो कहते हैं, वह भी यहाँ लिख देता हूँ। अैसे ही विनोद पर तो हम जीते हैं। और अिसीसे आपके प्रति हम अपनी निष्ठा बढ़ाते हैं।'

अिस खतका अच्छा असर हुआ। बापू हम लोगोंको अच्छी तरह समझ गये।

६४

सन् ३०में मैं बापूके साथ रहनेके लिअे सरकारकी ओरसे साबरमती जेलसे यरवड़ा जेल भेजा गया। मैंने देखा कि बापू हमेशाके आहारके फल नहीं ले रहे हैं। सन्तरे और अंगूर अुनके स्वास्थ्यके लिअे आवश्यक थे। वे दोनों नहीं लेते थे। अुनका आहार था — बकरीका दूध, खजूर, कुछ किशमिश और अुबला हुआ शाक। जाते ही मैंने सन्तरोंके लिअे आग्रह किया। मुझे भय था कि अुनका स्वास्थ्य बिगड़ जायगा। लेकिन वे क्यों मानने लगे। अुनकी दलील थी: मैं यहाँ स्टेट प्रिज़नर बनकर बैठा हूँ और बाहर लोग कितने कष्ट अुठा रहे हैं, लाठी चार्ज हो रहा है। अैसी हालतमें बाजारसे ये कीमती फल मँगवानेका जी ही नहीं होता।'

मैं चिन्तामें पड़ गया। अपनी जिद् तो वे छोड़ेंगे नहीं, और फल तो खिलाने चाहिये। क्या किया जाय? मैंने जेलवालोंसे तरह तरहके शाक मँगवाना शुरू किया और अुबालकर हम दोनों खाने लगे। फिर जेलके बगीचेसे टमाटर मँगवाये। यह तो शाक भी है और फल भी। मुझे सन्तोष था कि अिससे जरूरी विटामिन मिल जायँगे। अेक दिन मुझे जेलसे कच्चा पपीता मिला, वह भी मैंने अुबाल लिया। दूसरे दिन जो पपीता आया वह पका हुआ निकला। मैं बहुत खुश हुआ, आखिर कुछ तो रास्ता मिला। मैंने बापूसे कहा — 'आजका शाक मुझे पकाना नहीं पड़ा। सूर्यनारायणने ही पकाकर भेजा है। वह बाजारसे भी नहीं आया है। जेलके बगीचेकी सस्तीसे सस्ती चीज है।'

मैंने पका हुआ पपीता अुनके सामने रखा। मेरी दलीलसे बापूको लगा कि मेरी कुछ चालबाजी है। लेकिन वह अकाटय थी, अिससे बापूने वह पपीता लिया। अब पका हुआ पपीता कभी मिलता और कभी नहीं। फिर भी मुझे अितना संतोष था कि कुछ न कुछ फलका तत्त्व अुनके पेटमें जा रहा है।

मेरी बात तो यहीं पूरी होती है। लेकिन अिसके साथ अेक परिशिष्ट भी देना अुचित है।

समझौतेकी बातचीतके लिअे पंडित मोतीलालजी, जवाहरलालजी, वल्लभभाअी वगैराको यरवड़ा जेलमें लाया गया। अुनके साथ सिंधके जयरामदासजी भी थे। अुन्होंने मुझे बापूके जेल जीवनकी बातें पूछीं। मैंने अूपरका किस्सा भी कहा।

जयरामदासजीने जेलसे छूटने पर अखबारमें लिख दिया कि बापू अपना हमेशाका फलाहार नहीं ले रहे है। सरकारकी ओरसे तुरन्त प्रतिवाद निकला कि गांधीजी फल लेते हैं। मुझे बड़ी चिढ़ आयी। लेकिन क्या करता? मैं तो जेलमें ही था!

अैसी थी अुस समयकी हमारी भारत सरकार! किसी तरह शाब्दिक सत्य निबाहकर और सरासर झूठी बातें बनाकर लोगोंको भुलावेमें डालनेमें ही अुसकी सभ्यता थी।

६५

अूपरके किस्सेके समयकी ही यह बात भी है। अुन दिनों जे० सी० कुमारप्पा 'यंग अिण्डिया' का संपादन करते थे। जेलमें हमें 'यंग अिण्डिया' मिलता था। फिर जब सरकारने अुसे जप्त किया और कुमारप्पा साअिक्लोस्टाअिल टाअिपरायटर पर निकालने लगे, तो सरकारकी गफलतसे अुसके भी दो-तीन अंक हमारे पास आ गये। लेकिन बादमें मिलने बन्द हो गये।

अिन्हीं अंकोंमें समाचार था कि चंद लोगों पर गिरफ्तार करके जेलमें बन्द करनेके बाद लाठी चार्ज हुआ।

पढ़ते ही बापू बेचैन हो गये। शामको आँगनमें टहलते टहलते कहने लगे — 'यह तो मुझसे सहा नहीं जाता। मैं तो वाअिसरायको

अेक खत लिखकर अनशन करना चाहता हूँ।' जब मैंने पूछा कि कितने दिनका? तो कहने लगे — 'दिनका सवाल नहीं है। यह सब मुझे बरदाश्त नहीं हो रहा है।'

मैं चिन्तामें पड़ा। मुझे अुनका यह विचार पसंद नहीं आया। मैं बोला — 'बापूजी आप कोअी निश्चय करें, तो अुसके विरुद्ध बोलनेकी न मेरी हिम्मत है न अिच्छा। किन्तु आप कुछ भी निश्चय करें अुसके पहले मेरी दृष्टि आपके सामने रखनेकी मुझे अिजाजत दीजिये। मैं मोहवश होकर आपको अैसे कामसे निवृत्त करनेका प्रयत्न करूँगा, सो तो आप मानेंगे नहीं। मेरा कहना यही है कि रक्तकी दीक्षा मिले विना देश मजबूत नहीं होगा। सन् '५७ के गदरके बाद राज-नीतिकी बीना पर हमने बहुत कम मार खायी है। सिर फूटते हैं, गोलियाँ चलती हैं, ये बातें करीब करीब हम भूल-से गये हैं। अिसलिअे गोली हौवा बन गयी है। ये लाठियाँ तो राष्ट्रको मजबूत बना रही है। हम तो किसीको मारते नहीं। हम लोगोंका खून बहे, क्या यह ठीक नहीं है? लाल रंग देखनेकी आदत तो हो रही है। और भी अेक बात। आज राष्ट्र आपके आधार पर ही सब शक्ति कमा रहा है। आज आपके बलिदानसे अिस वक्त अगर राष्ट्रमें आज़ादीका जोश पागलपन तक बढ़ जाये, तो अुस बलिदानका भी मैं स्वागत करूँगा। लेकिन अिस वक्त राष्ट्र तो अेक खम्भेकी द्वारका हो रहा है। मुझे डर है कि अगर अिस वक्त आपकी देह छूट जाय, तो सारा राष्ट्र स्तंभित होकर बैठ जायेगा। अिसलिअे आपको हमें अपना खून बहानेका मौका देना चाहिये।'

मेरे कहनेका क्या असर हुआ सो तो नहीं जानता। लेकिन बापू गम्भीर हो गये, कुछ बोले ही नहीं। अिसके बाद फिर अुन्होंने अनशनकी बात नहीं छेड़ी।

६६

अिन्हीं दिनोंकी बात है। बापूका वजन कुछ कम हो गया था। मैंने कहा — 'बापूजी, आप अपने स्वास्थ्यकी कुछ अुपेक्षा-सी कर रहे हैं। श्रम भी ज्यादा करते हैं।' जवाब मिला — 'अैसा नहीं है, काका। मैं जानता हूँ कि मेरे पर कुछ भी निर्भर नहीं है, सबका भार अुसी पर है। लेकिन लोग मानते हैं कि सब कुछ मुझपर ही निर्भर है। अिसलिअे जिस तरह अेक माता अपने गर्भके बच्चेके खातिर स्वास्थ्यका बहुत खयाल रखती है, अुसी तरह जो स्वराज्य मेरे पेटमें है, अैसा माना जाता है, अुसके लिअे मैं भी अपने स्वास्थ्यके बारेमें सतर्क रहता हूँ।'

६७

कुछ दिन बाद बापूने शामके घूमनेका समय बढ़ा दिया। मैंने कहा — 'क्यों बापूजी, पहले तो आप आधा ही घंटा घूमते थे। अब तो करीब अेक घंटा घूमने लगे। अिधर सुबह भी आप काफी घूम लेते हैं। अिसका स्वास्थ्यपर कहीं बुरा असर तो न हो!' बापूने जवाब दिया — 'मुझे अन्दरसे कुछ ज्यादा शक्ति मालूम होने लगी है। अिसलिअे जानबूझकर मैंने घूमनेका समय बढ़ाया है। घूमना ब्रह्मचर्य व्रतके पालनका अेक अंग है।' जब मैंने पूछा कि यह कैसे? तो कहने लगे — 'आदमीको रोज सुबह जो शक्ति दिनभर काम करनेके लिअे दी जाती है, वह अुसे सोनेके समय तक खतम कर डालनी चाहिये। यह है अपरिग्रहका लक्षण। अगर पूरी शक्ति श्रद्धा पूर्वक खर्च नहीं की गयी, तो बची हुअी शक्ति विकारका रूप लेगी। जब हमें रोजके लिअे आवश्यक शक्ति मिल ही जाती है, तो आजकी शक्ति क्यों बचायी जाय? शरीरमें जो कुछ वीर्य पैदा होता है अुसका परिश्रम द्वारा पसीनेमें रूपान्तर कर दिया जाय, तो रातको नींद अच्छी आती है और विकारकी सम्भावना कम रहती है। अिसलिअे अपरिग्रह

और ब्रह्मचर्य दोनोंकी दृष्टिसे पूरा परिश्रम करना ही चाहिये।' अितना कहकर जरा ठहरे और फिर बोले — 'दक्षिण अफ्रीकामें जब ४० मील घूमनेकी शक्ति थी, तो कभी ३९ मील नहीं घूमा। काफी खाता था और खूब परिश्रम करता था।'

अेक दिन आश्रममें कहने लगे — 'अगर केवल अपरिग्रह व्रतका ही खयाल किया जाय, तो अुसका यह अर्थ नहीं कि मनुष्य सादगीसे रहे। हम लोग बड़े परिग्रही हैं। हमारी तुलनामे गोरे लोग ज्यादा अपरिग्रही हैं। पाँचसौ भी कमायें तो महीनेके अंत तक सारी कमाअी खर्च कर डालते हैं। आगे मेरा क्या होगा, मेरे बच्चोंका क्या होगा, अैसी चिन्ता वे नहीं करते। अैसी चिन्ता तो निरी नास्तिकता ही है। हमारे लड़के हमसे कम पुरुषार्थी होंगे, अैसी अश्रद्धा हम क्यों रखें? लड़कोंके लिअे धन संग्रह करके रखना अुन पर अश्रद्धा दिखाना है, अुन्हें बिगाड़ना है। लाहौरके बैरिस्टर संतानम् भी अिसी मतके हैं। अुन्हींसे मैंने अेक दिन यह सुना था कि लड़कोंके लिअे संग्रह छोड़ जाना अुनके प्रति अन्याय करना है।'

६८

आश्रमके प्रारम्भके दिनोंकी बात है। बापूके पास अक्सर अेक ज्योतिषी आया करते थे। अुनका नाम शायद गिरजाशंकर था। अुनसे अेक दिन बापूने कहा — 'जब आप नियमित ही आते हैं, तो आश्रमके लड़कोंको संस्कृत ही क्यों नहीं पढ़ाते?' अिस पर वे संस्कृत पढ़ाने लगे।

वे थे फलित ज्योतिषी। अहमदाबादके अनेक धनी लोगोंका अुन पर विश्वास था। सोमालाल नामके किसी धनीको बापूको कुछ दान देनेकी अिच्छा हुअी। जहाँ तक मुझे स्मरण है, अुन्होंने ज्योतिषीजीके हाथ चालीस हजार रुपये राष्ट्रीय शालाका मकान बँधवानेके लिअे भेजे। अुन दिनों हम वाड़जमे तंबू और टाटोंकी झोपड़ियोंमें रहते थे। मकान बाँधनेका सोचें अुसके पहले ही अहमदाबादमें अिन्फ्लुअेन्जा आ गया और रोज सौ दो सौ आदमी मरने लगे। बड़ा हाहाकार मच गया।

बापूने ज्योतिषीजीसे कहा — 'अिस साल तो हमें मकान नहीं बँधवाने हैं। न शालाका ही मकान बँधेगा। अिसलिअे सोमालालभाअीके दिये हुअे रुपये वापस ले जाओ।' ज्योतिषीजीने कहा — 'अुन्होंने तो पैसे माँगे नहीं हैं।' अिस पर बापू बोले — 'तो भी क्या हुआ? जिस कामके लिअे अुन्होंने पैसे दिये, वह तो अभी हो ही नहीं रहा है। फिर क्यों ये पैसे सँभाले जायँ? हम किसीके पैसे सँभालकर रखनेके लिअे थोड़े ही यहाँ बैठे हैं?' ज्योतिषीजी बोले — 'अभी न सही, लेकिन किसी भी समय तो छात्रालय बँधेगा न? तब रुपयोंकी जरूरत होगी।' बापूने कहा — 'क्यों नहीं, लेकिन जब बाँधनेका मौका आयेगा, तब ये नहीं तो दूसरे कोअी देने वाले खड़े हो जावेंगे।' ज्योतिषीजीने जाकर दाताको यह सब किस्सा कह सुनाया। अुसने कहा — 'जो मैंने दिया है सो दिया है। वापिस नहीं लूँगा।'

६९

मण्डालेसे लौटनेके बाद लोकमान्य तिलकने कांग्रेसमें फिरसे प्रवेश करनेका निश्चय किया। अपने पक्षके लोगोंको समझानेके लिअे अुन्होंने बेलगाँवकी प्रांतीय पोलिटिकल कान्फरेन्समें कोशिश की। मेरे आग्रह और श्री गंगाधरराव देशपांडेके आमन्त्रणके कारण बापू भी अुस कान्फरेन्समें आये थे।

हम लोग लोकमान्य तिलकके अनुयायी थे। किन्तु बापूकी तेजस्विता, राष्ट्रभक्ति और चारित्र्य-शुद्धि पर मुग्ध थे। मैं तो हृदयसे अुनका हो गया था और गंगाधररावको अिसी ओर खींचनेका प्रयत्न कर रहा था।

हम चाहते थे कि तिलक और गांधी अगर अेक दूसरेको पहचान सकें तो देशका बहुत बड़ा काम होगा। हमने अैसी व्यवस्था करनी चाही कि लोकमान्य और बापू बिलकुल अेकान्तमें अेक दूसरेसे मिल सकें। लेकिन यह लोकमान्यके मुकाम पर तो नहीं हो सकता था। अिसलिअे गंगाधरराव लोकमान्यको ही बापूके निवास पर ले

आये। अुन्हें वहाँ छोड़नेके बाद श्री गंगाधरराव स्वयं भी वहाँसे चल दिये थे। वहाँ दोनोंमें क्या बातचीत हुअी यह हमें बादमें भी मालूम नहीं हुआ। सिर्फ कमरेके बाहर आकर लोकमान्यने गंगाधररावसे अितना कहा था कि 'यह आदमी हमारा नहीं है। अिसका मार्ग भिन्न है। लेकिन यह पूरा पूरा सच्चा है। अिसके हाथों हिन्दुस्तानका कभी भी अश्रेय नहीं होगा। हमें अिस बातकी सावधानी रखनी चाहिये कि कहीं भी अिसके साथ हमारा विरोध न हो। जहाँ तक हो सके हमें अिसकी मदद ही करनी चाहिये।'

बापूने अुस कान्फरेन्समें अपने भाषणमें अितना ही कहा था कि आप लोग कांग्रेसमें फिरसे प्रवेश करते है यह अच्छी ही बात है। किन्तु आपको सिपाहीकी हैसियतसे आना चाहिये न कि वकीलकी।

दूसरे या तीसरे दिन बेलगाँवके अेक नेता श्री बेळवी वकील किसी कार्यवश वहाँके कलेक्टरके पास गये, तो वह पूछने लगा — 'क्यों? आप लोगोंने तो बैरिस्टर गांधीको बुलाया और सुनते है अुसने आपको कड़वी कड़वी बातें सुनायीं। आपको तो लगा होगा कि कहाँ अिस आदमीको बुला बैठे।' श्री बेळवीने जवाब दिया — 'आप लोग हम हिन्दुस्तानियोंके स्वभावको नहीं पहचानते। गांधीजी तो हमारे लिअे पूज्य व्यक्ति हैं। अुन्हें हमें नसीहत देनेका अधिकार है। हमने तो आदरभावसे अुनका अुपदेश सुना है। आप देखेंगे कि हम लोग अुनकी कितनी कदर करते हैं।' कलेक्टर चुप हो गया।

७०

ये हमारे दिन थे आश्रममें तंबूमे रहनेके। अहमदाबादके मॉडरेट नेता सर रमणभाअी नीलकंठ बापूसे मिलने आये। वार्तालापमें अुन्होंने बापूसे पूछा — 'महाराष्ट्रके बारेमे आपके क्या खयाल हैं? तिलकके बारेमें क्या है?' बापू बोले — 'तिलक महाराज तो बड़े ही कुशल राजनीतिज्ञ हैं। अिस होमरूल लीगके कदमको ही देखिये, तिलकके पासे कितने ठीक ठीक पड़े हैं। और महाराष्ट्र! अुसके बारेमे क्या कहूँ? जहाँ तिलक जैसे लोग हैं, जहाँ राष्ट्रसेवाके लिअे जीवन अर्पण करनेकी अुज्ज्वल परम्परा चली आ रही है, वहाँ क्या कहना! लोग जो काम हाथमे लेते हैं, अुसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।'

किसी औरसे बातचीत करते हुअे बापूने कहा था — 'अगर मेरी अहिंसाकी बात मैं महाराष्ट्रको समझा सका, तो फिर आगेकी कुछ भी चिन्ता करनेकी जरूरत न रहेगी। आरामसे सो जाअूँगा। अितनी कार्यशक्ति है अुस प्रान्तमें। किन्तु क्या किया जाय, महाराष्ट्रमें श्रद्धाकी कमी है!'

७१

हमने आश्रममें शिवाजी अुत्सव मनाया। श्री नारायणरावजी खरेने भजन गाये। श्री विनोबाका और मेरा भाषण हुआ। हमारे भाषणोंमें शिवाजीके बारेमें रामदास, तुकाराम, मोरोपंत आदि सतों और कवियोंने जो कुछ कहा है अुसका जिक्र था। अैतिहासिक विवेचन भी काफी था।

अन्तमें बापूको दो शब्द बोलनेके लिअे कहा गया। बापूके शब्द थे — 'अितिहास क्या कहता है अिसकी ओर मैं ध्यान नहीं देना चाहता। मेरी तो सन्तोंके वचनों पर श्रद्धा है। यदि सन्त लोग शिवाजीको जनक-जैसा कहते हैं, अुन्हें धर्मावतार मानते हैं, तो मेरे लिअे बस है। अिससे अधिक प्रमाणकी आवश्यकता नहीं।'

७२

बापू आश्रमकी स्थापना करके जब गुजरातमें बसे, तो अुनका अपने राजनीतिक गुरु गोखलेजीके साहित्यका गुजराती अनुवाद कराना स्वाभाविक ही था। अुनके शिक्षा विषयक लेख और भाषणोंका अेक स्वतंत्र भाग प्रकाशित कराना तय हुआ। अेक मशहूर शिक्षा-शास्त्रीको वह काम सौंपा गया। अनुवाद छप गया और शायद प्रस्तावनाके लिअे छपे हुअे फार्म बापूके पास आये। अुन्होंने सब देख जानेके लिअे महादेवभाअीको सौंप दिये। अुन दिनों महादेवभाअी बापूके नये नये सेक्रेटरी बने थे।

अनुवाद पढकर महादेवभाअीको संतोष न हुआ। अुन्होंने बापूसे कह दिया — 'न अनुवाद ठीक है, न भाषा।'

बापू अभिप्राय मात्रसे सतुष्ट नहीं हो जाते, तुरन्त सबूत माँगते हैं। अुनके सामने तो अभियोग करनेवाला भी अभियुक्त ही बन जाता है। महादेवभाअीने कुछ अुदाहरण बतलाये। बापूने कहा — 'ठीक है। तुम्हारी बात समझ गया। अब यह अनुवाद नरहरिको दे दो। अुसकी स्वतंत्र राय मुझे चाहिये।' बेचारे महादेवभाअी खंडित तो हुअे, लेकिन अुन्हें अपने अभिप्राय पर विश्वास था, अिसलिअे विशेष नहीं बोले।

नरहरिभाअीका भी वही अभिप्राय रहा। पर फिर भी बापूको संतोष नहीं हुआ। अुन्होंने कहा — 'अच्छा तो अब काकाकी राय लो।'

अुन दिनों मैं गुजराती ठीक बोल भी नहीं सकता था। साहित्यका परिचय तो नहीं-सा था। फिर भी जब मैंने देखा कि बापू अनुवाद ठीक है या नहीं अिसके लिअे मेरी राय लेना चाहते हैं, तो मैं मूल अंग्रेजी पुस्तक और अनुवाद लेकर बैठा। बापूके सामने जाना है अिस डरसे मैं काफी सावधानीसे कअी पन्ने देख गया, वाक्य वाक्य मिलाये। दुर्दैव बेचारे अनुवादकका कि मेरी भी राय वही रही!

जब तीनोंकी राय अेक रही तब तो बापू गम्भीर हो गये। कहने लगे — 'तो अब दूसरा रास्ता ही नहीं। सारी आवृत्ति जलानी चाहिये। मैं गुजरातीको अैसी भेट नहीं दे सकता।'

ग्रन्थ काफी बड़ा था । न जाने कितनी हजार प्रतियाँ छपी थीं। बस, बापूका फतवा गया कि सब फार्म जला दिये जायँ ! रद्दीमें बेचना भी मना है ! पता नहीं बेचारे अनुवादकको अुन्होंने क्या लिखा । बात वहीं खतम हुअी ।

अुस अनुवादक पर जो असर हुआ हो सो हुआ हो, लेकिन हम तीनों ठीक ठीक डर गये । आयन्दा जो कुछ भी लिखना हो समझ-बूझकर लिखना चाहिये । गुजरातीका और अनुवादका आदर्श कहीं भी नीचे न गिरने पाये। जब 'यंग अिण्डिया' मे आनेवाले बापूके लेखोंका गुजराती अनुवादका काम हमारे जिम्मे आता, तो बहुत सावधानीसे करना पड़ता था। हम आपसमें अेक-दूसरेसे सलाह करते, हरअेक शब्द और भाषा-प्रयोगकी छानबीन करते, वाक्य रचनाको अनेक ढगोंसे करके देखते, फिर भी डर तो रहता ही कि शायद बापूको कोअी शब्द पसन्द न आवे !

* * *

अेक समय बापूके किसी लेखका शीर्षक था — Death Dance. हम लोगोंने अुसका अनुवाद किया था । हमारा अनुवाद भद्दा तो नहीं था, लेकिन बापूको पसन्द नहीं आया । जब हमने पूछा कि आप क्या करते, तो बोले — 'पतग नृत्य' । बापूका साहित्यिक ज्ञान भले ही हमसे अधिक न हो, लेकिन अुनमें मार्मिकता असाधारण है ।

अुन दिनों 'नवजीवन'मे स्वामी आनन्द, महादेवभाअी, नरहरिभाअी और मैं अनुवाद कलाके आचार्य माने जाते थे । हमारे साथ श्री जुगतराम दवे, चन्द्रशकर शुक्ल और दूसरे युवक भी तैयार हुअे थे । नवजीवन प्रेसमे यह परम्परा आज तक अखंड चली आ रही है । अितना ही नहीं, बापूके आग्रहके कारण गुजरात भरमें साहित्यके आदर्शका और अनुवादकी शुद्धिका आग्रह बहुत कुछ बढ़ गया है । अिसके पहले गुजरातीमे अैसे सैकड़ों ग्रन्थ निकल चुके थे, जिनमें सारेके सारे अंग्रेजी, बगला या मराठीके कठिन शब्द छोड़ दिये गये थे और कुछ वाक्योंका अधूरा ही अर्थ किया गया था ।

७३

यरवड़ा जेलमें हम शामको टहल रहे थे। किसी सिलसिलेमें बापू कहने लगे — 'कोअी विषय सामने आते ही आजकल तो मुझे अुस पर लिखनेमें देर नहीं लगती। लेकिन अिसका मतलब यह नहीं कि अिसके लिअे मैंने साधना नहीं की। दक्षिण अफ्रीकामें अेक साथीको कानूनके अिम्तिहानमें बैठना था। अुसके पास न काफी समय था न शक्ति। मैं अुसके लिअे डच लॉके नोट्स निकालता और रोज पैदल अुसके घर जाकर अुसे कानून सिखाता था। अिधर मेरे मुकदमे भी अिस तरह तैयार करके कोर्टमें ले जाता था कि मानो मुझे आज अिम्तिहानमें बैठना हो।'

अिसके पहले मैंने श्री मगनलालभाअीके मुँहसे सुना था कि दक्षिण अफ्रीकामे अेक वक्त अेक मुसलमान बटलरने बापूसे आकर कहा कि यदि मुझे अंग्रेजी आती होती तो अच्छी तनख्वाह मिल जाती। आजकी तनख्वाहमें मेरा पूरा नहीं पड़ता। बस, बापूने तो अुसे अंग्रेजी सिखानेकी तैयारी कर ली। अिस पर वह कहने लगा कि 'आप तो तैयार हो गये, यह आपकी मेहरबानी है। लेकिन मैं नौकरी करूँ या आपके पास अंग्रेजी सीखने आअूँ?' अिसका अिलाज भी बापूने ढूँढ़ निकाला। रोज चार मील पैदल जाकर अुसके घर अुसे अंग्रेजी पढ़ाने लगे।

साल तो ठीक याद नहीं। मैं चिंचवडसे लौटा था। बापूकी आत्मकथा 'नवजीवन'में प्रकरणशः प्रकाशित हो रही थी। अुसके बारेमें चर्चा चली। मैंने कहा — 'आपकी 'आत्मकथा' तो विश्व-साहित्यमें अेक अद्वितीय वस्तु गिनी जायगी। लोग तो अभीसे अुसे यह स्थान देने लगे हैं। लेकिन मुझे अुससे पूरा सन्तोष नहीं हुआ। युवावस्थामें जब मनुष्यको अपने जीवनके आदर्श तय करने पड़ते हैं, अपने लिअे कौनसी लाअिन अनुकूल होगी अिस चिन्तामें वह जब पड़ता है, तब मनका मन्थन महासंग्रामसे कम नहीं होता। अुस कालमें कअी परस्पर विरोधी आदर्श भी अेक-से आकर्षक दिखाअी देते हैं। मैं आपकी 'आत्मकथा'मे अैसे मनोमन्थन देखना चाहता था। लेकिन वैसा कुछ नहीं दिख पड़ता। अंग्रेजोंको देशसे भगानेके लिअे आप मांस तक खानेको तैयार हो गये। अिस अेक सिरेकी भूमिकासे अहिंसाकी दूसरे सिरेकी भूमिका पर आप कैसे आये, यह सारी गड़मथन आपने कहीं नहीं लिखी।'

अिस पर बापूने जवाब दिया — 'मैं तो अेकमार्गी आदमी हूँ। तुम कहते हो वैसा मन्थन मेरे मनमें नहीं चलता। कैसी भी परिस्थिति सामने आवे, अुस वक्त मै अितना ही सोचता हूँ कि अुसमें मेरा कर्तव्य क्या है। वह तय हो जाने पर मैं अुसमें लग जाता हूँ। यह तरीका है मेरा।'

तब फिर मैंने दूसरा प्रश्न पूछा — "'सामान्य लोगोंसे मैं कुछ भिन्न हूँ, मेरे सामने जीवनका अेक मिशन है।' अैसा भान आपको कबसे हुआ? क्या हाअीस्कूलमें पढ़ते थे तब कभी आपको अैसा लगा था कि मैं सब जैसा नहीं हूँ?"

मेरे प्रश्नकी ओर शायद बापूने ध्यान नहीं दिया होगा। अुन्होंने अितना ही कहा — 'बेशक, हाअीस्कूलमे मैं अपने क्लासके लड़कोंका अगुवा बनता था।'

अितनेमें कोअी आ गया और यह महत्वका प्रश्न अैसा ही रह गया।

'आत्मकथा'के बारेमें ही फिर अेक दफे मैंने चर्चा करते हुअे कहा — 'बापूजी, आपने 'आत्मकथा'में बहुत ही कंजूसी की है। कितनी ही अच्छी बातें छोड़ दीं। जहाँ आपने 'आत्मकथा' पूरी की है, अुसके आगे की बातें आप शायद ही लिखेंगे। अगर छूटी हुअी बातें लिख दें, तो 'आत्मकथा' जैसा ही अेक और बडा समान्तर ग्रन्थ तैयार हो जाय। बापू कहने लगे — 'अैसा थोड़ा ही है कि सब बातें मैं ही लिखूँ। जो तुम जानते हो तुम लिखो।'

मैंने कहा — 'कहीं कहीं तो अैसा मालूम होता है कि आपने जानबूझकर बातें छोड़ दी हैं। अपने विरुद्ध बातें तो आपने मानो चावसे लिखी हैं। लेकिन औरोंके बारेमें अैसा नहीं किया। जैसे दक्षिण अफ्रीकामें आपके घर पर रहते हुअे, आपकी अनुपस्थितिमें आपका मित्र अेक वेश्या ले आया था, अुसका वर्णन तो ठीक है। लेकिन यह नहीं लिखा कि यह व्यक्ति वही मुसलमान था जिसने हाअीस्कूलके दिनोंमें आपको मांस खानेकी ओर प्रवृत्त किया था और जिसके कारण आपने घरमें चोरी की थी।'

बापूने कहा — 'तुम्हारी बात ठीक है। यह मैंने जानबूझकर ही नहीं लिखा। मुझे तो 'आत्मकथा' लिखनी थी। अुसमें अिस बातका जिक्र जरूरी नहीं था। दूसरी बात यह है कि वह आदमी अभी जीवित है। कुछ लोग अुसका मेरा सम्बन्ध जानते भी हैं। दोनों प्रसंग अेक होनेसे अुसके प्रति अुन लोगोंके मनमें घृणा बढ़ सकती है।'

हर मनुष्यके लिअे बापूके मनमें कितना कारुण्य है, यह देखकर मुझे अेक पुरानी बातका स्मरण हो आया :

बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीवाले बापूके भाषणके बाद, अखबारोंमें बापू और श्रीमती बेसंटके बारेमें बड़ी लम्बी-चौडी और तीखी चर्चा चल पड़ी थी। अुसी सिलसिलेमें बम्बअीके अिण्डियन सोशल रिफार्मरमें श्री नटराजन्ने बापूके बारेमें लिखा था Every one's honour is safe in his hands — बापूके हाथों किसीकी अिज्जतको खतरा नहीं है।

बापूके चरित्रका यह पहलू नटराजन्‌ने ही अैसे सुन्दर शब्दोंमें व्यक्त किया है।

अिसी प्रसगके साथ अेक और प्रसग याद आता है.

अेक प्रमुख मुस्लिम कार्यकर्ताके बारेमें बातें चल रही थीं। मैंने अुसके किसी सार्वजनिक अनुचित व्यवहारका जिक्र किया। बापूने दुःखके साथ कहा — 'तबसे अुसकी मेरे पास पहले जैसी कीमत नहीं रही। लेकिन अुससे क्या? अुसका कुछ नुकसान नहीं होगा। मेरे मनमें किसीकी कीमत बढ़ी तो क्या और घटी तो क्या? मेरा प्रेम थोड़े ही कम होनेवाला है।'

७६

१९२६–२७ की बात है। खादीदौरा पूरा करके बापू अुडीसा पहुँचे। वहाँ हम लोग अीटामाटी नामके अेक गाँवमें पहुँचे। बापूका व्याख्यान हुआ। फिर लोग अपनी अपनी भेंट और चन्दा लेकर आये। कोअी कुम्हड़ा लाया, कोअी बिजौरा (बिजपुर, मातुलिंग) लाया, कोअी बैंगन लाया और कोअी जंगलकी भाजी। कुछ गरीबोंने अपने चीथड़ोंसे छोड़ छोड़कर कुछ पैसे भी दिये। सभामें घूम घूमकर मैं पैसे अिकट्ठे कर रहा था। पैसोंके जगसे मेरे हाथ हरे हरे हो गये थे। मैंने बापूको अपने हाथ दिखाये। मुझसे बोला न गया। दूसरे दिन सुबह बापूके साथ घूमने निकला। रास्ता छोड़कर हम खेतोंमें घूमने चले। तब बापू कहने लगे — 'कितना दारिद्रय और दैन्य है यहाँ! क्या किया जाय अिन लोगोंके लिअे? जी चाहता है कि मेरी मरणकी घड़ीमे अुडीसामें आकर अिन लोगोंके बीच मरूँ। अुस समय जो लोग मुझे यहाँ मिलने आयेंगे, वे तो अिन लोगोंकी करुण दशा देखेंगे। किसी न किसीका तो हृदय पसीजेगा और वह अिनकी सेवाके लिअे आकर यहाँ स्थायी हो जायगा।'

अिस पर मैं क्या कह सकता था! अुनकी अिस पवित्र भावनाका धन्य साक्षी ही हो सका।

७७

अिसी दौरेमें हम चारबटिया पहुँचे। वहाँ भी अैसी अेक सभा हुअी। मैं खयाल करता था कि अीटामाटीसे बढ़कर करुण दृश्य कहीं नहीं होगा। लेकिन चारबटियाका तो अुससे भी बढ़ गया। लोग आये थे तो थोड़े, लेकिन जितने भी थे अुनमेंसे किसीके मुँह पर चैतन्य नहीं दिखाअी देता था। प्रेतकें-जैसी शून्यता थी।

यहाँ पर भी बापूने पैसेके लिअे अपील की। लोगोंने भी कुछ न कुछ निकालकर दिया ही। मेरे हाथ वैसे ही हरे हो गये।

अिन लोगोंने रुपये तो कभी देखे ही नहीं थे। ताँबेके पैसे ही अुनका बड़ा धन था। कोअी पैसा हाथमें आ गया, तो अुसे खर्च करनेकी ये कभी हिम्मत ही नहीं कर पाते थे। बहुत दिन तक बाँधे रखनेसे या जमीनमें गाड़नेके कारण अुन पर जंग चढ़ जाता था।

मैंने बापूसे कहा — 'अिन लोगोंसे अैसे पैसे लेकर क्या होगा?' बापूने कहा — 'यह तो पवित्र दान है। यह हमारे लिअे दीक्षा है। अिसके द्वारा यहाँकी निराश जनताके हृदयमें भी आशाका अंकुर अुगा है। यह पैसा अुस आशाका प्रतीक है। ये मानने लगे हैं कि हमारा भी अुद्धार होगा।'

वह स्थान और दिन याद रहनेका अेक कारण और भी हुआ। रातको हम वहीं सोये। दूसरे दिन सूर्योदय अितना सुन्दर था कि बापूने मुझे देखनेको बुलाया। फिर मुझे पूछने लगे — 'तुम तो (गूजरात) विद्यापीठकी हालत जानते हो। अगर मैं अुसका चार्ज तुम्हें दे दूँ तो लोगे?' मैंने कहा — 'बापूजी, विद्यापीठकी हालत जितनी आप जानते हैं, अुससे अधिक मैं जानता हूँ। सवाल पेचीदा हो गया है। लेकिन कमसे-कम किसी अेक बातमें आपको निश्चिन्त करनेके लिअे मैं अुसका चार्ज लेनेको तैयार हूँ।' बापूने कहा — 'किसी डॉक्टरके पास जब कोअी मरीज आता है, तब वह जैसी भी हालतमें हो डॉक्टर अुसकी चिकित्सा करनेसे

अिनकार नहीं कर सकता। डॉक्टर यह तो कह ही नहीं सकता कि जिसके वचनेकी खातरी हो, अुसी रोगीको मैं चिकित्सा करूँगा।'

मैंने कहा — 'अितनी खराब हालत नहीं है। मैं जरूर विद्यापीठको अच्छे पाये पर ला दूँगा, और धीमे धीमे अुसे ग्रामोन्मुख भी कर दूँगा।'

जब मैंने विद्यापीठका चार्ज लिया, तो अुसके अभ्यास-क्रममें खादी, बढ़अी-काम आदि तो शुरू किये ही; साथ ही 'ग्राम-सेवा-दीक्षित' की नयी अुपाधि स्थापित करके अुसके लिअे भी विद्यार्थी तैयार किये। श्री बबलभाअी मेहता और झवेरभाअी पटेल अुसी ग्रामसेवा मन्दिरके आदि-दीक्षित हैं। सब जानते ही हैं कि अिन दोनोंने ग्रामसेवाका काम कैसा अच्छा चलाया है। बबलभाअीने अपने जो अनुभव 'मारू गामडूं' (मेरा गाँव) नामक किताबमें दिये हैं, वे किसी अुपन्यास-जैसे रोमांचकारी मालूम होते हैं।

७८

हिन्दुस्तान लौटे बापूको बहुत दिन नहीं हुअे थे। किसी कारण वश अुन्हें बम्बअी जाना पड़ा। वहाँ बुखार आ गया। वे रेवाशंकरभाअीके मणिभुवनमें ठहरे थे। वहाँ महादेवभाअी अुनकी सेवामें थे। अेक दिन बुखार अितना चढ़ा कि सन्निपात हो गया। रातको महादेवभाअीको जगाकर कहने लगे — 'महादेव, ये बंगाली लोग कलकत्तेमें कालीके नामसे कालीघाटके मन्दिरमें पशु-हत्या करते हैं। अिन्हें कैसे समझाया जाय कि यह धर्म नहीं, महा अधर्म है! चल, हम दोनों जाकर सत्याग्रह करें, अुन्हें रोकें। फिर चिढ़े हुअे बंगाली ब्राह्मण वहाँ हम पर टूट पड़ेंगे और हमारे टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे। अिस पशु-हत्याको रोकनेमें यदि हमारे प्राण चले जायँ तो क्या बुरा है?'

यह बात मैंने महादेवभाअीके मुँहसे ही सुनी है।

मद्रासका सन् '२६ का कांग्रेस अधिवेशन था। हम श्री श्रीनिवास अय्यगारजीके मकान पर ठहरे थे। वे हिन्दू-मुस्लिम अेकताके निस्बत अेक मसविदा तैयार करके बापूकी सम्मतिके लिअे लाये। अुन दिनों बापू देशकी राजनीतिसे निवृत्त-से हो गये थे। वे अपनी सारी शक्ति खादी कार्यमें ही लगाते थे। वह मसविदा अुनके हाथमें आया, तो वे कहने लगे — 'किसीके भी प्रयत्नसे और कैसी भी शर्त पर हिन्दू-मुस्लिम समझौता हो जाय तो मंजूर है। मुझे अिसमें क्या दिखाना है?' फिर भी वह मसविदा बापूको दिखाया गया। अुन्होंने सरसरी निगाहसे देखकर कहा — 'ठीक है।'

शामकी प्रार्थना करके बापू जल्दी सो गये। सुबह बहुत जल्दी अुठे। महादेवभाअीको जगाया। मैं भी जग गया। कहने लगे — 'बड़ी गलती हो गयी। कल शामका मसविदा मैंने ध्यानसे नहीं पढ़ा। यों ही कह दिया कि ठीक है। रातको याद आयी कि अुसमें मुसलमानोंको गो-वध करनेकी आम अिजाजत दी गयी है और हमारा गोरक्षाका सवाल यों ही छोड़ दिया गया है। यह मुझसे कैसे बरदाश्त होगा? वे गायका वध करें, तो हम अुन्हें जबरदस्ती तो नहीं रोक सकते। लेकिन अुनकी सेवा करके तो अुन्हे समझा सकते हैं न? मैं तो स्वराज्यके लिअे भी गौरक्षाका आदर्श नहीं छोड़ सकता। अुन लोगोंको अभी जाकर कह आओ कि वह समझौता मुझे मान्य नहीं है। नतीजा चाहे जो कुछ भी हो, किन्तु मैं बेचारी गायोंको अिस तरह छोड़ नहीं सकता।'

सामान्य तौर पर कैसी भी हालतमें बापूकी आवाजमें क्षोभ नहीं रहता, वे शान्तिसे ही बोलते हैं। लेकिन अूपरकी बातें बोलते समय वे अुत्तेजित-से मालूम होते थे। मैंने मनमें कहा — 'अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयं। यद्राज्यलाभलोभेन गां परित्यक्तुमुद्यताः॥' बापूकी हालत अैसी ही थी।

८०

मिसेस् अेनी बेसेन्टने होमरूल लीगकी स्थापना की और हिन्दुस्तानमें राजनीतिक आन्दोलन जोरोंसे चलाया। सरकारने अुन्हें नजरकैद कर दिया। अब अुसके लिअे क्या किया जाय, यह सोचनेके लिअे श्री शंकरलाल बैंकर बापूके पास आये। बापूने अुन्हें सत्याग्रहकी सिफारिश करनेवाला पत्र लिखा। वह पत्र श्री शंकरलालभाअीने प्रकाशित कर दिया और सत्याग्रहकी तैयारी की। यह सब देखकर सरकारने मिसेस् अेनी बेसेन्टको मुक्त कर दिया।

फिर तो आन्दोलनका रूप ही बदल गया। असहयोगके दिन आ गये। मिसेस् अेनी बेसेन्टने 'न्यू अिण्डिया' नामक अेक अंग्रेजी दैनिक पत्र चलाया। अुसमें बापूके खिलाफ रोज कुछ न कुछ लिखा जाने लगा। अेक दिन अुसमें बहुत ही खराब लेख आया। मैंने बापूसे पूछा — 'कलके 'न्यू अिण्डिया'का लेख आपने पढ़ा है?' बापू कहने लगे — 'मैंने 'न्यू अिण्डिया' पढ़ना कबसे छोड़ दिया है। जब तक कोअी खास दलील वाले लेख आते थे, मैं अुसे पढ़ता था। लेकिन जब देखा कि अुसमें मुझपर व्यक्तिगत टीका ही होने लगी है, तो मैंने पढ़ना छोड़ दिया। व्यक्तिगत टीका सुननेसे अुसका मन पर कुछ न कुछ असर होनेकी सम्भावना रहती है। पढ़ा ही नहीं, तो मनका सद्भाव जैसाका तैसा रहता है। अब यदि मैं मिसेस् बेसेन्टसे मिला तो मेरे मनमें अुनके प्रति जो आदरभाव है, अुसमें कमी नहीं होगी।

८१

आश्रमकी स्थापनाके दिन थे। हम कोचरबके बंगलेमें रहते थे। अपनी संस्थाके लिअे धन अिकट्ठा करनेके लिअे प्रोफेसर कर्वे अहमदाबाद आये थे। वे बापूसे मिलने आश्रममें आये।

बापूने सब आश्रमवासियोंको अिकट्ठा किया और सबको अुन्हें साष्टांग नमस्कार करनेके लिअे कहा। फिर समझाने लगे — 'गोखलेजी दक्षिण

अफ्रीकामें आये थे, तब मैंने अुनसे पूछा था कि आपके प्रान्तमें सत्यनिष्ठ लोग कौन कौन हैं? अुन्होंने कहा था कि मैं अपना नाम तो दे ही नहीं सकता। मैं कोशिश तो करता हूँ कि सत्य पथ पर ही चलूँ, लेकिन राजनीतिके मामलेमें कभी कभी असत्य मुँहसे निकल ही जाता है। मैं जिनको जानता हूँ, अुनमें तीन आदमी पूरे पूरे सत्यवादी हैं: अेक प्रोफेसर कर्वे, दूसरे शंकरराव लवाटे (ये मद्य-निषेधका कार्य करते थे।) और तीसरे . . .।' आगे बोले — 'सत्यनिष्ठ लोग हमारे लिअे तीर्थ-जैसे हैं। सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना सत्यकी अुपासनाके लिअे ही है। अैसे आश्रममें कोअी सत्यनिष्ठ मूर्ति पधारे, तो हमारे लिअे वह मंगल दिन है।'

बेचारे कर्वे तो गद्गद हो गये। कुछ जवाब ही नहीं दे सके। कहने लगे — 'गांधीजी, आपने मुझे अच्छा झेंपाया। आपके सामने मैं कौन चीज हूँ?'

८२

सन् '३०में मैं यरवडा जेलमें बापूके साथ रहनेके लिअे भेजा गया। मैं अपने साथ काफी पूनियाँ ले गया था। वहाँ मुझे पाँच महीनेसे ज्यादा नहीं रहना था। मेरी पूनियाँ अितनी थीं कि पाँच महीने मुझे बाहरसे मँगवानेकी जरूरत नहीं रहती। लेकिन हुआ यह कि कुछ ही दिनोंमें सरकारने श्री वल्लभभाअीको भी यरवडा जेलमें लाकर रख दिया। अुनके और हमारे बीच थी तो सिर्फ अेक ही दीवाल; लेकिन हम मिल नहीं सकते थे। बापूको अिसका बहुत ही बुरा लगता। कहते — 'यह सरकार कैसी तंग कर रही है! वल्लभभाअीको साबरमतीसे यहाँ ले आयी। हम अुनकी आवाज भी कभी कभी सुन सकते हैं, किन्तु मिल नहीं सकते। सरकारको अिसमें क्या मजा आता होगा?' जो लोग बापूको दूरसे ही देखते हैं, वे अुनकी धीरोदात्तता ही देख सकते हैं। अुनका प्रेम कितना अुत्कट है और अुसपर आघात लगनेसे वे कितने घायल होते हैं, यह तो बाहरके लोग नहीं जान सकते। बापू जब

आँगनमें टहलते, तो अुनका लक्ष्य बार बार दीवालके अुस पार ही जाता था।

अेक दिन मेजर मार्टिन (सुपरिण्टेण्डेण्ट) वल्लभभाओीकी चिट्ठी ले आया। अुसमें लिखा था — 'मेरी सब पूनियाँ खतम हो गयी हैं। आपके पास कुछ हों तो भेज दीजिये।' वल्लभभाअी सूत खूब कातते थे। जब वक्त खाली मिलता, तब या तो अपने कमरेमें शेरकी तरह टहलते रहते या फिर सूत कातते। अुनकी माँको भी कातनेकी खूब आदत थी। वे अंधी हुअीं तो भी कातना नहीं छोड़ा था। घरके लोगोंको अपनी अपनी पूनियाँ छिपाकर रखनी पड़ती थीं। कहीं मिल गयीं तो लेकर कात ही डालती थीं। अैसी माँके बेटे जो ठहरे!

बापूने मुझे पूछा — 'काका तुम्हारे पास पूनियाँ हैं?' मैंने कहा — 'चाहे जितनी। लेकिन मुझे धुनकना नहीं आता। यह दे दूँ तो मैं क्या करूँ?' अिसपर बापूने कहा — 'मैं तुम्हें सिखाअूँगा, नहीं तो मैं पूनियाँ बना दूँगा।' मैंने सीखना ही पसन्द किया, लेकिन मेरे मनमें डर तो था ही। सब पूनियाँ वल्लभभाअीको भेज दी गयीं।

अब बापूने पड़ोसके कमरेमें सब सरंजाम सजाया। मुझे धुनकनेकी कला सिखायी। मैं थोड़े ही दिनोंमें तैयार हो गया।

लेकिन अितनेमें बारिश आ गयी। हवाकी नमीके कारण ताँत ढीली हो जाती थी। हमने अिलाज सोचा, धूप निकले तो पींजनको और रूअीको भी धूपमें रखा जाय। मैंने वह किया भी। लेकिन बारिश तो खूब होती थी। हमारे लिअे रोज धूप नहीं निकलती थी। फिर हमें सूझा कि हमारे आँगनमें पावरोटीकी भट्टी है, जो अेंग्लो अिण्डियन कैदी लड़के चलाते हैं। मैं शामको अपना पींजन और रूअी भट्टीके पास रख आने लगा। अिससे ताँत तो सूख कर टनक बन जाती, लेकिन अुसके अुठे हुअे तन्तुओंको कैसे बैठाया जाय। फिर अुपाय सूझा कि अुस पर कड़ुअे नीमके पत्ते घिसे जायें।

अेक दिन बापूने देखा कि मैं चार पाँच पत्तोंके लिअे पूरी टहनी तोड़ लाता हूँ, तो कहने लगे — 'यह तो हिंसा है। और लोग न समझें लेकिन तुम तो आसानीसे समझ सकते हो। ये चार पत्ते भी हमें पेड़से क्षमा माँगकर ही तोड़ने चाहियें। तुम तो पूरी टहनी तोड़ लाते हो!'

दूसरे दिनसे मैंने सुधार किया। मैं अूँचा तो हूँ ही। अब झाड़ परसे चार पाँच पत्ते ही तोड़ने लगा। मैंने अेक बात और भी की। जिस दिन भट्ठीका लाभ नहीं मिलता, अुस दिन ताँतको नमीके असरसे बचानेके लिअे अुसपर मोमबत्ती घिसने लगा। अुसका असर अच्छा हुआ और बापू प्रसन्न हो गये।

अितनेमें बाहरसे दातुन मिलना बन्द हो गया। मैंने कहा — 'बापूजी यहाँ तो नीमके पेड़ बहुत हैं। मैं आपको रोज अच्छी ताजी दातुन दिया करूँगा।' बापूने मंजूर किया। दूसरे दिन दातुन लाया और अुसका अेक छोर कूटकर अच्छी कूची बनायी। अुसे अिस्तेमाल कर लेनेके बाद बापू कहने लगे — 'अब अिसका कूचीवाला भाग काट डालो और फिर अुसी दातुनकी नयी कूची बनाओ।' मैंने कहा — 'यहाँ तो रोज ताजी दातुन मिल सकेगी।' बापूने कहा — 'सो तो मैं जानता हूँ। लेकिन हमें अुसका अधिकार नहीं है। जब तक अेक दातुन बिलकुल सूख न जाय अुसे हम फेंक कैसे सकते हैं!' दूसरे दिनसे वैसा ही करने लगा। कभी कभी तो कूची अच्छी नहीं बनती थी। बापूके थोड़ेसे दाँतों और मसूड़ोंको जरा भी तकलीफ हो, यह मैं सह तो नहीं सकता था। लेकिन जब तक दातुन बिलकुल छोटी न हो जाती या सूख न जाती, तब तक नयी काटनेकी मुझे अिजाजत नहीं थी।

अिस तरह बापू जेलमें आदर्श कैदीकी तरह ही नहीं रहते थे, बल्कि आदर्श अहिंसा-व्रत-धारी भी थे।

८३

१९२१के दिन थे। बेझवाड़ामें राष्ट्रीय महासमितिका अधिवेशन हो रहा था। कांग्रेसके विराट अधिवेशनसे अुसकी शान-शौकत कम नहीं थी। तिलक स्वराज्य-फंडके लिअे अेक करोड़ रुपया अिकट्ठा करना, अेक करोड़ कांग्रेसके सभासद बनाना और बीस लाख चरखे चालू करना यह कार्यक्रम वहाँ तय हुआ था।

अुसके बाद अेक बड़ी सभा हुअी। मिट्टीका अेक अूँचा टीला बनाकर अुसपर नेताओंको बैठाया गया। चारों ओर लोक समुदाय समुद्र-जैसा अुमड़ रहा था। अुन दिनों लाअुड स्पीकर नहीं था। आवाज दूर तक पहुँच नहीं पाती थी। लोग तो नयी आशासे पागल बन गये थे। अुन्हें केवल गांधीजीका दर्शन करना था। सभाके प्रारम्भमें ही लोगोंके बीच अेक गाय घुस आयी। सभामें गड़बड़ी मच गयी। बापू अितना ही कह पाये कि 'आप यहाँ मुझे देखने नहीं आये हैं। स्वराज्यकी आवाज सुनने आये है।' लेकिन अुस हो-हल्लेमें कुछ भी सुनायी नहीं देता था। बापू कुर्सीपर खड़े हुअे। यह देखकर पागल लोग और भी पागल हो गये। वे टीलेकी ओर धँसे। वहाँ अैसा अिन्तजाम नहीं था, जो लोगोंको काबूमें रख सके। मुझे तो बापूकी जानकी भी चिन्ता होने लगी। शत्रुओंसे बचा जा सकता है, लेकिन अन्धे भक्तोंसे कैसे बचा जाय! धँसनेवाले लोग टीलेपरके मंडपके खम्भे पकड़कर अूपर चढ़नेकी कोशिश करने लगे। यह तो साफ था कि कहीं अेक भी खम्भा फिसल जाय, तो सारा मंडप नेताओंके सिरपर आ गिरेगा।

बापू परिस्थिति समझ गये। तुरन्त ही वे कुर्सीपर खड़े हो गये। अेक क्षणके अंदर अुन्होंने चारों ओर देखा और दो तीन कुर्सियोंपरसे कूदकर जिस तरफ सभाका विस्तार कम था अुस तरफ भीड़में कूद पड़े। और लोगोंको जोरसे हटाते हटाते तीर-से भीड़ चीरते हुअे बाहर निकल गये। किसीको पता तक न चल पाया।

मैंने जब कुर्सी पर खड़े होकर चारों ओर ध्यानसे देखा कि बापू कहीं नहीं हैं, तो मैंने भी सभास्थान छोड़नेकी तैयारी की। लोगोंने जब देखा कि गांधीजी सभामें नहीं हैं, तो भीड़को छँटनेमें देर न लगी। मैं बड़ी कठिनाअीसे घर पहुँचा। देखता हूँ तो बापू अपने कमरेमें बैठकर आरामसे खत लिख रहे हैं, मानो वे सभामें गये ही न हों। जब मैंने बापूसे पूछा कि आप कैसे आये? तो वे कहने लगे — 'भीड़के बाहर आते ही देखा कि किसीकी गाड़ी जा रही है। मैंने अुसे रोक लिया। अुसीमें बैठकर अिस मुक़ामपर आ पहुँचा।'

८४

गूजरात विद्यापीठके नियामक मंडलकी बैठक थी। बापूको अुसमें अुपस्थित होना था। अुनके लिअे सवारी शायद समयपर नहीं पहुँच सकी थी। बापू समय पालनके अत्यन्त आग्रही है। सवारी न पाकर आश्रमसे पैदल चल पडे। लेकिन समयपर कैसे पहुँच सकते थे? समय करीब करीब होने आया था और आश्रमसे विद्यापीठ काफी दूर था। बीचका रास्ता निर्जन होनेसे कोअी सवारी मिलना भी सम्भव न था।

कुछ दूर चलनेके बाद बापूने रास्तेमें देखा कि अेक खादीधारी सायकल पर जा रहा है। बापूने अुसे रोक लिया। कहा — 'सायकल दे दो, मुझे विद्यापीठ जाना है।' अुसने चुपचाप सायकल दे दी।

बापू शायद कभी दक्षिण अफ्रीकामें सायकलपर चढ़े होंगे। हिन्दुस्तानमें कभी मौका ही नहीं आया था। बस, सायकलपर सवार हुअे और विद्यापीठ आ पहुँचे। बापूको समयपर आते देखकर तो आश्चर्य हुआ ही। किन्तु अेक छोटी-सी धोती पहने, नगे बदन, सायकलपर सवार बापूका जो दृश्य देखा, वह अपनी जिन्दगीमें फिर कभी नहीं दिखायी देगा!

८५

सन् '२४के प्रारम्भमें बापू यरवड़ा जेलसे बीमारीके कारण जल्दी छूटे थे। मैं भी अपनी अेक सालकी सजा पूरी करके अुन्हें मिलनेके लिअे पूना गया।

हमने छोटे बच्चोंके लिअे गुजरातीकी अेक बालपोथी बनायी थी। अुसका नाम रखा था 'चालनगाड़ी'। अुसकी यह खूबी थी कि वर्णमालाके दो-चार अक्षर सीखते ही बच्चे शब्द भी पढ़ने लगें। हर पृष्ठपर बेलबूटे थे। सारी किताब रंग-बिरंगे आर्ट पेपर पर अनेक रंगोंमें छापी गयी थी। सजानेमें हमने कुछ कसर नहीं रखी थी। बच्चोंको 'अक्षरके परिचयके

साथ सुरुचिकी भी दीक्षा मिले यह अुद्देश्य था। अेक अेक प्रति पाँच-पाँच आनेमें बिकती थी। अुसका गुजरातने खूब स्वागत किया था। चूँकि अुसकी सारी कल्पना और अुसके हर पृष्ठकी निगरानी मेरी थी, अिसलिअे मुझे अुसपर कुछ अभिमान भी था।

अेक दिन मैंने बापूसे पूछा — 'आपने 'बालनगाड़ी' देखी ही होगी।' अुन्होंने कहा — 'हाँ, देखी तो है। है भी सुन्दर, लेकिन किसके लिअे बनायी तुमने वह? राष्ट्रीय शिक्षाके आचार्य हो न? भूखे रहनेवाले करोड़ों लोगोंके बच्चोंको विद्यादान देनेका भार तुमपर है। आजकी बालपोथियाँ अगर अेक आनेमें मिलती हों, तो तुम्हारी बालपोथी दो पैसेमे मिलनी चाहिये। मैं तो कहूँगा कि अेक पैसेमे ही क्यों न मिले। तुम्हारी चीज पाँच आनेमे भी सस्ती है, यह तो मैं देख रहा हूँ। लेकिन गरीब पाँच आने लाये कहाँसे?'

मैं अपने अन्धेपनपर लज्जित हो गया। हालाँकि अुस चीजका मोह तो था ही। अहमदाबाद जाकर रंगबिरंगे कागज और रंग-बिरंगी स्याहीका आग्रह छोड़कर अुसका अेक नया सस्करण निकाला और अुसे पाँच पैसेमे बेचना शुरू किया। लेकिन फिर भी अुसे लेकर बापूके पास जानेकी हिम्मत नहीं हुअी।

बापूके अुस अुलाहनेका मुझपर अितना असर हुआ कि बुद्ध भगवानका जीवन चरित्र, जो विद्यापीठकी ओरसे ढाअी रुपयेमे बिकता था, आगे जब नया सस्करण निकाला गया तो कागज और छपाअीका जरा भी फर्क किये बगैर हमने आठ आनेमें बेचा। फलतः वह चरित्र गुजरातमें अितना बिका कि नवजीवन प्रकाशन मन्दिरको कुछ भी घाटा नहीं आया।

८६

बापू जिससे बातचीत करते हैं अुसके रहन सहन, अुसके धर्म, अुसकी रुचि-अरुचि, सबका बड़ी सावधानीसे खयाल रखते हैं।

अेक दिन अेक अीसाअी भाअीका पत्र आया। अुसमें अुन्होंने स्वदेशीके बारेमे सवाल पूछा था।

बापूने जवाबमे लिखा — 'स्वदेशी धर्म बाअिबल्के अेक अुपदेशका ही अमली स्वरूप है। अीसा मसीहने कहा है न कि 'जैसा प्यार अपनेपर रहता है, वैसा ही प्यार अपने पडोसीपर रखो'? जब कोअी आदमी अपने पडोसके दुकानदारको छोड़कर किसी दूरके दुकानदारसे चीज खरीदता है, तो वह अपना पडोसी-धर्म भूलकर स्वार्थके वश ही अितनी दूर जाता है। अुसके पड़ोसी दुकानदारने जो दुकान खोली सो अपने अिर्दगिर्दके ग्राहकोंके आधारपर ही खोली है न? स्वदेशी धर्म कहता है कि पडोसीका तुमपर जो अधिकार है, अुसका तुम द्रोह मत करो।'

बापूका यह खत पढ़नेके बाद ही 'अपने पड़ोसीसे प्यार करो' का पूरा अर्थ मै समझ पाया।

८७

अैसा ही अेक दूसरा अुदाहरण है। मीराबहन (Miss Slade) के लिअे बापू 'आश्रम भजनावलि'का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे थे। प्रार्थनाके बाद रोज थोड़ा थोड़ा समय देकर अुन्होंने 'आश्रम भजनावलि'का पूरा अनुवाद कर डाला था। अुसमें अेक श्लोक है:

"जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो।"

मैने संस्कृतके अंग्रेजी अनुवाद भी देखे हैं, किये भी हैं। 'जय जय'का सीधा अनुवाद तो है Victory Victory. लेकिन बापूने किया Thy will be done! जब मैने पूछा तो कहने लगे — 'भगवानका विजय तो विश्वमें है ही। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे हृदयमें काम, क्रोध वगैराको विजय मिल रहा है वह न मिले, वे हट जायँ। यानी जैसी

ओश्वरकी अिच्छा है, वैसे ही कर्म हम करते जायँ। ओसाअियोंके लिअे Thy kingdom come या Thy will be done यही अनुवाद हो सकता है। प्रार्थना तो हम अपने हृदयमे 'भगवानका विजय हो' अिसीलिअे करते हैं न!'

८८

यरवड़ा जेलका जेलर मि० क्विन अेक आयरिशमैन था। रोज शामको हमारी खबर पूछने आया करता। आकर बैठता तो कुछ न कुछ बातें होतीं ही। अेक दिन बापूसे कहने लगा — 'मै गुजराती सीखना चाहता हूँ।' बापूने कहा — 'अच्छी बात है।' वह रोज शामको बापूसे गुजराती बालपोथी पुस्तक पढ़ने लगा और बापू भी अुसे समय देकर प्रेमसे पढ़ाने लगे।

अेक दिन अुसके जानेके बाद बापू मुझे कहने लगे — 'मैं जानता हूँ कि मेरी अपेक्षा तुम अिसे अच्छी तरह पढ़ा सकोगे। और मेरा समय भी बच जायगा। लेकिन अिसकी हवस मुझसे ही पढ़नेकी है।'

बादमें वह सुबह आने लगा। अेक दिन वह नहीं आया। हमें कुछ आश्चर्य हुआ। मैंने तलाश की। कारण मालूम हुआ। दूसरे दिन भोजनके बाद मैंने बापूको कहा — 'मि० क्विन कल क्यों नहीं आया, अुसका कारण मैं समझ गया। कल सुबह यहाँ अेक फाँसी थी। अुसे वहाँ जाना था। अिसलिअे यहाँ नहीं आया।'

मेरा वाक्य सुनते ही बापू अस्वस्थ हो गये। अुनका चेहरा बदल गया। कहने लगे — 'अैसा लगता है कि खाया अन्न अभी बाहर निकल आवेगा।'

बापू जानते थे कि जहाँ हम रहते थे, वहाँसे फाँसीकी जगह नजदीक ही थी। अपने नजदीक ही कल अेक आदमीको फाँसी दी गयी, यह सुनते ही अुनके मनमें अुसका चित्र खड़ा हो गया और वे अैसे अस्वस्थ हुअे कि मैं घबरा गया!

* *

अेक दिन मि० क्विनने बापूसे कहा — 'गुजराती लिखावट मैं बारबार पढ सकूँ, असलिअे आप कोअी वाक्य मुझे अेक कागजपर लिख दीजिये। बापूने लिख दिया — 'कैदियों पर प्रेम करो और अगर किसी कारण मनमें गुस्सा आ जाय, तो गम खा कर शान्त हो जाओ।'

यही मि० क्विन बादमे जब विसापुर जेलका सुपरिण्टेण्डेण्ट हुआ और गुजरातके राजनीतिक कैदी वहाँ गये, तब किसी प्रसगपर अुसको बहुत गुस्सा आ गया और राजनीतिक कैदी भी अुससे अितने चिढे कि शायद गोली भी चलानी पडती। लेकिन मि० क्विनकी जेबमे बापूका लिखा वह गुजराती वाक्यवाला कागज था। अुसने अुसे बारबार पढा। शान्त हुआ। अुसने सत्याग्रहियोंसे माफी तक मॉगी थी।

अिसी तरह, मुझे याद आता है, अेक समय जेलके अेक अॅग्लो अिण्डियन नौकरने बापूसे autograph (स्वाक्षरी) मॉंगी। बापूने लिख दिया — 'It does not cost to be kind.' अुस जवानने मुझे अनेक बार कहा है कि वह वाक्य पढनेके बाद अुसका स्वभाव ही बदल गया है।

८९

मुझे क्षय रोग हुआ तो मै स्वास्थ्य लाभके लिअे पूनाके पास सिंहगढ़पर जाकर रहा था। स्वास्थ्य सुधरनेपर आश्रममें आकर रहने लगा। डॉक्टरकी सलाह थी कि कुछ महीने मैं आराम ही करूँ।

आश्रममे पहुँचे मुझे कुछ ही देर हुअी थी कि अेक लडकी थालीमें अच्छे अच्छे फूल लेकर आयी। कहने लगी — 'ये बापूने आपके लिअे भेजे है।' मेरी आँखोंमे आँसू आ गये। वह आगे बोली — 'बापूने हमे कहा है कि काकाके पास रोज अिसी तरह फूल पहुँचाती रहो। काकाको फूलोंसे बड़ा प्रेम है।'

बापू भी रोज कभी न कभी वक्त निकाल कर मेरे पास आ ही जाते थे।

अिसी तरह और अेक समय आश्रमके लड़केने आकर बापूसे कहा — ‘बापूजी, प्रोफेसर आव्या छे।’ (आश्रममें श्री जीवतराम कृपलानीको प्रोफेसर कहते थे।) सुनते ही बापूने देवदाससे कहा — ‘देवा, जाकर बा से पूछो कि दही है या नहीं? प्रोफेसरको दही तो जरूर चाहिये। न हो तो कहींसे नीबू ले आओ, और कहीं नहीं तो काकाके घर जरूर मिलेगा।’

बापूका प्रेम सेवामय है। हर मनुष्यका सुख-दुःख पूरा पूरा समझ लेनेकी अुनकी स्वाभाविक वृत्ति है।

अेक दिन यरवड़ा जेलमें मैंने बापूको कुम्हड़ेकी शाक बनाकर दी और मैंने नहीं ली। कुछ खानेके बाद कहने लगे — ‘मुझे मालूम है कि तुम्हें कुम्हड़ेसे अरुचि है। लेकिन आजका कुम्हड़ा कुछ और है। थोड़ा खाकर तो देखो।’ अस्वाद व्रतकी दीक्षा देनेवाले बापूकी ओरसे कोअी चीज खाकर देखनेका आग्रह अेक अजीब बात थी। अुनके ध्यानमें भी वह बात आ गयी। कहने लगे — ‘कुम्हड़ा भी कितना मीठा हो सकता है, अिसका अनुभव करनेके लिअे ही मैंने तुम्हें खाकर देखनेके लिअे कहा है।’

यहीं मुझे अेक पहलेकी बात भी याद आती है।

किसी कारणसे मैं बापूके पास गया था। वहाँ कोअी सज्जन आये और अुन्होंने बापूके सामने कुछ फल रखे। अुनमें चीकू बड़े अच्छे थे। बापूने तुरन्त दो बड़े बड़े चीकू निकालकर मुझे देते हुअे कहा — काका, ये दो चीकू महादेवको दे दो। अुसे चीकू बहुत पसन्द है।’ महादेवभाअी मेरे पड़ोसमें ही रहते थे। मैं अुनके पास गया और कहा — ‘महादेवभाअी, मैं आपके लिअे प्रेमका सन्देश लाया हूँ।’ चीकू देखकर महादेवभाअी खुश हो गये। कहने लगे — ‘सचमुच प्रेमका ही सन्देश है।’

९०

बापूके सब विचार मूलग्राही होते है। जीवनका अेक भी अंग या अंश अैसा नहीं, जिसपर अुन्होंने विचार न किया हो। अुनके मित्र केलनबॅक, जो कि जर्मन यहूदी थे और आर्किटेक्ट होनेके कारण खूब कमाते थे, हमेशा बापूसे कहा करते — 'आपकी कोअी बात किसीको मान्य हो या न हो, लेकिन यह हर आदमी देख सकता है कि अुसके पीछे आपकी विचारणा तो होती ही है।'

अिस बातका अनुभव मुझे भी आश्रममे जाते ही हुआ था। आश्रमका भात मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं आता था। अेक दिन मैंने बापूसे कहा — 'यह भात है या गारा? हम अैसा भात कभी नहीं खाते।' बापूने हँसकर कहा — 'सो तो मैं भी जानता हूँ। पहले अिसका स्वाद तो लेकर देखो।'

अिसीके साथ फिर प्रवचन शुरू हुआ:

'लोगोंको भात चाहिये मोगरेकी कली-जैसा। पहले ही मिलका पालिश किया हुआ चावल लेते है, जिसपर से सारा पौष्टिक तत्त्व अुतार लिया जाता है। जहाँसे अंकुर निकलता है, वही चावलका सबसे अधिक पौष्टिक भाग होता है। वह भाग भी चला जाता है। फिर, भात सफेद हो अिसलिअे पानीसे अितने दफे धोते हैं कि थोडे बहुत और भी तत्त्व निकल जाते हैं। फिर अुबालने पर जो मॉड रहता है अुसे भी निकाल देते है। अिस तरहसे चावलको बिल्कुल निःसत्त्व करके खाते है। वह भी अगर पूरा पका हुआ न हो, तो बराबर चबाया नहीं जा सकता। और आवश्यकतासे अधिक खाया जाता है। खाते ही नींद आने लगती है और फिर गणेश-जैसी तोंद निकल आती है। आश्रममें हम अिस तरहका चावल नहीं पकाते। पहले तो हमारा चावल होता है हाथका कुटा। अुसे हम धोते भी थोड़ा ही हैं। फिर पानीमें रख छोड़ते हैं। बादमें अिस तरह पकाते है कि अुसका सारा मॉड और पानी अुसीमें समा जाये। पकनेके बाद अुसे

अैसा घोटते है कि बिलकुल खोवा बन जाता है। वह स्वादमें अच्छा रहता है। चीनी न डालते हुअे भी वह मीठा लगता है। कम खाया जाता है। अधिक पौष्टिक होता है। और तोंद नहीं निकलती।'

अितनी सब दलीलें सुननेके बाद मुझमें भी श्रद्धा जागी और मैं भी अुस भातमे रस लेने लगा। बादमें अिसी भातमे मुझे भी सब गुण मालूम होने लगे और मैं अुसका बड़ा हामी बन गया!

९१

अेक दिन मैंने बापूसे पूछा — 'आज जिसे गांधी टोपी कहते है, वही आपको कैसे पसन्द आयी?' बापू कहने लगे — 'हिन्दुस्तानके भिन्न भिन्न प्रान्तोंके जो शिरोवेष्टन है, अुनपर मैं विचार करने लगा। हमारे गरम देशमे सिरपर कुछ न कुछ तो चाहिये ही। बंगाली लोग और दक्षिणके कुछ ब्राह्मण नंगे सिर रहते हैं, लेकिन अधिकांश हिन्दुस्तानी तो कुछ न कुछ शिरोवेष्टन रखते ही है। पजाबी फेटा है तो अुम्दा, लेकिन बहुत कपड़ा लेता है। पगड़ियाँ गन्दी होती है, कितना ही पसीना पी जाती हैं। हमारी गुजरातकी कोनीकल बेंगलोर टोपियाँ बिलकुल ही भद्दी दीख पड़ती है। महाराष्ट्रकी हंगेरियन टोपियाँ अुससे कुछ अच्छी तो है, लेकिन वे फेल्ट (नमदे) की होती हैं। यू० पी० और बिहारकी पतली टोपी तो टोपी ही नहीं है। वह शोभा भी नहीं देती। यह सब सोचते सोचते मुझे काश्मीरी टोपी अच्छी लगी। अेक तो है अुम्दा और हल्की, बनानेमें तकलीफ नहीं और घड़ी हो सकनेके कारण हम अुसे जेबमें भी रख सकते है और सन्दूकमे भी दबाकर रख सकते है। काश्मीरी टोपियाँ अूनी होती है। मैंने सोचा कि वे सूती कपड़ेकी ही बननी चाहिये। फिर विचार किया रंगका। कौनसा रंग सिरपर शोभेगा। अेक भी पसन्द नहीं आया। आखिर यही निर्णय किया कि सफेद ही सबसे अच्छा रग है। पसीना भी अुसपर जल्दी दिखायी पड़ता है और अिसलिअे अुसे धोना ही पड़ता है। अुधर धोनेमें भी तकलीफ नहीं। टोपी घड़ीदार होनेके

कारण और सफेद होनेके कारण आदमी सुथरा दिख पड़ता है। यह सारा विचार करके मैंने यह टोपी बनायी। असलमें तो हमारे देशकी आबोहवाकी दृष्टिसे मुझे सोला हेट ही पसन्द है। धूपसे सिरका, आँखोंका और गरदनका रक्षण करता है। लकड़ीके बूरेका होनेके कारण हलका और ठंडा रहता है। सिरको कुछ हवा भी लग सकती है। आज जो मैं अिसका प्रचार नहीं करता अुसका कारण यही कि अुसका आकार हमारी सारी पोशाकके साथ मेल नहीं खाता। और युरोपियन ढंगकी होनेसे लोग अुसे अपनायेंगे भी नहीं। अगर हमारे कारीगर अुस विलायती टोपीके गुण कायम रखें और आकारमें अपनी पोशाकके साथ अुसका मेल बैठा सकें, तो बड़ा अुपकार होगा। हमारे कारीगर अगर सोचें तो यह काम कठिन नहीं है।'

९२

बापू वर्धा आकर मगनवाडीमें रहने लगे, तब यहाँके लोगोंकी हालत देखकर आहार पर ज्यादा विचार करने लगे। बाजारमें शाक मिलता नहीं, और मिलता है तो महँगा। यह देखकर अुन्होंने गाँवमें तलाश की कि वहाँ अैसे कौनसे शाक मिलते है जो गरीब लोग खाते है और जो शहरके बाजारोंमें बिकनेके लिअे नहीं आते? तब फिर मगनवाड़ीमें वही शाक मँगाया जाने लगा। बापूको देखना था कि अैसे शाकोंमें कितनी पौष्टिकता है, और अुनके गुणदोष क्या क्या है? जितने खानेवाले थे अुन सबसे वे अपना अपना अनुभव पूछ लेते थे। बादमें अुन्हें सन्तोष हुआ कि कुछ शाक अैसे हैं, जो सब दृष्टिसे खाने लायक हैं।

अुन्हीं दिनों सोयाबीनका भी प्रयोग चला था। सोयाबीन मँगवाये जाते। अुन्हें पकाते। पकानेके बाद पीसते। ये सब बातें कअी दिनों तक चलती रहीं। अिस बीच सोयाबीन पर का साहित्य भी बापूने काफी पढ़ लिया। लेकिन जान पड़ता है कि सोयाबीनसे अुन्हें विशेष संतोष नहीं हुआ!

सन् '२७के बादकी बात है। मैसूरमें स्टूडेण्ट्स वर्ल्ड फेडरेशनका अधिवेशन था। विद्यार्थियोंके बीच काम करनेवाले अमेरिकाके रेवरेंड मॉट् अुसके अध्यक्ष थे। हिन्दुस्तान आनेपर वे बापूको मिले बगैर तो जाते ही कैसे? वे अहमदाबाद आये और अुन्होंने बापूसे मुलाकातका समय मॉगा। बापू दिनभर बहुत ही काममें थे। असलिअे रातको सोनेके पहले अुन्हें १० मिनटका समय दिया। मै भी विद्यापीठसे आश्रम गया। कुतूहल यही था कि देखूँ १० मिनटमें क्या क्या बातें होती हैं!

बापू आँगनमें सोये हुअे थे। पास ही अेक बेंच पर रेवरेंड मॉट् आकर बैठे। वे अपने सवाल लिखकर लाये थे। हरिजन आन्दोलनके बारेमें कुछ पूछा। मिशनरी लोगोंकी सेवाका क्या क्या असर हुआ है सो पूछा। फिर दो सवाल अुन्होंने पूछे, जिनके अुत्तर मेरे मनमें गड़ गये है। अैसे सवाल शायद ही कभी कोअी पूछते होंगे।

सवाल: 'आपके जीवनमें आशा निराशाके प्रसंग बहुत आते होंगे। अुनमें आपको किस चीजसे अधिकसे अधिक आश्वासन मिलता है?'

जवाब: 'लोगोंकी चाहे जितनी छेड़छाड़ हो जाय फिर भी अिस देशकी जनता अपनी अहिंसावृत्ति नहीं छोड़ती, अिस बातसे मुझे सबसे बड़ा आश्वासन मिलता है।'

सवाल: 'और अैसी कौनसी चीज है, जो आपको दिनरात चिंतित रखती है और जिससे आप हमेशा अस्वस्थ रहते हैं?'

सवाल कुछ विचित्र तो था ही। बापू अेक क्षण ठहर गये, फिर बोले — 'शिक्षित लोगोंके अंदर दयाभाव सूख गया है, अिस बातसे मै हमेशा चिंतित रहता हूँ।'

ये प्रश्न और अुनके अुत्तर सुनकर मै अस्वस्थ-सा हो गया। विद्यापीठ जाकर सोया तो सही, लेकिन नींद नहीं आयी। मैंने सोचा

अनपढ़ जनताके युवकोंको बुलाकर मै अुन्हें शिक्षित करता हूँ यानी बापूको आश्वासन देनेवाले वर्गको कम करके अुन्हे चिंतित और अस्वस्थ बनानेवाले वर्गको बढ़ाता हूँ। क्या यही मेरे परिश्रमका फल है? मैं जो शिक्षा दे रहा हूँ, अुसे राष्ट्रीयताका लेबल लगा हुआ है सही, लेकिन अिससे मेरा सन्तोष कैसे होगा!

अिसके बाद ही मैंने विद्यापीठमें ग्रामसेवा-दीक्षितोंका अभ्यासक्रम जारी किया।

९४

बापूकी अेक बहन हैं। बापूने जब दक्षिण अफ्रीकामें आश्रम खोला, तो अपना सर्वस्व वहाँके आश्रमको यानी देशको दे दिया। जब हिन्दुस्तान आये, तो यहाँकी अपनी मिल्कियतके घरका हक भी छोड़ दिया। रिश्तेदारोंको बुलाकर अुसकी लिखापढ़ी कर दी और अपने चारों लड़कोंके हस्ताक्षर भी अुसपर करवा दिये। अिस तरह वे पूर्ण अकिंचन बन गये।

अब गोकी बहन (बापूकी बहन)के खर्चेका क्या होगा? खानगी कामोंके लिअे बापू कभी किसीसे माँगते नहीं है। फिर भी अुन्होंने अपने पुराने मित्र डॉ० प्राणजीवन मेहतासे कह दिया कि गोकी बहनको मासिक १० रुपया भेजा करे।

कुछ दिनों बाद गोकी बहनकी लड़की विधवा हो गयी और माँके साथ रहने लगी। गोकी बहनने बापूको लिखा कि अब खर्चा बढ़ गया है। अुसे पूरा करनेके लिअे हमें पड़ोसियोंका अनाज पीसनेका काम करना पड़ता है।' बापूने जवाबमें लिखा—'आटा पीसना बहुत ही अच्छा है। दोनोंका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। हम भी आश्रममें आटा पीसते है।' और लिखा—'जब जी चाहे तुम दोनोंको आश्रममें आकर रहनेका और बने सो जन-सेवा करनेका पूरा अधिकार है। जैसे हम रहते है, वैसे ही तुम भी रहोगी। मैं घर पर कुछ नहीं भेज सकता। न अपने मित्रोंसे ही कह सकता हूँ।'

जो बहन आटा पीसनेकी मजूरी कर सकती है, अुसे आश्रम जीवन कठिन नहीं मालूम हो सकता। लेकिन आश्रममें तो हरिजन भी थे न! अुनके साथ रहना, खाना, पीना पुराने ढंगके लोगोंसे कैसा हो!

वह नहीं आयीं। सिर्फ अेक समय बापूसे मिलने आयी थीं, तब मैंने अुनके दर्शन किये थे।

९५

आश्रमके प्रारम्भकी बात है। हम कोचरबमे रहते थे। हमारे बंगलेके सामने रास्तेके अुस पार अेक कुआँ था, अुससे पानी लाते थे। आश्रममे कोअी नौकर तो थे ही नहीं। सब काम हम ही करते थे।

बापूको बीच बीचमे बम्बअी जाना पड़ता था। तीसरे दर्जेकी मुसाफिरी, सारी रात नींद नहीं, फिर दिनभर काम और रातको सोना। पहले मैं मानता था कि बापू बिस्तर पर जाते ही सो जाते होंगे, लेकिन वैसा नहीं था। वहाँ भी बाके साथ अस्पृश्यता निवारणपर चर्चा चलती। आश्रममें अेक हरिजन कुटुम्ब दाखिल हुआ था। बाको अुनके हाथका खाना मंजूर नहीं था। बा बेचारी फलाहार पर रहती थीं। लेकिन बापूको यह भी कैसे सहन हो! वे कहते — 'आश्रममे छूतछात नहीं चल सकती। अगर तुम्हें यह भेदभाव रखना है, तो राजकोट जाकर रहो। मेरे साथ नहीं रहा जा सकता।' बड़ी रात तक दोनोंकी अिस तरह चखचख चलती रहती। सुबह अुठते ही रामदास, देवदास भी बाको समझाते — 'क्यों बा, दक्षिण अफ्रीकामें तो हरिजनका छुआ तुम्हें चलता था। फिर यहाँ क्यों नहीं चलता?' बा कहतीं — 'वह तो परदेश था। वहाँकी बात दूसरी थी। यहाँ हम अपने देशमें है। अपने समाजकी मर्यादा कैसे तोड़ी जा सकती है!'

अिधर हमारा कुअेंसे पानी भरनेका कार्यक्रम शुरू होता। बापू भी अेक घड़ा लेकर आते। अेक दिन मैंने बापूसे कहा — 'बापूजी, आज रातको आपको नींद नहीं मिली। आपके सिरमे भी

दर्द है। सुबह मेरे साथ चक्की भी देर तक पीसी है। आप जाकर कुछ आराम करें। पानीकी कोअी चिन्ता नहीं।' लेकिन बापू कब माननेवाले थे। अुनके साथ दलील. करना व्यर्थ समझ मैं और रामदास पानी खींचने लगे और दूसरे आश्रमवासी बरतन अुठा अुठाकर आश्रममें पानी भरने लगे।

अितनेमें ही मौका पाकर मैं चुपचाप वहाँसे आश्रममे गया और वहाँ जितने छोटे-मोटे बरतन थे सब अुठा ला आया और साथमें आश्रमवासी सब बच्चोंको भी बुलाता लाया। अब मैं पानी खींचता और जहाँ बरतन भरा कि बापूको टालकर दूसरेको दे देता। बच्चे भी मेरी शरारत समझ गये। दौड दौड़कर नजदीक आकर खड़े होने लगे। बेचारे बापू अपनी बारीकी राह ही देखते रहे। फिर आश्रममें बरतन ढूँढ़ने गये। वहाँ अेक भी बरतन न मिला। लेकिन सत्याग्रही जो ठहरे! हार कैसे सकते थे। वहाँ छोटे बच्चोंके नहानेका अेक टब मिल गया। वही अुठा लाये और कहने लगे — 'अिसे भर दो।' मैंने कहा — 'अिसे आप कैसे अुठायँगे?' कहने लगे — 'देखो तो सही कैसे अुठाता हूँ। तुम भर तो दो।'

मैं हार गया और अेक मझले आकारका घड़ा अुठाकर अुनके सिरपर रख दिया।

९६

१९१९की बात है। अमृतसरके अत्याचारके बाद सरकारने अत्याचारकी जाँच करनेके लिअे हंटर कमेटी नियुक्त की। कांग्रेसका अुससे समाधान नहीं हुआ। अिसलिअे कांग्रेसने अुसका बहिष्कार किया।

बहिष्कारके अलावा हम और भी कुछ कर सकते है, यह दूसरे लोगोंके खयालसे बाहर था। लेकिन बापूने तो कांग्रेसके द्वारा अेक अपनी जाँच कमेटी नियुक्त करवायी और जाँच शुरू की। अुस कमेटीमें चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, श्री जयकर, अब्बास तैयबजी, खुद बापू अैसे

अैसे लोग थे। तीन महीने तक जाँच हुअी। १७०० लोगोंकी गवाही ली गअी। अुनमें ६५०के बयान प्रकाशित किये गये। अब रिपोर्ट पेश करनी थी।

यह सारा मसाला लेकर बापू आश्रममें आये और रिपोर्ट लिखने लगे। अत्याचारके बयानोंसे तो वे अुबल रहे थे। रिपोर्ट लिखनेका काम दिनरात चलने लगा। अक्षरशः दिन और रात चौबीसों घण्टे लिखते ही थे। रातको कोअी दो या ढाअी घण्टे सोते होंगे। दोपहरको कभी लिखते लिखते अितने थक जाते थे कि शरीर काम करनेसे अिनकार कर देता था। अेक दिन मैंने देखा बायें हाथमें कागज है, दाहिने हाथमे कलम है, तकिये पर टिके सोये हैं, मुँह खुला हुआ है। कुछ ही क्षण गये होंगे। अेकदम चौंक कर अुठे मानो कोअी गुनाह करते हुअे पकड़े गये हों! अुठे और फिर लिखने लगे।

रिपोर्ट पूरी हुअी। कमेटीके सामने पेश हुअी। सब लोगोंके हस्ताक्षर हो जानेपर बापूने सब सदस्योंसे कहा — 'हमने हस्ताक्षर तो किये हैं, लेकिन साथ ही साथ हम यह भी प्रण करें कि जब तक अपने देशमें अैसे अत्याचारोंका होना असम्भव न कर दें, तब तक आराम नहीं लेंगे।' सब सदस्योंने प्रण किया।

अिसके बादका अितिहास सबको मालूम ही है।

९७

सन् १९२२ की बात है। सरकारने बापूको गिरफ्तार करके साबरमती जेलमें भेज दिया। अुनपर मुकदमा चलनेवाला था। अिन बीचके दिनोंमें बहुतसे लोग बापूसे मिलने जाते थे।

साबरमती जेलमें अच्छे कमरे जेलके दाहिने कोनेमें है। अिन्हें 'फाँसी खोली' कहते है, क्योंकि फाँसीके कैदियोंको वहीं रखा जाता है। बापूको भी वहीं रखा गया था।

अेक दिन मैं बापूसे मिलने चला। जेलके गेटपर मुझे श्री अब्बास तैयबजी मिले। वे भी बापूको मिलने ही आये थे। गेट पार करके बाअीं

ओर मुड़कर हम बापूके कमरेके पास गये। अब्बास साहबको देखते ही अुन्हें मिलनेके लिअे बापू बरामदेपरसे अुठे और सीढ़ियाँ अुतरने लगे। अिधरसे अब्बास साहब भी तेजीसे आगे बढ़े और दोनोंका मिलन सीढ़ियोंपर ही हो गया। बापूने अपना बायाँ हाथ अब्बास साहबकी कमरमें डाला और दाहिने हाथसे अुनकी दाढी पकड़कर गाल फुलाकर बुर्र्र्र्र करने लगे। अब्बास साहबने भी जवाबमें बुर्र्र्र्र किया। दोनों हँस पड़े। मै अुस बुर्र्र्र्रका कुछ भी मतलब नहीं समझ पाया।

दांडी कूचके दिनोंमें (सन् १९३० में) मै अब्बास साहबके साथ साबरमती जेलमें था। मैने अब्बास साहबसे पूछा था कि अुस दिन बापूसे मिलते समय दोनोंने बुर्र्र्र्र किया था, अुसका क्या मतलब था? अुन्होंने हँसते हँसते कहा — 'हम दोनों जब विलायतमें थे, तब मैने बापूको अेक किस्सा सुनाया था। अुसमें बुर्र्र्र्र आता था। मुझे मिलते समय बापूको वह याद आ गया था।'

अिसपर अब्बास साहबने मुझे वह सारा किस्सा सुनाया। लेकिन मै फिर भूल गया। फिर मैने अुस बुर्र्र्र्रका अपना अर्थ बैठाया। वह यह था कि 'सन् १९१९में हमने जो प्रतिज्ञा की थी, अुसका पालन करते करते मै यहाँ आ पहुँचा हूँ' अैसा बापूने सूचित किया और अब्बास साहबने जवाब दिया कि 'मैं भी यहाँ जरूर आ जाअूँगा।'

जब मैंने अपना बैठाया हुआ यह अर्थ अब्बास साहबको सुनाया तो कहने लगे — 'अुस वक्त तो मेरे मनमें अैसा कुछ नहीं था, लेकिन तुम्हारी बात सही है। हम दोनोंका सम्बन्ध ही अैसा है। मुझे तो ताज्जुब होता है कि मैं जेलमें कैसे आ गया। विशेष तो यह कि अिससे ज्यादा मैं कुछ कर सकता हूँ, सो नहीं मालूम होता। सचमुच बापू अेक अद्भुत व्यक्ति हैं!'

सन् ३६-३७ की बात होगी। अुन दिनों बापू वर्धामें मगनवाड़ीमे रहते थे। मैं बोरगॉवमें रहता था। अुन दिनों बापू खूब काम करते थे। आये हुअे पत्रोंका जवाब लिखनेका समय ही नहीं मिलता था। अिसलिअे रातको दो-तीन बजे अुठकर लिखते थे। मैंने यह बात सुनी तो मुझसे न रहा गया। मैंने युक्तिसे बात छेड़ी — "बापूजी, आपने दक्षिण अफ्रीकामें अेक किताब लिखी है 'आरोग्य विशे सामान्य ज्ञान'। अुसमे सब बातें आ गयी हैं: आहार-दृष्टीसे लेकर स्त्री-पुरुष सम्बन्ध तक। लेकिन अेक बात रह गयी।" बापूने आश्चर्यसे पूछा — 'कौनसी?' मैंने कहा — 'नींदके बारेमे अुसमे अेक भी प्रकरण नहीं है।' बापू कहने लगे — 'नींदके बारेमें लिखने जैसा क्या है? मनुष्यको नींद आती है, तब वह सोता है। अिससे अधिक क्या लिख सकते है?' मैंने कहा — 'यही तो बात है। आप समयपर खाते हैं, नाप तौल कर खाते हैं। दिनभरका काम बँधा हुआ रहता है। जितने लोगोंके claims आप पर आते है, सबको आप राजी कर लेते है। कोअी खत लिखता है, तो अुसे जवाब भी मिल जाता है। लेकिन अत्याचार होता है नींद पर। काम बढ़ा तो लुटी जाती है बेचारी नींद! यह कैसे चलेगा! आहारका अुपवास कुदरत दरगुजर करेगी; लेकिन नींदके अुपवासके लिअे सजा भुगतनी ही पड़ेगी!'

मै जानता था कि मैं अपनी मर्यादा छोडकर बोल रहा हूँ। लेकिन मै भी क्या करता? रहा न गया अिसलिअे कह डाला।

बापू गम्भीर होकर बोले — 'तुम कहते हो अिसका अर्थ यह हुआ कि मैं गीताधर्मी नहीं हूँ। मै तो शरीर जितना काम देता है, अुतना ही काम अुससे लेता हूँ। मैं नहीं मानता कि जो काम मै कर रहा हूँ, वह मेरा काम है। वह तो भगवानका है। अुसकी चिन्ता अुसे है। मैं तो अपने हिस्सेका काम करनेके लिअे ही बँधा हुआ हूँ। अुससे ज्यादा करूँ, तो वह अभिमानकी बात होगी।'

* * *

कुछ दिन गये। मैं वोरगाँवसे मगनवाडी आ गया। महादेव-भाऔीने मुझे बतलाया — "आज बापूका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। सोये है। सुबह अुठते ही अुन्होंने कहा — 'आज मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं, blood pressure बढ़ा होगा। डॉक्टरको बुला लो, तो अच्छा होगा।' महादेवभाऔी आगे कहने लगे — 'आज तक कभी बापूने अपनी ओरसे डॉक्टरको बुलानेके लिअे नहीं कहा था!'"

'मै जान-बूझकर बापूसे मिलने नहीं गया। शामकी प्रार्थनाके बाद बापूने अपने स्वास्थ्यके बारेमें ही कहना शुरू किया। प्रारम्भ था — 'मै पूरा गीताधर्मी नहीं हूँ।'

मै तो पुरानी बात भूल गया था। लेकिन अिस वाक्यसे मुझे अुस दिनका संवाद याद आ गया। मैने मनमें सोचा कि मै बापूसे कुछ कहूँ, अुसके पहले ही अुन्होंने मेरा मुँह बन्द कर दिया।

तबसे बापूने नींदका कर्ज बराबर अदा करनेका नियम बना लिया है।

९९

दक्षिण अफ्रीकामे पठानोंने बापूपर हमला किया, और यह समझकर कि मर गये, वे अुन्हें छोडकर चले गये। होशमें आते ही बापूने पहली बात यह कही कि जिन्होंने मुझपर घातक हमला किया है, अुन्हें सजा नहीं होनी चाहिये। मै मेरी ओरसे अुन्हें क्षमा करता हूँ।*

अुस दिनसे बापूके परम मित्र मि० कैलनबॅक बापूको कहीं अकेले जाने नहीं देते थे। कैलनबॅक अूँचे पूरे और गँठे हुअे शरीरके थे। कुश्ती, बाक्सिंग वगैरा सब कुछ अच्छी तरह जानते थे। जहाँ बापू जाते वहाँ वे अंग रक्षककी तरह साथ ही रहते।

अेक दिन बापू किसी सभामें गये थे। कैलनबॅकको पता चला था कि बापूपर वहाँ गोरोंका हमला होनेवाला है। अुन्होंने अपनी पेटके जेबमें रिवालवर रख लिया। जब बापूको पता चला कि ये रिवालवर

* यह सारा किस्सा अुनकी 'आत्मकथा'में आ ही गया है।

ले कर चले है, तो बहुत ही गुस्सा हुअे और कहने लगे — 'फेंक दो वह रिवालवर। तुम्हारा विश्वास भगवान पर है कि रिवालवर पर ? मेरी रक्षाके लिअे मेरे साथ आनेकी जरूरत भी क्या है ? क्या मै भगवानके हाथमे सुरक्षित नहीं हूँ ? जबतक मुझसे काम लेना है, वह मुझे बचायेगा ही ।'

अिसके बादकी अेक घटना है । गोरोंकी सभा थी । कैलनबॅक वहाँ गये थे । सभाके किनारेपर खड़े थे । वहाँ किसी वक्ता या श्रोताके साथ चर्चामे अिनका झगड़ा हो गया । अंग्रेज तो . . . होते ही है । ताकत हो या न हो बन्दर घुड़की जरूर दिखायेंगे । अुस अंग्रेजने कैलनबॅकको ललकारा — 'Come along, let us fight it out.' कैलनबॅकने ठण्डी आवाजसे जवाब दिया — 'But I am not going to fight you.' सारा समाज स्तम्भित होकर देखता ही रहा । कैलनबॅकका शरीर और अुनका कुश्तीका कौशल सब जानते ही थे । कोअी अुन्हें कायर नहीं कह सकता था और ललकारे जानेपर तो क्या कोअी कायर भी अिस तरहसे अिनकार कर सकता है ? सब अचम्भेमें पड़ गये

यह किस्सा मैंने श्री मगनलालभाअी गांधीसे सुना था ।

१००

चम्पारनकी. बात है । बापूकी ओरसे होनेवाली अन्याय अत्याचारोंकी जाँचसे प्रजामे कुछ जान आ रही थी । स्थान स्थानपर बापूने जो स्कूल खोले, अुनका भी लोगोंपर असर पड़ रहा था । निलहे गोरे बडे ही परेशान थे !

किसीने बापूसे कहा — 'यहाँका निलहा सबसे दुष्ट है । वह आपको मार डालना चाहता है । अुसने हत्यारे तैनात किये है ।'

सुनते ही अेक दिन रातको बापू अकेले अुसके बंगलेपर पहुँच गये और कहने लगे — 'मैने सुना है कि आपने मुझे मार डालनेके लिअे हत्यारे तैनात किये हैं । अिसलिअे किसीको कहे बिना अकेला आया हूँ !'

बेचारा निलहा स्तम्भित हो गया ।

१०१

सन् १९१७ की बात होगी। बापू आश्रममें शामकी प्रार्थनाके बाद अपने बिस्तरपर तकियेका सहारा लेकर बैठे बातें कर रहे थे। बापूको ठढ लगेगी अिस खयालसे पूज्य बाने अेक चादर चौहरी करके अुनकी पीठपर डाल दी थी। बापू आश्रमवासी श्री रावजीभाअी पटेलसे बातें कर रहे थे। रावजीभाअीको चादरपर अेक काली लकीर-सी दिखायी दी। गौरसे देखा तो मालूम हुआ कि अेक बड़ा काला साँप पीछेसे आकर बापूके कन्धे तक पहुँच गया है। और आगेका रास्ता तय करनेके लिअे अिधर अुधर देख रहा है। रावजीभाअीका ध्यान भंग हुआ देखकर और अुनको कंधेकी तरफ ताकते देखकर बापूने पूछा — 'क्या है, रावजीभाअी?' बापूको भी भान तो हुआ था कि पीठपर कुछ भार है। रावजीभाअीमें प्रसंगावधान अच्छा था। अुन्होंने सोचा कि जोरसे कहूँगा तो बा वगैरा सब लोग घबरा जायँगे और दौड़धूप होनेसे साँप भी घबरा जायगा। अुन्होंने कहा — 'कुछ नहीं बापू, अेक साँप आपकी पीठपर है। आप बिलकुल स्थिर रहे।' बापूने कहा — 'मैं बिलकुल स्थिर रहूँगा। किन्तु तुम क्या करना चाहते हो।' रावजीभाअीने कहा — 'मैं चारों कोने पकड़कर साँप समेत चादर अुतार दूँगा।' यह चहल पहल होते ही साँप चादरके अंदर घुस गया था। बापूने कहा — 'मैं तो निश्चेष्ट बैठूँगा, लेकिन तुम सँभालना।'

रावजीभाअीने चादर अुठाअी और अुसे दूर ले गये। और साँप जैसे ही चादरमेंसे बाहर निकला, अुसे दूर फेंक दिया।*

दूसरे दिन अखबारोंमें समाचार प्रकट हुआ कि अेक नागने आकर बापूके सिरपर फन फैलायी थी। अब बापू चक्रवर्ती राजा

---

* श्री रावजीभाअीने अपनी किताबमें यह किस्सा सविस्तर दिया है। मुझे जैसा याद था वैसा यहाँ मैंने दिया है।

होनेवाले हैं। अेक मित्रने मुझे कहा — 'नाग अुनके कन्धे तक ही चढ़ा था। अगर सिरतक चढ़ता तो जरूर वे हिन्दुस्तानके चक्रवर्ती सम्राट हो जाते!'

अेक दिन अिस घटनाका स्मरण होते मैंने बापूसे पूछा कि जब साँप आपके शरीरपर चढ़ा, तो आपके मनमें क्या क्या हुआ? वे बोले — 'अेक क्षणके लिअे तो मैं घबरा गया था, लेकिन सिर्फ अुसी क्षणके लिअे। बादमें तो तुरन्त सँभल गया। फिर कुछ नहीं लगा। फिर विचार आने लगे कि 'अगर अिस साँपने मुझे काटा, तो मैं सबसे यही कहूँगा कि कमसे कम अिसे मत मारो। आप लोग किसी भी साँपको देखते ही अुसे मारने पर अुतारू हो जाते हो, और न मैंने वैसा करनेसे आपमेंसे किसीको अभी तक रोका है। लेकिन जिस साँपने मुझे काटा है, अुसे तो अभयदान मिलना ही चाहिये।'